



जीवन-श्रेयस्कर-पाठमाला



प्रकाशक—

श्री केशर ग्रहिन अमृतलाल भवेरी
पालनपुर (उ गुजरात),

द्वितीयावृत्ति १०००	श्री वीर सम्मत २४०५ विष्णुमास २० ५ सन् १९४८ ई०	मूल्य २)
------------------------	--	-------------

प्रकाशक—
 वैशाली यट्टिन अमृतताल भवेरी
 पालनपुर (उ. गुजरात)

विषयसूची

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
दशवैकालिक सूत्र	१ से ४६	२. उसाय पद्य	१६७
सुखविपाक सूत्र	१	३. सुभाषित गाथा	२०२
उत्तमाह २२ गाथा	११	४. मत्त मर स्तोत्र	२३६
पुनर्वसु णे	१२	५. कल्याण मन्दिर स्तोत्र	२८३
मोक्षमार्ग च पथन	१६	६. शम्भुकर चन्द्रिका	२८९
उत्तराध्यायन सूत्र	२०	७. धर्मना पञ्चमिनि	२९२
न दी सूत्र	२०२	८. त्रि लामणि पा० स्तोत्र	२९६
अनुत्तरीयवाह्य सूत्र	२४६	९. मरी भावना	२९८
दशभुक्तक १० वीं वरा	२६४	१०. प्रकीर्ण गाथा	२९८

मुद्रक—
 श्री जा० सिंह के प्रबन्धसे
 श्री गुणकुल प्रिंटिंग प्रेस, ध्यावा

भूमिका

- - - - -

श्री जीवन-श्रेयस्कर-पाठमाला को पाठकों के घर-बसला में समर्पित करते हुए बड़ी प्रसन्नता ट। रही है। श्री छोटेलाहली यति द्वारा संचालित जीवन-श्रेयस्कर ग्रन्थमाला ने जीवन श्रेयस्कर-पाठमाला को प्रथमावृत्ति छपायी थी जिसको स्वाध्याय प्रेमियों ने ठीक पसंद की थी। अब अप्राप्त होने के कारण इसकी दूसरी आवृत्ति धमानुरक्ता भीमती पेशर बहिनश्र मृतलाल जीहरी ने कई बहिना की प्रेरणा से छपवाइ है। हमें आशा ही नहीं बरन् पूर्ण विश्वास है कि पाठकों ने पहिले पाठमाला को अपनाई है उसी प्रकार इसे भी अपनायेंगे।

इस पुस्तक में प्रकाशित सूत्रा आदि का प्रकारानवयपि कई स्थानों में हो चुका है किन्तु ये स्वाध्याय के लिए परमोपयोगी होने से इन सब का समग्र रूप ही जगह दिया गया है। स्वाध्याय आत्मोन्नति का सरल, सुन्दर और सुगम अत्युत्तम मार्ग है। अतः स्वाध्याय के लिए उत्तमात्तम ग्रन्थ का संग्रह करना प्रत्येक मनुष्य के लिये आवश्यक है। शास्त्र, धर्म ग्रन्थ, महा-पुराण के जीवन परिश्र, महापुराण के उपदेश, आत्मपुराणों द्वारा उपदेशित परमपद प्राप्ति के साधना का ज्ञान कराने वाले ग्रन्थ तथा आत्म दर्शन कराने वाले साहित्य के पठन-पाठन एवं स्वाध्याय करने से निश्चय ही विचार म तदनुकूल परिवर्तन होकर जीवन शान्तिमय बन सक्ता है।

धर्म ग्रन्थादि, शास्त्र और उपदेश पूर्ण पुस्तकों के पढ़ने से मनुष्य को महात्मात्मा तथा विद्वाना के विचार जानने को मिलते हैं, जिन्हें मन पर मनुष्य स्वयं उनके समान बन सकता है।

स्वाध्याय से ज्ञान बुद्धि और अनुभव बढ़ता है तथा आलस्य-शत्रु का नाश होता है। मनुष्य का जंसा भी पठन-पाठन होगा तथा सगति होगी उसके आचार विचार भी, वैसे ही होंगे। अतः मनुष्य को चाहिये कि वह सदा सत्पुरुषों की संगति में रहे। अर्थात् सदा सद्गुरुत्वा की विनय-भक्ति करना, तथा सत्संग करने का नियम रखा चाहिए।

स्वाध्याय के ५ अंग हैं। उन्हीं के अनुसार ही सत समागम की देव रखनी चाहिये। पाँच अंग निम्न हैं—

१ वाचना—गुरु के पास या स्वयं पढ़ना।

२ पृच्छना—अपनी शिवांग गुरु अथवा किसी अनुभवी से पूछना।

३ परावर्त्तना—पढ़े हुए भाग का पुनः सोचना या दुहराना।

४ अनुप्रेक्षा—पढ़े हुए विषय पर मनन करना।

५ धर्मकथा—अपना सिखा हुआ ज्ञान दूसरों को सुनाना, सिखलाना, व्याख्यान या चर्चा करना तथा लेखन द्वारा जनता प्रचार करना।

अतएव प्रतिदिन स्वाध्याय द्वारा यादा-२ ज्ञान करने से मनुष्य बहुत बड़ा ज्ञानवान बन सकता है। इसी उद्देश्य से इस ग्रन्थ का नाम 'स्वाध्याय पाठमाला' रखने का विचार था किन्तु इसमें वर्णित सभी बातों से जीवन सुखमय बनता है इसी लिये इसका नाम 'जीवन-अस्फर-पाठमाला' रखना अधिक उपयुक्त समझा गया है।

इस ग्रन्थ का प्रकाशन करने के लिये बम्बई व पालनपुर की कतिपय श्राव्याय प्रेमी बहनें बहुत दिनों से आग्रह कर रहों थीं इसी लिये यह द्वितीयावृत्ति छपना है ।

कागज और छपाई की महंगाई होने पर भी यह पुस्तक निर्फ २) १० म दी जाने की व्यवस्था की गई है । श्री जैन गुग्गुल प्रेस व्यावर ने इसे छापने में पूर्ण सहयोग दिया है ।

प्र फ सशोधन आदि काय में प० शान्तिनाथ बनमाली नेत्र ने तथै श्री जिनागम प्र० समिति के पंडिता ने पूर्ण परिश्रम किया है ।

श्री श्वे स्था जैन कॉन्फरेन्स द्वारा श्री जिनागम प्रकाशन ग्रायालय चल रहा है उसमें आगमों के सशोधित पाठ हमने लिये मिले हैं ।

हमने लिए न्त विद्वानों का और जिनागम प्र० कार्यालय को हार्दिक धन्यवाद दिया जाता है, इतना प्रयत्न होने पर भी प्रेस से या न्द्रिदोष से कोई भूल रह गई हा ता पाठक सुधार कर पढ़े और प्रकाशन को सूचित करेंगे ता कृपा होगी और नई आवृत्ति में सुधार किया जा सकेगा ।

स्वाध्यायन सन आत्माएँ स्वकल्याण प्राप्त करें यही भावना है ।

ज्ञान पंचमी
वि० सं० २००७

धीरजलाल के० नुरसिया
अधिष्ठाता, श्री जैन गुग्गुल, व्यावर



॥ अहं ॥

॥ दसवेअालियसुत्तं ॥

दुमपुण्ड्रिया नाम पढममज्झयण ।



धम्मो भगलमुक्किट्टु^१ अहिंसा सनमो तवो ।
देवा त्रि त नमसति जस्स धम्मो मया मणो ॥ १ ॥
जहा दुमस्स पुण्हेसु भमरो णवियइ रस ।
न य पुण्ण किलामेइ सो य पीणेइ आगय ॥ २ ॥
एमेए सभणा मुत्ता जे लोए सति माहुणो ।
त्रिहगमा य पुण्हेसु दाणभत्तसख रया ॥ ३ ॥
यय च वित्ति लमामो न य कोइ उरहम्मइ ।
अहागडेसु^२ रीयन्ते पुण्हेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥
महुगास्समा बुद्धा जे भयति अणिस्सिया ।
नाणपिएडरया दन्ता नेण बुच्चन्ति माहुणो ॥ ५ ॥ त्ति वेमि ॥
॥ पम दुमपुण्ड्रियज्झयण समत्त ॥

॥ सामणपुण्य गायमज्झयण ॥

कह नु बुज्जा सामणो जो कामे न निवारण ।
एए एए विमीयतो सक्कपस्स वस गओ ॥ १ ॥
वत्थग धमलक्कार इत्थीओ सयणाणि य ।
अच्छन्दा जे न भुजति न से चाह त्ति बुच्चइ ॥ २ ॥
जे य कन्ते पिए मोए लडे^३ त्रिपिट्ठिउ^३ उइ ।
साहीणे चयइ मोए से हु चाह त्ति बुच्चइ ॥ ३ ॥

‘नमोऽहं वहाहं परिष्कृत्यगतां

सिवा मणो निम्सरं वलिङ्गा ।

“न मा मदे गो वि अह वि सीमे”

इत्येव ताभ्यो विष्णवेष्टा रामो ॥ ४ ॥

आयायवादी, अथ मोगमज्ज

वामो कमादी, कमियं गु दुपय ।

विन्द्यादि दोमं, विष्णवेष्टा रामो,

एवं सुती दोहिनि संपराए ॥ ५ ॥

गण्डर्वे जलिय जोहं पूमवेडं दुरामय ।

मे-दति यतय मोत्तुं बुलं आया अगधल ॥ ६ ॥

चिरस्तु तेऽज्जमेवामी’ ओ त जीवियवाररा ।

यंत इन्दुमि आवेडे ! मेय ने मरग मये ॥ ७ ॥

अहं च मोगरायस्स त च ति अ-धगयण्डिलो ।

मा बुलं गन्धला होमो, मज्जमे निरुधो चर ॥ ८ ॥

अहं त वाहिसि भाय जा आ दिन्दुमि नारिका ।

यायाविन्दुव्य हडो अट्टियणा मयिस्समि ॥ ९ ॥

तीसे मो ययणं सोद्या सजयाए मुमानिय ।

अधुमेण जहा नागो धम्मं सपट्टियाइया ॥ १० ॥

एव करेति सधुद्धा पण्डिया पण्डियकमला ।

विण्णियट्टित्त भोगेतु जहा स पुरिसुत्तमा ॥ ११ ॥ त्ति येमि ॥

॥ वीय सामगणपु-बयम्भयग समज ॥

॥ सुट्ठियायार कहां नाम तइयमज्जयण ॥

सजमे सुट्ठिअप्पाण विप्पमुक्काण ताइरा ।
 तेसिमेयमणाइएण निग्गथाण महेसिण ॥ १ ॥
 उहेसिय कीयगड्ढ नियाग अमिहडाणि य ।
 राइमत्ते तिलाणे य गन्धमत्ते य कीयणे ॥ २ ॥
 सन्निही निहिमत्ते य रायपिण्डे रिमिच्छण ।
 सवाहणा वन्तपहोयणा य सपुच्छणा देहपलोयणा य ॥ ३ ॥
 अट्ठावण्य नालीए छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
 तेगिच्छ 'पाणहा पाए सगारम्म च जोइयो ॥ ४ ॥
 सिज्जायरपिण्ड च आसन्दी पलियइए ।
 गिह'तरनिसिज्जा य गायस्सु'उट्ठणाणि य ॥ ५ ॥
 गिहिणो वेयावडिय जा य आजीउत्तिट्ठिया ।
 तत्तानि'उड्ढमोइत्त आउरस्सरणाणि य ॥ ६ ॥
 मूलए सिङ्गवेरे य उच्छुखडे अनि'उडे ।
 क'दे मूले य सच्चित्त फले वीए य आमए ॥ ७ ॥
 सोवच्चले सि'ववे लोणे रोमालोणे य आमए ।
 सामुदे पसुखारे य कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
 'धुयणेत्ति वमणे य चत्थी'म्मविरेयणे ।
 अज्जणे व'तवणे य गाय'मङ्गविभूसणे ॥ ९ ॥
 सव्यमेयमणाइएण निग्गथाण महेसिण
 सज्जमम्मि य जुत्ताण लहुभूयविहारिण ॥ १० ॥
 पञ्चासवपरिजाया तिगुत्ता छसु सजया ।
 पञ्चनिग्गहणा घीरा निग्ग'था उज्जुदसिणो ॥ ११ ॥
 आयावयति गिम्हेमु, हेम-तेसु अवाउडा ।
 वासासु पडिसलीणा सजया मुममाहिया ॥ १२ ॥

परीसहरिज्जदन्ता 'धुयमोहा जिइदिया ।

सव्यदुक्खवप्पहीणद्धा वक्कमति महेसिलो ॥ १३ ॥

दुक्कराइ करेत्ताण तुसहइ सहेत्तु य ।

केइत्थ देवलोगेसु पेइ सिज्जमति नीरया ॥ १४ ॥

एवित्ता पु'वक्कम्माइ सज्जमेण तवेण य ।

सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता नाइयो परिनिब्बुद्धा ॥ १५ ॥ त्ति धेमि ॥

॥ तइय खुड्डियायारक्कहज्झयण समत्त ॥

॥ छज्जीवणिया नाम चउत्थमज्झयण ॥

सुय मे आउत्थ ! तेण भगवया एवमक्खाय इह एलु
छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कास
वेण पवेइया सुअक्खाया सुपणत्ता । सेय मे अहिज्जिउ
अज्झयण धम्मपणत्ती ॥

कयरा एलु सा छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भग-
वया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपणत्ता
सेय मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपणत्ती ?

इमा एलु सा छज्जावणिया नामज्झयण समणेण भग-
वया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपणत्ता
सेय मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपणत्ती । ॥ अहा-पुढवि-
काइया, आउकाइया, तेउकाइया, घाउकाइया एणम्मइ-
काइया तसकाइया ॥

पुढवी चित्तम'तमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणएण । आउ चित्तम'तमक्खाया अणेगजीवा पुढो-

सत्ता अन्नत्थ मत्थपरिणण । तेउ चित्तम तमफराया अणेग-
जीया पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणण । चाउ चित्तम त-
मफराया अणेगजीया पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणण ।
उल्लसई चित्तम तमफराया अणेगजीया पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणण त जहा-अग्गीया मूलगीया, पोत्तीया,
ख-घीया चीयग्हा, समुत्तिमा, तल्लया, वल्लसइकाइया
मवीया चित्तम तमफराया अणेगजीया पुढोसत्ता अन्नत्थ
सत्थपरिणण ॥

से जे पुण इमे अणो पद्वेतसा पाणा त जहा—अण्डया
पोषया जराउया रसया मत्सेइमा समुत्तिमा उन्मिया उव-
याइया, जेलि केनिचि पाणाण अमिअत पडिअत सवुच्चिय
पसारिय दय भत तसिय वनाइय आगइगइत्तिगाया जे य
कीडपयगा जा य वुन्नुपिगीलिया म-ये घेइदिया सव्ये तेइदिया
सव्ये घउरिठिया सव्ये पचिदिया सव्ये तिरिक्कजोणिया सव्ये
नेरइया सव्ये मणुया सव्ये देया स-ये पाणा परमाहम्मिया ।
एतो एलु द्दट्ठो जीउनिक्काओ “तसकाउ” त्ति पबुचइ ॥

इच्छेमि छएह जीउनिक्कायाण नेव सय दट्ठ समारभिज्जा,
नेउन्नेहि दड समाग्भात्तिज्जा, दड समारम्म-ते विअम्मे न
‘समणुजाणामि जायज्जीयाए तिउिह तिउिहेण मणेश चायाए
काएण न करेमि न कारवमि करन्तपि अ-न न समणुजाणामि
तस्स भ-ते । पडिअमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोत्तिरामि ।

पदमे भते । मह-उए पाणाइयायाओ नेरमण । स-व भते ।
पाणाइचार्य प-चक्खामि, से सुहम या वायर या तस या
थावर या नेव सय पाणे अइवाएज्जा, न-उन्नेहि पाणे अइग

यावेज्जा, पाणे अइवायते वि अन्ने न समणुजाणामि जाव-
ज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण चायाए काएण न करेमि न
कारवेमि करत पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भत्ते ! पडि
कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि । गढमे भन्ते !
महव्वए उवट्ठिओ मि, सग्गाओ पाणाइवायामो वेरमण ॥१॥

अहावरे दोच्चे भत्ते ! महव्वए मुसावायामो वेरमण ।
सव्व भत्ते ! मुसावाय पच्चक्खामि, से कोहा वा सोहाया
भया वा नेव सय मुसवणज्जा, नेवन्नेहिं मुस चावावेज्जा,
मुस वयन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह
तिविहेण मणेण चायाए काएण न करेमि न कारवेमि करन्त
पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भत्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि
गरिहामि अप्पाण वोसिरामि । दोच्चे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ
मि, सग्गाओ मुसावायामो वेरमण ॥२॥

अहावरे तच्चे भत्ते ! महव्वए अदिआदाणाओ वेरमण ।
सन्न भत्ते ! अदिआदाण पच्चक्खामि, से गाम वा नयरे वा
रणे वा अप्प वा यहु वा अणु वा धूल वा चित्तमत्त वा
अचित्तमत्त वा नेव सय अदि न गिएहेज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्न
गिएहावेज्जा, अदिअ गिएहत्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जाव-
ज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण चायाए काएण न करेमि न
कारवेमि करत पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भत्ते ! पडि-
कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि । तच्चे भन्ते !
महव्वए उवट्ठिओ मि, सग्गाओ अदिआदाणाओ वेरमण ॥३॥

अहावरे चउत्थे भत्ते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमण । सन्न
भत्ते ! मेहुणा पच्चक्खामि सेदिअ वा माणुस वा तिरिकट्ट-
जोखिय वा नेव सय मेहुणा सेवेज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणा सेवावेज्जा

मेहुणा सेरते वि अने न समणुजाणामि जावज्जीवाप तिविह
 तिविहेण मणेण प्रायाप कापण न करेमि न कारवेमि करन्त
 पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स मन्ते । पडिक्कमामि निन्दामि
 गरिहामि अप्पाणा घोसिरामि । चउत्थे भन्ते । महउप उवट्ठिओ
 मि, सउपाओ मेहुणाओ वेरमण ॥३॥

अहाउरे पचमे भन्ते ! महउप परिग्गहाओ वेरमण ।
 सउभन्ते ! परिग्गह पच्चक्खामि, से अप्प वा यहु वा अणु
 वा थूल वा चित्तमत वा अचित्तमत वा नेय सय परिग्गहं
 परिगिएहेज्जा, नउनेहिं परिग्गह पग्गिगिहट्ठेज्जा, परिग्गह
 परिगिएहते पि अ ने न समणुजाणामि जावज्जीवाप तिविह
 तिविहेण मणेण प्रायाप कापण न करेमि न कारवेमि करन्त
 पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि
 गरिहामि अप्पाणा घोसिरामि । पचमे भन्ते ! महउप उवट्ठिओ
 मि, सउपाओ परिग्गहाओ वेरमण ॥५॥

अहाउरे छट्ठे भन्ते ! वप राइभोयणाओ वेरमण । सव्व भन्ते !
 राइभोयणा पच्चक्खामि मे असण वा पाण वा खाइम वा
 खाइम वा नउ सय राइ भुज्जेज्जा, नेयनेहिं राइ भुज्जायेज्जा
 राइ भुज्जते पि अने न समणुजाणामि, जावज्जीवाप तिविह
 तिविहेण मणेण प्रायाप कापण न करेमि न कारवेमि करन्त
 पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि
 गरिहामि अप्पाणा घोसिरामि । छट्ठे भन्ते ! वप उवट्ठिओ मि,
 सउपाओ राइभोयणाओ वेरमण ॥

इत्थेयाई पच्च महवय्याइ राइभोयणवेरमणछट्ठाई अत्त
 हियट्ठयाप उवपज्जित्ताण विहरामि ॥६॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सज्जयविरयपडिहयपच्च-
 फलायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिमाणओ
 वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से पुढवि वा भित्ति वा सिल वा
 लेनु वा ससरक्ख वा कार्य ससरक्ख वा वत्थ हत्थेण वा
 पाएण वा कट्ठेण वा किलिंवेण वा अइगुत्तिगाए वा सलागाए
 वा सलागहत्थेण वा न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा न घट्टेज्जा न
 मि-हेज्जा, अन्न नालिहायेज्जा न विलिहायेज्जा न घट्टायेज्जा न
 मिन्दारेज्जा, अन्न आलिहन्त वा विलिहन्त वा घट्टन्त वा
 भिन्दन्त वा न समणुजाणामि जायज्जीयाए तिविह तिविहेण
 मणेण घायाए काएण न करेमि न कारयेमि करन्त पि अन्न
 न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिइमामि निदामि गरिदामि
 अप्पाण घोसिरामि ॥७॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सज्जयविरयपडिहयपच्चफला-
 यपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिमाणओ वा सुत्त
 वा जागरमाणे वा, से उदग वा ओस वा हिम वा महिय वा
 करण वा हरत्तणुग वा सुद्धोदग वा उदउल्ल वा काय उद-
 उल्ल वा वत्थ, ससिणिद्ध वा काय, ससिणिद्ध वा वत्थ नामु
 सेज्जा न सपुसेज्जा १ आयीलेज्जा न पयीलेज्जा न अक्खो-
 ऐज्जा न पक्खोऐज्जा १ आयावेज्जा न पयावेज्जा, अन्न
 नामुसावेज्जा न सपुसावेज्जा न आयीलावेज्जा न पयीला-
 वेज्जा न अक्खोडावेज्जा न पक्खोडावेज्जा न आयावेज्जा न
 पयावेज्जा अन्न आमुसन्त वा सपुसन्त वा आयीलन्त वा
 पयीलन्त वा अक्खोडन्त वा पक्खोडन्त वा आयावन्त वा
 पयावन्त वा न समणुजाणामि, जायज्जीयाए तिविह तिविहेण
 मणेण घायाए काएण न करेमि न कारयेमि करन्त पि अन्न

न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि
अप्पाणं योत्तिरामि ॥२॥

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा सज्जपरित्यपटिहयपञ्च-
फलायपायकम्मे त्थिआ वा गगो वा गगथो वा परिस्तागथा वा
सुत्ते वा जागरमाणे वा, से अगणि वा इत्तरा वा मुम्भु वा
अधि वा जाअ वा अलाय वा सुद्धागणि वा उक्क वा न उजेज्जा
न घट्टेज्जा न मिण्डेज्जा न उज्जाण्डेज्जा न पज्जाण्डेज्जा न
निग्गावेज्जा, अन्न न उज्जाण्डेज्जा न घट्टावेज्जा न भिक्षावेज्जा
न उज्जाण्डावेज्जा न पज्जाण्डावेज्जा न निग्गावेज्जा, अन्न उन्नत
वा घट्टत वा मिन्नत वा उज्जाण्डत वा पज्जाण्डत वा निग्गायत
वा न समणुजाणामि जावज्जीयाए त्तिविह त्तिविहेण मणेण
वायाए काएणा न करेमि न कारयेमि करेतपि अन्न न समणु
जाणामि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं
योत्तिरामि ॥३॥

से भिक्षु वा भिक्षुणी वा सज्जपरित्यपटिहयपञ्च-
फलायपायकम्मे त्थिआ वा गगो वा गगथो वा परिस्तागथो
वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से सिपण वा त्रिहुयणेण वा
तात्तिवण्णेष वा पत्तल वा पत्तभणेण वा साहाण वा साहाधणेण
वा पिट्ठणेण वा पिट्ठण्डित्थेण वा चेत्थेण वा खेलकण्णेण वा
हत्थेण वा मुहेण वा अपणो वा काय वाहिर वा वि पोगल
न 'पूमेज्जा, न वीपज्जा अन्न न पूमावेज्जा न वीआवेज्जा अन्न
पूमन्त वा वीयन्त वा न समणुजाणामि जावज्जीयाए त्तिविह
त्तिविहेण मणेण वायाए काएणा न करेमि न कारयेमि करेत
पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि

गरिहामि अण्णाण वोसरामि ॥१०॥

से मिक्खू वा मिक्खुणी वा सजयन्निरयपडिहयपच्च-
 क्खायपायकम्मे णिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ
 वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, सेवीएसु वा वीथपइट्ठेसु वा रुट्ठेसु
 वा रुट्ठपइट्ठेसु वा आपसु वा जायपइट्ठेसु वा हरिपसु वा
 हरियपइट्ठेसु वा छिन्नेसु वा छिन्नपइट्ठेसु वा सच्चित्तसु वा
 सच्चित्तकोलपडिनिम्मित्तसु वा न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न
 निसीएज्जा न तुयट्ठेज्जा, अन्न न गद्धायेज्जा न चिट्ठायेज्जा न
 निसीयायेज्जा न तुयट्ठायेज्जा, अन्न गन्धुत्ते वा चिट्ठत्ते वा
 निसीयन्त वा तुयट्ठन्त वा न समणुज्जाणामि जावज्जाण
 तियिह तियिहेण भरोण घायाण दाएण न करेमि न वारयेमि
 करन्त पि अन्न न समणुज्जाणामि, तस्स भन्ते । पडिक्खामि
 मिन्वामि गरिहामि अण्णाण वोसरामि ॥ ११ ॥

से मिक्खू वा मिक्खुणी वा सजयन्निरयपडिहयपच्च-
 क्खायपायकम्मे णिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा
 सुत्ते वा जागरमाणे वा से वीइ वा वयण वा कुन्थु वा पिथी-
 र्ज्जिंथ वा हत्थसि वा पायसि वा वाहुसि वा उदसि वा उद-
 रसि वा सीससि वा वत्थसि वा पडिग्गहसि वा कवत्तागमि वा
 पाय-पुट्ठगसि वा रथहग्गसि वा गोत्थगसि वा उट्ठगसि वा
 इय्ठगसि वा वीट्ठगमि वा फलगसि वा सेज्जसि वा सवार-
 गसि वा अन्नवरसि वा तट्ठण्यार उयगरण्णज्जा तओ
 सअवामेय पडिसेहिय पडिसेहिय पण्डित्तिय पमत्तिय पगन्त
 भवसेज्जा, नो हा सघायमावज्जेज्जा ॥ १२ ॥

अथ चरमाणो उ' पाण्डूयाह द्विषह ।

पण्डू पायय कम्म, न ते होइ कवुय कम्म ॥१॥

अजय चिट्ठमाणो उ पाणभूयाइ हिंसइ ।
 बन्धइ पावय कम्म, त से होइ कट्टय फल ॥२॥
 अजय आसमाणो उ पाणभूयाइ हिंसइ ।
 बन्धइ पावय कम्म, त से होइ कट्टय फल ॥३॥
 अजय सज्जमाणो उ पाणभूयाइ हिंसइ ।
 बन्धइ पावय कम्म, त से होइ कट्टय फल ॥४॥
 अजय भुज्जमाणो उ पाणभूयाइ हिंसइ ।
 बन्धइ पावय कम्म, त से होइ कट्टय फल ॥५॥
 अजय भासमाणो उ पाणभूयाइ हिंसइ ।
 बन्धइ पावय कम्म, त से होइ कट्टय फल ॥६॥
 कह चरे ? कह बिट्ठे ? कहमास ? कह सण ?
 कह भुज्जता मात्ततो पाव कम्म न बन्धइ ? ॥७॥
 जय छरे, जय बिट्ठे, जयमासे, जय सण ।
 जय भुज्जतो भासतो पाव कम्म न बन्धइ ॥८॥
 सज्जभूयणभूयस्स कम्म भूयाइ पासओ ।
 पिट्ठियालवस्स दत्तस्स पाव कम्म न बन्धइ ॥९॥
 पढम माणं तयो कया, पय बिट्ठइ सम्मसत्तण ।
 अक्षाणी किं पाही किं वा 'नाहिइ' छेयरावण ॥१०॥
 ओच्छा जाणइ कक्षाणा सोच्छा जाणइ पावण ।
 उभय पि जाणइ सोच्छा ज छय त समत्तरे ॥११॥
 जो जीवे नि न याणाइ अजीवे वि न याणइ ।
 जीवाजात्रे अयाणन्तो कह सो जाहीइ सज्जम ॥१२॥
 जो जीवे वि नियाणइ अजीवे वि नियाणइ ।
 जीवाजात्रे नियाणन्तो सो हु जाहीइ सज्जम ॥१३॥

जया जीवमर्जावे य दो रि ण विद्याणइ ।
 तथा गइ बहुनिह स-वजीवाण जाणइ ॥ १३ ॥
 जया गइ बहुनिह स-वजीवाण जाणइ ।
 तथा पुण्ण च पाप च उच्च मोक्ख च जाणइ ॥ १४ ॥
 जया पुण्ण च पाप च उच्च मोक्ख च जाणइ ।
 तथा निब्बिन्दण भोण जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १५ ॥
 जया निब्बिन्दण भोण जे दिव्वे जे य माणुसे ।
 तथा चयइ सजोग सद्धिमतत्ताहि ॥ १६ ॥
 जया चयइ सजोग सद्धिमतत्ताहि ।
 तथा मुण्डे भविताण पण्यइ अणुगारिण ॥ १७ ॥
 जया मुण्डे भविताण पण्यइ अणुगारिण ।
 तथा सवरमुक्खिं धम्म फासे अणुत्तर ॥ १८ ॥
 जया सवरमुक्खिं धम्म फासे अणुत्तर ।
 तथा धुणइ वम्मथ्य अणोहिक्कुसं वडं ॥ १९ ॥
 जया धुणइ वम्मथ्य अणोहिक्कुसं वडं ।
 तथा सत्तच्चग नाण दमत्ता आभिगच्छइ ॥ २० ॥
 जया सत्तच्चग नाण दमत्ता आभिगच्छइ ।
 तथा लोगमलोग च जिणे जाणइ वेवली ॥ २१ ॥
 जया लोगमलोग च जिणे जाणइ वेवली ।
 तथा जागे निग्गमित्ता सेलेसि पट्टिउज्जइ ॥ २२ ॥
 जया जागे निग्गमित्ता सेलेसि पट्टिउज्जइ ।
 तथा कम्म खविताण सिद्धि गच्छइ नीरमो ॥ २३ ॥
 जया कम्म खविताण सिद्धि गच्छइ नीरमो ।
 तथा लागम-ययत्थो सिद्धो हवइ मासओ ॥ २४ ॥
 मुहमाययत्तम ममणस्स सायाउल्लगस्स निगामत्ताइस्स ।
 उच्छोल्लणापणोअस्स दुल्ला सुगइ तारिणगस्स ॥ २५ ॥

तयोमुगुपदानुस्म वज्रमुपलानिमज्जमरयस्म ।
 परीसद्वे विगतोत्त सुखदा मुगड नारिसगस्म ॥ २७ ॥
 पच्छा पि त पथाया खिन्ना गच्छन्ति अमरमयगा ॥
 जेसि पिओ लघो मज्जमा य राती य वम्मचेर च ॥ २८ ॥
 इच्छेय छज्जाशणिय वम्मदिट्ठी सया जण ।
 बुद्धिह लदितु मत्तमणा वम्मणा १ धिरादिज्जादि ॥ २९ ॥
 ॥ ति पेमि ॥

॥ च-४ धर्मीशणियम्मयगा ममत्ता ॥

॥ पिंडेसण। नाम पचममज्जमयण-पदयो उदेसमा ॥

सपत्त सिक्काशालमि असमन्ता अमुच्छिओ ।
 इमण वम्मोर्गण धलपाण पचेमण ॥ १ ॥
 मे गाप्ते वा नयरे वा गावरम्मगयो मुणी ।
 अरे मन्दमणुत्तिग्गो आउफिरत्तण चेयसा ॥ २ ॥
 पुरगो जुगमायाए पट्टमाणो मदि चर ।
 यज्जतो रीयागियाए पाणं य दग्गद्विय ॥ ३ ॥
 ओशाय थिमम द्याणु विज्जल परियज्जण ।
 सज्जेण न गच्छेज्जा विज्जमाण पराक्कम ॥ ४ ॥
 पयट्ठत्त य मे तरथ पक्कत्तत्त ॥ सज्जण ।
 हिमेज्ज पाणभूयाइ नसे अदुय थायरे ॥ ५ ॥
 तम्हा नण न गच्छेज्जा सज्जण सुममाणि ।
 सह अन्तेण मग्गेण जयमउ पराक्कम ॥ ६ ॥
 इद्दाल दारियं गामि तुमगाणि च गामध ।
 समरपत्तेहि पाणहि सज्जओ न नइक्कमे ॥ ७ ॥
 न चरेज्ज यासे वासन्त महियाण य पट्ठतिण ।
 महावाए व ध्यायते निगिच्छमपाइमेषु वा ॥ ८ ॥

न चरेज्ज वेसासामन्ते धम्मचेरयमाणुपे ।
 धम्मपारिस्स दंतस्स होज्जा तत्थ विमोत्तिया ॥ ६ ॥
 'अणायणे चरतस्स ससग्गीए अभिक्खणा ।
 होज्ज वयाणा पीला स्वामणम्मि य संसओ ॥ १० ॥
 तम्हा एय यियाणिता वोस दुग्गइववुणं ।
 धज्जए वेमसामत मुणी एगतमस्सिए ॥ ११ ॥
 साण सूइय गार्धि दिस्स गोण ह्ये गय ।
 सव्विम्भ फलह जुज्ज दूरओ परिचज्जए ॥ १२ ॥
 अणुत्तए नाउणए अण्णट्ठिअ अण्णउत्ते ।
 इदियाइ जहाभाग दमइत्ता मुणी चरे ॥ १३ ॥
 दवइयस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य गोप्परे ।
 हसतो नाभिगच्छेज्जा पुल उच्चावय सया ॥ १४ ॥
 आलोय पिग्गल दारं संधि दमभवत्ताणि य ।
 चरंतो न विनिग्गहाए सकट्ठाण विवज्जए ॥ १५ ॥
 र'ना गिहयइण च रहस्सारफिस्सयाण' य ।
 सप्पिलेसकर टाण दूरओ परिचज्जए ॥ १६ ॥
 पडिक्कुट्ठकुल न पविसे माग्गं परिचज्जण ।
 अचिपराकुलं न पविसे चियसा पविसे कुल ॥ १७ ॥
 साणीपायारपिट्ठिय अण्णणा नावपगुरे ।
 कवाढं नो पणोरलेज्जा ओग्गहस्सि अज्जाइया ॥ १८ ॥
 गोयरग्गपयिट्ठो ज' वच्चमुसां न धारए ।
 ओगास फासुय नच्चा अणुअनिय घोमिर ॥ १९ ॥
 नीयदुयार तमस कोट्ठग परिचज्जए ।
 अचक्खुविसओ जत्थ पाणा कुप्पाटिल्लहया ॥ २० ॥

नतय पुष्पाह वीयाह थिपहणाह कोट्टप ।
 घट्टुगोरगित्त उल्ल दट्टुग परिपञ्चप ॥ २१ ॥
 पालम दारम गान्धर्वचञ्चलम यावि कोट्टप ।
 उल्लथिया न पविमै त्रिडिहिराण्ण य मज्जण ॥ २२ ॥
 घसमत्त पलोपञ्जा नाहदुरायलोपय ।
 उल्लुरल ७ चित्तिगाप निपट्टिज्ज अयपिरा ॥ २३ ॥
 अहभूमि ७ गच्छज्जा सोयम्मगमो मुर्त्ति ।
 कुमस्स भूमि जालिता मिय भूमि पत्तमे ॥ २४ ॥
 तत्थेय पडिहिराञ्जा भूमिमाग विपक्कमो ।
 तिणाणस्स य यच्चस्स सत्ताग परिपञ्चप ॥ २५ ॥
 दग्गमट्टिक्कयायाने वीयाणि हरियाणि य ।
 परिपञ्चतो चिट्टुरना सति पट्टियम्ममहिप ॥ २६ ॥
 तत्थ से चिट्टुमाणस्स आत्ते पाणुमोयण ।
 अक्कपिय न वेत्तिहज्जा, पट्टिगाहञ्ज कलिय ॥ २७ ॥
 आत्तेनी तिशा तत्थ परिमाडञ्ज मोयण ।
 विन्निय पट्टियाहक्क न मे वप्पह तारिस् ॥ २८ ॥
 समहभागी पाणाणि वीयाणि हरियाणि य ।
 आनजमक्कं नत्था टारिस् पट्टियञ्चप ॥ २९ ॥
 साहदट्ट निक्कियपित्ताने मन्निस्स घट्टियाणि य ।
 तत्थेय समगट्टाण उदगं मपणाहिया ॥ ३० ॥
 चाणाहहत्ता वत्तहत्ता आहट्ट पाणुमोयण ।
 त्तिनिय पट्टियाहक्क न मे वप्पह तारिस् ॥ ३१ ॥
 पुरेयस्सेण हत्थेण दग्गीय भायणेण या ।
 त्रि तय पट्टियाहक्क न मे वप्पह तारिस् ॥ ३२ ॥
 एय उल्लउल्ल मन्निजिह्म मसरक्के मट्टियाऊमे ।
 हरियाल त्तिगुल्लुप मणोमिण्ण अज्जणे मोणे ॥ ३३ ॥

नेत्यप्रिणयसेटिय मोरद्विपिट्टुङ्कसुसवय य ।
 उड्ढिमससट्टे समट्टे चेय थोद्धवे ॥ ३८ ॥
 अससट्टेण हट्ठेण न चीप भायसेण वा ।
 दिज्जमाण पडिच्छेज्जा ज तत्थसणिय भवे ॥ ३९ ॥
 दोणह तु भुज्जमाणेण एगे तत्थ निमतए ।
 दिज्जमाण न इच्छेज्जा छ द से पटिलेहए ॥ ४० ॥
 दोणह तु भुज्जमाणेण दा त्रि तत्थ निमतए ।
 दिज्जमाण पडिच्छेज्जा ज तत्थेसणिय भवे ॥ ४१ ॥
 गुप्तिणीए उघन्नथ विदिह पाप्मोयण ।
 भुज्जमाण त्रिज्जेज्जा भुत्तसेम पडिच्छए ॥ ४२ ॥
 सिधा य समणट्टाए गुप्तिणी कालमासिणी ।
 उड्ढिया या निसीपज्जा निससा या पुण्डुए ॥ ४३ ॥
 त भवे भत्तापाण ॥ सज्जयाण अक्खिय ।
 दितिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस् ॥ ४४ ॥
 धणण पिज्जमाणी दारण या कुमारिय ।
 त निक्खमिअ राअत आहरे ज्ञाणभोवण ॥ ४५ ॥
 त भवे भत्तापाण तु सज्जयाण अक्खिय ।
 दितिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस् ॥ ४६ ॥
 ज भवे भत्तापाण तु कप्पाक्खणिमि सकिय ।
 त्रितिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस् ॥ ४७ ॥
 दग्गधारण पणिय तीसाए पीढण वा ।
 लोढेण वा वि लेवेण सिलेसेण घ केणइ ॥ ४८ ॥
 त च उग्गिदिआ तिज्जा समणट्टाए ॥ दावए ।
 दितिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस् ॥ ४९ ॥
 असण पाएण वा वि ग्गाइम माइम तहा ।
 ज जाणेज्ज मुणेज्जा या दाणट्टा एगए इम ॥ ५० ॥

तारिमं भक्तपाण तु सजयाण अकण्ठिय ।
 द्वितिय पडियाइफने न मे कण्ठ तारिम ॥ ४८ ॥
 असण पाणमं या पि खाइम साइम तहा ।
 ज जायेज्ज सुणेज्जा या पुण्णट्टा पण्ड इम ॥ ४९ ॥
 ते भवे भक्तपाण तु सजयाण अकण्ठिय ।
 द्वितिय पडियाइफने न मे कण्ठ तारिम ॥ ५० ॥
 असण पाणमं या पि खाइम साइम तहा ।
 ज जायेज्ज सुणेज्जा या पण्णिमट्टा पण्ड इम ॥ ५१ ॥
 ते भवे भक्तपाण तु सजयाण अकण्ठिय ।
 द्वितिय पडियाइफने न मे कण्ठ तारिम ॥ ५२ ॥
 असण पाणमं या पि खाइम साइम तहा ।
 ज जायेज्ज सुणेज्जा या समणट्टा पण्ड इम ॥ ५३ ॥
 ते भवे भक्तपाण तु सजयाण अकण्ठिय ।
 द्वितिय पडियाइफने न मे कण्ठ तारिम ॥ ५४ ॥
 उदेनिय कीयण्ड पूरकम्मं च आइये ।
 अज्जायत्तामिच्च माम्माय च यज्जण ॥ ५५ ॥
 उदगमं से अ पुच्छेज्जा वम्मट्टा येण या वड ।
 सोया निस्सविय सुट्ट पडिगाहेज्ज सजण ॥ ५६ ॥
 असण पाणमं या पि खाइम साइम तहा ।
 पुण्णेसु होज्ज उग्गीस कीणसु हण्णिमु या ॥ ५७ ॥
 ते भवे भक्तपाण तु सजयाण अकण्ठिय ।
 द्वितिय पडियाइफने न मे कण्ठ तारिम ॥ ५८ ॥
 असण पाणमं या पि खाइम साइम तहा ।
 उदगमि णोत्त निक्खिमा उत्तिगणमोसु या ॥ ५९ ॥
 ते भवे भक्तपाण तु सजयाण अकण्ठिय ।
 द्वितिय पडियाइफने न मे कण्ठ तारिम ॥ ६० ॥

असण पाणुण या वि खाइम भाइम तहा ।

'अगणिमि होज्ज निमिअत्त त च सघटिया दए ॥ ६१ ॥

त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकण्विय ।

दितिय पडियाइफये न मे कण्ह तारिस ॥ ६२ ॥

एवं उम्सफियया भोसविया उज्जालिया पज्जालिया निव्याविया

उदिमचिया निम्सिचिया उद्वत्तिया भोयारिया दए ॥ ६३ ॥

त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकण्विय ।

दितिय पडियाइफये न मे कण्ह तारिस ॥ ६४ ॥

होज्ज कट्टु सित या वि इहालं या वि एगया ।

उत्तिय सकमट्टाण न च होज्ज चलाचल ॥ ६५ ॥

न नेण मिक्खू मच्छेज्जा ण्हो तत्थ अमज्जमो ।

गम्भीर भुत्तिर येध सर्दिदियसमाहिण ॥ ६६ ॥

विस्सेणि फलग पील उत्तदिशाणमायहे ।

मचकील च पासाय समणट्टाण य दायण ॥ ६७ ॥

दुरुहमाणी पयटेज्जा दत्थ पाये य लमए ।

पुत्तधिर्जाये वि हिमेज्जा जे य ते निस्सिया जबा^१ ॥ ६८ ॥

एयारिसे महादासे जाणिऊण महेतियो ।

तम्हा मालोदड मिक्ख न पडिगेव्हति सजया ॥ ६९ ॥

कद मूल पलय या आम छिन्न य सत्तिर ।

तुयाग सिंगवेर च आमग परिचज्जए ॥ ७० ॥

तद्देय सत्तुचुण्णाइ कोलचुण्णाइ आउले ।

मफकुत्ति फाणिय पूय अन्न या वि तहाविह ॥ ७१ ॥

विवायमाणो पसदं रएण परिफासियं ।

दितिय पडियाइफये न मे कण्ह तारिस ॥ ७२ ॥

यदुपद्रव्यं योगलं अणिमित्तं वा यदुपद्रव्यं ।
 अथि वयं तित्थुष पित्तं उ-ह्नुमहे च मिषलि ॥ ७३ ॥
 अथ मिषा भोग्यजाणं बहुउ-नयधम्मिणं ।
 द्वितियं पट्टियाइयत्ते न मे कप्पइ तारिस् ॥ ७४ ॥
 तद्देवुच्चायय पाणा अदुवा चारधाअण ।
 ससेइम चाउलोदगं अदुवाधोअं त्रियज्जणं ॥ ७५ ॥
 जं जाणेअ चिराधोय मईयं दमयेण वा ।
 पट्टिपुच्छिज्जणं मोषा वा जं च निम्मवियं भवे ॥ ७६ ॥
 अजीय परिणयं नया पट्टिगाहज्जं मनयं ।
 अहं सत्रियं भवज्जा अस्ताइस्ताणं रोयणं ॥ ७७ ॥
 धोयमासायणद्वयं इत्थंमग्निं दत्तादि मे ।
 मा मे अथयिलं पूरं नालं तण्हयिस्सिणं ॥ ७८ ॥
 तं च अथयिलं पूरं नालं तण्हयिस्सिणं ।
 द्वितियं पट्टियाइयत्ते न मे कप्पइ तारिस् ॥ ७९ ॥
 न च दोजं अकामेण विमलणं पट्टि-द्वयं ।
 न अप्पणां न पिपे तो वि अन्नस्स दापणं ॥ ८० ॥
 एगंतमयकमिन्ता अविस्सं पट्टिलहिवा ।
 जयं पट्टियेज्जा पट्टियं पट्टियमे ॥ ८१ ॥
 सिपा यं गोयग्गमग्गो इ-द्वेज्जा पग्गिभोसुअं ।
 कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पट्टिक्कोट्टिणाणं पातुय ॥ ८२ ॥
 अणुप्रविष्टुं महापी पट्टिच्छुण्णमिन्तं मण्डे ।
 इत्थं सवमज्जिता तत्थं भुंजिअं संजणं ॥ ८३ ॥
 तत्थं से भुजमाणस्स अट्टियं कण्ठमो तिवा ।
 तण्कट्टमण्डरे वा विं नने वा वि तदाविह ॥ ८४ ॥

त उक्त्वित्तु न निमित्ते आसत्तु न दृष्टम् ।
 हृदये न गच्छेत्तु गतमवकमे ॥ ८५ ॥
 एतत्तु कर्मिणा अविता पटितेति ।
 जय परिदृष्टे जा परिदृष्टे पटिते ॥ ८६ ॥
 सिया य भिक्कु इन्द्रेजा संजमागम्म भोत्तुम् ।
 सपिण्डपायमागम्म उदुप पटितेति ॥ ८७ ॥
 धिक्कण पत्तिस्ता सगासे गुणो मुणी ।
 इरियापत्तिगायाय आगच्छो य पटिते ॥ ८८ ॥
 आभोपत्ता न सीसे अइयार जहकम् ।
 गमणागमणे चेत्तु भत्तपाणे य राजप ॥ ८९ ॥
 उज्जुवन्नो जणु पग्गो अव्वक्खित्तेण वियसा ।
 आलोप गुरसगासे ज जहा गहिय भरे ॥ ९० ॥
 त लम्ममाणेइय होजा पुत्ति पक्का य ज फड ।
 पुणे पटिते तस्स गोसिद्धो चित्तपइम ॥ ९१ ॥
 अहो जिणेहिऽसाज्जा विस्सी माहण वेसिया ।
 मोक्कसत्तु हण्णहेउत्तु माहुत्तेस्स धम्मणा ॥ ९२ ॥
 नमोक्कारण पारेत्ता करेत्ता जिणस य ।
 सज्जाय पटित्ताण धीममेज्ज रत्तु मुणी ॥ ९३ ॥
 धीसमतो इम चित्ते हियमदु ताममट्टिजो ।
 जइ मे अलुग्गह पुज्जा साह होज्जामि तारिओ ॥ ९४ ॥
 साहया तो चियत्तेण निमनज्ज जहकम् ।
 जइ तत्थ वेइ इच्छेज्जा तेहि सद्धि तु भुजप ॥ ९५ ॥
 अह फोइ न इच्छेज्जा ततो भुजज पक्कओ ।
 आलोप भायणे माह नय अपरिसाडिय ॥ ९६ ॥

तद्देवुश्चावया पाणा भक्तद्वय समागया ।
 तउज्जुय न गन्दिज्जा जयमेव परकमे ॥ ७ ॥
 गोयरगगपविट्टो उ न निसीपज्ज कत्थइ ।
 कह च न परयेज्जा चिट्ठित्ताण थ सज्जण ॥ ८ ॥
 अगल फलिह दार कधाउ वा वि सज्जण ।
 अवलविया न चिट्ठज्जा गोयरगगमा मुणी ॥ ९ ॥
 समण माहण वा वि किविण वा वणीमग ।
 उवसकमत भक्तद्व पाणद्वय थ सज्जण ॥ १० ॥
 त अइवमित्तु न पयिसे न चिट्ठे चक्खुगेत्यरे ।
 एगतमवक्कमित्ता त थ चिट्ठेज्ज सज्जण ॥ ११ ॥
 धणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुमयस्स वा ।
 अप्पत्तिप सिया होज्जा लहुत्ता पययणस्स वा ॥ १२ ॥
 पडिसेहिण थ दिअे वा तमा तम्म नियत्तिण ।
 उवसकमेज्ज भक्तद्व पाणद्वय थ सज्जण ॥ १३ ॥
 उप्पल पडम वा वि पुमुय वा मगदत्तिप ।
 अन्न वा पुण्हसत्ति त च सल्लुविया दण ॥ १४ ॥
 त भवे भक्तगणो तु सज्जयाण अक्खिय ।
 दित्तिप पडियाहक्खे न मे कप्पइ तान्ति ॥ १५ ॥
 उप्पल पडम वा वि पुमुय वा मगदत्तिप ।
 अन्न वा पुण्हसत्ति त च ममदिया दण ॥ १६ ॥
 त भवे भक्तगण तु सज्जयाण अक्खिय ।
 दित्तिप पडियाहक्खे न मे कप्पइ तान्ति ॥ १७ ॥
 सालुय वा तिरालिय पुमुय उणलनालिय ।
 मुणालिय सासवनालिय उच्चुल्ल अन्निउल्ल ॥ १८ ॥
 तरुण वा पवाल कक्खस्स तण्णस्स वा ।
 अन्नस्स वा वि हट्ठियस्स आमग परिउज्जण ॥ १९ ॥

तरुणिय या छिवाहिं आमिय मज्जिय सह ।
 दित्तिप पट्ठिवाइफणं १ मे कण्ठ ताग्गिं १२०१
 तथा 'कोलमणुम्मिच्च वेदुय वासयनाग्गि ।
 तिलगण्णइग नीम आमग पण्विज्जण ॥२०॥
 तद्देय खाउल पिट्ट वियड या तत्तनिन्नुट ।
 तिलपिट्टपूरपिएणाग आमग पण्विज्जण १२०२
 कविट्ठं माउग्गिं च मूलग मूग्गसत्तिय ।
 आम असत्थपरित्थं मणुमा त्रि न पयस ॥२०॥
 तद्देय फलमधूणि धीयमधूणि जाणिया ।
 त्रिहेलंग पियालं च आमग पण्विज्जण ॥२०॥
 समुयाग चरे भिक्खु कुल उवाचय मत्त ।
 नीय पुलमइक्कम्म ऊसड नाभिधारण ॥२०॥
 अग्गीणो त्रिणिममेज्जा न विमीण-उ ६०३
 अमुच्छिओ भोयणम्मि माय ने एसु-उ ॥२०॥
 थहु पदधरे अत्थि त्रिचिह त्ताइममउ
 न तत्थ पट्ठिओ कुण्ड इच्छा त्रिउ ६०४
 सवणासणवत्थ या मत्तपाण प ६०५
 अदित्तस म कुण्डा पयवत्ते ६०६
 इधिय पुरिय या वि उहर या ६०७
 यदमाला न आपज्जा नो य ६०८
 जे न पदे न से कुण्ड यत्थि ६०९
 पयम-नेसमाणम्म माम ६१०
 सिवा एगइओ सट्ठे सोम ६११
 मा मेय वाइये मत्त ददु ६१२

अस्तद्वागुरुभो लुब्धो बहु पापं पशु-उह ।
 दुत्तोमजो य मे होइ नि-यागं च न गच्छेह ॥ ३२ ॥
 सिया पगइओ लज्जु त्रिविह पाणभोयण ।
 भइग भइग भोषा त्रियण्ण त्रिरसमाहरे ॥ ३३ ॥
 जाणतु ता इमे समत्ता आययट्ठी अय मुणी ।
 सतुट्ठो मेघए पन लहविस्सी मुत्तामणो ॥ ३४ ॥
 पूयणट्ठा जलोकामी माणसमाणकामए ।
 बहु पसंउई पाउ मायासरल च कु-उह ॥ ३५ ॥
 सुर वा मेरु वा पि अ-न वा मज्जण रस्स ।
 ससक्ख न पिघे भियखू जस साग्गखमण्णो ॥ ३६ ॥
 पियण पगओ तेणो न मे कोइ त्रियाणइ ।
 तस्स पस्सह दोसाइ त्रियडिं च सुणेह मे ॥ ३७ ॥
 षट्ठइ लोडिया तस्स मायामोस च मिन्नुणो ।
 अयसो य अनि-यागं तयय च अमाहुया ॥ ३८ ॥
 निच्छुयिगो जहा तेणो अत्तक्कमेहि दुम्मई ।
 तारिसो मरणते त्रि नाराहेइ सउर ॥ ३९ ॥
 आयटिण नाराहेइ समणे यात्रि तारिसे ।
 मिहत्था त्रि ण गग्गतिं जेण जाणति नारिस्स ॥ ४० ॥
 एष ॥ अगुणप्पटी गुणाण च त्रियज्जओ ।
 तारिसो मरणते त्रि नाराहेइ सधर ॥ ४१ ॥
 तथं कुट्टइ मेहानी पणीय वज्जए रस ।
 मज्जापेमायविग्गो तथस्मी अइउड्डमो ॥ ४२ ॥
 तस्स पम्मह कल्लाण श्चयेगसाहुपूइय ।
 पित्तं अ-शमज्जं त्रिसहस्स मणोइ मे ॥ ४३ ॥

पयं तु 'गुणप्यही अगुणारा च विपज्जओ ।
 तारिसे मरणात्ति चाराहेह सयर ॥ ४३ ॥
 चापरिय आगहेह समणे यावि तारिसे ।
 गिहत्था पि मा पूयन्ति ते मा ज्ञाणाति तारिस्मि ॥ ४४ ॥
 सयसणे 'वसनेणे भयसणे य जे नर ।
 आचारभाषतणे य बुध्यइ देवविधिस्म ॥ ४५ ॥
 लसंय वि देयत्त उयसणे देवविधिस्म ।
 तस्येवि मे न याणाइ विं मे किच्चा इम फल ॥ ४६ ॥
 तसो पि मे चइत्ताण मग्गिणी पल्लमूअय ।
 मय्य तिरिक्कणोणि या बोदी अत्थ सुदुल्लाहा ॥ ४७ ॥
 एय च दग्ग दट्ठणा नायपुत्तण भासिय ।
 अणुमाय पि महावी मायामोम विपज्जए ॥ ४८ ॥
 निक्खिउण मिक्खंसणभोहिं सज्जयाण बुद्धाल सगामे ।
 तत्थ मिक्खु सु'पणिहिइविण तिग्गलज्जगुणय
 विहरेज्जासि ॥ ४९ ॥ त्ति भेमि ॥

॥ पचमज्जयणुस्म विडेसणण औओ उन्देसओ समणे ॥

॥ महव्विपापार कइ। (धम्मत्थकाव) नाम छट्ठमज्जपय ॥

नाणदससुम्भय सचमे य तवे रय ।
 गणिमागमसपय उज्जाणुमि ममोसठ ॥ १ ॥
 रायाणो रायमज्ज य माहण अदुर खत्तिया ।
 पुत्तानि निहयणणो कह मे आचारसोयरो ॥ २ ॥
 तेमि सा निहुओ दन्तो मय्यभूयमुदायणो ।
 गिरागए मुममाउसो आइकयइ विपकयणो ॥ ३ ॥

हरि धम्मस्यजागानं निर्गन्धानं सुणेणं मे ।
 आयासगोयं भीम सयत्तं दुरिद्विष ॥४॥
 नगरं परित्थं युत्तं जं लोप परमदुत्तर ।
 विउल्लङ्घणभाहम्मं ७ भूय ७ भविस्सइ ॥५॥
 सत्तुव्वगवियत्ताणां पाहियत्तां च जे गुणा ।
 आनदपुट्टिया कायत्थां न सुणेणं जहा सहा ॥६॥
 दत्तं अट्टं यं ठाणां जाह पासोऽपरजम्हइ ।
 सत्थं अण्णयं ठाणे निग्गयत्ताओ भम्मइ ॥७॥
 धयच्छं कायच्छं अक्खो गिदिभागानं ।
 पलियइनिसेऽज्जा यं तिग्गानं मोक्षयज्जगं ॥८॥
 सत्थिमं पट्ठमं ठाणं महार्यारेणं वसियं ।
 भूइत्तां निउणां निट्ठां सत्तुभूएस्तु सज्जगो ॥ ९ ॥
 जावति लोप पाणां सत्तां अदुव थायरा ।
 ते जाणमज्जाणं या न दणे रो यं थायए ॥ १० ॥
 सत्थजीवा वि इच्छति जीविउं न मरिज्जिउं ।
 तम्हा पाणवद्दं घोरं निग्गथां यज्जयति ना ॥ ११ ॥
 अण्णगट्ठा परट्ठां यां काहां यां जइ यां भया ।
 हिंसणं न मुसं यूया नो वि अणं ययावए ॥ १२ ॥
 मुत्तायाओ यं रागमि सत्तुसाहं हिं गरदिओ ।
 अविस्सासो यं भूयाणां तम्हा मांमं विउत्तए ॥ १३ ॥
 चित्तमतमचित्तं यां थप्पं यां सइ यां यट्ठं ।
 दत्तसोहणमेत्तं पि ओग्गहसि अत्ताइया ॥ १४ ॥
 तं जणपणां न गेणहनि नां वि निग्गदाउणं परं ।
 अणं यां निग्गदमागं पि नाणुज्जागतिं सज्जया ॥ १५ ॥
 अयमच्चरियं घोरं पमायं दुरिद्विषं ।
 नायति मुमीं लोपं मेयाययल्लयज्जिणा ॥ १६ ॥

मूलमेयमदम्भस्तं महादायसमुन्मय ।
 तम्हा मेदुगुमन्मग निगवा यज्जयति सा ॥ १७ ॥
 विदुमुन्मेदम लोका लेह सपि च पादिय ।
 १ ते सतिदिमिच्छति नायपुत्तयशोरया ॥ १८ ॥
 तोहस्तेम अणुणामा मग अययरासयि ।
 जे सिया सधिदीकामे गिरी, पम्पण न से ॥ १९ ॥
 ज पि य थ य पाय व्य कर्म्म पायपुत्तग ।
 न पि म्भमलज्जहा धारति परिहरति य ॥ २० ॥
 न मो पत्तिगदा पुत्ता नायपुत्त १ माइग ।
 मुच्छा पत्तिगदा पुत्तो इह पुत्त महेसिया ॥ २१ ॥
 खण्यपुत्तिया पुत्ता मरम्भपत्तिगदा ।
 अपि अण्णो वि हम्मि नायरनि ममाइय ॥ २२ ॥
 अहो निध तथाकम्म मरम्भपुत्तेहि पत्तिगय ।
 जा य लज्जासमा यित्ति पम्भरा च भोयण ॥ २३ ॥
 मत्तिमे सुदुमा पादा तमा अदुव धाररा ।
 जाइ राधो अण्णतो कदमेसिय उर ॥ २४ ॥
 उदुत्त न पीयससरा पादा निधदिया मत्ति ।
 दिआ ताइ विष्णुत्तमा राधो मत्थ कद मरे ॥ २५ ॥
 पयं न दाम म्भट्टा न नायपुत्तण मासिय ।
 सग्गाहार न भुजानि निगवा राइभोयण ॥ २६ ॥
 पुट्टियिवाय १ दिगति मग्गमा पयम वायसा ।
 तिपिहण पम्भज्जेय मग्गया मुसमादिया ॥ २७ ॥
 पुट्टियिवाय विहिंसता हिमइ उ मयम्मिय ।
 मत्ते य विपिहे वापो चम्पु मे य अरक्खुमे ॥ २८ ॥
 तम्हा एव निपादिना दामं दुग्गारवहण ।
 पुत्तिरायममारंभ आवज्जेयाप यज्जय ॥ २९ ॥

आउफाय न हिंसति मणसा वयस कायसा ।
 त्रिपिहेण करणजोएण सजया सुसमाहिया ॥ ३० ॥
 आउफाय त्रिहिंसतो हिंसइ उ तयम्मिण ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ ३१ ॥
 तम्हा एय त्रियाणित्ता दोस दुग्गइवट्ठमा ।
 आउफायसमारभ जावज्जीवाए यज्जए ॥ ३२ ॥
 जायतेय न इच्छति पायग जलइत्तए ।
 तिक्खमणयर सत्थे सव्वजो वि दुरासय ॥ ३३ ॥
 पाइया पटिण वा वि उइदं णणुविसामयि ।
 अहे दाहिणओ या वि दहे उत्तरओ वि य ॥ ३४ ॥
 भूयाणमेसमाघाओ हव्वयाहो न ससओ ।
 त पइयपयावट्ठा सजया त्रिचि नारमे ॥ ३५ ॥
 तम्हा एय त्रियाणित्ता दोस दुग्गइउइदण ।
 सेउफायसमारभ जावज्जीवाए यज्जए ॥ ३६ ॥
 अनिलस्स समारभ बुद्धा मनेति तारिस ।
 सायज्जउट्ठा येय नेय ताइहिं सेरिय ॥ ३७ ॥
 तालियटेण पसेण सभ्धाणिहुयणेण वा ।
 न ते वीइउमिच्छति वीयावेऊण वा पर ॥ ३८ ॥
 ज पि यत्थ य पाय वा कथल पायपुट्ठमा ।
 न ते पायमुईरणि, जय परिहरति य ॥ ३९ ॥
 तम्हा एय त्रियाणिभा दोस दुग्गइवट्ठमा ।
 वाउफायसमारभ जावज्जीवाए यज्जए ॥ ४० ॥
 यणस्सइ न हिंसति मणसा वयस कायसा ।
 त्रिपिहेण करणजोएण सजया सुसमाहिया ॥ ४१ ॥
 यणस्सइ त्रिहिंसतो हिंसइ उ तयम्मिण ।
 तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥ ४२ ॥

गभीरविजया पण पाणा लुपच्छिलेहगा ।
 आसदीपक्षिर्यको य पयमद्व विद्यजिजया ॥ ५६ ॥
 गौयरगगपट्टिद्वस्म निसेज्जा जरस वप्पइ ।
 इज्जेरिसमणावार भावज्जइ अयोपिय ॥ ५७ ॥
 त्रियत्ता वेमच्चैरस्स पाणाणा च यद्दे ग्हो ।
 घणीमगपट्टिग्घाओ पट्टिकोहो अगाग्गिा ॥ ५८ ॥
 अगुक्की यमच्चैरस्म इत्थीओ धावि सक्का ।
 कुसीलपट्टदण टाण दूरओ परियज्जप ॥ ५९ ॥
 तिग्गहमन्नयरागस्स निसेज्जा जरस वप्पइ ।
 जराए जमिभूयस्म पाहियस्स तथस्सिणो ॥ ६० ॥
 पाहिओ धा अरोगी धा सिणाण ओ उ पत्थए ।
 धुक्कतो होइ आयासे, अद्दा हवइ सज्जमे ॥ ६१ ॥
 सतिमे सुद्धमा पाणा घस्तामु भिल्लुगागु य ।
 जे उ भिक्खू सिणायतो वियदेणुप्पत्तायए ॥ ६२ ॥
 तम्हा ते ऽ सिणायति सीण्ण उल्लिखेण धा ।
 जावज्जीय यय घोरे असिणाणमट्टिग्गा ॥ ६३ ॥
 सिणाणे अदुया वक्क व्जोद्ध पउमयाणि य ।
 गायन्सु चट्टणट्टाप नायरति कथाइ वि ॥ ६४ ॥
 नणिणस्स आ वि भुद्धस्स टीहरोमनहसिणो ।
 मेहुणा उवसतस्स विं विभूसाए कारिय ॥ ६५ ॥
 विभूसावसिय भिक्खू कम्म वज्जइ चिक्कणा ।
 ससारसायरे घोरे जेण पडइ दुरुत्तरे ॥ ६६ ॥
 विभूसावसिय चेय धुद्धा मन्नंति तारिस्स ।
 सावज्जयद्दुल्लं चैय नेय ताहिं सेविय ॥ ६७ ॥

खवैति अप्पाणममोहदसिणो ।

तवे रया सज्जमअज्जवे गुणे ।

धुएति पावाइ पुरेकडाइ

नराइ पावाइ न ते करेति ॥ ६८ ॥

सओयसता अममा अञ्चिचला

मविज्जविज्जाणुगया जयसिणो ।

उउप्पसंघे तिमले य चदिमा

सिद्धि तिमणाइ उचेंति ताइयो ॥ ६९ ॥ त्ति त्रेमि ॥

॥ छट्टमहिहियायारइज्जकयण समत्त ॥

॥ वक्कसुद्धी नाम मत्तममज्जकयण ॥

छडएह छनु भासाग परिसखाय वएणव ।

दोगह तु त्रिणय सिक्कमे दो न भासेज्ज मज्जसो ॥ १ ॥

जा य सद्धा अज्जत्ता सद्धामोसा य जा मुसा ।

ना य बुद्धेहिउणाइएणा न त भासेज्ज पण्ण ॥ २ ॥

असद्धमोस सद्ध च अज्जत्तमकफ्स ।

समुप्पहमसण्डि गिर भामेज्ज पण्ण ॥ ३ ॥

एय च अट्टमन वा ज तु नामेइ सासय ।

स भास गद्धमोम पि त पि धीरो त्रियज्जण ॥ ४ ॥

विनह पि तहामुत्ति ज गिर भामण नरो ।

तम्हा सो पुट्टो पावेण किं पुण जा मुस वण ॥ ५ ॥

तम्हा गच्छामो वक्कतामो अमुग वा रो भविम्मइ ।

अइ वा ण करिम्मामि एसो जा ण करिस्सइ ॥ ६ ॥

एवमाइ उ जा भासा एस्सकालम्मि सकिया ।

मणयाइयमट्टे वा त पि धीरो त्रियज्जण ॥ ७ ॥

अईयम्मि य कालम्मि पञ्चुण्णमणागण ।

जमट्ट तु न चाणैज्जा एउमेय ति ना वण ॥ ८ ॥

अर्हयस्मि य कालस्मि पञ्चुप्पन्नमणागण ।
 जत्थ मक्का भवे ज तु पयमेयं ति नो यण ॥ ६ ॥
 अर्हयस्मि य कालस्मि पञ्चुप्पन्नमणागण ।
 निम्सक्कियं भवे ज तु पयमेयं ति निहिस्से ॥ १० ॥
 तद्देयं फलसा भासा गुम्भूओवघाइणी ।
 सव्वा पि सा न पत्तव्या जसो पायस्स आगमो ॥ ११ ॥
 तद्देयं पाण वाणे सि पट्ठग पट्ठमे सि वा ।
 घाटियं वा पि रोगि सि सेण चोरे सि नो यण ॥ १२ ॥
 पण्ण नेण अट्ठेण परो जेणुयहम्मह ।
 आयात्तायदोमन् नू न त भासेज्ज पणव ॥ १३ ॥
 तद्देयं होले गोले सि साले वा वसुले सि य ।
 वमण वूहण वा पि न त भासेज्ज पणव ॥ १४ ॥
 अज्झिण पज्झिण वा पि अम्मो माउत्तिण सि य ।
 पिठ्ठिण भत्तलेज्ज सि धुण नत्तुण्णिण सि ॥ १५ ॥
 हले हले सि अने सि भट्ठे सामिणि गोमिणि ।
 होलि गोले वसुले सि इत्थिय नेरमालवे ॥ १६ ॥
 नामघेजेण ण वूया इत्थीगोत्तेण वा पुणे ।
 जहारिहमभिगिज्ज आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥ १७ ॥
 अज्जण पज्जण वा पि वण्णो पुरत्तपिउ सि य ।
 माउला भाइसेज्ज सि पुत्ते मत्तुणिय सि य ॥ १८ ॥
 हे हो हले सि अने सि भट्ठे सामिय गोमिय ।
 होल गोता वसुले सि पुरिस नेरमालवे ॥ १९ ॥
 नामघेजेण ण वूया पुरिसगोत्तेण वा पुणे ।
 जहारिहमभिगिज्ज आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥ २० ॥

पचिन्दिवाण पाणाण एस इत्थी अय पुम ।
 जाय ए न विजाणेज्जा ताय जाइ त्ति आलवे ॥ २१ ॥
 तहेय माणुस पसु पक्खिण वा पि सरीसप ।
 धूले पमेइले चउहे पायमिति य नो वण ॥ २२ ॥
 परिवूदत्ति ए वूया वूया उवत्तिप त्ति य ।
 सजाय पीणिप वा वि महाकाय त्ति आलवे ॥ २३ ॥
 तहेय भाजो दोज्जाओ दम्मा गोरहग त्ति य ।
 पादिमा रहजोग्गत्ति नेव भासेज्ज पन्नय ॥ २४ ॥
 जुय गवे त्ति ए वूया धेणु रसदयत्ति य ।
 रहस्से महल्लय वा नि वण सरहये त्ति य ॥ २५ ॥
 तहेय मनुमुज्जाण पय्याणि वणणि य ।
 रुक्खा महल्ल पहाय नेव भासेज्ज पन्नय ॥ २६ ॥
 अल पासायत्तभाण तोरणाग निहाण य ।
 फलिहगलतागण अल उद्गदोणिण ॥ २७ ॥
 पीठप धगवेरे य नगले मइय सिया ।
 जस्तलट्ठी य नामी वा गडिया य अल सिया ॥ २८ ॥
 भासगा सयण जाण होज्जा वा किंचुवस्मण ।
 भूमोवघाट्ठणि भास नेव भासेज्ज पन्नय ॥ २९ ॥
 तहेय मनुमुज्जाण पय्याणि वणणि य ।
 रुक्खा महल्ल पहाय एव भासेज्ज पन्नय ॥ ३० ॥
 जाइमत्ता इमे रुक्खा दीहउट्ठा महाल्लया ।
 पयायसाला विडिमा वण दरिसणित्ति य ॥ ३१ ॥
 तहा फलाइ पकाइ पायवज्जाइ नो वण ।

'असंथडा इमे अया यहुमि-वडिमा' फला ।
 घणज यहुसभूया भूयरूयत्ति चा पुणे ॥ ३३ ॥
 तहेयोमदीणो पक्काओ भीलियाओ छवी इ य ।
 लाहमा भजिमाओ त्ति पिहुसज्जत्ति नो वण ॥ ३४ ॥
 रुदा यहुसभूया धिरा ऊसदा वि य ।
 गम्भियाओ पसूयाओ ससराओ त्ति गालवे ॥ ३५ ॥
 तहेय सखडि नथा किच्च कज्ज ति नो वण ।
 तेणग चा नि घज्जे त्ति सुत्तित्ते त्ति य आयगा ॥ ३६ ॥
 सखडि सखडि धूया पणियट्ठत्ति तेणग ।
 यहुसमाणि तित्थाणि आयगाहा वियागरे ॥ ३७ ॥
 तदा नइओ पुण्णाओ कायत्तिज्जत्ति नो उप ।
 मायाहि तारिमाओ त्ति पाणिपेज्जत्ति नो वण ॥ ३८ ॥
 यहुवाहडा घनाहा यहुसज्जितुप्पिलोद्धमा ।
 यहुवित्थोद्धमा यावि पध भासेज्ज पणथ ॥ ३९ ॥
 तहेय सावज्ज जोग परस्सट्ठाय निट्ठिय ।
 कीरमाण ति या नट्ठया सावज्ज गालवे मुणी ॥ ४० ॥
 सुकडे त्ति सुपक त्ति सुट्ठिने सुदडे मटे ।
 सुनिट्ठिय मुलट्ठे ति सावज्ज यज्जण मुणी ॥ ४१ ॥
 पयत्तपकत्ति य पज्जमालवे
 पयत्तछिअत्ति य छिअमालवे ।
 पयत्तलट्ठत्ति य कम्महेउय
 पहारगाढत्ति य गाढमालवे ॥ ४२ ॥
 स-पुअस परय्य चा अउल नथि गरिम् ।
 अचणियमवत्त-अचियत्त चेउ नो वण ॥ ४३ ॥

सत्रमेय वइस्सामि सत्रमेय ति नो वए ।

अणुग्रीइ सव्व सत्रमेय एव भासेज्ज पणव ॥ ४३ ॥

सुक्कीय चा सुविक्कीय अक्किज रिज्जमेय चा ।

इम गेगह इम मुञ्च पणिय नो त्रियागरे ॥ ४४ ॥

अण्वग्घे वा महग्घे वा वण वा विकप वि वा ।

पणियट्ठे समुण्णने अणउज्ज वियागरे ॥ ४५ ॥

तहेवासजय धीरो आस एहि करेहि वा ।

सय, चिट्ठ, यथाहि त्ति तेव भासेज्ज पणव ॥ ४६ ॥

यहवे इमे असाहु लोए वुच्चति साहुणे ।

न लवे असाहु साहु त्ति साहु साहुत्ति आलवे ॥ ४७ ॥

नाणदसणलवन्न सत्रमे य तत्रे रय ।

एउ गुणसमाउत्त सनय साहुमालने ॥ ४८ ॥

देवाण मणुवाणा च तिरियाणा च युग्गहे ।

अमुवाणा जप्पो होउ मा वा होउ त्ति नो वए ॥ ४९ ॥

घाप्पो उट्ठ व सीउएह ऐम धाय सिय ति वा ।

कया एु होजा पयाणि मा वा होउ त्ति नो वए ॥ ५० ॥

तहेव मेह य एह व माला

न देउ देव त्ति गिर वएज्जा ।

समुच्छिण उधण वा पयोण

वणज्ज वा वुट्ठ उलाहय त्ति ॥ ५१ ॥

अन्तलि मय त्ति ण वूया गुज्याणुवरियत्ति य ।

रिद्धिमत्त नर दिस्स रिद्धिमत्त त्ति जालने ॥ ५२ ॥

तहेव साधज्जणुमोयणी गिरा

ओहारिणी जा य परोरघादिणी ।

से 'कीह लोहा भय हास भाणयो
 न हासमाणो विगिर वषज्जा ॥२४॥
 सवकसुद्धिं समुपहिमा मुणी
 गिर च दुट्ठ वरियज्जप सया ।
 मिय अदुट्ठ अणुधीह भासण
 सयाण मज्जे सहइ पससणा ॥२५॥
 भासाण दोसे य गुणे य जाणिया
 तीसे य दुट्ठे परिचज्जप सया ।
 छसु सजप छावणिप सया जप
 वषज्ज बुद्धे हियमाणुलोमिय ॥२६॥
 परिक्कमासी सुत्तमाहिइदिप
 अउक्कसायावणप अनिदिसप ।
 स निवृत्ते धुत्तमल पुरेकइ
 आराहप लोगमिण तहा पर ॥२७॥ सि वेमि ॥
 - ॥ सत्तम वक्कसुद्धी अङ्कयण समच ॥
 ॥ आचारपणिदिनाम अट्ठममङ्कयण ॥
 आचारपणिहिं लब्धु जहा कायव्य मिक्खुणा ।
 त मे उदाहरिस्सामि आणुपुब्बि सुण्ह मे ॥१॥
 पुट्ठि-दग-अगणि--'मास्य-तण्णकफल-सकीयणा ।
 तसा य पाणा जीव सि इइ पुत्त महेसिणा ॥२॥
 तेहिं अच्छणजोपण निच्च होक्खय सिया ।
 मणसा कायवक्केण एव भवइ संजप ॥३॥
 पुट्ठिं भित्तिं सिल लेउ नेय मिद न सत्तिहे ।
 त्तिविहेण वरणजोपण संजप सुत्तमाहिप ॥४॥

सुद्धपुटवीय न निसीय सखरक्खम्मि य आसणे ।
 पमज्झित्ति निसीयञ्जा जाइत्ता जस्स उग्गाह ॥५॥
 सीओद्दग न सेवेज्जा सिलापुट्ट हिमाणि य ।
 उसिणोद्दग तत्तफामुय पडिगाहेज्ज सजण ॥६॥
 उदउल्ल अण्णणो काय नेव पुट्ठे न सल्लिहे ।
 लसुप्पह तहाभूय नो ए सघट्ठण मुणी ॥७॥
 इगाल अगणिं अग्निं अलाय वा सजोइय ।
 न उजेज्जा न घट्टेज्जा नो ए निजायण मुणी ॥८॥
 तासियदेण पत्तेण साहाण विहुणेण वा ।
 न धीएज्जअण्णणो काय बाहिर वा यि पोग्गल ॥९॥
 तण्णरुक्ख न लिंहेज्जा पल्ल मूल व कम्भसह ।
 आमग पिविह वीय मणसा वि न पत्थण ॥१०॥
 गहणेसु न चिट्ठेज्जा धीएसु हरिप्पसु वा ।
 उदगमि तहा निच्च उत्तिगपण्णेसु वा ॥११॥
 तसे पाणे न हिंसेज्जा वाया अदुव कम्मुणा ।
 उयरओ सअभूणसु पासेज्ज विविह जग ॥१२॥
 अट्ठ सुहुमाइ पहाण जाइ जाणित्तु सनण ।
 दयाहिगारी भूणसु आस चिट्ठ सण्हि वा ॥ १३ ॥
 कयराइ अट्ठ सुहुमाइ ? जाइ पुच्छेज्ज सजण ।
 इमाइ ताइ मेहानी आइफलेज्ज त्रियक्खणे ॥ १४ ॥
 सियोह पुप्फसुद्धुम च पाणुत्तिंग तहेव य ।
 पण्ण वीयहरिय च अडसुद्धुम च अट्ठम ॥ १५ ॥
 एवमेयाणि जाणिता सध्वभावेण सजण ।
 अप्पमत्ते जण निच्च सन्निदियसमाहिण ॥ १६ ॥
 धुव च एहिहेहेज्जा जोगसा पायक्खल्ल ।
 सेज्जमुच्चारभूमि च सवार अदुवासण ॥ १७ ॥

उच्चार पासवणा रोट मिघाणजलिय ।

फासुय पडिलेदिचा परिद्वारेज्ज सजण ॥ १८ ॥

पविसिचु परागार पाणट्टा भोयणस्म वा ।

जय चिट्टे मिय भासे न य रुतेसु मण करे ॥ १९ ॥

पहु सुणेइ फरणेहि उहु अळीहि पळुइ ।

न य विट्ट सुय स-उ भिक्खु अमराउमरिहइ ॥ २० ॥

सुय घा जइ घा दिट्ट न रायेज्जोयघाहय ।

न य कण उवापणा निहिजोग समायरे ॥ २१ ॥

निट्टाणा रसनिज्जुढ भइय पायण ति उ ।

पुट्टो घा पि जपुट्टो घा लाभालाभ ७ निहिसे ॥ २२ ॥

न य भोयणमि गिळो चरे उछ अयपिरो ।

अफासुय न भुंजेज्जा पीयमुदेसियाहउ ॥ २३ ॥

सभिहिं च न पुंजेज्जा अणुमाय पि सजण ।

मुहाजीरी अत्तबरे हयेज्जा जगतिस्सिए ॥ २४ ॥

लुहयिती सुसतुट्ट अणि-छे मुहरे सिया ।

आसुरस न गळटेज्जा तेच्छा १। जिणसासण ॥ २५ ॥

फरणसोस्सेहि सदेहि पम नाभिनिसेसण ।

दाणा कइस फास काणण अहियासण ॥ २६ ॥

सुह पिवास कुसेज्ज सीउगई अरई भय ।

अहियासे अ-उहिओ नेहदुक्ख मणफल ॥ २७ ॥

अवगयमि गाद-चे पुरत्या य अणुग्गण ।

आहारमाइय सव्व मणसा ति न पट १५ ॥ २८ ॥

अतिविणे अचवतो जणभासी मियासणे ।

हव-स उयरे द ते योउ सटु ७ सिमण ॥ २९ ॥

७ वाटिउ परिभवे त्रत्ताण न समुक्कसे ।

१। न म-ज्ज्जा ज-चा तउस्सिउद्धिए ॥ ३० ॥

मे जाग्रा अथाग धा वन्दु आहमिय एव ।
 स्वये त्रिगमप्याग जीय त न ममाथरे ॥ ३ ॥
 अथायार परमम नय मूने न त्रिगव ।
 मुई मया दियमाये अपरिचि जिहति ॥ ३- ॥
 अमोह प्रयग, वृत्ता नायनियस्म, हृणले ।
 त रमिगिम्भ वायाय वम्मुए उयगायए ॥ ३- ॥
 अथुय जीदिथ वया मिदिमगा दियानिया ।
 त्रियिपट्टव भागेमु आउं वमिदिगुग्गणे ॥ ३- ॥
 वल धाम च २५५ सद्धमारोगमपणे ।
 येस दातं ३ त्रिप्राय तदण गा १ वुत्तण १-४ ॥
 जग जाय न पीतइ चार्त्ता चाय न वट्टइ ।
 जायिदिया न दायणि नाय धम्म ममाथरे ॥ ३- ॥
 कोह माण च माये च १५५ च नावपुट्ट-
 यो चकारि दाम उ इन्देता दियपुट्टे २-५ ॥
 कोहो पीइ वतामिह माणो विट्टपुट्टे ।
 माया मिशाणि तासेइ लोहो म- ॥ ३- ॥
 उयममेण दले का माण महयया दि-
 माय वज्रवभाधेण साम गतोवत्त, दिने १-६ ॥
 ओहो य माणो य अमिमहीया गच्छ- ॥ ३- ॥
 वशारि वण वमिणा वमाया मिदि- ॥ ३- ॥
 राहिएपु विगुय वउंउ धुवर्त्त- ॥ ३- ॥
 वुम्भो इय अलीगवर्त्त वुत्ता- ॥ ३- ॥
 निह च १ वहु मनेउता म- ॥ ३- ॥
 मिता वहाणि १ यो मज्ज- ॥ ३- ॥
 पाग च मम- ॥ ३- ॥
 वुत्तो म- ॥ ३- ॥

बहुसुय पञ्जुवासेज्जा पुच्छेज्जत्थविणिच्छय ॥ ४४ ॥
 हत्थ पाय च काय च पणिहाय जिह्दिय ।
 अहीणगुत्तो निसिपसगासे गुरुणो मुणी ॥ ४५ ॥
 न पस्सओ न पुरओ नेव विशाण पिट्ठओ ।
 न य ऊरुं समासेज्जा चिद्धेज्जा गरुणत्तिण ॥ ४६ ॥
 अपुच्छिओ ने भासेज्जा भासमाएस्स अत्तरा ।
 पिट्ठिमस न दापउज्जा मायामोस विवज्जण ॥ ४७ ॥
 अप्पत्तिय जेण सिया आसु कुप्पेज्ज वा परे ।
 सयसो त न भासेज्ज भास अहियगामिणि ॥ ४८ ॥
 दिट्ठ मिय असदिद्ध पट्ठिपुण्ण विय जिय ।
 अपपरिमणुत्तिग्ग भास निसिर अत्तथ ॥ ४९ ॥
 आयारपत्ततिधर दिट्ठियायमहिज्जण ।
 धायविक्खलिय नद्या न त उयहसे मुणी ॥ ५० ॥
 नक्खरा सुमिण जोग विमित्त मत्तमेसज ।
 गिहिणो त न आइक्खे भूयाहिगरण पय ॥ ५१ ॥
 अन्नदु पम्भ लयण मपउज्जा सयणासण ।
 उच्चारभूमिसपन्न इत्थीपसुविचरिज्जय ॥ ५२ ॥
 वितित्ता य भये मेज्जा मारीण न लवे वड ।
 गिहिसयय न कुज्जा कुज्जा साहहिं सयय ॥ ५३ ॥
 जहा कुकुडपोयस्स मिच्च कुललओ भय ।
 एवे खु वमयारिस्स इत्थीविग्गहओ भय ॥ ५४ ॥
 चित्तमिस्ति न निज्जाण नारिं वा सुअलंक्खिय ।
 मक्खर पिच ददूहण दिट्ठिपट्ठिसमाहरे ॥ ५५ ॥
 हत्थपायपट्ठिच्चिन्न कण्णनायविकण्णिय ।
 अवि यामसई नारिं वमवारी विज्जण ॥ ५६ ॥
 विभूता इत्थिससग्गो पणीयरत्तभोयरा ।
 गरत्तत्तगत्तसिस्स पिस नालउड्ड जहा ॥ ५७ ॥

अगपधेममडाग धाम्भयिगवहिय ।
 इत्थीण न ७ निज्माए कामरागियिबुद्धा ॥ ५८ ॥
 विमलानु मणुधेनु पम ७ मिनित्रेमण ।
 अगिध मेरिं दिन्नाथ परिगामे पोमालाण थ ॥ ५९ ॥
 पोमालाण पमिमाग तेमि नञ्चा जहा तहा ।
 विपीयनल्लो विहर मीरभूयण अण्ण ॥ ६० ॥
 जाण सहाण निक्खमो परियायडाणमुत्तम ।
 तमेव अनुपालेज्जा गुणे एववियसम्मप । ॥ ६१ ॥

तथ चिम स्वतमभोगयं च
 सज्जायणो ग व सया अदिट्ठण ।
 सरे व नेणाए समतमाउठे
 अलमण्णो दोर शुभं गरेमि ॥ ६२ ॥
 सज्जायमन्नाणरयस ताडलो
 अयायमावस्त गेययत्त ।
 विगुग्गइ उं मे मल पुरेयड
 समीरिधे ग्गमले थ जाइया ॥ ६३ ॥
 से तारिसे दुपामो तिरिण
 गुणं जुत्त अममे अणिगले ।
 विगणं कम्मचलमि अण्णए
 पण्णिमपुडावामे थ अन्दिमे ॥ ६४ ॥ तिथेमि ॥
 ॥ अहा आवाएणिही अभयं गमते ॥

॥ विगणममाही ताम सज्जमज्जयण-वट्ठो दहेमओ ॥

धमा व कोल न मवयमाया
 गुणमगामे तिलय न निकमे ।

સો યેવ ઝ તાત અમૂરમાયો
 કમ ય યીવત્ત યદ્યાય દોદ ॥ ૧ ॥
 લે યાવિ મંદિતિ ગુર વિદત્તા
 હાત્રે રમે અણ્ણપુ સિ નથા ।
 દીલંતિ મિષ્ણ પદિવજ્જમાણ
 વરતિ આમાયણ સે ગુરુગા ॥ ૨ ॥
 યમાઈપ મન્દા વિ મંદતિ યમ
 હદરા વિ ય જે મયપુસોયવેયા ।
 આયારમેતા ગુણમુદિવળ્યા
 જે દીલિયા સિદિનિય મામ કુજ્જા ॥ ૩ ॥
 જે યાવિ નામ હદર તિ નથા
 આસાયણ સે અદિયાય દોદ ।
 યવાયરિયં પિ હુ દીલયંતો
 નિયછછા જાણપદં નુ મન્દે । ૪ ॥
 આસીવિસો યાવિ પરં મુરદ્દો
 વિં જીવનાસાડ પરં નુ કુજ્જા ।
 આયરિયણાયા પુણ અપસપ્પા
 અવોદિઆસાયણ નત્થિ મોક્ખો ॥ ૫ ॥
 જો પાચગ જલિયમયકમેજ્જા
 આસીવિમ્મ યા વિ હુ પોગ્ગજ્જા ।
 જો યા વિસ ત્વાયદ જીનિયદ્દી
 યસોવમાડસાયણ્યા ગુરુગા ॥ ૬ ॥
 સિયા હુ સે પાગ્ગ જો હથેજ્જા
 આસીવિસો યા કુનિથો ન મક્કોદે ।
 મિયા વિસ હાલલ્લ ન મારે
 ન યાવિ મોક્ખો ગુન્દીસણા ॥ ૭ ॥

ओ वयस्य निरमा भेषमिच्छे
 मुक्तं य मीहे पंडितोदयज्जा ।
 ओ या दय मन्त्रिचमो पदरा
 एमोयमाऽऽसायगया मुक्ता ॥ ८ ॥
 तिया हु मीमेण विरि पि भिरे
 तिया हु मीहो पुत्रिमो न भक्ष्ये ।
 तिया न भिरेज्जा य सत्तिचम
 न चापि मोक्ता मुक्तीलगाय ॥ ९ ॥
 चापरियपाया पुण चणसन्ता
 अपोदि चामायरा नग्धि मोक्तायो ।
 तग्धा चण्णावाहमुदाभिचर्या
 गुण्णमायाभिमुहो रमज्जा ॥ १० ॥
 जहादियग्गी जलगा नममे
 नागाहुंमनपयामिति ।
 एयापरिप उचिदिठ्ठज्जा
 चण्णतनागापगमापि मेनो ॥ ११ ॥
 जग्मत्तिप धम्मपवाह मिस्से
 तत्तत्तिप वेणुएय पडेने ।
 सत्तारप विरसा पजलीमो
 कापगिरा भो मत्ता य निधं ॥ १२ ॥
 सज्जा-दया-अनम-धम्मदा
 चत्ताण्णमागिम्म विरोत्तिट्ठाणं ।
 जे मे गुरु सवयमणुमानयेति
 ते ह गुरु भयये पूययामि ॥ १३ ॥
 जहा निग्गे गयग्घिमामी
 पमानह वेयमभारहे गृ ।

एवायस्मिन् सुवसीतबुद्धिषु

विरायद् सुरमज्जं व ईदो ॥ १३ ॥

जहा ससी फोमुद्जोगजुत्तो

नफत्तत्तारागणपरिमुहप्पा ।

जे सोहद् विमजे अय्यमुक्के

एव गणी सोहद् भिक्खुमज्जे ॥ १५ ॥

महागरा आयस्मिन् महेसी

समाहिजोगे सुवसीतबुद्धिषु ।

सपाविउकामे अनुसराद्

आराहण तासण धम्मकामा ॥ १६ ॥

सोच्चाण मेहावि सुभासियाद्

सुस्समण आयस्मिन् अप्पमत्तो ।

आराहणत्ताण गुणे अणेगे

सो पाघई सिद्धिमणुत्तर ॥ १७ ॥ त्ति वेमि ॥

॥ शुद्धमज्जकयणम्म निणयसमाहीण पम्मो उद्दमेसओ समत्तो ॥

॥ शुद्धमज्जकयण—रीयो उद्देसओ ॥

मूलाओ लघप्पमवो दुमम्स

ग्गधाउ पच्छा समुवेति साहा ।

साहप्पसाहा विम्वति पत्ता

तओ से पुण्ण च फल रसो य ॥ १ ॥

एव धम्मस्य निणओ मूत्ता पम्मो से मोस्सतो ।

जेण किञ्चि सुव सिग्घ निस्सेस चामिगच्छइ ॥ २ ॥

जे य चडे मिण चद्ध दु-याई निवट्ठी महे ।

पुज्जइ से अणिणीयप्पा वट्ठे सायगय जहा ॥ ३ ॥

निणय पि जा उवाएण चोइ जा पुप्पइ नरो ।

जे सिरिमे-व्वति दटण पडिसेइय ॥ ४ ॥

गदेय अग्निपयसा उपययम्मा दया गया ।
 गीमने बुद्धमेवता अभियोगमुपदिष्टा ॥ १ ॥
 गदेय सुविगीयसा उपययम्मा दया गया ।
 गीमने बुद्धमेवता इदं पत्ता महायसा ॥ २ ॥
 गदेय अग्निपयसा गीमने उपययम्मा ।
 दीमने बुद्धमेवता इ पात विगलितिया ॥ ३ ॥
 इदं पत्ता उपदिष्टा अभियोगमुपदिष्टा ॥ ४ ॥
 पत्ता गिवनद, इ सुविगीयसा उपययम्मा ॥ ५ ॥
 गदेय सुविगीयसा गीमने उपययम्मा ।
 गीमने बुद्धमेवता इदं पत्ता महायसा ॥ ६ ॥
 गदेय अग्निपयसा दया उपययम्मा सुययम्मा ।
 दीमने बुद्धमेवता अभियोगमुपदिष्टा ॥ ७ ॥
 गदेय सुविगीयसा दया उपययम्मा सुययम्मा ।
 गीमने बुद्धमेवता इदं पत्ता महायसा ॥ ८ ॥
 अ अभियोगमुपययम्मा सुययम्मा उपययम्मा ।
 गीमने उपययम्मा उपययम्मा अभियोगमुपदिष्टा ॥ ९ ॥
 अभियोगमुपययम्मा पत्ता गीमने उपययम्मा ।
 गीमने उपययम्मा इदं पत्ता महायसा ॥ १० ॥
 गीमने उपययम्मा उपययम्मा अभियोगमुपदिष्टा ॥ ११ ॥
 गीमने उपययम्मा उपययम्मा अभियोगमुपदिष्टा ॥ १२ ॥
 गीमने उपययम्मा उपययम्मा अभियोगमुपदिष्टा ॥ १३ ॥
 गीमने उपययम्मा उपययम्मा अभियोगमुपदिष्टा ॥ १४ ॥
 गीमने उपययम्मा उपययम्मा अभियोगमुपदिष्टा ॥ १५ ॥
 गीमने उपययम्मा उपययम्मा अभियोगमुपदिष्टा ॥ १६ ॥
 गीमने उपययम्मा उपययम्मा अभियोगमुपदिष्टा ॥ १७ ॥
 गीमने उपययम्मा उपययम्मा अभियोगमुपदिष्टा ॥ १८ ॥
 गीमने उपययम्मा उपययम्मा अभियोगमुपदिष्टा ॥ १९ ॥
 गीमने उपययम्मा उपययम्मा अभियोगमुपदिष्टा ॥ २० ॥

नीय सेज्ज गइ ठाण नीय च आमखाणि य ।
 नीय च पाप वदेज्जा नीय कुज्जा य अजलिं ॥ १७ ॥
 सघट्टइत्ता फाएणा तहा उवहिणामनि ।
 खमेह अयराह मे वणज्ज न पुणेो त्ति य ॥ १८ ॥
 दुग्गओ या पओएण चोइओ यहइ रह ।
 पय दुयुद्धि किंणाण पुत्तो पुत्तो पकुट्ठइ ॥ १९ ॥
 आसवते लयने चा न निसेज्जाय पडिस्सुणे ।
 मोत्तूणा आसणा घीरो सुस्सूसाय पडिस्सुणे ॥ २० ॥
 कात्ता छदोअणार च पडिलेहिआण हेउहिं ।
 तेहिं तेहिं उयाएहिं त त सपडियायए ॥ २१ ॥
 विघत्ती अविशीयस्स सपत्ती विणियस्स य ।
 जस्सेय दुहओ नाय सिकर से अमिगच्छइ ॥ २२ ॥
 जे पायि चएडे मइइइदिगार्ये
 पिसुणे नरे साइस हीणपेसणे ।
 अदिट्ठधम्म विणए अनोत्रिए
 असविभागी न हु तस्स मोक्खो ॥ २३ ॥
 जिहेसवत्ती पुण जे गुरुण
 सुयत्थयम्मा विणयमि कोचिया ।
 तरित्तु ते ओहमिण दुरुत्तर
 खवित्तु कम्म गइमुत्तम गया ॥ २४ ॥ त्ति वेमि ॥
 एवमअज्भयणम्म विणयममाहीए निदओ उद्देसगो समत्तो ॥
 ॥ खाममज्भयण—तइया उइसओ ॥
 आयरियमग्गिमिअनियग्गी
 सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा ।
 आलोइय इमियमेव नधा

द्यावापृथ्वी दिव्य वज्रं
 सुम्भुतमादौ वसिष्ठं वज्रं ।
 ब्रह्मापहृष्टं वसिष्ठं वज्रं
 गुरुं तु नामापहृष्टं न पुञ्जो ॥ ७ ॥
 गहनियं विजयं वज्रं
 ब्रह्मं वि व ज वसिष्ठं विष्टं ।
 भीषणं ब्रह्म वज्रं
 मोक्षपदं वज्रं न पुञ्जो ॥ ८ ॥
 अज्ञापयति वज्रं विष्टं
 जयगृह्यं नमुषां व निष्टं ।
 अज्ञापयति वज्रं विष्टं
 लक्ष्मीं व विष्टं वज्रं न पुञ्जो ॥ ९ ॥
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं ।
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं ॥ १० ॥
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं ।
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं ॥ ११ ॥
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं ।
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं ॥ १२ ॥
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं ।
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं ॥ १३ ॥
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं ।
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं ॥ १४ ॥
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं ।
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं
 वसिष्ठं वज्रं वज्रं वज्रं ॥ १५ ॥

जिह्दिण जो सहइ स पुजो ॥ ८ ॥
 अयण्णघाय च परमुत्तस्स
 पन्नवत्तणो पडिणीय च भास ।
 ओहारिणि अणियवारिणि च
 भास न भासेज्ज सया स पुजो ॥ ९ ॥
 अलोदुए अक्कुहए अमाई
 अपिसुणे यात्रि अदीणुत्ति ।
 नो मायए नो वि य भाणियणा
 अणोउदरले य सया स पुजो ॥ १० ॥
 गुणेहि साह, अगुणेहिऽमाह
 गिगहाहि साहगुण मुत्तऽसाह ।
 वियाणिया अप्पगमणएण
 जो रागदोसेहि समो स पुज्जा ॥ ११ ॥
 तहेउ उहरं च मदलंग था
 इत्थी पुम गउइय गिहि था ।
 नो हीलण नो वि य सिमएज्जा
 थम च वोह च थए स पुज्जो ॥ १२ ॥
 जे माणिया सयय माणयति
 जत्तेण कन ध निदेसयति ।
 ते माणए माणरिते तवस्मी
 जिह्दिण सच्चरण स पुज्जा ॥ १३ ॥
 तेमि गुरूण गुणसागराण
 सोऽणए मेह वि सुमासियाइ ।
 चरं मुग्गी पचरण निगुत्ता
 चउक्कसायावगण स पुज्जा ॥ १४ ॥

गुरुमिह सयय पडियरिय मुणी

जिणवयनिडणे^१ अभिगमकुसले ।

धुणिय रयमल पुरेकड

भासुरमडल गइ गण^२ ॥१५॥ त्ति वेमि ॥

॥ एणमअज्झयणम्मस विणयसमाही, तइओ उद्देसओ समत्तो ॥

॥ एणममज्झयणा-चउत्थो उद्देसओ ॥

सुय मे आउस ! तेग भगरया एयमकखाय—इह खलु
थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पएणत्ता ।

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा
पएणत्ता ?

इमे खलु ते थेरेहिं भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा
पएणत्ता त जहा—विणयसमाही, सुयसमाही, तयसमाही,
आयारसमाही ।

विणए सुए तत्रे य आयारे निच्च पडिया ।

अमिरामवसि अण्णाण जे भवति जिइदिया ॥१॥

‘ खडिगहा खलु विणयममाही भयइ, त जहा—अणुसासि
उज्जतो सुस्सुसइ, सम्म सपडियज्जइ, वेयमारहायइ, न य
भयइ अत्तसपगहिण खउत्थ पय भयइ । भयइ य एत्थ
सिलोगो —

पडेइ हियाणुमासणा सुस्सूमइ त च पुणो अदिट्ठए ।

न य मासमएण मज्जइ वियणममाही आययट्ठिए ॥२॥

खडिगहा खलु सुयसमाही भयइ, त जहा—सुय मे
मविस्सइ त्ति अज्जाइयव भयइ, पगगचित्तो मविस्सामि

सि अज्झादयव्व भवइ, अण्णाण ठावइस्सामि सि अज्झादयव्व
भवइ, ठिओ पर ठावइस्सामि सि अज्झादयव्व भवइ, चउत्थ
पय भवइ । भवइ य एत्थ सिलोगो —

नाणमेगग्गचित्तो य ठिओ य ठावइ पर ।

सुयाणि य अहिज्जिता रओ सुयस्समादिप ॥३॥

चउत्तिहा खलु तज्जसमाही भवइ, त जहा—नो इहलोग-
द्वयाए तज्जमहिद्वेज्जा, नो परलोगद्वयाए तथमहिद्वेज्जा, नो कित्ति
घणसहसिलोगद्वयाए तथमहिद्वेज्जा, नन्नत्थ निज्जरद्वयाए
तथमहिद्वेज्जा चउत्थ पय भवइ । भवइ य एत्थ सिलोगो —

यियिहसुखतघोरए य निच्च

भवइ निरासए निज्जरद्विए ।

तथसा घुणइ पुराणपावग

जुत्तो सया तथममादिप ॥४॥

चउत्तिहा खलु आयारसमाही भवइ, त जहा—नो इह
लोगद्वयाए आयारमहिद्वेज्जा, नो परलोगद्वयाए आयारमहिद्वेज्जा
नो कित्तिघणसहसिलोगद्वयाए आयारमहिद्वेज्जा, नन्नत्थ
आरह तेहिं हेऊहि आयारमहिद्वेज्जा चउत्थ पय भवइ । भवइ
य एत्थ सिलोगो —

जिणययणए अतितथे

पडिपुणाययमाययद्विए ।

आयारसमाहिसमुडे

भवइ य दने मायसधए ॥५॥

अभिगम चउरा समाहिओ

मुविमुद्धो सुसमाहियणओ ।

विउलहिय मुहायह पुणे

कुत्तइ सो पयत्तेमाअणो ॥६॥

जाइमरणाउ मुच्चइ

इत्थं च चण्ड स'ग्गो ।

सिद्धे वा मग्गइ सासण

देवो वा अ'परण महिडिण्ण ॥७॥ सि धेमि ॥

॥ एवम विणयसमाही अज्झयण समत्त ॥

॥ समिक्खू न म दसम अज्झयण ॥

निक्खम्ममाणाइ अ बुद्धययणे

णिण चित्तसमाहिओ हवेज्जा ।

इत्थीण यम्म न यावि मच्छे

यत्त नो पडियायइ जे स भिक्खू ॥ ८ ॥

पुदयिं न खणे न खणाय

सीओदग न पिण न पियायण ।

अणणिसत्थ जहा मुनिसिय

त न जले न जलायण जे स भिक्खू ॥ ९ ॥

अनिलेण न धीण न धीयायण

हरियाणि न छि'दे न विन्दायण ।

धीयाणि सया रियज्जयन्तो

सच्चित्त नादायण जे स भिक्खू ॥ १० ॥

यहण तसथायराण होइ

पुदगीतणकट्टुमिस्सियाण ।

तम्हा ओहसिय न भुजे

नो वि पण न वयायण जे स भिक्खू ॥ ११ ॥

रोइय नायपुत्तवणणे

'अ'पसमे मग्गेज्ज छप्पि काण ।

न पर वपञ्जासि अथ कुसीले ।
 जेण्णो कुप्पेज्ज न त वपञ्जा । -
 जाणिय पेत्तय पुण्णपाव
 अत्ताग न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥ १८ ॥
 न जाइमत्त न य रूयमत्त
 न लाममत्त न सुण्ण मत्त ।
 मयाणि सयाणि विवजयतो
 धम्मज्जाणरण य जे स भिक्खू ॥ १९ ॥
 पवेयप अजपय महामुणी
 धम्मे ठिण्णो ठाययइ पर पि ।
 निक्खम्म धज्जेज्ज कुसीलमिण
 न याति हासकुहप जे स भिक्खू ॥ २० ॥
 त वेहपास असुइ असासय
 सया चप निच्चदियद्वियप्पा ।
 छिदिज्ज जाइमरणस्त उधण
 उवेइ भिक्खू अबुणागम गइ ॥ २१ ॥ सि वेमि ॥
 ॥ सभिक्खू अज्झयण दम्म मत्त ॥
 ॥ रइवका चूलिया पदमं ॥

इह एतु मो पव्वइयण उप्पअदुक्खेण सज्जे अरइसमा-
 यअचित्तेण ओहाणुप्पहिण अणोहाइयण चेव हयरस्तिगय-
 कुसपोषपडागभूयाइ इमाइ अहारस ठाणाइ सम्म सवडि-
 लेहियचाइ भवति । त जहा—

इ मो दुस्समाय दुप्पजीयी ॥ १ ॥
 लहुइमगा इत्तरिया गिहीण काममेणा ॥ २ ॥
 भुजो य साइयहुता मणुत्ता ॥ ३ ॥

इम च मे दुक्ख न चिरकालोउट्ठाई मजिस्सइ ॥ ४ ॥

ओमन णपुरकारे ॥ ५ ॥

यनम्म य पडिआयण ॥ ६ ॥

अहरगइयासोउमवया ॥ ७ ॥

दुल्लमे खलु मो ! गितीग धम्मे गिहिवासमज्जे वसताण ॥ ८ ॥

आयके से यहाय होइ ॥ ९ ॥

सङ्कप्प से यहाय होइ ॥ १० ॥

सोयकेसे गिहिवासे निदउक्केसे परिआण ॥ ११ ॥

बंध गिहिवासे मोक्के परिआण ॥ १२ ॥

सानेअ गिहिवासे अणउज्जे परिआण ॥ १३ ॥

बहुसाहारणा गिहीणा काममेणा ॥ १४ ॥

पत्तेय पुएणयाव ॥ १५ ॥

अणिअ खलु मो मणुयाण जीरिए कुसग्गजलनिंदुचचले ॥ १६ ॥

यहु च खलु मो ! राघ कम्म पगट ॥ १७ ॥

पायाण च खलु मो कटाण कम्माण पुत्ति दुच्चियणाणा
दुप्पडिक्कताण वेयइत्ता मोक्कमे नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा
मोसइत्ता । अठारसम पय भउइ ॥ १८ ॥ भयइ य एत्थ
सिलोगो —

जया य चयइ धम्म अणज्जो मोगकारणा ।

से तथ मुत्तिए जाले आयइ नावबुज्मइ ॥ १ ॥

जया ओहाविओ होइ इदो वा पडिओ छम ।

स उधम्मपरिमट्टो स पच्छा परितण्णइ ॥ २ ॥

जया य वदिओ होइ पच्छा होइ अयदिओ ।

देवया व च्चुया ठाणा स पच्छा परितण्णइ ॥ ३ ॥

जया य पूइओ होइ अपूइओ ।

राया उ पच्छा परितण्णइ ॥ ४ ॥

जया य मातिमो होइ पच्छा होइ अमाणिमो ।
 सेट्टिय कर्मा बूढो स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥
 जया य धेर भा होइ समइकतजो-वणे ।
 मच्छोव न गिलित्ता स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥
 जया य बुबु ड्यस्स कुतचीहिं विहम्मइ ।
 हत्थी य यधणे बढो स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥
 पुत्तदारपरिवारेणो मोदसताणसतमो ।
 पकोमसो अदा नागो स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥
 अज्ज याइ गणी होतो भावियणा बहुस्सुमो ।
 जइइह रमतो परियाए सामणे जिणदेसिए ॥ ९ ॥
 देवलोगसमाणो उ परियाओ महेसिए ।
 रयाण अरयाण च महानरयसारिसो ॥ १० ॥
 अमरोया जाणिय सोफलमुत्तम
 रयाण परियाए तहारयाण ।
 निरयोदम जाणिय दुफलमुत्तम
 रमेज्ज तम्हा परियाए पडिए ॥ ११ ॥
 धम्मार्थ उट्टु सिरिओ अनेय
 अन्ननि विज्जायमिषण्णतेय ।
 हीलति ता दुव्विहिय कुसीला
 दाइएदुय धोरयिस य नागं ॥ १२ ॥
 इदेयधम्मो अयसो अविच्छी
 दुअनघेज्ज स पिदुअणम्मि ।
 चुयस्स भग्माओ अहम्मनेविणे
 समि विरास्स य हेट्ठओ गइ ॥ १३ ॥
 मुजिष्ठ गगाइ पसज्ज येयसा
 तहादिइ कददु असज्जम बडु ।

गह च गच्छे अणुभिन्मियं दुह
 वोही य से नो सुलभा पुण्योपुण्यो ॥ १४ ॥
 इमस्स ता नेरइयस्स जतुणो
 दुहोयणीयस्स विलेसयत्तिणो ।
 पल्लिओयम किञ्चइ सागरोयम
 विमग पुण मत्त इम मणोदुह ? ॥ १५ ॥
 न मे चिर दुक्खमिण भविस्सइ
 असासया मोगपियास जतुणो ।
 न चे सररेण इमेण ऽवेस्सइ
 अनेस्सइ जीरियपञ्जयेण मे ॥ १६ ॥
 जस्सेउमगा उ हवेज्ज निच्छिम्भो
 चपज्ज देह न उ धम्मसासण ।
 न तारिस्स नो पयलेन्नि इन्द्रिया
 उयिन्तवाया उ सुदसण गिरिं ॥ १७ ॥
 इधेउ सपस्सिय बुद्धिम नरो
 आय उवाय त्रिभिह त्रियाणिया ।
 कापण पाया अदु माणसेण
 तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिद्धिज्जासि ॥ १८ ॥ चिन्नेमि ॥
 ॥ रट्ठका पन्ना चूलिया ममत्ता ॥

॥ विविक्त चरित्रा णामा नीया चूलिया ॥

चूलिय तु पयन्मयामि सुय केउलिभासियं ।
 ज सुणित्तु सपुज्जाण धम्मो उप्पज्जए मई ॥ १ ॥
 अणुसोयपट्ठिय बहुजणम्मि पडिगोयलअलक्खेण ।
 पडिगोयमेव अण्णा दायव्यो होउकामेण ॥ २ ॥
 अणुसोयसुहो लोमो पडिसोओ चासया सुविदियाता ।
 अणुसोओ ससारो पडिसोओ तस्स उचारो ॥ ३ ॥

तम्हा आचारपरकमेण सत्तरसमाधिघट्टलेण ।

चरिया गुणा य नियमा य होति साहस्य दृष्ट्या ॥ ४ ॥

अलिप्यवासो समुयाणचरिया

अप्रायउक्त परिरिज्या य ।

अप्योयही कलहविचञ्जणा य

विहारचरिया इसिण पसत्था ॥ ५ ॥

आहरणओमाणविचञ्जणा य

ओसन्नदिट्ठाहडमत्तापाणे ।

सत्तट्टकप्पण चरेज्ज भिक्खू

तज्जायसत्तट्ट जइ जपज्जा ॥ ६ ॥

अमज्जमस्तासि अमच्छरीणा

अभिक्खणा निट्ठिगइ गणा य ।

अभिक्खणा काउस्सग्गफारी

सज्झायजोगे वयओ हवेज्जा ॥ ७ ॥

न पडिअवेज्जा सयणासणा

सेज्जं निसेज्जं तह भत्तवाणा ।

गामे फुले वा नगरे य वसे

ममत्ताभायं न कहिंवि कुज्जा ॥ ८ ॥

गिहिणो वेयावहिय न कुज्जा

अभियायण चदण पूयणा वा ।

असकिलिट्ठेहिं सम वसेज्जा

मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥

७ या लमेज्जा निउणं सहाय

गुणादिय वा गुणओ सम वा ।

एक्को पि पाजाह निवज्जयतो

विहरेज्ज कामेस्स असज्जमाणो ॥ १० ॥

सउच्छ्रुतं चात्र पर पमाण
 वीथ च पास न तहिं वसेजा ।
 सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज मिक्खू
 सुत्तस्स अत्थो जह आणयेइ ॥ ११ ॥
 जो पुत्थरत्तायरत्तकाले
 मपहइ अण्णमपपण ।
 किं मे कड किं च मे निच्चसेस
 किं सक्खिज्ज न समायरामि ॥ १२ ॥
 किं मे परो पासइ किं च अण्णा
 किं आह रत्तिय न तियज्जयामि ।
 इच्छउ मम्म अनुपानमाणो ।
 अण्णागय नो पडिउध कुज्जा ॥ १३ ॥
 जत्थेय पासे कइ दुप्पउत्त
 काणण पाया अहु माणसंगा ।
 तथेय धीरो पडिस्ताहरेज्जा
 आइएण्णो खिन्नमिथ पत्तलीण ॥ १४ ॥
 जसेरिसा जोग जिइदियस्स
 धिईमओ सण्णुरिसस्स निच्च ।
 तमाहु लोप पडिबुद्धजीयी
 सो जीउई मज्जमजीणिएण ॥ १५ ॥
 अण्णा खलु सयय रक्खियओ
 सण्णिदिपहिं सुसमाहिपहिं ।
 अरक्खिओ जाइपह उवेइ
 सुरक्खिओ स उदुदाण मुक्खइ ॥ १६ ॥ त्ति वेमि ॥
 ॥ वीया चूलिया समत्ता ॥

हृत्थितीसे श्याम शयरे होत्था, रिद्धित्थिसियरामिडे । तत् २ ता
हृत्थिमीमस्त शयरेस्त यदिया उत्तरपुरायिम तिसीभाए
पत्थरा पुण्फकृत्थण श्याम उज्जाणे होत्था स गोउयपुण्फ-
सममिडे, रम्मे, नदणउण्णगारे पासार्द्ध ४ । तत्थ रा कय-
यणमालपियस्त जक्कस्स जक्कसायणे होत्था दिने ।

तत्थ ण हृत्थितीसे शयरे गदीश्वरसू नाम राया होत्था ।
महया हिमचन्त रायउण्णो । तस्स ण अनीगुससुस्त रणो
धाविर्ग, पामाकल देवीसहरस ओतोहे यात्रि होत्था । तत्थ ण
सा धारिणी देवी अथया न्यइ तस्स तारिस्सगन्ति तासमा-
गलिसीह सुमिणे पासति जहा मेहजम्भण तद्वा भाणियद्व ।
यत्तर सुपाहुकुमारे जाव अल्लमंगसमत् २ यात्रि जाणति २ सा
गम्मापियरा पत्थ पासाययट्ठिमंगसयाइ कर्त्तसि अ भुग्गयमू-
त्थियवहसिप त्रिय भवण । एव जहा महम्मल्लस्त रणो । श्वर
पुण्फधूलागामोक्कयागा पच्चगह रायउरकण्णसमाणा पणन्ति-
मेगा पाणि मेगहाग्निं तद्देय पवमइगो दाओ जाउ उप्पि पा-
साययग्गते पुट्टमाण जाव त्रिहरति । तेरा बाले गेतेता सम्मण्णा
समणे भगवप्रहात्रीरे समोसह । परिमा निग्गया गनीतलसू
जहा कोणिए निग्गए । सुपाहुकुमारे त्रि जहा चमाली तथा
रहेण निग्गए । जात्र धम्मो वन्तिवा । राया परिमा पडिगया ।

तत्थ ता से सुपाहुकुमारे सम्मणस्स भगव गो माहावीरस्त
अत्थिप वम्म रोज्जा तिसम्प हट्ठुत्त उट्ठाए उट्ठइ जात्र प ।
वयाती-सदहमि ण भत्त । निग्गय पाउयण जाव जहा ण
देवाणुप्पियाणा अत्थिप वहवे राइसग्गसत्थयात्तमइउ मुट्ठे
भवित्ता आगग्गो प्रणुगन्धि पउरया । ते खडु ग्रह तद्वा
सवाणमि मुट्ठे वरित्ता प्रागागाउ गण्णारिय प उदत्तण अह
(१) ता दग्गणु श्याण अत्थिप पाउयण उपाइ मत्तमिक्कलाउयाइ-

दुचासतचित्-तिदिधम्य पडियजामि । अहासुह देवापु-
त्रिया । मा पडियध करेह ।

तएव ते सुधादुपुमार समणस्स भगवओ महाधीरस्स
अतिण पचाणुज्याइ मत्तमेवसायवाइ पडियजएह ० सा
तमेव एह दुक्कएह ० सा जामेव निम गाउम्भूए तामय दिम
पडियए । तेण वात्तेण तेण समणस्स भगवओ महा-
धीरस्स जट्ट भत्तेणभाइवमुह ० ॥ अहमारे जावएय पवागी-

अहो ए तणे । सुधादुपुमार इह इहक्ये १ वत्त वत्तकव ०
धिग पियग्गे दे मधुणे मणुक्कएवे ४ मग्गाम मग्गामकथ ॥ सोमे
मुममे पियदम्मणे मुक्कए । यदुज्जस्सएयि य ना भम । सुधादु-
पुमारे इह इहक्ये । सोम जाव सुक्कए । साहुमणस्सएयि य ना
भमे । सुधादु पुमार इह इहक्ये ४ जाव सुक्कए । सुधादु
भते । पुमारेण इम पयाज्जा उगाला माणुक्कएयि य ना
तज्जा रिण्ण पक्का रिण्ण अमित्तमण्णायया । को वा पक्का
मत्ता जाव वि नायए वा वि गात्तए वा वि सावत्ता वि वा
मावा वि वा मग्गापरिजा वस्स वा तहाक्यम्य मग्गएय
वा अतिए वममएयि आयरिय अमित्तं मुक्कएयि सावत्ता जेण
इम एयएयि माणुक्कएयि । तेया वत्ता अमित्तमण्णायया ।

एवे एतु पोयना । तेण वात्तेण तेण समणस्स इहए जेवू-
हाव नीय माग्गे वासे इतिथएउरे मग्ग मग्गे रिद्धिदिधमिय
मग्गि यणएयि । तएव एहियएउरेणयए मुमु ० मग्गमात्ता
यइ पयियमह अण्ड दित्त जाव अण्णभूण । तेण वत्तेण तेण
समणस्स धम्मपोसे गावे ४ रे ४ इमए ० वाय पचहि मग्ग-
सएहि मग्गि मग्गिपुड पुग्गएयि चग्गएयि मग्गामग्गाम
दुक्कएयि जेण इतिथएउरे एयरे जणय माहस्सएयि
उत्ताण ० ॥ १५ ॥ अहापडिय उगाल

बहु २ सा गजमेरा तयसा जप्पाग भावेमाणे निहरइ ।

तथा कालेन तेन समपण धम्मघोसाण वेराण गतेवासी
सुदत्ते णाम अणगारे उराले जाय तेउलेसे भास मासेण खम-
माणे निहरइ । तण्ण सुदत्ते अणगारे माससमणपारणंसि
पढमाण पोस्सीण सज्जाय करेइ । जहा गायम तहेव धम्म
घोस धेर आपुच्छइ जाय अउमाणे सुमुहस्स गाहाघइस्स
गिह अणुपट्टि । तएण मे सुमुहे गाहानइ सुदत्त अणमार पञ्ज
माण पासइ ० सा इह तुहे आग्याउ अम्भुहे २ सा पाय
बीडाउ पत्तोइइ ० सा पावयाउ आमुयति २ सा पग्याडिण
उत्तरासग करेइ २ सा सुदत्त अणगार सत्तठ्ठपयाइ अणुगच्छइ
० सा तिक्कुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ ० सा घइ णम-
सइ २ सा जेणेउ भत्तघरे तेणेउ उवागच्छइ २ सा सयहवेण
पिडल असगा पाण गाम्म राइम पडिरामिस्सामि चि
कइइ तुहे पडिलावेमाणे नि तुहे पडिलामि चि तुहे ।

तएण तस्म सुमुहस्स गाहाघइस्स तेन वसुद्धेण
दायगसुद्धेण पडिगाइयसुद्धेण निविहेण तिक्करणसुद्धेण
सुदत्त अणगारे पडिलाभिण समाले समार पस्सीण,
मणुस्सउप निग्गे गिहसि य मे इमाइ पंच दिवाइ पाण्णू-
याइ-त जहा—उसुद्धारा बुद्धा १ दसज्जणणे उमुमे नियाइए
२ चेउक्कोरे वण ३ आदियाओ दयदुट्ठीओ ४ अतरा नि यण
आगाससि अहो दाण बुद्धे य ५ । तए ण विणउरे ण्यरे
सिंघाहण जाय पहेसु वहुजणे अणमणस्स पयमाइकरइ ॥
धनेण देवाणुप्पिया सुमुह गाहानइ जाय त वन्नेण देवाणु-
प्पिया सुमुहे गाहाव ।

तए ण से सुमुहे गाहानइ बहुइ रासाइ आउयं पालेइ ०
सा वरामासे काल निवा इहेव हत्थिमीमे ण्यरे अनीणस-

सुरगणो धारिणीय देवीय कुञ्जिसि पुत्तत्ताप उवउण्णे । तप
 गा सा धारिणी देवी सयणिज्जसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २
 नहंन सीह पासइ । सेस त चेउ जाउ उप्पि पासायउरगए त्रिह
 रइ । तपच गलु गोयमा । गुवाहुणा कुमारेश इमे एयारूवा
 माणुस्मरिद्धी लद्धा पत्ता अमिसमएणागया । पभू ए भन्ते ।
 गुवाहुकुमारे देउणुप्पियाणा अतिण मुडे भत्तिता आगाराउ
 अणुगारिय पउत्तए ? इता पभू । तप गा से भगव गोयमे
 समणा भगव महावीर चइइ एमसइ २ ता सजमेण तपसा
 अणुणा भावेवासे त्रिहरइ ।

तप गा से समणे भगवे महावीरे अणुणा क्याइ हि २-
 सीसाउ एयराउ गुणकरटयाउ उज्झणउ कययणमाळि पयस्स
 जक्कस्स जग्गायतणउ पडिनिक्खमइ २ ता यदिया जणउ-
 यगिहार त्रिहरइ । तप गा से सुवाहुकुमारे समणाउसए जाए
 अभिगघजीवाणी जाउ पटिहामेमाण विहरइ । तप गा से
 सुवाहुकुमारे अणुणा क्याइ वाउदसट्टमुत्तिट्टुणुणमात्तिणीसु
 जणैउ पोसहसाला सखउ उवागच्छइ २ ता पोसहसाला
 पमज्जइ २ ता उधारपासवण भूमि पडिलेहइ २ ता दम्भसवा
 रग सवरेइ २ ता दम्भसवारग दुक्कइ २ ता अट्टममत्त पणि
 एहइ २ ता पोसहसालाए पोसहिण अट्टममत्तिए पोसइ पडि
 जागरमाणे त्रिहरइ ।

तप गा तस्स गुवाहुस्स कुमारस्स पुत्तरत्ताउरत्तवाले
 धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमे एयारूव अजक्कथिए ५ समु
 ण्णने-धएणा ए ते गामागएणउर जाउ सन्निवेसा जएण ए
 समणे भगव महावीरे त्रिहरइ । धया ए ते राईसर जाव सएथ
 पाइपभइठ जे गा समणस्स भगवआ महावीरस्स अतिण मुडे
 भत्तिता आगाराउ अणुगारिय पव्ययति, धएणा ए ते राईसर

जाय स्वयंवाह पमइउ जेण समणस्स भगवओ महावीरस्स
अतिण धम्म पडिगुगति । त जइ एा समणे भगव महारीरे पुत्रा
सुपुत्ति चरमाणे जाय गामाणुगाम दूइजमाणे इहमागच्छेज्जा
जाय विहरेज्जा तए एा अइ समणस्स भगवओ महावीरस्स
अतिण मुडे भवित्ता जाय पउणज्जा ।

तए एा समणे भगव महारीरे सुवाहुस्स दुमारस्स इम
पयारुव अज्झति उव जाय प्रियाणित्ता पुत्राणुपुत्ति चरमाणे
जाय गामाणुमम दूइजमाणे जेणेव हत्थिप्पिने एयरे सेणप
पुप्फकाडे उज्जाणे जेतोव इययणमाहपियस्स जक्कहस्स जक्कहा
मतणे तणेव उवागच्छइ २ ता अदापडिगुग उगगह उगिण्हिचा
सज्जमेश तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ । परिसा, राया
निगया । तए एा तस्स सुवाहुस्स दुमारस्स त महया जहा
पढम तहा निगओ । धम्मो कहिओ परिसा राया पडिगया ।

तए एा से सुवाहुदुमारे समणस्स भगवओ महारीरस्स
अतिण धम्म सोया निमम्म हट्टु तुट्ट । जहा मेहोतहा अम्मा
पियरे आपु-उइ । निस्समणभिमेओ तटेय जाय अणगारे जाए
इरियासमिण जाय गृत्तउभवाती । तए एा से सुवाहु अणगारे
समणस्स भगवओ महारीरस्स तहाकयाण चराण जातए
सामादयमादयाइ एकारस अगाइ गहिज्जइ २ ता पट्टहिं
चउत्थल्लुट्टम तवोविण्णोहिं अप्पाण भावित्ता पट्टइ आस्राइ
सामणपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अप्पाण
भूतिता सट्ठि भत्ताइ अणसणाइ छेत्तिता जालोइय पडिफरत्त
समाहिपत्ते कालमासे काल विच्चा साहम्मोकप्प देवताए
उववणे ।

से णे तओ देवलोगानो याउन्सणण भवववणण डिह-
२ अणतर चय चइत्ता माणुस्स निगद समिहिइ २ ता

नेत्रलोहिं बुद्धिहिं - सा तदास्त्राण धेराग्र अतिप मुडे
भरित्ता तत्र पयस्मिन् । ते मां सत्र हृद् वारतां सामाग्न
पग्न्या । पाउशिहिं - सा आग्राह्य पडिक्कमे समादिपेत्
बालमासे बाल किञ्चामगदुमार एवद्वत्ताण उद्यगणे । से
मा तथो एतत्ताड माणुस्स जाय पवज्जा । धम्मोए । ततो
माणुस्स महापुत्तं । ततो माणुस्स आणन्दे । ततो माणुस्स ।
ततो आरणे । ततो माणुस्स सत्तुल्लिह ।

ते मा तथो अतत्ता वय न्हत्ता महाविद्वे वासे जाय
अट्ट जया पदपदने विज्झित्ति युज्झित्ति मुच्चित्ति परि-
तिशित्ति सत्तुल्लिहत्तामन वरेदित्ति । एध मत्तु जू । सम-
ता भगवया मत्तारीरेण जाय मत्तन्नु सुद्विशागाण पद-
मत्तन्नु अत्तन्नुत्तन्नु अयमट्ट पणत्ते सिरेमि ।

इह सुद्विशागाणम् पदम् अत्तन्नुत्तन्नु समत्त ॥ १ ॥

(०) शित्तयस्स उक्तमयो । एव सत्तु जू । तेण काक्षेण
तेण समएण उक्तमपुर काम मयदे धम्मरत्ता उक्ताण ।
धम्मो जयतो । उद्यते । माया मरस्सड देरी । सुमिण्णमणं,
बहण, उम्भ, वावत्ताण, वत्ता । ते य जायण पाणिगहण, दाओ
पामाद्वा य भोगा य अहं सुत्ताम्भ नगर भदननी कुमार ।
मिगीत्ति पामात्ताण पचसया । सामिस्स समत्तरण । एव-
मयम् । पुत्तमय पुच्छ । महाविद्वे वासे पट्टित्ति
नगरीए विण्ण पृम्भार तुत्ताह तिरय्यन् एतिव विण्ण-
स्माउए निरुद्ध इह उद्यगणे । सेत्त अहं मुत्ताह्मन् उद्यग-
नि इहयान सिज्झित्ति युज्झित्ति मुच्चित्ति परि-
सत्तुल्लिहत्तामन वरेदित्ति । एध मत्तु जू । सम-
ता भगवया मत्तारीरेण जाय मत्तन्नु सुद्विशागा-
नि इहयान् स अयमट्ट पणत्ता सिरेमि ।

इह सुहृद्विवागस्तस्य वीर्य अजम्भयण समस्त ॥ २ ॥

(३) तद्वयस्म उफसेयत्रो । वीरपुरे खाम खयर । मलोरामे
उज्जाले वीरयण्हे जन्मले, मिच्छे राया सिरीदेवी मुजाप कुमारे ।
बलसिरी पामोक्याण पचसयाकणा । सामी समोसरिण ।
पुनभय पुच्छा । उमुयारे खयरे उमुदत्ते गाहायइ पुष्फदत्ते
अणगारे पडिलाभिए मणुस्साउप नियहे इह उययण्णे जाय
महानिबेहे वासे सिग्गिदित्ति ५ ।

इह सुहृद्विवागस्तस्य तद्वय अजम्भयण समस्त ॥ ३ ॥

(४) चउत्तयस्म उफसेयत्रो । त्रिजयपुरे खयरे । रावणयणे
उज्जाले असोणे जन्मले । वासवदत्ते राया । कण्हसिरी देवी ।
तवासये कुमारे । भद्रा पामोक्याण पचसया जाय पुनभय
पुच्छा कोसरी खयरी । धणुगालो राया । वेसमणभे अणगारे
पडिलाभिए इह उययण्णे जाय सिद्धे ।

इह सुहृद्विवागस्तस्य चउत्तय अजम्भयण समस्त ॥ ४ ॥

(५) पचमस्म उफसेयत्रो । मोगधियाणयरी नीलासेणे
उज्जाले मुत्रालो जन्मले । अपडिहय राया मुक्कदादेवी मह-
च्छे कुमारे । नरस अरहदत्ता भारिया । जिण्हासे पुत्तो ।
सित्थयरागमण जिण्हासे पुनभय पुच्छा । मज्झमिया नयरी
मेहरहे राया । मुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाय सिद्धे ।

इह सुहृद्विवागस्तस्य पचम अजम्भयण समस्त ॥ ५ ॥

(६) छट्ठस्म उफसेयत्रो । कण्णपुर खयरे खेयान्नाये उज्जाले ।
वीरमहो जन्मले । पियचद राया । सुमहादेवी । वेसमणे
कुमार जुत्ताया । सिमीदेवा पामोक्याण पचसया । सित्थय-
रागमण । धणुगालो रायायपुत्त जा । पुनभय पुच्छा । मणिय-

इया गयरी । मिने राया समूहविजय अणुगारे पडिलामिण
जाय सिद्ध ॥ ६ ॥

इह सुहृदयिपाकस्स उट्ट अज्झयण समत्त ॥ ६ ॥

(७) सत्तमस्स उक्खेयओ । महापुरे गयरी । रत्तामोगे
उज्जाणे । रत्तयाड जफयो । वले राया सुभदारेयी । महावले
हुमारे । रत्तयई पामोक्कयाण पचसया । तिथयरागमरा जाय
पुग्गमय पुच्छा । मणिपुरे गयरे । गु गदत्ते गाहायई । इदत्ते
अणुगारे पडिलामिण नाय सिद्ध ।

इह सुहृदयिपाकस्स सत्तमं अज्झयण समत्त ॥ ७ ॥

(८) अट्टमस्स उक्खेयओ । सुधोसे गयरे । देयरगणे उज्जाणे ।
धीरसेणो जफयो । अज्जुणो राया । रत्तयई देयी । महनदी
हुमारे । निरीदयी पामोक्कयाण पचसया जाय पुग्गमय पुच्छा ।
महाघासे गयरे । धम्मघोवे गाहायई । धम्मसीहे अणुगारे ।
पडिलामिण जाय सिद्ध ।

इह सुहृदयिपाकस्स अट्टमं अज्झयण समत्त ॥ ८ ॥

(९) नवमस्स उक्खेयओ । चया गयरी । पुण्णमह उज्जाणे
पुण्णमहो जफयो । दत्ते राया । रत्तायई देयी । माचद हुमारे
जुवगया । निरीकता पामोक्कयाण पचसया जाय पुग्गमय
पुच्छा । निगिद्धा गयरी । नियमसुराया धम्मरीगिण अणुगारे
पडिलामिण नाय सिद्ध ।

इह सुहृदयिपाकस्स नवमं अज्झयण समत्त ॥ ९ ॥

(१०) दसमस्स उक्खेयओ । एव खलु जयू ।
तेण कालेण तेण समएणा माइए नाम गयरे होत्था । उत्तरवुद्ध

उज्जाले पासामिड जक्खो मित्तनदी राया । सिरीक्कन्ता देवी ।
 यरदत्ते पुमारे । वीरसेणा पामोक्खाण पच्चदेवी सया । तित्थ-
 यरागमण सावगधम्म पुग्गमन पुच्छा । सयदुवारे णयरे ।
 विमलगाहणे राया । धम्मग्द अणगारे पडिलाभिण मणुस्सा
 उप निपेत्ते इह उववण्णे । सेस जहा सुवाहुस्स चिंता जाव
 पयज्जा कप्पतरिण जाव सग्गुसिद्धे । तत्रो महाविद्देह जहा
 ददपइण्णे जाव सिज्जिहिति ५ । एव खलु जनु । समणेण
 भगवया महावीरेण जाव सपत्तण सुहविधाणा दसमस्स
 अज्झयणस्स अयमेट्ठे पण्णत्ते सेव भन्ते । सिधेमि ।

इह सुहविधाणस्स दसम अज्झयण समस ।

त्रिधागसुयस्स दो सुयसधा दुहविधाने य सुहविधाने य
 तत्थ दुहविधाने दस अज्झयणा पल्लासग्गा दससु चेव
 विधसेसु उद्दिसिज्जति । एव सुहविधाने वि सेस जहा
 आयास्स ॥ १० ॥

॥ इति सुहविधाकसूत्रम् ॥



उपाई सूत्र

• • • • •

(अठिठम बाबोम गाथाई)

- वहिं पडिहया सिद्धा ? वहिं सिद्धा पडिहिया ? ।
वहिं जौहिं चइत्ता गा, जत्थ गनुग सिग्गइ ॥ १ ॥
अत्तागे पडिहया सिद्धा, जेयम्मे य पडिहिया ।
इह बाहिं चइत्ता गा, तत्थ गनुग सिग्गइ ॥ २ ॥
ज सडाए तु इह भव जयतम्म चरिमसमयमि ।
आसी य एएमघण त सडाए तहिं तम्म ॥ ३ ॥
मीह था हम्म था ज चरिममने हयेच्च सडाए ।
ततो तिभागहीण सिद्धाणागाहणा भणिया ॥ ४ ॥
निण्णि मया नेत्तासा धणुसिभागो य होइ बोधया ।
एसा खत्तु सिद्धाण उक्कोमोगाहणा भणिया ॥ ५ ॥
चत्तारि य रयणीओ रयपितिभागूणि या य बोधया ।
एसा खत्तु सिद्धाण मज्झिमप्रागाहणा भणिया ॥ ६ ॥
एका य होइ रयणी माहिया अगुनाइ अट्ट मवे ।
एसा खत्तु सिद्धाण जहगुणोगाहणा भणिया ॥ ७ ॥
ओगाहणाए सिद्धा भवतिमाणेए होइ परिहीणा ।
सडाएमणि एय जरावरत्तुपिप्पमुक्काण ॥ ८ ॥
जत्थ य एगे सिद्धो तत्थ अणना भवक्कएयविमुक्का ।
अण्णोण्णममोगाढा पुट्टा सत्ते य एगेते ॥ ९ ॥

पुनरु अणते निद्रे सव्यपपसेति निधममो निदो ।
 ते वि शमयेज्जगुणा दसपपमाहि जे पुट्टा ॥ १० ॥
 असरीय जीधघणा उपउत्ता दंमणे य द्वाण य ।
 सागारमणागार लफयणमेय न सिद्धाण ॥ ११ ॥
 केवलणाणुपउत्ता जाणति सव्यमागुणभाये ।
 पासति सव्यमो यत्तु कथलदिट्ठिअगाताहि ॥ १२ ॥
 एवि अस्थि माणुसाण ते मोक्खं एवि य सव्यदयाण ।
 ज सिद्धाण मोक्खं अयाणाह उवगयाण ॥ १३ ॥
 ज देयाण मोक्खं सव्यदयापिट्ठिय गणतगुणं ।
 ए य पायइ मुत्तिमुद गगाहिं धम्मयग्गहि ॥ १४ ॥
 सिद्धस्म सुद्धो रासी सव्यदयपिट्ठिओ जइ हरेया ।
 सोणतधम्मभइओ स यागासे न माएजा ॥ १५ ॥
 जह णाम कोइ मिट्ठो गगरगुण यदुविहे वियणंतो ।
 ए थएइ परिक्खेउ उवमाए तहिं अस्तपीए ॥ १६ ॥
 इय सिद्धाण मोक्खं अणायम एवि तरस ओयम्म ।
 किंचि विसेसेणेत्तो ओयम्ममिणं सुणद गो-उ ॥ १७ ॥
 जह सव्यकामगुणिय पुरिमो भात्तुण भोयण कोइ ।
 तएदाहुदाविमुक्को अच्चेज्ज जहा अमियतित्तो ॥ १८ ॥
 इय सव्यकालतित्ता अतुल निवाणमुग्गया मिद्धा ।
 सासयमव्याथाह चिट्ठति सुद्धी मह पत्ता ॥ १९ ॥
 सिद्धत्ति य पुद्धत्ति य पाग्गयत्ति य परपरगयत्ति ।
 उम्मुक्कम्मकवया अजरा गमगा गसगा य ॥ २० ॥
 निचिट्ठणस उदुक्खा जाइजराभरणयधणमिमुक्का ।
 अयाथाह सुक्ख अणुहोति सामय मिद्धा ॥ २१ ॥
 अतुलसुद्धसागरगया अयाथाह अणायम पत्ता ।
 सव्यमणागयमद चिट्ठति सुद्ध पत्ता ॥ २२ ॥

॥ सूत्रकृताङ्ग सूत्रे वीरस्तुत्यास्य (पुच्छिस्तुण)

षष्ठम अयन ॥



पुच्छिस्तुण गा समणा माहणा य अगारिणो या परतिथिआ य ।
से केइ योगतटियधम्ममाहु, अणेलेल्ल सङ्गुममिक्खयाए ॥१॥
कह च णाया कह दसण से, सील कह ना सुवरस आसि ।
जाणसि ए मिक्खु जहातहेया, अहासुय वूर्वा जहा गिसत ॥२॥
खेयधप से कुसल-महेसी, अणतनाणी ७ अणतदसी ।
जससिणो चक्खुपदे टियस, जाणाहि धम्म ७ धिइ च पटि ॥३॥
उइइ अहे य तिरिय तिसासु, तसा य जे थावर जे य पाणा ।
से गिअणिन्चेहि समिक्ख पने दीने य धम्म ममिय उदाहु ॥४॥
से स उदसी अमिभूयनाणी, खिरामगघे चिइम टियप्पा ।
अणुत्तरे सव्वनगति विज्ज, गथा अइए अमए अणाऊ ॥५॥
से भूइएणं अणिअगारी, ओहतरे घीरे गगतचक्कवू ।
अणुत्तर तप्पइ सूरिए वा, चइरोयखि ७ य तम पगासे ॥६॥
अणुत्तर धम्ममिगा जिणाग, खेया मुणी क नव आसुपेत्ते ।
इदव दयाण मद्वाणुमाये, सहस्समेया नि ग विसिट्ठे ॥७॥
से पन्नया अक्खयसागरे वा महोददी वा ७ अणतपारे ।
अणाविले वा अक्खसाइ मुक्के, सक्के व दया ॥ चइ जुइम ॥८॥
से वीरिएण पडिपुअरीए, सुदसणे वा णास उसट्ठे ।
सुरालए वा सि मुदागरे से, विरायए योगगुणोववेए ॥९॥

सय सहस्साण उ जोयणाण, तिक्कडगे पट्टमयेजथत ।
 से जोयणे लयणरहसहम्से, उड्डुम्मितो हेट्ट सहम्समेग ॥१०॥
 पुट्टे एमे चिट्ठइ भूमिधट्ठिप, ज सूरिया अणुपरिपट्टयति ।
 से हेमयन्ने धदुनदणे य, जसि रत्ति वेदयति महिदा ॥११॥
 से पण्णए सहमहप्पगासे, तिरायइ वचणमट्ठयन्ने ।
 अणुत्तरे गिरिसु य पट्टडुग्गे, गिरीवरे से जलपिप भोमे ॥१२॥
 महीए मज्झमि ठिए लङ्गिद, पणायते मूर्छिप मुद्धलेसे ।
 पय तिरिप उ म्भूरिधेन्ने, मणेरमे जोयइ अचिमाली ॥१३॥
 सुदसणस्सेय जसो गिरिम्भ, पवुच्चइ महतो पण्डयस्स ।
 पत्तोयमे समणे नायपुत्त, जाइजसोदमण्णनाणमीत्ते ॥१४॥
 गिरीवरे वा निसहाऽऽययाण, कयण य सेट्ट धलयायताण ।
 तभोवमे से जगभूइपय मुणीण मज्जे तमुदाहु पणे ॥१५॥
 अणुत्तर धम्ममुईरइत्ता अणुत्तर भाणवर त्रियाइ ।
 सुसुक्कसुक्क अपगडमुक्क, सत्तिडुपगतवदात्तसुक्क ॥१६॥
 अणुत्तराण परम महेत्ती, असेसकम्म ॥ विसोहइत्ता ।
 सिद्धि गए माहमणात्तपत्ते, नाणेण सीलेण य दसणेण ॥१७॥
 दक्खेसु एए जह सामली वा, जसि रइ वेदयति सुयन्ना ।
 घणेसु वा णदणमाहु सेट्ट नाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥१८॥
 थणिय य सहाण अणुत्तरे उ, चन्दो य ताराण महानुभावे ।
 गघेसु वा अदणमाहु सेट्ट, पण मुणीण अपडिअमाहु ॥१९॥
 जहा सयभू उदहीण सेट्ट, नागेसु वा घरणिंदमाहु सेट्ट ।
 खोओदप या रसवेज्जयते, तणोउहाणे मुणीवेज्जयते ॥२०॥
 हत्थीसु पराणमाहु नाय, सीहो मिमाण सल्लिहाण गङ्गा ।
 पक्खीसु वा गरले वेणुदगो, तिगाणवादीणिह नायपुत्ते ॥२१॥
 जोहेसु नाय जह वीमसेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।
 खत्तीण सेट्टे जह दत्तवक्के, इत्तीण सेट्टे तह चद्धमाणे ॥२२॥

दाणाण सेद्व अमयययाण सदासु वा अणयजन ययति ।
 तवेमु वा उत्तम यमवेत्ता नागुत्तमे समणे तायपुत्त ॥२३॥
 विईण सेद्व तायमसमा वा, समा मुग्गमा ॥ समाण सेद्व ।
 नि-राणसेद्व जह स-उग्गमा, न मायपुत्त । वरमत्ति मार्गी ॥२४॥
 पुडोउम धु उइ विगयगेदी, न मणिर्हि नुत्तह आसुणने ।
 तरित समुह य महाभयोध, अमयवेत्ता वीर अणनचक्क ॥२५॥
 कोट य माणा य नहेय माय, लाम चउत्त अग्गमवदोमा ।
 एयाणि यता अग्गम महेमी, नु पु-उइ पाय न वारपेइ ॥२६॥
 निरियाविमिय वेणइयाणुवाय, अणताणियान वडियच्च टाण ।
 से मयवाय इइ येयइत्ता, उग्गट्टि मज्जमगीहराय ॥२७॥
 मे वारिया इदी मराइमत्त, उपहाणय नुत्तमपट्टपाय ।
 लोग विट्ठिता वार वर च, म-उ पमू वारिय मय्यसार ॥२८॥
 सोया य धम्म अग्गममग्गिय ममाहिय अट्टपदोयमुद्ध ।
 न सइहाण य जणा अणाऊ इदा य नेवाहिय आगमिम्मसति ॥२९॥
 स्ति धेमि ॥



मोक्षार्गनामक एकादशाव्ययनम्

—२५०—

कयरे मग्गे अकल्लए, महाणेणं मईमया ।
 ज गग्गे उज्जु पादिता आह तरह दुत्तर ॥१॥
 त मग्गे रुत्तरं गुठ मध्यदुक्खयिमोक्खण ।
 जालातिता जहा भिक्खू, तणा वूहिं महामुणी ॥२॥
 जह णो इ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुमा ।
 तेहिं तुक्खय मग्ग, आइक्खेज्ज इहादि णो ॥३॥
 जह णो इ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुमा ।
 तेरिमं पडिमादिज्जा, मग्गसार गुणेह मे ॥४॥
 अणुपुत्रेण महाघोर कासयेण पयेइय ।
 जमायाय इओ पुंथ, समुद यउहारिणो ॥५॥
 अतरिंसु तरत्तेगे, तग्गिस्सति अणायया ।
 त गोद्या पडियक्खामि, जतयो त सुणेह मे ॥६॥
 पुट्ठी जीया पुट्ठी सत्ता, आउजीयातहाउगणी ।
 पाउजीया पुट्ठी सत्ता, तणुक्खया मवीयगा ॥७॥
 अहायरं तसा पाणा एय छुवाय आहिया ।
 एयावर जीयकाय, गावरे कोइ थिज्जई ॥८॥
 सग्गाहिं अणुजुत्तीहिं, महग पडिलेहिया ।
 म रे अकतदुक्खलाय अओ सत्तेन हिसया ॥९॥
 एय रु गणिलो मार, ज न हिंसइ थिचया ।
 अहिंसासमय चेय, एताउत तियाणिया ॥१०॥

आयुते सया दन्ने, मित्रमोए अणासवे ।

जे धम्म सुद्धमकयाए, पडिपुन्नमणेत्तिस ॥२४॥

तमेय अविजाणता, अनुद्धा बुद्धमाणिणो ।

बुद्धामोत्ति य मन्नेता, अत एते समाहिण ॥२५॥

ते य वीयोदग वेए तमुदिस्सा य अ कड्ड ।

भोथा भाण भियायति, अखेयघ्नाऽसमाहिया ॥२६॥

जहा दका य कका य, कुलला मग्गुका सिही ।

मच्छेत्तण भियायति, भाण ते कलुसाहम ॥२७॥

एव तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया ।

विसएसण भियायति, कका या कलुसाहमा ॥२८॥

सुद्ध मग्ग विरादिता, इदमेगे उ दुम्मई ।

उम्मग्गगया दुपर, घायमेसति ॥ तहा ॥२९॥

जहा आसाविणि नाय आहमधो दुरुदिया ।

इच्छई पारमागतु, सतरा य तिसीयह ॥३०॥

एव तु समणा एगे, मिच्छदिट्ठी अणारिया ।

सोय कसिणमायथा, आगतादो महम्मय ॥३१॥

इमे च, धम्ममायाय, कासयेण पवेदित ।

तरे सोय महाघोर, अत्तत्ताए परिव्यए ॥३२॥

विरए गामधम्मेहिं जे केई जगई जगा ।

तेसिं अत्तुवमायाए, याम कुद्व परिव्यए ॥३३॥

अहमाण च माय च त परित्राय पडिण ।

सयमेय शिराविद्या, शिवाण सधए मुणी ॥३४॥

सधए साट्ठधम्म च पाउधम्म शिराकरे ।

उवहाणवीरिए भिकू, काह माण ण पत्थए ॥३५॥

जे य बुद्धा अतिक्कता, जे य बुद्धा अणागया ।

सति तेसिं पइट्ठाण, भूयाण जगई जहा ॥३६॥

॥ उत्तरजम्भयण-सुत्तं ॥

अह विणयमुय पढम अजम्भयण

सजोगा विण्णमुक्कस्म, अणगारस्स मिफत्तुणो ।
 विणय पाडकरिस्सामि, आणुपुट्ठेन सुखेह मे ॥१॥
 आणानिदेसक्खे, गुरुणमुपवायकारण ।
 इगियागारसवधे, से विणीए त्ति बुच्चइ ॥२॥
 आणानिदेसक्खे गुरुणमणुववायकारण ।
 पडिणीए असत्तुसे अविणीए त्ति बुच्चइ ॥३॥
 जहा सुणी पूइक्खणी, निकसिज्जइ सव्वसो ।
 एय दुस्सीलपडिणीए, सुहसी निकसिज्जइ ॥४॥
 कणहुगइग चइत्ताण, विट्ठे भुजइ सूररे ।
 एय सील चइत्ताण, दुस्सीले रमइ मिण ॥५॥
 सुणिया भाव भाणस्स, सूररस्म नरस्स य ।
 विणए ठवेज्ज अप्पाणमिच्छन्तो हियमण्णयो ॥६॥
 तम्हा विणयमेसिज्जा सील पडिलमेज्जणो ।
 'धुदपुत्ते नियागट्ठी, न निकसिज्जइ कणहुई ॥७॥

निसते सियाऽमुहयि, बुदात्त कर्मिन् नरा ।
 अट्टजुत्तानि सिक्खिज्जा, निरट्टमि ड कट्ट ॥२॥
 अणुसासिथो न कुप्पिज्जा, खानि मेत्ते ज्ज दम्मद ।
 सुदेहिं मह ससग्गि, हाम्म कीट न दत्ता ॥३॥
 मा य चण्डालिय कामी, पट्टर मा य चण्डे ।
 कालेण य अदिज्जित्ता, नयो माहज्ज ॥४॥
 आहच्च चण्डालिय कट्ट न निददित्ते ॥५॥
 कट्ट कट्टे त्ति मासेज्जा, अण्ड नो करे नि य दत्ता ॥६॥
 मा गालियस्सेज कस, ययमिच्छ दुप्पे ॥७॥
 कस व ददुमाहणो, पायग ॥८॥
 अणुसया धूलकड्ढ कट्टे,
 मिडपि चण्ड ॥९॥
 चित्ताणुया लदु इम्मन् ॥१०॥
 पसायप न इ दुग्गमि ॥११॥
 नापुटो यागरे किञ्चि, पुटो वा ॥१२॥
 कोह असच्च कुवेज्जा, पाण्ड ॥१३॥
 अण्णा येन दमेय-यो, अण्णा इ चण्ड ॥१४॥
 अण्णा दतो सुदी होह, अण्णि ॥१५॥
 घर मे अण्णा दतो, सण्ण ॥१६॥
 माह परेहि दम्मतो, वयमि ॥१७॥
 पडिणीय च बुदाग, पाण्ड ॥१८॥
 आरी वा जइ वा रहस्से, वा ॥१९॥
 न पक्खसो न पुरसो, नेय ॥२०॥
 न जुजे ऊरणा ऊरु, सण्डे ॥२१॥

नेष पच्छत्थिय भुज्जा, पक्खपिण्डं च सज्ज ॥
 पाण पसारिण धावि, न चिद्धे गुरुणन्तिण ॥१९॥
 आयरिण्हिं धावित्तो, तुसिणीओ न कयाइवि ।
 'पसायपेही नियागट्ठी, उवचिद्धे गुरु सया ॥२०॥
 आलय-ते लघन्ते धा न, निसीपज्ज कयाइ वि ।
 चइज्जणमासण धीरो, जओ जस पडिस्सुणे ॥२१॥
 आसणगओ न पुच्छेज्जा, नेष सेज्जागओ 'कयाइवि ।
 आगम्मपुकुडुओ सत्तो, पुच्छेज्जा पज्जलीउडो ॥२२॥
 एय विणयजुत्तस्स, मुस अत्थ च तदुभय ।
 पुच्छमाणस्स सीसस्स, पागरिज्ज जहासुय ॥२३॥
 मुस परिहरे मिकखू, न य ओहारिणि वय ।
 आसादोस परिहरे, माय च यज्जय सया ॥२४॥
 न लवेज्ज पुट्ठो सायज्ज, न निग्गु न मम्मय ।
 अप्पणट्ठा पट्ठा धा उभयस्सन्तरेण धा ॥२५॥
 समरेसु अगारेसु, 'सन्धीसु य महापहे ।
 एगो एगत्थिण सज्जि, नेष चिद्धे न सल्लये ॥२६॥
 ज मे बुद्धाऽणुसासन्ति, सीएण फट्ठसेय धा ।
 मम लाहो त्ति पहाय, पयओ त पडिस्सुणे ॥२७॥
 अणुसासणमोवाय, दुक्कडस्स य बोयण ।
 द्विय त मएणइ एरणे, वेस होइ असाहुणे ॥२८॥
 द्विय विगयमया बुद्धा, 'फण्सपि अणुसासण ।
 वेस्स त होइ मूढाण, खत्तिसोद्धिक्क एय ॥२९॥
 आसणे उवचिद्धेज्जा, अणुचेऽकुक्कय चिरे ।
 अप्पुट्ठाइ निग्गुट्ठाई, निसीपज्जप्पकुक्कय ॥३०॥

कालेण निक्खमे मिक्ख कालेण य पडिकमे ।
 अकाल च त्रियज्जित्ता, काले काल समापरे ॥३१॥
 पगियाहीण न चिट्ठज्जा मिक्ख दत्तसण चरे ।
 पडिकवेण एसित्ता, मिय कालेण भक्खण ॥३२॥
 नाइदूरमणासधे णऽग्नेसि चक्खनुफासओ ।
 एगो चिट्ठेज्ज भक्खट्ठं, लघित्ता न मऽहक्खमे ॥३३॥
 नाइउंघ न नीए या, नासन्ने नाइदूरओ ।
 फासुय परक्ख पिण्ह, पडिगाहेज्ज सज्ज ॥३४॥
 अण्णपणोऽण्णजीयम्मि, पडि उणम्मि स्वबुदे ।
 समय सज्ज भुज्जे, जय अपरिसाडिय ॥३५॥
 सुक्कित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिउंघ सुहदे मदे ।
 सुणिट्ठिय सुलट्ठित्ति, भावज्ज वज्जण मुणी ॥३६॥
 रमण पण्डिय सास, हय भइ य वाहण ।
 बाल सम्मइ नासतो, गलियम्म य वाहण ॥३७॥
 खड्डुया मे खवेहा मे, अक्कोभा य वहा य मे ।
 कल्लाणमणुसासतो, पायदिट्ठित्ति मभइ ॥३८॥
 पुत्तो मे भाय नाइ त्ति, साट्ठ वट्ठण मभई ।
 पायदिट्ठिउ अण्णाण, सास दासि त्ति मभइ ॥३९॥
 न कोवण आयरिय, अण्णाणांपि न कोवण ।
 बुद्धोयघाई न सिया न मिया तोत्तागवेसण ॥४०॥
 आयरिय कुलिय नग्गा, पत्तिपण पसायण ।
 विज्जक्खेज्ज पजलीउट्ठो, वणज्ज न पुणेत्ति य ॥४१॥
 घम्मज्जिय च ववहार, बुद्धहायरिय सया ।
 तमायरतो ववहार, गरह नाभिग छइ ॥४२॥

मणोगय यक्ष य, जाणितागरियस्स उ ।

त परिणिज्झ पायाण, कम्ममुणा उग्गायण ॥४३॥

विस्से अचोदण निच्च, 'खिप्प हवइ सुचोदण ।

अहोउदट्ठ सु य, किञ्चाह कुग्गई सया ॥४४॥

मया नमइ मेरावी, लोण किच्ची से जायण ।

हवई किञ्चाण सरण, भूयाण जगइ जहा ॥४५॥

पुज्जा जस्स गभीयति, सउद्धा पुग्गसयुया ।

पससा लामइस्ससि, विउल अट्ठिय सुय ॥४६॥

स पुज्जनस्ये सुविणीयमसण,

'मणोत्तई चिट्ठई कम्ममपया ।

तयोसमाणरिसमाहिसुद्धे,

महज्जुई पच्च ययाह पालिया ॥४७॥

म देवगधज्यमणुत्तमपूइण

घररु देह मत्तपक्कपुण्यय ।

सिद्धे वा हवइ लामण,

देवे वा अप्परण महिद्धीण ॥४८॥ चि वेमि

॥ विट्ठायुय नाम पम्म अज्झयण समघ ॥

॥ अइ दुइअ परिसहज्जमयण ॥

सुय मे आउस 'हेण भगवया एवमपत्ताय—इह खलु
मार्यास परिसहा नवणेण भगवया महावीरेण वासवेण पये-
इया । जे भिक्कु 'सेणा' तथा निष्ठा अभिभूय भिक्खापरियाण
पणिध्ययता पुट्ठो पविनिज्ज-उज्जा ।

कपरे नेण दुशरीस परिसहा समणेण भगवया महा-

१ कपरे पाठ्ये ५१ । २ मणिरिद्धय भवपमसुधं पाया ।

वीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा
अभिभूय भिक्खायरियाए परिउयतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा ?

इमे ते यल्लु धात्रीस परीसहा समणेण भगव्या महारीरेण
कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभि-
भूय भिक्खायरियाए परिउयतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा, तजहा-

दिगिंछापरीसहे १ पित्रासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३
उसिणपरीसहे ४ दम्ममसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे ६ अग्ग-
परीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चरियापरीसहे ९ निसीहियापरीसहे १०
सेज्जापरीसहे ११ अक्रोसपरिसहे १२ उहपरीसहे १३ जायणा
परीसहे १४ अलामपरीसहे १५ रोगपरीसहे १६ तण्कास-
परीसहे १७ जल्लुपरीसहे १८ सक्कारपुरक्कारपरीसहे १९ पद्मा-
परीसहे २० अन्नाणपरीसहे २१ दम्मणपरीसहे २२ ।

परीसहाण पविमत्ती, कासवेण पवेइया ।

त मे उदाहरिस्सामि, आणुपुंवि मुण्हेह मे ॥१॥

दिगिंछापरिणए वेहे तवस्मी भिक्खू धायम ।

न छिंदे न उट्ठाउए, न पए न पयायए ॥२॥

कालीपग्गमकासे, किसे धम्मणिससए ।

मायधे असण्णणस्स, अदीणमणसो चरे ॥३॥

तजो पुट्ठो पिचामाए, दोगुच्छी लज्जसजए ।

सीओदग न सेज्जिजा, त्रियडस्सेसण चरे ॥४॥

छिन्नावाएसु पथेसु, आउरे मुपिजासिए ।

परिसुक्कमुहाग्गीणे, न तित्तिन्हे परीवह ॥५॥

चरत विरय लूह, सीय पुम्मइ पगया ।

नाइवेल मुणी गच्छे, सोज्जाणं जिणसामण ॥६॥

१ दिगिंछापरिवाजेण । २ सम्यतो य परिउयण । ३ विड्विज्जा
पावविट्ठी विहसइ ।

न मे निवारणं त्रिभिः, ह्यविनाशं न विदुः ।
 अहं तु अग्निं सेवामि, इह भिक्षु न चिन्तय ॥३॥
 उदितपरियायेण, परिदृष्टेः तज्जिह्व ।
 धिसु या परियायेया साय नो परिदेवय ॥४॥
 उदहाहितसो मेहायी, सिङ्गाग नो वि पठय ॥
 गाय नो परिसिञ्चेज्जा, न पीपज्जा य अण्णय ॥५॥
 पुट्ठो य वृममसपहिं, समरे य मद्दामुणी ।
 नागो सगामसीमे या, मूरो अभिहणे पर ॥६॥
 न सतसे न धारेज्जा, मणं पि न पयोसय ।
 उयेहे न हणे पाणे, भुज्जते मसमोणिय ॥७॥
 परिजुण्णेहि यत्थहि, होफखामि सि अचेलय ।
 अकुपया सचेकर होफल, इह भिक्षु न चिन्तय ॥८॥
 एगयाऽचेलय होह, सचेले आवि एगया ।
 एय धम्म हिय नच्छा, नाणी नो परिदेवय ॥९॥
 गामाणुगाम रीयत, अण्णगार अकिञ्चणं ।
 अरहं अणुण्णवेसेज्जा, स तित्तिक्खे परीसह ॥१०॥
 अरहं पिट्ठो किक्षा, विरयं आयरक्खिय ।
 धम्मारामे निरारम्मे, उवसते मुणी धरे ॥११॥
 सगो पक्ष मल्लुसाण, जाओ लोणमि वट्ठिणो ।
 तो तार्हि विणिहम्मेज्जा, धरेज्जसतवेसय ॥१२॥
 एग एज धरे लाहे, अभिभूय परीसहे ।
 गामे या नगरे वाजि, निगमे या रायहाणिय ॥१३॥
 असमाणे धरे विदसू, नेव कज्जा परिगह ।
 अससत्ता विहत्योदि, अण्णियं परिजय ॥१४॥
 सुलाणे सुभगारे या, रक्खमूल य एगओ ।
 अकुक्कुओ निमीपज्जा, न य तित्तामय पर ॥१५॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स, उवसग्गामिधारण ।
 सकाभीओ न गच्छेज्जा, उट्ठित्ता अजमासण ॥२१॥
 उच्चवाययाहि सेज्जाहिं, तवस्सी भिक्खू थामव ।
 नाइवेल विहन्तिज्जा, पाणदिट्ठी विहघई ॥२२॥
 पइरिक्खु यस्सय लल्लु, कल्लणमदुवा पाणय ।
 किमेगराह करिस्मइ, एय तत्थऽहियासण ॥२३॥
 अज्जोसेज्जा परे भिक्खु, न तेसिं पडिसज्जे ।
 सरिसो होइ बालाण, तम्हा भिक्खु न सज्जे ॥२४॥
 सोच्चण फदसा भासा, दारणा गामकण्डगा ।
 तुसिणीओ उवेहेज्जा, न ताओ मरासीकरं ॥२५॥
 हथो न सज्जे भिक्खु, मणपि न पओसण ।
 तितिक्ख परम नच्चा, भिक्खू धम्म विचित्तण ॥२६॥
 समण सज्जय दत्त, हणिज्जा कोइ नत्थइ ।
 नत्थ जीयस्स नासुत्ति, 'एय पेहेज्ज सत्तण ॥२७॥
 दुक्कर खलु भो निध, अणगारस्स भिक्खुणो ।
 सव्व से जाइय होइ, नत्थि किंचि अजाइय ॥२८॥
 गोवरग्गपयिट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारण ।
 सेणो अगारयासुत्ति, इह भिक्खू न चित्तण ॥२९॥
 परेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिणिट्ठिण ।
 'लद्धे पिएडे अलद्धे वा, नाणुत्तप्येज्ज पट्ठिण ॥३०॥
 अज्जेवाह न लभामि, अवि लाभो सुण सिया ।
 जो एय पडिसच्चिक्खे, अल्लामो त न तज्जण ॥३१॥
 नच्चा उप्पइय दुक्कल, वेयणाण दुहट्ठिण ।
 अमीणो धावण पध, पुट्ठो तत्थऽहियासण ॥३२॥

तेऽद्य न भिनदेज्जा मचिक्खत्तगवेसण ।
 एउ तु तस्स सामण्ण, ज न कुज्जा न कारवे ॥३३॥
 अयमगस्स लूहस्स, सज्जयस्स तवस्सिणो ।
 तणेसु सयमाणस्स, हुज्जा गायविराहणा ॥३४॥
 आययस्म निवाण्ण, अउत्ता हयह वेयणा ।
 एउ मच्छा न सेउत्ति, तमुज्ज तण्णतज्जिया ॥३५॥
 किम्भिण्णाय मेहारी, पण्णेष थ रण्ण जा ।
 धिंसु धा परिगवेण, साय नो परिदेवण ॥३६॥
 वेणउज्जा निज्जगपही, आरिय धम्मणुसार ।
 जाय सतिग्गेउत्ति, जए काण्ण धारण ॥३७॥
 अभिवायणमम्भुट्ठाण, लामी कुज्जा निमतण ।
 जे ताए पट्टिसण्णन्ति, न तेसिं पीहण मुणी ॥३८॥
 अणुज्जसाई अग्निन्द अवाण्मी अलोउप ।
 रसेसु नाणुगिज्जेज्जा, नाणुतपज्ज पण्णय ॥३९॥
 मे नूणा मए पुट्ट, कम्माऽलाणकला वडा ।
 जेणाह नाभिजाणामि, पुट्टो वेणह कण्हूई ॥४०॥
 अह पच्छा उइज्जन्ति, कम्माऽलाणकला वडा ।
 एउमस्तासि अण्णाण, मग्घा कम्मवियाणय ॥४१॥
 निरदुगम्मि विरब्भो, मेहुणाओ सुसउडो ।
 जो सफ्फ न भिजाणामि, धम्म कल्लाणवाचण ॥४२॥
 तयोउण्णमादाय, पट्टिम पट्टिवज्जयो ।
 एयं पि त्रिहरओ म, छउम न नियदुह ॥४३॥
 नत्थि नूणा परे लोण, इहही वायि तउस्सिणो ।
 अदुवा यच्चिओमिच्चि, इह भिक्खू न चित्ठ ॥४४॥
 अभू जिण्ण अत्थि जिण्ण, अदुवावि मरिस्सर ।
 सुस ते पवमादसु, इह भिक्खू न चित्ठ ॥४५॥

एष परीमहा स्त्रे, कासवेण पवेइया ।

जे भिक्खू न विहन्नेज्ज, पुट्ठा रेणइ कगह् ॥४६॥स्ति चेमि॥

॥ दुइअ परिसहज्मयण समत्त ॥२॥

॥ अह तइअ चाउरगिज्ज अज्मयण ॥

धत्तादि परमणाणि एल्लहाणीह जत्तुणो ।

माणुस्स सुई सद्धा, सज्जमम्मि य वीरिय ॥१॥

समायत्ताण ससारे, नाणागोत्तासु जाइसु ।

कम्मा नाणाविहा कट्ठु, पुट्ठा विस्समिया पया ॥२॥

एगया वेपलोएसु, नरएसु वि एगया ।

एगया आसुर काय, अहाकम्मेहि गच्छइ ॥३॥

एगया एस्सिओ होइ, तओ चण्डालबुद्धमो ।

तओ कीडपयनो य, तओ कुत्थु पिरीलिया ॥४॥

एवमाणुजोणीसु, पाणिणो कम्मकिविसा ।

न निज्जित्ति ससारे, सवट्ठेसु य एत्थिया ॥५॥

कम्मसगेहि समूढा, दुक्खिया बहुवेयणा ।

अमाणुसासु जोणीसु, विणिहम्मंति पाणिणो ॥६॥

कम्माणा तु पहाणाए, आणुपुत्थी कयाइ उ ।

जीउ। सोहिमणुप्पसा, आययति मणुस्सय ॥७॥

माणुस्स विग्गइ लद्ध सुई धम्मस्स दुहहा ।

ज साशा पडिवज्जति, तय एत्तिमहिंसय ॥८॥

आहथ सयण लद्ध सद्धा परमदुहहा ।

सोशा नआउय मग्ग, वहवे परिमस्सइ ॥९॥

सुइ च लद्ध सद्ध च, वीरिय पुण दुहहा ।

पहवे रोयमाणवि, नो य ए पडिवज्जए ॥१०॥

माणुसत्तामि आयाओ, जो धम्म सोअ सदहे ।
 नवस्सी वीरिय लद्धु, सधुडे निदये रय ॥११॥
 सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठ ।
 निब्बाणा परम जाइ, घयसिस्सिव्य पाअए ॥१२॥
 विगिअ कम्मणो हेउ, अस सन्निणु एतिए ।
 सरीर पादव हिआ, उद्ध पक्कमए दिस ॥१३॥
 यिसालसेहिं सीलेहिं, अक्खा उत्तरउत्तरा ।
 महासुक्का य दिप्पता, मअता अपुण्णय ॥१४॥
 अणिया देवकामाण, कामरूपनिउट्ठिणो ।
 उद्ध कप्पसु चिट्ठति, पुट्ठावाससया बहु ॥१५॥
 तत्थ टिआ जहाठाण, जक्खा आउक्खये सुया ।
 उवेति माणुस जोणि, से दसगे मिजायए ॥१६॥
 रिअ पाधु हिरण स, पसवो दासपोरुस ।
 चत्तारि कामखधाणि तत्थ से उययअइ ॥१७॥
 मित्तय नाइय होइ, उआगोए य वण्णय ।
 अण्णायके महापणे, अभिजाण असो वले ॥१८॥
 भुआ माणुस्सण मोए, अप्पडिरुवे सहाउय ।
 पुव्व यिसुद्धसद्धम्मे, वेवल रोहि बुज्झिया ॥१९॥
 चउत्ता दुल्लह 'नआ, मज्जम पडिधज्झिया ।
 तयसा धुमक्कम्मसे, सिंहे हवइ सासए ॥२०॥ सि वेमि ।

तत्थ चाउरगिअ अज्झयण समत्त ॥

॥ अइ चउत्थ असखय अज्झयण ॥

असागय जीविय मा पमायए,

जरावणीयस्स इ नत्थि ताण ।

एव विवाराहि जणे पमत्ते
 'कि'नु विहिंसा अत्रया गहिति ॥८॥
 जे पाचम्मेहि धण मखुसा,
 समाययती अमइ गहाय ।
 पहाप ते पासपवट्टिए नरे
 वेराणुअडा नरय उविति ॥९॥
 तेणे जहा सविमुहे गहीण,
 सन्मुला किअइ पायकारी ।
 एव पया पद्य इह च लोए,
 वडाण कम्माण न मोक्खर अत्थि ॥१०॥
 ससारमायअ परम्म अट्टा,
 साहारण ज च करेइ कम्म ।
 कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले,
 न उघरा वधवय उविति ॥११॥
 विच्छेण ताण न लमे पमत्ते,
 इममि लोए अदुया परत्थ ।
 दीपप्पण्ढेय अणात्मोहे,
 नेयाउय दददुमददुमेव ॥१२॥
 सुत्तेसु आनी पड्डिपुद्धजीवी
 न वीससे पड्डिय आसुपण्णे ।
 घोरा मुट्ठत्ता अयत सरीर,
 भारडपञ्खीज चरेऽयमत्ते ॥१३॥
 चरे पयाइ परिसक्माणो,
 ज किंचि पास इह मप्पमाणो ।

लाभतर जीविय चूहरत्ता,
 पच्छा परिधाय मयावधसी ॥७॥
 छद-रोहेण उवेद मोक्ख,
 आसे जहा सिक्खियवम्मघारी ।
 पुब्बाए णसाइ चरप्पमत्ते,
 तम्हा मुणी विप्पमुणे मुक्ख ॥८॥
 स पु-मेय न लमेज पच्छा,
 एमोवमा सासयवाइयाण ।
 धिमीयइ सिदिले आउयम्मि,
 कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥९॥
 दिप्प न नठेइ विवेगमेउ,
 तम्हा समुहाय पहाय कामे ।
 समिध लोय नमया महेमी,
 अण्णारक्खी चरप्पमत्ते ॥१०॥
 मुहु मुहु मोहगुणे जयत,
 अणेगरूढा समया चरत ।
 फासा पुसति असमजम च,
 न तेसि भिक्खु मण्णमा पउम्हे ॥११॥
 मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा,
 तहप्पगारेसु मण न झुज्जा ।
 रक्खिज्ज बोह विण्णज्ज माण,
 माय न मेयेज्ज पहेज्ज लोह ॥१२॥
 जे मयाया तुण्णरप्पवाई,
 ने पिज्जदासाणुगया परज्झा ।
 एए गहम्मे ति दुगुछमाणो,
 फत्ते गुणे जाव मरीरमेउ ॥१३॥ ति वेमि ।

॥ अह अराममरणेन पञ्चम अज्झयणं ॥

अण्णवसि महोदसि, एगे तिण्णो दुरुत्तर ।

तत्थ एगे महापणे, इम पण्हमुदाहरे ॥१॥

सन्तिमे य दुये ठाणा, अक्खाया मरणतिया ।

अकाममरण चेत्त, सकाममरण तद्दा ॥२॥

वालाणा तु अकामं तु, मरण असइ भवे ।

पण्डियाणा सकाम तु, उज्जोसेण सह भवे ॥३॥

तत्थिम पढम ठाण महार्थीरेण दसिय ।

कामगिद्धे जहा थाले, भिस्स इग्गइ कुट्ठई ॥४॥

जे गिद्धे कामभोगेसु एगे कूडाय गच्छइ ।

न मे दिद्धे परे लोप, चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥५॥

हत्थागया इमे कामा, कालिया जे अणागया ।

को जाणइ परे लोप, अत्थि वा नत्ति य ता पुणो ॥६॥

अण्णेण सद्धि होक्खामि इइ थाले पगभइ ।

कामभोगाणुरापण, वंस सपडियजई ॥७॥

तत्थो से दण्ट समाग्गइ, तसेत्तु थावरेसु य ।

अट्ठाप थ अणट्ठाप भूयगाम विहिंसई ॥८॥

हिंसे थाले मुसायई, माइल्ले पिसुणे सवे ।

भुजमाणे सुर मस, सेयमेय ति मअई ॥९॥

कायसा यथसा भत्ते, तित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।

दुहओ मत्त सच्चिणइ सिमुणागुत्त मट्ठिय ॥१०॥

तत्थो पुट्ठो आयकेगा, गिलाणो परिणप्पई ।

पमीओ परत्तोग्गम्म, वग्गमाणुप्पति अपणो ॥११॥

सुया मे नरण ठाणा, अमीलाण च जा गई ।

वालाणा कुरक्कमाणा, पगाढा जत्थ वेयणा ॥१२॥

तस्योद्यथायै टाग, जहा मे तनयुस्तुय ।

अहाकम्मेहिं मच्छ-तो सो पन्ना परितप्पइ ॥१३॥

जहा सागट्ठिओ जाग, सम दिशा महाग्ग ।

विसम मग्गमोएण्णो, अक्खे भग्गम्मि सोयई ॥१४॥

एय धम्म विउक्कम्म, अहम्म पट्टियल्लिया ।

वाले मच्छुमुह पत्त, अक्खे भग्गे य सोयई ॥१५॥

तस्यो से मरुणन्तम्मि, वाले सतमई मया ।

अकाममरण मरइ धुत्ते य कलिणा जिप ॥१६॥

एय अकाममरण, वालाण तु पजेय्य ।

इत्तो सकाममरण, पण्डियाण सुणेह मे ॥१७॥

मरणं पि सपुण्णाण, जहा मेयमणुस्तुय ।

विप्पसएणमणाघाय, सजयाण सुमीमओ ॥१८॥

न इम सयेसु भिक्खून्तु न इमे सयेसुग्गारिस्सु ।

नाणासीला अगारत्था विसमसीला य भिक्खुणो ॥१९॥

सन्नि एगेहिं भिक्खुहिं गारत्था सजमुत्तरा ।

गारत्थेहे य सयेहेहिं, साहयो सजमुत्तरा ॥२०॥

चीराजिण नगिणिण, जही सघाडिमुण्डिण ।

एवाणि त्रि न तायति, दुस्सीले परियागय ॥२१॥

पिड्डोलण्णं दुस्सीले, नरगाओ न मुचर ।

भिक्खाय था गिहरये या, सुवण कम्मइ दिघ ॥२२॥

अगारिस्सामाएयणाणि, सइठी काएण कासए ।

पोसइ दुहओ पक्ख, एगराय ७ हावण ॥२३॥

य सिक्खासमाधने, गिहवासे त्रि सव्वए ।

एइ छुत्तिपट्ठाओ, गच्छे अपरसलोगय ॥२४॥

गह जे सवुडे भिक्खू दोण्ह जणयरे सिघा ।

एवदुक्खपटीणे था, पेवे थावि मदिहदीए ॥२५॥

उत्तराई विमोहाइ, जुइमन्ताणुपु यसो ।
 समाइगण्ड जक्येहिं, आवामाइ जससिखो ॥२९॥
 दीहाउया इदिमन्ता, समिद्धा कामरुविखो ।
 अहुणोउअसकामा, भुजो अश्विमातिपमा ॥३०॥
 ताणि ठाणाणि गच्छति,
 तिक्किपत्ता सज्जम तय ।
 भिक्ख,ए वा निहित्ये धा,
 जे सति परिनिवुडा ॥३१॥
 तेजि सौंया सपुज्जाया, सज्जयाण बुमीमणो ।
 न सतसति मग्गले, सीलवन्ता बहुमुया ॥३२॥
 तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स खतिण ।
 निपसीएज मेहारी, तहाभूएण अप्पणा ॥३३॥
 तओ काले अभिपण, मग्गदी तालिसमतिण ।
 विणएज्ज लोमहरिस्स, मेय नेहस्स कखण ॥३४॥
 अइ कालम्मि सपत्ते आघायाय समुम्सय ।
 सक्काममरण मरह, तिग्गमसयग मुणी ॥३५॥ सि वेमि ।
 इय अनाममरणिज्ज पचम अग्गमयण समत्तं ॥३६॥

॥ अइ सुद्धागणिगठिज्ज छट्ठ अग्गमयण ॥

जाउ तउविज्जापुरिमा, सव्ये ते दुक्खसमवा ।
 लुप्पति बहुसो मूढा, ससाग्गमि अणतण ॥३७॥
 समिक्ख एणिण्ण तम्हा, पासजाएण्णे यह ।
 अपणा सव्यमेसेज्जा मिच्छि भूणसु कण्ण ॥३८॥
 माया पिया गहुसा माया, भज्जा पुत्ता य ओरसा ।
 नाल ते मम ताणाए, लुप्पतस्स सक्कमुणा ॥३९॥

एवमदृ सपेदाए, पासे समियदसखे ।

छिन्द गिद्धि सिणेह च, न करे पुत्रमयव ॥४॥

गवास मणिकुण्डल, पसवो दासपोदस ।

सद्वमेय चदत्ताता कामरूरी मयिस्ससि ॥५॥

(याय जगम चेत धरा धध उरफतर ।

पञ्चमालारस कम्मोहिं नाल दुक्खाउ मोयणे ॥)

अज्जमय सद्वमो सद्व, दिस्स पाणे वियायए ।

न हणे पाणिणो पाणे, मयवेरामो उयरए ॥ ॥

आदाण नरय निस्स, नायएज्ज तणामयि ।

दोगुन्ही अण्णो पाए, दिन्त भुजेज्ज भोयण ॥७॥

इहमेगे उ मज्जति, अण्णफसाय पाउग ।

आयरिय विन्तिता ग सउदुफला विमुचए ॥८॥

मयाता अकरेन्ता य, यधमोफजपण्णिणो ।

यायायीरियमेसेण, समामासेति अण्णय ॥९॥

न चित्ता तायए भासा, कुओ विज्जाणुसासग ।

विसन्ना पायकम्मोहिं, वाला पडियमाणिणो ॥१०॥

जे केर सरीरे सत्ता, यणणे रुवे य सउमो ।

मणसा कायघेणग, सत्ते ते दुक्खसमया ॥११॥

आयन्ना दीहमज्जाणा, मसारम्मि अणत्तण ।

तम्हा सवदिम पस्स, अण्णमत्तो परिउए ॥१२॥

यहिया उहदमादाय, नाउकरो कयाह वि ।

पुत्रकम्मफलयट्टाए, इम दह समुद्धरे ॥१३॥

विविध कम्मणा हउ कालग्गी परिवयए ।

राय पिंडस्स पाणस्स, कट लद्धूण भक्खए ॥१४॥

तमो वम्मगुरु जत्त, पञ्चुण्णपरायणे ।
 अपश्य चागयाएमे, मरणतम्मि सोयए ॥६॥
 तथो आउपरिक्खीणे, चुयदेहा विहिंसगा ।
 आमुरीय त्सि वाला, गच्छति अयमा तम ॥१०॥
 जहा पाणिणिण हेउ, सहस्स हारए तरो ।
 अपएधं अम्भग भाष्ठा, राया रज्ज तु हारए ॥११॥
 एय माणुस्सगा कामा, देयकामाण अतिए ।
 सहस्सगुणिया भुजो, आउं कामा य दिप्पिया ॥१२॥
 अणेगवानानउया, जा सा पन्नयथो ठिई ।
 जाणि जीयति दुम्मेहा, ऊणे वाससयाउए ॥१३॥
 जहा य तिमि यणिया मूल पेच्चूण निग्गया ।
 एगोऽए लहए लाभ एगो मूलेण आगमो ॥१४॥
 एगो मूल पि हारित्ता, आगमो तच्च पाणिओ ।
 मूलच्छेपण जीयाए नरगतिरिक्खसए धुय ॥१५॥
 दुहमो गई वालस्स, आयईयहमूठिया ।
 पेयता माणुसता य ज जिए लोलयासदे ॥१७॥
 तथो जिए नर दोह दुविह दुग्गह मए ।
 दुल्लहा तरस्स उम्मग्गा, अखाए खुचिरादवि ॥१८॥
 एधं जिए सपहाण, तुलिया वाल च पण्हिय ।
 मूलिय ते पयेमति, माणुसि जोणिमेति जे ॥१९॥
 पेमायाहिं सिक्खहिं, जे नरा गिहिसुवया ।
 उयति माणुस जोणि, कम्मसत्ता इ पाणिणे ॥२०॥
 जे सिं तु विउला सिक्खा, मूलिय तं अइच्छिया ।
 सीलवता सविसेसा, अदीणा जति देयय ॥२१॥
 एधमनीणध मिक्खू, आगारिं च रियाणिया ।
 'हगणु जिअमेतिक्ख, जिअमाणे न सजिदे ॥२२॥

जदा कुमगगे उदग, समुद्रेण सम मिले ।
 एउ माणुस्सगा कामा, देउकामाण अतिण ॥२३॥
 कुमगमेत्ता इमे कामा, सधिम्हम्मि थाउण ।
 कम्म हेउ पुराकाउ, जोगक्खेम न सयिने ॥२४॥
 इह कामणियट्ठस्म, अत्तट्ठ अवरज्जम्ह ।
 सोव्वा नेयाउय मग्ग, ज भुज्जो परिभस्सई ॥२५॥
 इह कामणियट्ठस्म, अत्तट्ठे नावरज्जम्ह ।
 पूइवेइतिरोहेण भवे नेत्रिचि मे सुय ॥२६॥
 इहणी जुइ जसो एण्णो, आउ सुहमणुत्तर ।
 भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु तत्थ से उउरज्जइ ॥२७॥
 बालस्स पस्स गालरा अहम्म पडिवज्जिया ।
 चिन्वा धम्म अहम्मिट्ठे, नए उउरज्जइ ॥२८॥
 धीरस्स पस्स धीररा, 'स'उधम्माणुवसिणो ।
 चिन्वा अधम्म धम्मिट्ठे, दवेणु उउरज्जइ ॥२९॥
 तुलियाण बालभाउ, अगाल चेउ पण्डिण ।
 बहज्जण गालभाउ अवाल सेउण मुणी ॥३०॥ सि धेमि ॥
 एण्यअक्यण समत्त ॥३१॥

॥ अह कारिलिय अट्ठम यज्जयणा ॥

अधुने असासयम्मि

ससारम्मि दुक्खपउराए ।

किं नाम होउत्त त कम्मय

जेणाह दुग्गइ न गच्छेज्जा ॥१॥

विजहिनु पुउसज्जोय,

न सिणेह कट्ठिचि कुम्भेज्जा ।

असिण्डसिण्डहरेहि,
 दोसप जोसेहि मुचप मिफव ॥२॥
 तो नाणदसणसमगो,
 हियनिस्सेसाण सत्तजीयाण ।
 तेसिं विमोक्खणट्ठाए
 भासइ मुणिघरो विगयमोहो ॥३॥
 सय गय कलह च,
 विपज्जेतहाविह मिफव ।
 सवेणु कामजापसु,
 पासमाणो न लिण्णइ ताई ॥४॥
 भोगामिसदोसविसम्भे,
 हियनिम्भेयसधुद्धियोच्चत्थे ।
 घाले य मदिण मूढे,
 यज्झइ मच्छिया य खेलम्मि ॥५॥
 दुप्पग्गिच्चया इमे कामा,
 नो सुजहा अघीरपुरीसेहिं ।
 अह गति सुत्तया साह,
 जे तरति अतर मणिया घा ॥६॥
 समणा मुक्खे वयमाणा,
 पाणउह मिया अयाणत्ता ।
 मदा निरय गच्छति,
 गणा पाणियाहि दिट्ठीहिं ॥७॥
 न ह गणउह अणुजाणे,
 मुचज्ज कयाइ सत्तदुक्खजाण ।

परारिपिहि अस्माय,
 जेहि इमो सादुधम्मो पचत्तो ॥१८॥
 पाणे य नादयाएज्जा,
 से समाइ त्ति बुच्चइ ताई ।
 तमो से पायय कम्म,
 निज्जाइ उद्दग घ यत्ताओ ॥१९॥
 जगतिस्सिपहिं मूएहिं,
 तसनामेहिं थाउरेहिं च ।
 नो तेत्तिमारमे वड,
 मणमा पयसा कायसा खेर ॥२०॥
 सुद्धमणाओ नघाण,
 नत्थ ठवेज्ज भिक्खू अण्णाण ।
 जायाए घ ममेमेरत्ता,
 रमगिद्ध न तिया भिक्खयाए ॥२१॥
 पत्ताणि चेष सेउज्जा,
 तीअपिण्ड पुराणकुम्माम् ।
 अदु पुअत्त पुलग गा,
 जउणट्ठाए निसेउए मधु ॥२२॥
 जे लक्खण घ सुणिग च,
 अद्दविज्ज न जे पउज्जति ।
 न ह न ममणा बुच्चति,
 एउ नायरिपिहिं अस्माय ॥२३॥
 इह जाणिय अणियमेत्ता,
 एमट्ठा समादिज्जोएहिं ।
 ने कामभोगम्मगिद्धा,
 उउउउउति आसुरे काए ॥२४॥

तप्तो वि य उज्यद्विष्ठा,
 ससार यद्गु अणुपरियडति ।
 यद्गु कश्मलेषल्लिच्छाणां,
 योती हेम सुवुल्लहा तेसिं ॥१८॥
 कसिणापि जो इम लोय,
 पडिपुण्ण दलेज्ज इकस्स ।
 तणादि से न सत्तुस्से,
 इह दुप्पूरण इमे आया ॥१९॥
 जहा लाहेो तहा लोहेो,
 लाहा लोहेो पयग्ग ।
 दोमासकय कज्ज,
 योडीय वि ण निद्विय ॥२०॥
 मो इक्खसीसु गिज्जेआ,
 गह्वर-टासु अयोगचिन्तासु ।
 जाओ पुत्तिम पलोमिन्ता,
 खेहति अहा य दासेहिं ॥२१॥
 नारीसु मोचगिज्जेज्जा
 इत्थी विप्पजहेज्ज अणुगारे ।
 धम्म य पत्तल नथा,
 तत्थ ठवेज्ज भिक्कु अण्णारा ॥२२॥
 इअ एम धम्मा अक्खाप,
 कविलेण य तिसुद्धपरेण ।
 नरिज्जित्ति जे उ पाट्ठित्ति,
 तेहिं आणहिया दुवे लोगा ॥२३॥ सि धेमि ॥
 ॥ पाविलीय थदम अज्झयण समत्त ॥

॥ अह नवम नमिषव्यञ्जो अजम्भयण ॥

चदऊण देवलोगाभो, उववभो माणुसमि लोगमि ।
 उवस-तमोदमिज्जो, मरइ पोरणिय जाइ ॥१॥
 जाइ सरित्तु मयव, सहससुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
 पुत्त उत्रित्तु रज्जे, अमिणिक्खमइ नमी राया ॥२॥
 से देवलोगसरित्से गन्तेउरउरगओ घरे भोए ।
 भुजिच्चु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयइ ॥३॥
 मिहिल सपुरजणउय, बलमोरोह च परियण सव्व ।
 चिन्वा अमिनिक्ख-तो एग-तमहिद्धीओ भयव ॥४॥
 कोलाहलगसभूय, आसी मिहिलाए पट्टयन्तमि ।
 तइया रायरिसिमि, नमिमि अमिणिक्खमंतमि ॥५॥
 अ-भुट्ठिय रायरिसिं, प-यजाठाणमुत्तम ।
 सको माइणरूपेण, इम वयणम-इवी ॥६॥
 दिण्णु भो अज्ज मिहिलाए, कोलाहलगसकुला ।
 'मु-पत्ति दाम्णा सहा, पासाएसु गिहेसु ग ॥७॥
 एयमट्ठ निसामित्ता देऊफारणचोइ-ओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमव्ववी ॥८॥
 मिहिलाए चेइए वच्छे, तीयच्छाए मणोरसे ।
 पत्तापुप्फफलोवेए, यहण यहुगुणे सया ॥९॥
 पाएण हीरमाएम्मि, चेइयम्मि मणोरसे ।
 दुहिया असरण अत्ता, एए वदसि भो ! खगा ॥१०॥
 एयमट्ठ निसामित्ता, देऊफारणचोइओ ।
 तओ नमि रायरिसिं, देविंदो इणमव्ववी ॥११॥

एवमट्ट निमामित्ता, हेऊकारण्योहभो ।
 तस्यो नमी रायस्मिन्नि, वयि द हगमप्यरी ॥२७॥
 ममय वनु गो वृत्त ओ मग्गे वृत्त यत् ।
 जलंय ग वुमिन्दुत्ता, तस्य वृत्तंज सामय ॥२८॥
 एवमट्ट निमामित्ता, हेऊकारण्योहभो ।
 तस्यो नमी रायस्मिन्नि, वयिन्दो हगमप्यरी ॥२९॥
 आमासे गेमग्गे य, गटिमय य तकरे ।
 मगरम्भ रय वडग्गे, तस्यो गण्ठनि वसित्ता ॥३०॥
 एवमट्ट निमामित्ता, हेऊकारण्योहभो ।
 तस्यो नमी रायस्मिन्नि, वयिन्दो हगमप्यरी ॥३१॥
 असह नु मलुम्भति, मिच्छा वडा पञ्जय ।
 अवादिगोद्वय पञ्जति, मुचय कारभो जग्गे ॥३२॥
 एवमट्ट निमामित्ता, हेऊकारण्योहभो ।
 तस्यो नमी रायस्मिन्नि, वयिन्दो हगमप्यरी ॥३३॥
 जे केर पचिया गुग्ग, नानमेनि मरादिया ।
 वसे न टायहसाग, तस्यो गण्ठनि वसित्ता ॥३४॥
 एवमट्ट निमामित्ता, हेऊकारण्योहभो ।
 तस्यो नमी रायस्मिन्नि, वयिन्दो हगमप्यरी ॥३५॥
 जा सहस्व वण्णमाता, मग्गाम दुज्जय जिले ।
 एग जिगज्ज अय्याग एम म परमो जग्गे ॥३६॥
 अपालमय जुग्गादि, वि ते जुग्गेण वग्गग्गो ।
 मप्यगा चय अय्याण, जहणा मुहमहय ॥३७॥
 पचियिज्जि वीर, माण माय तटय सोह य ।
 दुज्जय चय क गण, सय्य अण्ण निव जिय ॥३८॥
 एवमट्ट निमामित्ता, हेऊकारण्योहभो ।
 तस्यो नमी रायस्मिन्नि, वयिन्दो हगमप्यरी ॥३९॥

जइत्ता चिउले जने, भोइत्ता ममणमाहणे ।
 वच्चा भोच्चा य जिह्वा य, तओ गच्छसि खसिया । ॥३८॥
 एयमट्ट निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमण्ववी ॥३९॥
 जो सहस्स महस्साणा, मासे मासे गय दण ।
 तरस पि सजमो सेओ, अदिन्तस्स वि विंचण ॥४०॥
 एयमट्ट निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमि रायरिमि, देविन्दो इणमण्ववी ॥४१॥
 घोरासम चइत्ताणा, अन्न पत्थेसि आसम ।
 इहेय पोसहरओ, भवाहि मणुवाहिया । ॥४२॥
 एयमट्ट निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमण्ववी ॥४३॥
 मासे मासे तु जो पासो, पुसग्गेण मु भुजण ।
 न सो सुअकक्षापधम्मस्स, वल अग्घइ सोलसि ॥४४॥
 एयमट्ट निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमि रायरिसि, देविन्दो इणमण्ववी ॥४५॥
 हिरणा सुयणा मणिमुत्ता कम्म कूस्स च वाहण ।
 कोस यद्वाचइत्ताण तओ गच्छमि खसिया । ॥४६॥
 एयमट्ट निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ ।
 तओ नमी रायरिसी, देविंद इणमण्ववी ॥४७॥

सुवण्णरुप्पास्स उ पट्ठया भरे,

सिया हु केलाससमा असणया ।

नरस्स लुयस्स न तेहि किंचि,

इच्छा हु आगासममा अणतिया ॥४८॥

पुट्ठी साली जवा चेव, हिरणा पसुमिस्सइ ।

पट्टिपुण्ण नाममेगस्स, इइ विज्जा तय चरे ॥४९॥

एषमद्व निमामिसा, हउबारणपोहयो ।
 नमो नमि रायतिमि, वरि-रो इलमन्वरी ॥१०॥
 अल्लरयमन्वरी, माण रायति रायति ।
 अल्लर याम पयति, मन्वरी विहयति ॥११॥
 एषमद्व निमामिसा, हउबारणपोहयो ।
 तमा नमो रायतिमि, वरि-रो इलमन्वरी ॥१२॥
 सल्ल वामा निम वामा, वामा धामीविमोवमा ।
 वाम पयेवाता, अवाता अति दोगाह ॥१३॥
 अहे ययति काहेनं माहेनं कहुमा नरे ।
 माया गह वटिग्याओ, लोहाओ दुहाओ मये ॥१४॥
 अयउमिऊण माहल्लरये, विउविऊण इयदा ।
 पन्दइ अमित्युगाता, इमाहि महुगतिं वग्गुति ॥१५॥
 अहो न निजिमो काहो, अहो माणे पणजिओ ।
 अहो निजिगा माया, अहो लोहे पमीकसा ॥१६॥
 अहो न अजये माहू अहो न माहू महय ।
 अहो न उगमा मग्गो अहो ने मुत्ति उगमा ॥१७॥
 इह नि उगामो मग्ग 'पणा हेदिमि उगामो ।
 लोणुसमुत्तामं ठाणं मिदि गच्छति तीरमो ॥१८॥
 एष अमित्युगाता, रायतिमि उत्तमाए सज्जाए ।
 गणारिणं कग्गो, पुणे पुणे यम्हए मग्गो ॥१९॥
 नो येउण पाण, यणं सुसल्लसण मुनिपरम ।
 अगासेणु-रहयो, ललियययमवृ-डनतिरीही ॥२०॥
 नमी नमेइ यग्गण, मयय मयेण थोरयो ।
 यउण गोह च येही, नामणो यज्जुयट्ठिमो ॥२१॥

एव करेति सद्युद्धा, पण्डित्या पदियक्तरा ।
विजिद्वृत्ति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ॥६८॥ तिवेमि

॥ नमिक्वजा समत्ता ॥

॥ अह दुमपत्तय दसम अज्जयसु ॥

दुमपत्तय पडुरय जहा,
निरुद्ध राहगलाण अणय ।

एव मखुयाण जीविय,
समय गोयम । मा पमायय ॥१॥

कुसग्गे जह ओसति-दुप,
धोय चिट्ठर सम्भमाणय ।

एव मखुयाण जीविय,
समय गोयम । मा पमायय ॥२॥

ए एत्तरियम्मि आठय,
जीवियय धुपयवायय ।

निहुणादि रय पुरे कड,
समय गोयम । मा पमायय ॥३॥

दुल्लहे एउ माणुमे भवे,
चिरफालेण नि स उप्पणिण ।

गाढा य विराग कम्मुणो,
समय भोयम । मा पमायय ॥४॥

पुढविकायमद्दगगो,
उज्जोस जीरो उ सवसे ।

काल

मन्दाईय

समय भोयम । मा पमायय ॥५॥

आउवायमइगओ,

उफोम जीयो उ मयसे ।

काले मयार्ये,

समय गोयम । मा यमायण ॥६॥

मेउवायमइगओ,

उफोम जीयो उ मयसे ।

काले मयार्ये,

समय गोयम । मा यमायण ॥७॥

याउकायमइगओ,

उफोम जीयो उ मयसे ।

काले मयार्ये,

समय गोयम । मा यमायण ॥८॥

पलमसइकायमइगओ,

उफोम जीयो उ मयसे ।

काले मयार्ये,

समय गोयम । मा यमायण ॥९॥

मेइदिवायमइगओ,

उफोम जीयो उ मयसे ।

काले मयार्ये,

समय गोयम । मा यमायण ॥१०॥

तइदिवायमइगओ,

उफोम जीयो उ मयसे ।

काले मयार्ये,

समय गोयम । मा यमायण ॥११॥

चउमिदिवायमइगओ,

उफोम जीयो उ मयसे ।

काल सस्त्रिज्जसन्निय,
 समय गोयम ! मा पमायण ॥१८॥
 पचिदियकायमइगओ,
 उणोस जीओ उ सयसे ।
 सत्तट्ठभयगहणे,
 समय गोयम ! मा पमायण ॥१९॥
 वेवे नेरइण य अइगओ,
 उणोस जीओ उ सयसे ।
 इफकेफभयगहणे,
 समय गोयम ! मा पमायण ॥२०॥
 एव भयससारे,
 ससरई सुहासुहेहि वम्मेहि ।
 जीओ पमायणहुले,
 समय गोयम ! मा पमायण ॥२१॥
 लख्खण वि माणुसत्तण,
 आरियत्त पुणरायि दुल्लह ।
 यहवे दसुया मिलकसुया
 समय गोयम ! मा पमायण ॥२२॥
 लद्धुण वि आरियत्तण,
 अहीणपचेदियया हु दुल्लहा ।
 निगल्लिदियया हु दीसई
 समय गोयम ! मा पमायण ॥२३॥
 अहीणपचेदियत्त पि मे लहे
 उत्तमधम्मसुह ए दुल्लहा ।
 कुत्तिप्पिनिमेउण जणे,
 समय गोयम ! मा पमायण ॥२४॥

लक्ष्म्या वि उत्तम सुद,
 मददणा पुण्यवि सुलहा ।
 मिच्छन्तिमेवय जले,
 समय गोपम । मा पमायय ॥१६॥
 धम्म पि दु सददन्तया,
 सुलहा वाण पासया ।
 इह कामगुणेदि मुच्छिवा,
 समय गोपम । मा पमायय ॥१७॥
 परिजूरह ते मरीरय,
 वेसा पण्डुरया हयति ते ।
 से सोयपल य दायई,
 समय गोपम । मा पमायय ॥१८॥
 परिजूरह ते मरीरय,
 वेसा पण्डुरया हयति ते ।
 से उफगुपले य दायई,
 समय गोपम । मा पमायय ॥१९॥
 परिजूरह ते मरीरय,
 वेसा पण्डुरया हयति ते ।
 मे पाणपल य दायई,
 समय गोपम । मा पमायय ॥२०॥
 परिजूरह ते मरीरय,
 वेसा पण्डुरया हयति ते ।
 मे जिम्मपले य दायई,
 समय गोपम । मा पमायय ॥२१॥
 परिजूरह ते मरीरय,
 वेसा पण्डुरया हयति ते ।

से कासपले य हायई,

समय गोयम ! मा पमायए ॥२५॥

परिजूरह ते सरीरय

केसा परडुरया हवति ते ।

से सत्त्वयले य हायई,

समय गोयम ! मा पमायए ॥२६॥

अरई गगड विसूहया,

आयका रिगिहा पुसति ते ।

विहउइ विउमइ ते सरीरय,

समय गोयम ! मा पमायए ॥२७॥

पोरिछन्द सिणेहमणणा,

कुमुय सारइय य गजिय ।

से सव्यसिणेहवज्जिय,

समय गोयम ! मा पमायए ॥२८॥

चिआण धण य भारिय

पउइओ हि सि अणगारिय ।

मा यत्त पुणो नि आए,

समय गोयम ! मा पमायए ॥२९॥

अवउज्जिय मित्तपधय,

विउल चेव धणोहसंजय ।

मा त विइय गवेसए,

समय गोयम ! मा पमायए ॥३०॥

न हु जिणे अज्ज दिस्सई,

पहुमए दिस्सइ मग्गदेसिए ।

सपइ नेयाउए पदे,

समय गोयम ! मा पमायए ॥३१॥

अथमोक्षिय वन्द्यमापद,
 ओहगो ति पद महालय ।
 गच्छमि मग्ग विमोदिया,
 समय गोयम ! मा वमायप ॥३२॥
 अथले जह मास्वाहप,
 मा मग्गे विममऽपगादिया ।
 पच्छा वच्छागुतापप,
 समय गोयम ! मा वमायप ॥३३॥
 निगणे दु ति अगणये मद,
 किं पुण णिदमि तीरमागभा ।
 अमितुर पां ममिणप
 समय गोयम ! मा वमायप ॥३४॥
 अथलेपरमेणि उम्सिषा,
 सिद्धि गोयम ! गोय गच्छमि ।
 लेम च तिव अणुत्तरं,
 समय गोयम ! मा वमायप । ३५॥
 पुच्छ परिनिज्जुड वर,
 गामगप नगरे व सजप ।
 मतिमग्ग न गणप
 समय गोयम ! मा वमायप ॥३६॥
 पुग्गस्म निसम्म भासिय,
 सुक्खिदमट्टपओयमोदिय ।
 राग दाम च छिन्दिया,
 सिद्धिगर्ह गण गोयमे ॥३७॥ ति वेमि ।

॥ अह बहुस्सुवपूज्य एवम एवमस्त अजम्भयण ॥

सज्जोगा विज्जमुज्जस्त, अणुमागस्त मिक्खुणो ।
 आचार पाउपरिस्तामि, अणुपुब्बि सुणेह मे ॥१॥
 जे यावि होह निम्भिज्ज, थज्ज मुज्जे अणिग्गहे ।
 णभिक्खणा उहुवह, अविणीए अयहुस्सप ॥२॥
 अह पयहिं ठाणेहिं जेहिं सिक्खा ७ लभह ।
 धम्मा कोहा यमाएवा, रोजेणालस्सएण य ॥३॥
 अह अट्ठहिं ठाणेहिं सिक्खासीलिं तिं सुच्चइ ।
 अहस्सिरे सया हन्ते ७ य मम्ममुदाहरे ॥४॥
 नामीले न तिसीले, न तिवा अइलोत्तप ।
 अकोहणे सत्थए सिक्खासीलिं तिं सुच्चइ ॥५॥
 अह चौहमहिं ठाणेहि, यहुमाणे उ सज्जप ।
 अविणीए सुच्चई सो उ, निग्गण न न गच्छइ ॥६॥
 अमिक्खणा कोही हवह, पर थ च पटुस्सई ।
 मेत्तिज्जमाणो यमह, सुय लहु मज्जई ॥७॥
 अत्रि पायगरिक्खेसी, अत्रि मिस्सेतुं पुण्णइ ।
 सुविज्जस्सवि मिस्सस्म, रहे भावइ पावय ॥८॥
 परणणवाइ दुद्धिल, थजे लुद्धे अणिग्गहे ।
 असविमार्गी अत्रियसे, अविणीए तिं सुच्चइ ॥९॥
 अह पञ्जरसहिं ठाणेहिं, सुविणीए तिं सुच्चइ ।
 तीयावर्त्ता अचवले अमाई अकुज्जहले ॥१०॥
 अप च अदिक्खिवह, पयध च न पुच्चइ ।
 मेत्तिज्जमाणो यमह, सुय लहु ७ मज्जइ ॥११॥

न य पायगरिकलेयी, १ य मिनगु पुण्ड ॥
 अणियस्तसि मिससम, गदे कदात्त मासद ॥१०॥
 बलहडमयधिए पुन समिकइमे ।
 द्विरिम पटिसलीजे, गुणिकीय सि पुण्ड ॥११॥
 यम गुरुकुले निध, अगय उवाणिय ।
 पियवर पिययाइ, न सिवर लरुमरिद ॥१२॥
 जहा मरुमिम यय, निरिय दुदओ पि विगयइ ।
 यय बहुस्तुप मिकरु, धरमा विर्या तला गुय ॥१३॥
 जहा मे वरुयोयाग, चाइगल वग्यण सिया ।
 कामे जवेण वगरे, यय हयइ बहुस्तुप ॥१४॥
 जहाइणसमारुद, गुने ददवरकमे ।
 उमओ मन्दिगोमेण, यय हयइ बहुस्तुप ॥१५॥
 जहा करेणुपरिविणले, वु नरे सट्टिदायले ।
 बलपेन अणदिए, यय हयइ बहुस्तुप ॥१६॥
 जहा से तिक्करनिगे, जायगग्गे विगयइ ।
 यसहे जूहादियई यय हयइ बहुस्तुप ॥१७॥
 जहा मे निफगदाद, उदग्गे दुणदराण ।
 सीहे मियाण वगरे, यय हयइ बहुस्तुप ॥१८॥
 जहा मे वातुदेवे, मगउदगयाधरे ।
 अणदिएयवले ओहे यय हयइ बहुस्तुप ॥१९॥
 जहा मे वाउरग्गे, चक्रवट्टामरिदिए ।
 ओदसरगणातिउई, यय हयइ बहुस्तुप ॥ २०॥
 जहा से महम्मकमे, यज्जपाणी पुरदर ।
 मेण दयादिए, यय हयइ बहुस्तुप ॥२१॥
 जहा मे तिगिगिजमे, उधिद्वन दिगयरे ।
 जहा मे इय नेणण यय हयइ बहुस्तुप ॥२२॥

जहा से उडुषई चन्दे, नक्षत्रपरिचारिण ।
 पट्टिपुण्णे पुराणमासिण, एव हवइ बहुस्सुण ॥१७॥
 जहा से समाइयाण, कोट्टागारे सुरक्खिण ।
 नाणधम्मपट्टिपुण्णे, एव हवइ बहुस्सुण ॥१८॥
 जहा सा बुमाण पयरा, जयू नाय सुदसणा ।
 अणादिपस्स देवस्स, एव हवइ बहुस्सुण ॥१९॥
 जहा सा नईण पयरा, सलिला तामरगमा ।
 सीया नीलवत्तपयहा, एव हवइ बहुस्सुण ॥२०॥
 जहा से नगाण पयरे, सुमह म दरे गिरी ।
 नाणोत्तहिपज्जलिण, एव हवइ बहुस्सुण ॥२१॥
 जहा से सर्वभुरमणे, उदही अफससोदण ।
 नाणारयणपट्टिपुण्णे एव हवइ बहुस्सुण ॥२२॥

समुद्गमवीरसमा दुरासया

अश्वक्रिया केणइ दुप्पदसया ।

सुवस्स पुण्णा विडलस्स ताइणे,

एविणु कम्म गइमुत्तम गया ॥२३॥

तम्हा सुयमट्टिट्ठिजा, उत्तमद्वगघेसण ।

जेणप्पाणा पर चेष, सिद्धि सपाउणेआसि ॥२४॥ सि वेमि

॥ बहुस्सुणपुज्ज ममत्त ॥२५॥

॥ अह हरिणमिज्ज वारह अजम्भयण ॥

मोवागकुलसमुओ, गुणुत्तरधरो सुणी ।

हरिणमयलो नाम आसी भिक्खु जिह्दिओ ॥२६॥

हरिणमणभासाण, उधारममिईसु थ ।

जणो घायाणनिकरेवे, सवओ मममाहिओ ॥२७॥

मणुगुप्तो, ययगुप्तो, वायगुप्तो त्रिहृदिष्टो ।
 मित्रवृष्टा यम्महृष्टमि, अन्नाहृष्टमुष्टिष्टो ॥३॥
 त पातिऊगा पञ्च त, तथेण परिसोमिष ।
 पतोषद्विउपगर्पां, उयहसति अणारिया ॥४॥
 जाहमयपडिगद, मिसगा अनिहृन्मिया ।
 अयमग्यारिणो धाला, इम ययगुमभ्ययी ॥५॥

वयरे आगदर निस्तरुये ?

वाने विगगले पादतामे ।

ओमचेनए पमुपिमायमूए,
 स्वरदृम् परिहरिय वगळे ॥६॥

वयरे मुम इय अदमलिगे ?

वापय आ ५। इहमागओसि ?

ओमचेनया पमुपिमायमूया,
 गदृ कल्लादि विमिह ठिमो नि ॥७॥

अकरो तर्हि निदुयएकरवाली,
 अणुवमओ तस्स महामुजिस्स ।

पदापइसा नियग मरीर ,
 इमाह ययगारमुदाहरित्था ॥८॥

ममणो अह सजओ, यम्मवारी,
 विरओ धणययणपरिमाहरओ ।

गरणविस्सम्म उ मिक्कवजाले,
 अयम्म अट्टा इहमागओमि ॥९॥

नियन्त्रिह स्वच्चर भुच्चर य,
 अद्य यमूय मयवाणमेय ।

जाणाहि ॥ आयणजाणिलु सि,
 मेमायमेस सहउ तयस्सी ॥१०॥

उचकलड भोयण माहणाण,
 अत्तट्ठिय सिद्धमिद्देगणकस ।
 न ऊ वय परिसमनपाणं,
 दाहामु तुज्झ किमिह ठिओ सि ॥११॥
 धलेसु धीयाइ वचन्ति कासगा,
 तहेन निघसु य आससाए ।
 एयाए सद्धाए दणाह मज्झं,
 आराहण पुण्णमिण तु रिता ॥१२॥
 येत्ताणि अम्ह विद्याणि रोए,
 अहिं पक्खिणा विदहन्ति पुएणा ।
 जे माहणा जाइविजाववेया,
 ताइ तु सिताइ सुपसलाइ ॥१३॥
 कोहो य माणो य उहो य जेसिं,
 मोस अदत्त च परिगाह च ।
 ते माहणा जाइविजाविहीणा,
 ताइ तु सिताइ सुपाययाइ ॥१४॥
 तुम्हेएव भो भारधरा गिराण
 अट्ट न जाणेह अहिज वेए ।
 उपाययाइ मुणिणो चरन्ति,
 ताइ तु येत्ताइ सुपसलाइ ॥१५॥
 अजभाययाण पट्टिकूलभासी,
 पमाससे किं नु सगासि जम्ह ।
 अचि पय निगुस्सड अश्रपाण,
 न यग दाहामु तुम निघणटा ॥१६॥
 समिईं मज्झ सुममाहियस्म,
 गुत्तीं गुत्तम्स जिइन्दियस्म ।

अह मे न दाहिरथ अहेसजिअ,
 विमत्त जगत्त लहिथ साह ॥१७॥
 ए रत्थ वरसा डयनारया वा,
 अमावया या सह यण्डिपहि ।
 पय सु दग्देण पत्तण दत्ता,
 वरुद्धि दधुत्त वरलज्ज जो रा ॥१८॥
 अउभाययाणं घवण मुणेसा,
 उदाइया तत्थ यह पुमारा ।
 दग्देण दिसेदि कसदि चंय
 नमागया तं हसिं तानपत्ति ॥१९॥
 रत्थो तहिं वोगजियस्य धूया,
 मदत्ति तामेण अणिदियणी ।
 त पातिवा मज्जपहम्ममावा,
 बुद्ध पुमार परिनिवसेइ ॥२०॥
 दयामिओसेण निओइएणां,
 दिआ सु रत्ता मणसा न भाया ।
 तदिददधिन्दमिपदियण,
 जेगद्धि येता हसिणा स एसो ॥२१॥
 एसो बु मा उगतयो महत्ता,
 जिइन्दिओ सजओ बम्भयारि ।
 जो मे तया मध्युइ दिज्जमाणि,
 पिठणा सय वोसलिपर ग्या ॥२२॥
 महजसो घम महत्तुमागो,
 घोरवओ घोरपरकमो य ।

मा एव हीनहृद्दीननिर्झरं

मा माये तव मे निरहेष्टा ॥१३॥

एवार्त्तमीमे ववन्नाह गायन्,

एवार्त्त मदाह गुणानिवाह ।

हमिन्म वेदायद्विषयद्वय,

नवन्ना कुमार विन्निवाग्गन्धि ॥१४॥

मे योत्तव्या द्विष चन्निवाग्गन्धि,

चसुरा तर्हि न जगन्नालवन्ति ।

॥ मिन्मद्वे रुद्धिं वमन्,

वातिचु मदा हलमाद् भुम्भो ॥१५॥

गिरि महेष्टि लण्ड,

अथ द्वेष्टि गायन् ।

आयतय पापदि दण्ड,

ज मिन्मन् अयमचह ॥१६॥

आमीयिनो उगतयो महेष्टी,

योत्तव्या चारपरद्वयो य ।

अगमि य ववन्मद् नवन्मले,

ज मिन्मन्मद् भवन्मले पदेष्ट ॥१७॥

सीसेण एव मरन्ना लयेष्ट,

हमागवा गन्धमलेण सुम्भे ।

अह इच्छह जीनिर्झ या भगन्ना या,

मोमपि एना कुविधो द्वेष्टा ॥१८॥

अवहेष्टियपिद्विषउत्तमो,

वमारिया याद् अयमचहेष्टे ।

निम्मेरियच्छे रुद्धि वमन्ने,

उत्तमुहे मिन्मन्जीहनेष्टे ॥१९॥

ते वासिया श्रुष्टियवद्भूय,
 विमलो विमलणो अह माहणो लो ।
 हसि पसापह समारियाभो,
 दीन च निद च समाह मते ॥३०॥
 बासेदि मूवेदि अणगुपदि,
 ज दीनिया तहस समाह मते ।
 महप्पमाया हसिणो हयति,
 न ह मुरी कोवपरा हयन्ति ॥३१॥
 पुण्णि च हदि च अणाय च,
 मणुप्पभोत्तो न मे अस्थि कोह ।
 अकरा ह पयावदिय वरेम्ति,
 नग्हा ह एण निहया कुमार ॥३२॥
 अण्य च धम्म च त्रियागमाणा,
 सुम्म न पि कुपह भूयणा ।
 सुम्म तु पाए सराण उयमा
 समागया सव्वणणेण अग्हे ॥३३॥
 अणमु ते महामाग
 न त विणि न अयिमो ।
 मुंजादि मालिम कूरं,
 माणा-चनण-सजुय ॥३४॥
 इम च मे अरिय पण्यमअ
 त भुजसु अग्द अणुग्गहट्टा ।
 याहं ति पडिच्छइ असपाणा,
 मासम्स ऊ पाण्णप महप्पा ॥३५॥
 तदिय गम्भोदयपुष्पवाम,
 दिव्या तट्टि पसुदाग य पुट्टा ।

पहयाओ दुहुदीओ सुरेहिं,
 आगासे अदो दाण च घुट्ट ॥३६॥
 सक्क गु दीसइ तवोत्रिसेमो,
 न दीसइ जाइविसेस कोई ।
 सोवागपुत्त हरिणससाहु,
 जस्सेमिसा इहिइ महाणुभागा ॥३७॥
 नि माहणा जोइसमारभन्ता,
 उदण सोंहिं पहिया विमगाह ।
 ज मग्गहा याहिरिय विसोहिं,
 न त सुदिट्ठ पुम्मसा वयन्ति ॥३८॥
 फुस च जूव तण्णट्ठमग्गि,
 साय च पाय उदग फुसत्ता ।
 पाणाइ भूयाइ विहेदयन्ता,
 मुज्जो नि मद्दा पगरेह पाय ॥३९॥
 कह चरे मिफलु ! वय जयामो,
 पायाइ कम्माइ पुणोत्तयामो ।
 अक्काहि ऐ सजय ! अक्कपूइया,
 कह सुजट्ठ कुसला वयन्ति ॥४०॥
 छज्जीवकाण असमारभन्ता,
 मोस अदत्त च असेवमाणा ।
 परिग्गह इत्थिओ माणुमाय,
 एय परिष्साय चरति दत्ता ॥४१॥
 सुसमुदा पचहिं सवरेहि,
 इह जीविय अणवकखमाणा ।
 योसट्ठकाया मुइचसदेहा,
 महाजय जयइ जयसिट्ठ ॥४२॥

वे ने ओई वे य ने ओहटाणो ?

का स सुया विं च ते कारिसग ?

पदा य ते वयरा सग्नि मिम्पु ?

वयरेण होमेण हुणामि चोद ? ॥४३॥

तयो ओई जीया ओहटाण,

ओगा सुया मरीं कारिसग ।

वग्मेहा मचमओगसती,

होम हुणामि इमिणं पसत्थ ॥४४॥

वे ते हरण वे य ने सत्तिति-ये ?

वहिं मिणाओ य रय जहाति ?

आइएव ने सजय ? जकमपुइया,

इच्छामो नाउ मयओ सगाये ॥४५॥

धग्मे हरण वग्म सत्तिति-ये,

अणायिले अत्तपमगलेमे ।

जहिं मिणाओ विमलो विमुद्दा,

सुमीइमूओ वज्जदामि दाम ॥४६॥

एय मिणाणं कुमले-णिट्ठ,

महामिणाणं इमिणं पसत्थ ।

जहिं सिणाया विमला वितरुा,

महारिणी उत्तम ठाण पत्त ॥४७॥ ति पेमि

॥ हरिणसिन्न मयत्त ॥१२॥

॥ अह चित्तमम्भूज्ज तेग्दम अज्जमयण ॥

जाईएराजिओ ररुदु, वामि नियाणं तु इणिणपुरम्भि

जुमणीए वग्मवओ उवयना वग्मगुम्माओ ॥१॥

कम्पिते सम्भूयो, चित्तो पुण जाओ पुरिमतासम्मि ।
 सेट्ठिहुलम्मि निसात्ते, धम्म सोऊण वयरओ ॥२॥
 कम्पितम्मि य नयरे, समागया दो वि चित्तसम्भूया ।
 सुहदुक्खफलविशग वहेन्ति त एक्कमेवस्स ॥३॥
 चक्रवर्ती महिच्छीओ, यम्मदत्तो मदायसो ।
 भायर बहुमाणेण, इम वयणमवप्पी ॥४॥
 आसीसु भायरा दोवि, अन्नमनयसाणुगा ।
 अन्नमन्नमणुरत्ता, अन्नमन्नदिप्पनिणो ॥५॥
 दासा दसण्णे आसी, मिया कालिनरे नरो ।
 हसा मयगतीराप्प, सोवागा कालिभूमिप्प ॥६॥
 देया य दउल्लोगम्मि, आसि अम्हे महिच्छिदया ।
 इमा नो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नम जा विणा ॥७॥
 कम्मा नियाणुपयडा, तुम राय ! विचिन्तिया ।
 तेसि फलविशानेण, विण्णमोगमुधागया ॥८॥
 सयसोयण्णगडा, कम्मा मए पुरा कडा ।
 ते अज्ज परिभुजामो , किं तु चित्तेयि से तदा ? ॥९॥

सच्च सुचिणा सफलनराण,
 कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
 अत्थेहि कामेहि य उच्चमेहि,
 जाया मम पुण्णफलोच्चये ॥१०॥
 जग्गाहि सम्भूय ! मत्तासुभाग,
 महिच्छिदय पुण्णफलोच्चयेय ।
 नित्त पि जग्गाहि तद्देय राय,
 इद्धी लुह तस्स त्रियण्णभूया ॥११॥
 महत्थरूपा वयण्णभूया
 गादाणुगीया नरस्यमज्जे ।

ज भिक्कुणो मीनगुणोयवेया,
इह जयनेममगा मिआधो ॥१२॥

उयायए महु कण य वम्मे,
पजेइया आधमहा य वम्मा ।

इम गिह निजधराणभूय,
पम्मादि पजालगुणोयवेय ॥१३॥

मट्टहि गीएहि य वाइएहि,
नारीणणाहिं परियारयन्तो ।

मुआदिमोआइइमाइ भिक्खु !
मम रायइ पण्डजा हु दुक्कमं ॥१४॥

स पुण्डनेण कयाणुसम,
नराण्य कामगुणेसु गिरं ।

धम्मस्सिआ नम्म टियाणुवरी,
चित्ता इम वयणमुदाहरिथा ॥१५॥

मय मिलिये गीयं,
सस्य णट्ट मिट्ठमिय ।

सथे आभरणा भारा,
मय्ये कामा दुदायहा ॥१६॥

वालाभिरामेसु दुणायहेसु
न न सुह कामगुणेसु राय ।

गिरसकामाण तयोधणार्णं,
ज भिक्कुणं मीनगुणे रयाणं ॥१७॥

नरिंद ! जाई चाहमा नराण,
मायागजाइ दुहओ गयाण ।

जनि थय मय्यजणम्म वेस्सा,
उमीय मोतागनिवेमणेय ॥१८॥

तीसे य जाईह उ पावियाए,
 बुच्छामु सोयागनिवेसणेषु ।
 सव्वस्स लोमस्स बुगछणिज्जा,
 इहं तु कम्माइ पुरे कडाइ ॥१९॥
 सो दाणिसिं राय । महाणुभागो,
 महिदिहओ पुण्णफलोयवेओ ।
 चरतु भोगाह असासयाह,
 आदाणहेउ अमिणिक्खमाहि ॥२०॥
 इह जीणिपराय । असासयम्मि,
 धणिय तु पुण्णाह अहुव्वमाणो ।
 से भोयइ मच्चुमुहोयणीप,
 धम्म अफाऊण परंसि लोप ॥२१॥
 जहेह तीहो य मिय गहाय,
 मच्चु नरं मेइ ॥ अस्तकाले ।
 न तास माया य पिया य भाया,
 कालम्मि तम्मसहरा भयन्ति ॥२२॥
 न तस्स दुक्ख विभयन्ति नाइओ,
 न मित्तयागा न मुया न वधया ।
 एको सय पण्णुहोइ दुक्ख,
 कत्तारमेव अणुजाइ कम्म ॥२३॥
 चिन्हा दुपय च चउण्यय च,
 ज्वेत्ता गिह धणधम्म च सव्व ।
 सक्कमावीओ अवसो पयाइ,
 परं भव सुदरपावर्गं या ॥२४॥
 ॥ एक्कम । सुच्छन्दसीरगं मे,
 निर्देयय दहिय उ पावणेश ।

मञ्जा व पुष्पाणि यनायमो व,
 दाणारमन्त्रं अणुमन्त्रमन्ति ॥२४॥
 उदगिच्छे जीयिषमन्त्रमायं,
 धागो जराहरहरस्सरायं ।
 यथास्तराया ' यथा सुगन्धि,
 मा कति वन्माह महास्तरा ॥२५॥
 अहं पि जायामि अद्वेह साह,
 अ मे मुमं माहमि यथायं ।
 भोगा इमे सगवरा हयमि,
 जे बुद्धया भवो अम्हारिसेहि ॥२६॥
 इतिथणपुरिमि गिता,
 इदद्वेहा नरयं मदिदिद्वेयं ।
 कामभोगेसु गिता,
 गितामसुद वद ॥२७॥
 तस्म मे अण्डिफन्तस,
 इमे ययारिस्स वरं ।
 जायमाणो पि अ धम्म,
 कामभोगेसु मुच्छिन्नो ॥२८॥
 नागो अहा पक्कजलावसधो,
 दद्वेहं धलं नाभिसमेहतीरं ।
 परं धयं कामगुणेसु गिता,
 न भिक्खुणो मयमसुवयामो ॥२९॥
 अथेह कालो तूरति राहो,
 तथापि भोगापुरिसाण निष्ठा ।
 उयिथ भोगा पुरिस्स वयन्ति,
 सुम जहा खीणफलं य पक्खी ॥३०॥

जह त सि भोगे चइउ असत्तो, (३१)
 अज्जाइ कम्माइ करेहि राय !
 धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी,
 तो होदिसि देघो इओ विउट्ठी ॥३२॥

न तुज्ज भोगे चइऊण तुखी,
 गिद्धो सि आरम्भणरिगहेसु !
 मोह कओ एत्तिउ विण्णत्तायो,
 गच्छामि राय ! आमतिलोमि ॥३३॥

पचाऊराया वि य वम्भइत्तो,
 साहुस्स तस्स चयण अकाउ ।
 अणुत्तरं भुजिय कामभोगे,
 अणुत्तरे सो तरण पयिट्ठो ॥३४॥

चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो,
 उदग्गचारित्ततयो महेत्ती ।

अणुत्तर सज्जम पालइत्ता,
 अणुत्तर सिद्धिगइ गओ ॥३५॥ त्ति वेमि

॥ चित्तमम्भइज्ज समत्ता ॥

॥ अह उमुयारिज्ज चोदहम अज्जभयण ॥

देवा मत्तिताण पुरे भवग्नि,
 वेइ चुया पगग्निमाणवासी ।

पुरे पुराणे उमुयारनामे,
 ताण समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥३६॥

सकम्मसेमेण पुराकण्णां,
 कुल्लमुदग्गेसु य ते पसूया ।

निदिशन्नुत्सारमया जहाय,
 निर्निद्रमगं क्षणं पवसा ॥२॥
 पुमत्तमागम्य कुमारो यो,
 पुरोदिभोतस्स जमाय पत्नी ।
 तिसामविर्त्ता य तदोमुयारो,
 रायस्य देयी काममायई य ॥३॥
 ताईजसम-चुभयाभिभूया,
 वरिं त्रिहाराभिनिगिट्ठित्ता ।
 समारधजस्स विमोक्कयत्तु,
 ददट्ठण ने कामगुणे विरत्ता ॥४॥
 पियपुत्तागा वुत्ति पि माहरस्स,
 सकम्मसीलस्स पुरोदियस्स ।
 गरिक्खु पोगणिय तस्य जाइ
 तदा वुत्तिणो तयस्सज्जम व ॥५॥
 ने काममोणेसु अमज्जमाणा,
 मायुम्मपमु जे थापि दिव्वा ।
 मोक्कयाभिर्वरी अभिनाययत्ता,
 १ ताय उवागम्म इम उदाहु ॥६॥
 असामय द्दट्ठ इम विहार,
 यदुअनराय न य दीदमाउ ।
 तम्हा गिरिंति न रइ महामो,
 कामस्तयामो चरिस्सामु मोणं ॥७॥
 अह तायगो तस्य मुणीए तेसिं,
 तयस्स थापायकर ययासी ।
 इम यय वेययिओ ययन्ति,
 जहा न होइ अनुयाण लोगो ॥८॥

अहिज्ज वेप परिविस्स विप्पे,
 पुत्ते परिट्ठप्प गिहसि जाया ।
 भोच्चाण मोएसह इत्थियाहिं
 आरणगा होह मुणी पसत्था ॥६॥
 सोयगिणा आयगुणिन्धणेण,
 मोहाणिला पञ्चसणादिपणं ।
 सत्ताभाय परितप्पमाणा,
 लालप्पमाणा बहुहा बहु च ॥७॥
 पुरोहिय त कमसोऽणुणन्त,
 निमतयन्त च सुप धणेण ।
 अहकम कामगुणेहि वेय,
 कुमारगा ते पसमिक्ख वक्क ॥८॥
 वेया अहीया न भयन्ति ताणा,
 भुत्ता दिया निन्ति तम तमेण ।
 जाया व पुत्ता न हवन्ति ताणा,
 को णाम ते अणुमन्नेज्ज पयं ॥९॥
 खणमित्तमुक्खा बहुकालदुक्खा,
 पगामदुक्खा अण्णिगाममुक्खा ।
 सत्तारमोक्खस्स विपक्खभूया,
 खाणी अट्ठथाण उ काममोगा ॥१०॥
 परिव्ययन्ते अण्णियत्तकामे,
 अहो य राओ परितप्पमाणे ।
 भन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे,
 पप्पोति मच्चु पुरिसे अरं च ॥११॥
 इम च मे अण्णिय इमं च नत्थि,
 इमं च मे किञ्च इम अण्णिय ।

तं यद्यमेवं सात्त्विकमाणा,
 हरा हरति त्रिं षट् पञ्चाशो ॥१४॥
 धर्मां पभूय, सह इतिष्यार्हि,
 सयत्ना तदा कामगुणा नगामा ।
 तमे वप तप्यद् अस्स लोको,
 तं सव्यन्तादीणमिमेव तुम्भ ॥१५॥
 धलेण विं धम्मगुणादिगार,
 सयत्नेण वा कामगुणेदि चेप ।
 समणा भविस्सामु गुणोहधारी,
 यद्विणिहारा अमिगम्म भिवत्तं ॥१७॥
 जहा य अग्निं अरणीं असत्तो,
 स्वीरे घय तेहमहातिमेसु ।
 एमय जाया सरीरति सत्ता,
 समुच्छर तासद् नायन्निदु ॥१८॥
 नो इन्द्रियगोत्रम् अमुत्तमाया,
 अमुत्तमाया वि य दोर निद्यो ।
 अज्झावहेउ निययस्स यत्तो,
 संसारहेउ य वयन्ति यत्थ ॥१९॥
 जहा ययं धम्मं अज्जाणमाणा,
 पाय पुरा वम्ममकाति मोहा ।
 ओरुज्झमाणा वरिरपत्तयन्ता,
 न नय भुज्जो वि ममायराभो ॥२०॥
 अमाहयमिं लोगमिं,
 सम्यग्गो परियाटिप ।
 वण्णतीरिं,
 मिहति न रद्द तमे ॥२१॥

केण अम्मादयो लोगो ?

केण वा परिवारिणो ?

का वा अमोहा बुत्ता ?

जत्था चिन्ताधरो भुमि ॥२२॥

मन्चुणाऽम्मादयो लोगो,

जत्था परिवारिणो ।

अमोहा रयणी, बुत्ता,

एव साय । विजाणह ॥२३॥

जा जा वयह रयणी,

न सा पडिनिवत्ताह ।

अहम्म कुलमाणस्स,

अपत्ता जन्ति, राहओ ॥२४॥

जा जा वयह रयणी,

न सा पडिनिवत्ताह ।

धम्म च कुलमाणस्स,

सफवा जन्ति राहओ ॥२५॥

एगओ

मयसित्ताण,

हुदओ सम्मत्तसब्बुया ।

पट्ठा जाया गमिस्सामो,

भिययमाणा कुले कुले ॥२६॥

जत्तत्थि मन्चुणा मयग्व,

अस्म वडत्थि पत्तायणा ।

ओ जाणे न मग्गिस्सामि,

सो हु वरो मुण सिया ॥२७॥

अज्जेर धम्म पडिवज्जयामो,

जहि पयत्ता न पुलभयामो ।

अलागय नय य अगिथि किं-ति,
 सझागम णो विगइणु राग ॥२८॥
 पदीणपुत्तहस हु नरिय यासो
 यासिद्धि' मिक्कमायारियाह वालो ।
 साहाहि रक्कसोसदपममाटि,
 डिप्पाहि साहाणि तमेव न्नाणु ॥२९॥
 पत्ताविट्ठणोअ जहेय पक्कसी,
 मिक्कविट्ठणोअ रणे मरिन्दो ।
 विपन्नसारो पण्णिमोअ पोप,
 पदीणपुत्तो मि तहा अहपि ॥३०॥
 तुसमिया कामगुणे इम ते,
 नपिण्डिय। अगारसणभूया ।
 भुजामु ता कामगुणे पगाम,
 पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्ग ॥३१॥
 भुत्ता रसा मोह । जहाह ये पमो,
 न जीविपट्टा पमहामि भोप ।
 लाम अलाम थ मुह थ दुक्खे ।
 सगिक्कलमाणो अरिस्सामि मोण ॥३२॥
 मा इ तुम सोयरियाणस्सम्मदे,
 जुण्णा य हसो पट्टिमोत्तगामी ।
 भुंजादि भोगाह मप सगणां,
 दुक्खं तु मिक्कयावत्थियाविहारो ॥३३॥
 जहा य मोई नणुयं भुयगो,
 निम्मोयणि दिव पलेह मुत्तो ।
 एतेप जाया पवहन्नि भोप,
 त ह व ह नाणुगमिस्समग्गो ? ॥३४॥

द्विन्दिमु जाल अयल व रोहिया,
 मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
 घोरेयसीला तवसा उदारा,
 घीरा हु मिफलाचरिय चरन्ति ॥३५॥
 नहेव बुचा समइकमता
 तयाणि जालाणिदलि बुदसा ।
 पलेति पुत्ता य पर्ये मज्झ,
 ते दकह नाणुगमिस्समेका ॥३६॥
 पुणेहिय त ससुय सदार,
 लोकाऽभिनिक्कम्म पहाय भोय ।
 बुद्धम्यसार विउत्तुत्तम च,
 राय अभिक्क ससुयाय देवी ॥३७॥
 यतासी पुरिमो राय ।
 न सो होई पत्तलिओ ।
 माहणेण परिचत्त,
 धण आदाउमिच्छसि ॥३८॥
 सव्य जग जह तुह,
 सव्य पावि धरा भवे ।
 सव्य पि ते अपज्जत्त,
 नेव ताणाय त तथ ॥३९॥
 मरिहिसि राय ! जया तया वा,
 मणोरमे कामगुणे पहाय ।
 पओ हु धम्मो नरदेव । ताण,
 न विज्जई अन्नमिहेह विंचि ॥४०॥
 नाह रमे पक्खिणि पज्जे वा ।
 सनाणुछिन्ना चरिम्मामि मोण ।

अविच्छेदा उज्जुबद्धा निरामिता,

परिगृह्यारम्भनियत्तदोसा ॥४१॥

वयमिणा जहा रगणे, इज्जमागेषु चतुषु ।

अथ सत्ता यमोयन्ति रागदोषयस गथा ॥४२॥

एयमेव यय मूढा, काममोगेसु मुच्छिषा ।

इज्जमाणा न युज्जमागे, रागदोसमिणा जग ॥४३॥

मोगे मोथा यमिस्ता य लहुभूयविहारियो ।

आमोयमाणा गच्छति, णिवा कामकमा इय ॥४४॥

इमे य चत्ता पदेति, मम हृत्थऽज्जमागया ।

ययं य सत्ता कामेसु, मरिस्सामो जहा इमे ॥४५॥

सान्निव पुल्लं दिस्स, यज्जमाणां निरामिस ।

आमिस गच्छमुज्जिभत्ता, विहरिस्सामि निरामिता ॥४६॥

गिद्योयमा उ मत्ताणां, काम संमारयहणे ।

उरगो सुयण्णणामेत्थ, मज्जमाणा मणु चरे ॥४७॥

मागोत्थ वच्चण टित्ता, चत्तणो यमाह यय ।

एय दाथ महाराय, उरसुयारि सि मे सुय ॥४८॥

यत्ता पिउलं ग्जं, काममोगे य दुष्ण ।

निग्यसया निरामिसा, निग्रहा निग्गग्गहा ॥४९॥

सम्म धम्म विणाशित्ता, विद्या कामसुल्लयरे ।

तथ पणिग्गहक्कवाय, घोर घोरयरक्कमा ॥५०॥

यय ते वगसो पुड्ढा, सत्थे धम्मगरायणा ।

जम्मम-चुमउदियग्गा, दुक्खस्स-तगवसिणो ॥५१॥

सासणे विगयमोहाणा, पुण्णि भायणमायिया ।

अग्गिरेण्य बालेण, दुक्खस्स-तमुयागया ॥५२॥

राया माहणो य पुरोहिथो ।

॥ અહ સમિક્ષુ પચદહ અન્નમયણ ॥

મોળ ચરિસ્સામિ સમિચ્છ ધમ્મ,

સહિય ડજ્જુકટે નિયાણહિત્તે ।

સથથ જહિજ્ઞ અકામકામે,

અસાવપસી પરિવ્યપ સ મિક્ષુ ॥૧॥

રાબોપચયઃ ચરેજ્ઞ લાહે,

વિગપ ધેયનિયાપરક્કિમ્મપ ।

પ'ને અમિભૂય સવ્વદસી જે

કમ્મિચિ ન મુચ્છિય સ મિક્ષુ ॥૨॥

અક્કોસવહ વિહુત્તુ ધીરે,

મુણી ધરે લાહે નિચ્ચમાયમુત્તે ।

અપ્પગમણે અસપહિદ્દે,

જે કસિણ અદિયાસપ સ મિક્ષુ ॥૩॥

પ'ત સયણાસાગ મહત્તા,

સીડણહ વિવિહ ધ દસમસર્ગ ।

અપ્પગમણે અમપહિદ્દે,

જે કસિણ અદિયાસપ સ મિક્ષુ ॥૪॥

નો 'સકરમિચ્છઈ ન પૂય,

નો વિ ય વ'દણગ કુઓ પસર્સ ।

સે સજ્જપ સુવ્વપ તથસ્સી,

સહિય આયગવેસપ સ મિક્ષુ ॥૫॥

જેણ પુણ અહાર જીવિય,

મોહ ધા કસિણ નિયચ્છહ ।

नरनारि पञ्चदे मया तपस्मी,
 न य पौऊहल उषेह स भिक्व ॥१॥
 टिज्ज मरे धोमन्तलिपरे,
 सुमिणा लपयलुङ्गदयत्तुविघ्नं ।
 भंगविघारे सरम्म विजय
 जे पिज्जार्हि म जीवह स भिक्व ॥३॥
 मत्त मूलं पिपिह वेच्चसिन्त,
 यमणपिरेयणधूमणेतगिणानं ।
 आउरे मरणा तिमिण्ठिय न,
 ते पन्निआय पन्निआय स भिक्व ॥५॥
 सत्तिवण्णउग्गमयपुणा,
 माहणमोरे य पिपिहा य तिप्पियो ।
 मो तेति ययह सिलोणपूय,
 न परिणाय परिण्यय स भिक्व ॥६॥
 मिहिणो जे कल्लहण्ण दिट्ठा,
 कापट्यवण्णय मयुग्ग दयित्वा ।
 तेमि इहलोहयफलदा,
 जो मयव न वरह स भिक्व ॥८॥
 सधणामण्णवाणमोयणो,
 पिपिह आहमसाहम परेसि ।
 अद्वय पडिमेहिण नियत्त,
 जे तत्थ न पउस्सह स भिक्व ॥११॥
 अ वि वि आहारयाणम',
 - पिपिह आहमसाहम परेसि लद्धुं ।

जो न तिविहेष नाणुक्कम्पे,
 मणवयकायसुसबुडे स भिक्खू ॥१२॥
 आयामग चेव जगोदग च,
 सीय सोरीरजबोदग च ।
 नो हीलए पिगड नीरस तु,
 पन्तकूलाह परिवण स भिक्खू ॥१३॥
 सदा विविहा भवति लोए,
 दिव्वा माणुस्सगा तिरिच्छा ।
 भीमा भयमेरघा उराला,
 सोघा न विहिज्जइ स भिक्खू ॥१४॥
 पाव विविह समिघ लोए,
 सणिए खेयाणुगए य कोविण्णा ।
 पत्ते अभिभूय सव्वइसी,
 उयसन्ते अविहेडए स भिक्खू ॥१५॥
 असिप्पजीवी अगिहे अमिसे
 जिहन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
 अणुत्ताई सहअप्पमक्खी,
 विष्ठा गिह एगधरे स भिक्खू ॥१६॥

॥ इथ समिक्खुय समर्त्त ॥ १५ ॥

॥ अह वम्मचेरसमाहिठाणा णाम सोलसम अजक्कएण ॥

सुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय-इह खल्ल
 धेरेहि भगवतेहि दस वम्मचेरसमाहिठाणा पणसा, जे भिक्खू
 सोघा निसम्म मज्जमवहुले सवरयवहुले समादिवहुले गु
 गुत्तिन्दिए गुत्तवम्मधारी सया अपमत्ते विहरेजा ।

कयरे खलु ते येरेहिं भगवन्नेहिं दस यम्मचेरसमाहिठाणा पन्नता, जे भिक्खु सोद्या निसम्म सज्जमयहुले समाहियहुले गुत्ते गुत्तिन्दिण गुत्तयम्मपारी सया अप्पमसे विहरेज्जा ?

इमे खलु ते येरेहिं भगवन्नेहिं दस यम्मचेरठाणा पन्नता, जे भिक्खु सोद्या निसम्म सज्जमयहुले सवयरयहुले गुत्ते गुत्तिन्दिण गुत्तयम्मपारी सया अप्पमसे विहरेज्जा तज्जहा —

विपिच्छाई सयणासणाइ सेविता हयइ से निग्गथे । नो इत्थी पसुपण्हगससत्ताइ सयणासणाइ सेविता हयइ से निग्गथे । त कहमिति चे ? आयरियाह-निग्गथस्य खलु इत्थिपसुपण्हगससत्ताइ सयणासणाइ सेवमाणस्य यम्मपारिस्स यम्मचेरे सका वा कखा वा विहगिच्छा वा समुपज्जिज्जा, भेद वा लमेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीलकानिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा नो इत्थिपसुपण्हगससत्ताइ सयणासणाइ सेविता हयइ मे निग्गथे ॥ १

नो इत्थीण कह कहिता हयइ से निग्गथे । त कहमिति चे ? आयरियाह-निग्गथस्स खलु इत्थीण कह कहेमाणस्स यम्मपारिस्स यम्मचेरे सका वा कखा वा विहगिच्छा वा समुपज्जिज्जा, भेद वा लमेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीलकानिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा नो इत्थीण कह कहेज्जा ॥ २ ॥

नो इत्थीण सद्धि सन्निसेज्जागण विहरित्ता हयइ से निग्गथे । त कहमिति चे ? आयरियाह-निग्गथस्स खलु इत्थीणि सद्धि सन्निसेज्जागणस्स यम्मपारिस्स यम्मचेरे सका वा कखा वा विहगिच्छा वा समुपज्जिज्जा, भेद वा लमेज्जा,

उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केयलिपयत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गये इत्थीहिं सद्धिं स निसेज्जागप विहरेज्जा ॥३॥

नो इत्थीण इन्दियाह मणोहराह मनोरमाह आलोपज्जा निज्झा इत्ता हयह से निग्गम्ये । त कहमिति चे ? आयरियाह निग्गम्यस्स खलु इत्थीणं इन्दियाह मणोहराह अलोपमासस्स निज्झायमाणस्स धम्मयारिस्स धम्मचेरे सका वा कत्ता वा विहगिच्छा वा समुण्यज्जिज्जा, मेव य लमेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा केयलिपयत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गये इत्थीणं इन्दियाह मणोहराह मनोरमाह आलोपज्जा निज्झापज्जा ॥४॥

नो इत्थीण कुइन्तरसि वा दूसन्तरसि वा भित्तन्तरसि वा पूइयसह वा रुइयसह वा गीयसह वा हसियसह वा धणियसह वा कदियसह वा वितथियसह वा सुणिता हयह से निग्गम्ये । त कहमिति चे ? आयरियाह निग्गम्यस्स खलु इत्थीणं कुइन्तरसि वा दूसन्तरसि भित्तन्तरसि वा पूइयसह वा रुइयसह वा गीयसह वा हसियसह वा धणियसह वा कदियसह वा वितथियसह वा सुणेमाणे धम्मयारिस्स धम्मचेरे सका वा कत्ता विहगिच्छा वा समुण्यज्जिज्जा, मेव य लमेज्जा उम्माय वा पाउणिज्जा दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा केयलिपयत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गये इत्थीणं कुइन्तरसि वा दूसन्तरसि भित्तन्तरसि वा पूइयसह वा रुइयसह वा गीयसह वा हसियसह वा धणियसह वा कदियसह वा वितथियसह वा सुणेमाणे विहरेज्जा ॥५॥

नो निग्गम्ये पुव्वय पुव्वीलिय अणुसरिक्का हयह से

निगन्थे । त कहमिति चे ? आयरियाह-निगन्थस्म सखु पुष
रय पुषकीलिय अणुसरमाणस्स उम्भयारिस्स यम्भचेरे सका
या कया य विहगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, मेद वा लमेज्जा,
उम्माय वा पाउणिज्जा दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा,
केउलिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निगन्-
थे पुवरय पुषकीलिय अणुसरेज्जा ॥१॥

नो पणीय आहार आहरित्ता हवइ से निगन्थे । त कह-
मिति चे ? आयरियाह निगन्थस्स सखु पणीय आहार आहा-
रेमाणस्स यम्भयारिस्स यम्भचेरे सका या कया विहगिच्छा
या समुप्पज्जिज्जा मेद वा लमेज्जा उम्माय वा पाउ-
णिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केउलिपन्नत्ताओ
धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निगन्थे पणीय आहार
आहारेज्जा ॥२॥

नो अइमायाए पाणभोयण आहारत्ता हवइ से निगन्थे ।
त कहमिति चे ? आयरियाह-निगन्थस्य सखु अइमायाए
पाणभोयण आहारेमाणस्स यम्भयारिस्स यम्भचेरे सका या
कया वा विहगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, मेद वा लमेज्जा,
उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केउ-
लिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निगन्थे अइ-
मायाए पाणभोयण आहारेज्जा ॥३॥

नो विभूसाणुवाइ हवइ से निगन्थे । त कहमिति चे ? आय-
रियाह-विभूसायत्तिए विभूतियसरीरे इत्थिजणस्य अमिलस-
णिज्जे हवइ नमो ण इत्थिजणोणा अमिलमिज्जमाणस्स यम्भ-

खेरे सका या कसा या विहगिच्छा या समुपज्जिज्जा, मेद
या लमेज्जा, उम्माय या पाउणिज्जा, दीहकालिय या रोगा-
यक हवेज्जा, वसलिपधत्ताओ धम्माओ मसेज्जा । तम्हा
एलु नो निग्ग-ये विमूसाणुवाई हविज्जा ॥६॥

नो सदरुघरसग-धफासाणुवाई हवइ से निग्ग-ये । त
कहमिति चे ? आयरियाह-निग्गन्धस्स एलु सदरुघग-ध-
फासाणुवाईस्स यमचेर सका या कसा या विहगिच्छा या
समुपज्जिज्जा मेद या लमेज्जा, उम्माय या पाउणिज्जा
दीहकालिय या रोगायक हवेज्जा, वसलिपधत्ताओ धम्माओ,
मसेज्जा । तम्हा एलु नो निग्ग-ये सदरुघरसग-धफासा
णुवाई भवेज्जा । दसमे यम्मचेरसमाहिठाणे हवइ ॥१०॥

अथानि इत्थं सिलोभा तज्जहा—

ज विविसमणाइमण, रहिय इत्थिज्जणेण य ।
यम्मचेरस्स रफउट्ठा, आलय तु निसेवण ॥१॥

मणपरदायज्जणली, कामरागयिहणली ।
यम्मचेररओ मिक्खू, थीकह तु विवज्जण ॥२॥

सम च सयय गीहि, मकह च अभिक्खत्तमा ।
यम्मचेररओ मिक्खू, निशरो परिवज्जण ॥३॥

अंगपच्चगसठाण आणुहणियपहिय ।
यम्मचेररओ थीण, चक्खुगिज्जक विवज्जण ॥४॥

पुइय इइय गीय, हसिय धणियक्किदय ।
यम्मचेररओ थीण, सोयगेज्म विवज्जण ॥५॥

दास रिट्ठ रइ दण गाम्मावित्तामियाणि य ।
यम्मचेररओ थीण, नाणुचित्ते क्याइ वि ॥६॥

पणीय भक्तपाण तु खिण्य मयप्रिवहृण ।
 यम्भचेररओ मिक्खू, निच्चसो परिचज्जप ॥७॥
 धम्मलद्ध मिय काले जत्तत्थ पणिहाणव ।
 माइमत्त तु भुजेज्जा, यम्भचेररओ सया ॥८॥
 रिभूम परिचजेज्जा, सरीरपरिमण्डग ।
 यम्भचेररओ मिक्खू, सिंगारत्थ न धारण ॥९॥
 संहं रुवे य गन्धे य रसे फामे तहेन य ।
 पचविहे कामशुणे, निच्चसो परिचज्जप ॥१०॥
 आलओ धीज्जाइणो, धीक्कहा य मणोरमा ।
 सधनो चेव नारीण, तासि इदिपदरिसण ॥११॥
 वृइय रुइय गीय, हासभुत्तासियाणि य ।
 पणीय भक्तपाण च, अइमाय पाणभोगण ॥१२॥
 गर भूमणमिट्ठ च, काममोगा य दुज्जया ।
 नरम्मत्तगणैसिस्स, तिस तालउड जहा ॥१३॥
 दुज्जप कामभोगे य निच्चसो परिचज्जप ।
 मक्खट्ठाणणि सट्ठाणि, यज्जज्जा पणिहाणव ॥१४॥
 धम्मारामे चरे मिक्खू, धिइम धम्मसारही ।
 धम्मारामरते दन्ने, यम्भचेरसमाहिण ॥१५॥
 देवदाणवगधन्ना, जक्खरफससकिन्नरा ।
 यम्भपारि नमसन्ति दुज्ज जे करत्ति ॥१६॥
 एस धम्मे धुवे निचे, सासण जिणुटसिण ।
 सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण, सिज्झिस्सन्ति तहावरे ॥१७॥

॥ यम्भचेरसमाहिठणा समत्ता ॥

॥ अह पाउसमणिज्ज सचदह अजम्भयण ॥

जे केइ उ पट्टइण नियठे,

सुदुखद सहित बोदिसमं,
विहरेज पच्छा य जहासुह तु ॥१॥

सेजा वटा पाउरण मि अतिथि,
उणज्जई भोत्तु नहेष पाउ ।

जाणामि ज वट्टइ आउसु त्ति,
किं नाम काहामि सुएण भन्ते ॥२॥

जे केई पणइए, निहासीले पणाममो ।

भोष्ठा पिष्ठा सुह सुवह, पावसमणि त्ति बुधइ ॥३॥

आयरियउवज्जाएहि, सुय विणय च गाहिए ।

ते चेष त्सिई पाले, पावसमणि त्ति बुधइ ॥४॥

आयरियउवज्जायाए, सम्म न पडितएवइ ।

अण्णहिपूयए थडे पावसमणि त्ति बुधइ ॥५॥

सम्मइमाये पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य ।

असजए सजयमअमाये, पावसमणि त्ति बुधइ ॥६॥

सधार फलग पीढ, निसेज पायकम्बल ।

अण्णमज्जियमारुहइ, पावसमणि त्ति बुधइ ॥७॥

दवदवस्स चरई, पमत्ते य अमिक्खण ।

उल्लसणेय चण्डे य, पावसमणि त्ति बुधइ ॥८॥

पडिलेहेइ पमत्ते, अवउज्झइ पायकम्बल ।

पडिलेहाअणाउत्ते, पावसमणि त्ति बुधइ ॥९॥

पडिलेहेइ पमत्ते, से किंचि ए निमामिया ।

गुरं परिभाषए निच पावसमणि त्ति बुधइ ॥१०॥

यहुमाइ पमुहसी, थडे खुद अणिग्गहे ।

असविमामी अचियत्त, पावसमणि त्ति बुधइ ॥११॥

विवाद च उनीरेद्, अहम्मे अत्तपन्नहा ।
 बुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१०॥
 अधिरासणे बुक्कइण, जत्थ तत्थ निसीयइ ।
 आसणम्मि अणाउत्त, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१३॥
 ससरफळपाए सुवइ मेज्ज न पडिलेहइ ।
 सधारए अणाउत्त, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१४॥
 दुज्जदकीणिर्गईओ आहारेइ अभिक्खण ।
 अरण य तवाक्कम्मे पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१५॥
 अत्थत्तम्मि य सूरम्मि आहारेइ अभिक्खण ।
 चोइओ पडिचोएइ, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१६॥
 आयरियपरिच्छाई परपामण्डसेवण ।
 गागागणिण दुम्भूए, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१७॥
 सय बोह परिच्चज्ज, परगेहस्ति यावरे ।
 निमित्तएण य धउहरइ, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१८॥
 सप्पाइपिएड जेमेइ नेच्छई सामुदाणिय ।
 गिहिनिमेज्ज च ग्राहेइ, पावसमणि त्ति बुच्चइ ॥१९॥

पयारित्ते पच्चकुसीलमुवुडे,
 रुवधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
 अयसि लाए तिसिमेउ गरहिण
 न मे इह नेय परत्थ लोए ॥२०॥

जे यज्जए एए सया उ दोसे,
 से सु उपहोइ मुणीण मज्जे ।
 अयसि लोए अमय य पूहण,
 आराहण लोगमिण तहा पर ॥२१॥ त्ति वेमि ।

॥ पावसमणिज्ज समत्त ॥२७॥

॥ अहं सज्जज्ज अट्ठारहमं अज्झययं ॥

कम्पितले नयरे राया, उदिगणयलयाहणे ।
 नामेण सज्जप नाम, मिगच्च उवणिग्गप ॥१॥
 हयाणीप गयाणीप रहाणीप तद्देव य ।
 पायताणीप महया, सट्ठमो परिवारिप ॥२॥
 मिप छुट्ठि ता हयगमो, कम्पितलुज्जाणवेसरे ।
 भीप स ते मिप तत्थ, यहेइ रसमुच्छिप ॥३॥
 अहं वेसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तयोधये ।
 सज्झायज्झाणसज्जुत्ते, धम्मज्झाणा मियायइ ॥४॥
 अण्णोधमएड्ढम्मि, म्मायइ कणवियासवे ।
 तस्सागप मिप पास, यहेइ से नराहिचे ॥५॥
 अहं आसगमो राया, सिण्णमागम्म सो तहिं ।
 हप मिप उ पासित्ता, अणगार तत्थ पासइ ॥६॥
 अहं राया तत्थ समन्तो, अणगारो मणाहयो ।
 मप उ मन्तपुण्णणेण, रसगिद्धेण घतुणा ॥७॥
 आस विसज्झइत्ताण, अणगारस्स सो नियो ।
 विण्णयण वन्दप पाप, भगव ! पत्थ मे खमे ॥८॥
 अहं मोणेण सो भगव, अणगार म्माखमस्सिप ।
 रायाण न पट्टिमन्तेइ, तयो राया भयद्दुओ ॥९॥
 सज्जओ अहममीति, भगव ! याहराहि मे ।
 धुत्ते तेपण अणगार, उहेज्ज नरकोट्ठिओ ॥१०॥
 अभओ पट्ठिया ! तुभ, अभयदाया मयाहि य ।
 अणियो जीवलोगमि, किं हिंसाप पमज्जसि ? ॥११॥
 जया सत्थ परिषज्ज, गन्तव्यमवसस्स ते ।
 अणियो जीवलोगमि, किं रज्जमि पसज्जसि ? ॥१२॥

जीविय चेत रुच च, निरुप-
 जतथ त मुज्जमि गय ।
 दाराणि य सुया चेत, निरु-
 जीवन्तमाणुजीवति मय नामुवय-
 नीहरति मय पुत्ता पियर धरम-
 पियरो वि तहा पुत्ते, व-
 तमो तेणजिजप व-
 कीलन्ति-ने नरा राय ।
 मेणावि ज कय वम्म, सु-
 वम्मणा तेण सपुत्तो, ग-
 माऊण तास सो धम्म-
 महया सवेगनि-
 सजभो चइउ रज्ज, नि-
 गद्धमालिस्त भगवभो,
 चिन्हा रहु प-
 जहा ते दीसइ रुच, प-
 किं नामे किं गांसि व-
 कह पहियरति युद्ध,
 सजभो नाम नामेगा,
 गद्धमाली ममायगि-
 निरिय अकिरिय वि-
 एएहि चउहिं टागे-
 इइ पाउकरे युद्धे
 विज्जाचरणस-
 पउति तरण घो-
 नि-

मायायुःपमेय तु मुसा मासा निरतिथया ।
 सजममाणो वि अह, वसामि हरियामि य ॥२६॥
 सत्रेण विद्या मज्झ, मिञ्जिटी अणारिया ।
 विज्जमाणे परे लोण, सम्म जाणामि अण्ण ॥२७॥
 अहमासि महापाणे, जुडम घरिससओधमे ।
 जा सा पालिमहापाळी, डिजा घरिससओधमा ॥२८॥
 से छुप यम्भलोणाओ, माणुस्स भयमागए ।
 अण्णो न परेमि च, आउ जाणे जहा तहा ॥२९॥
 नाणारइ च छन्द च, परिपज्जेज्ज सअए ।
 अण्णो जे य सज्जया, इह विज्जामणुमचरे ॥३०॥
 पडिक्कमामि पसिलाना परमतेहिं वा पुणो ।
 अदो उट्ठिए अदोराय, इह विज्जा तथ चरे ॥३१॥
 ज च मे पुच्छमी काले, तम सुंजण धेयमा ।
 ताइ पाउकरे पुंजे त नाण जिणसासणे ॥३२॥
 फिरिय च नेयइ घीरे अफिरिय परिपज्जए ।
 विट्ठीए दिट्ठिसम्पन्न, धम्म घरसु दुष्सर ॥३३॥
 एय पुण्णपय सोळा, अ यधम्मोयसोहिय ।
 भरहो वि भारह धम्म चिन्हा कामाइ पव्वण ॥३४॥
 सगणे वि सागरन, भरहधात्त नराहिणो ।
 इम्मरिय केयन हिन्हा दयाइ परिनिषुदे ॥३५॥
 चरसा भारह वास, चक्रयट्ठी महिहिदओ ।
 पयज्जमम्भुजगथा मयय नाम महाजमे ॥३६॥
 सणाकुमारो मणुस्सिन्दो, चक्रयट्ठी महिहिदओ ।
 पुत्त रज्जे उअक्का, मेा वि गया तथ चरे ॥३७॥
 चरसा भारह वास चक्रयट्ठी महिहिदओ ।
 पगती सन्निचरे लोण, पसो गइमणुतर ॥३८॥

इक्ष्वाकरा यस्सभो, कुन्तु नाम नरीसरो ।
 त्रिफलायस्त्रिभिर्भगव, पत्तो गइमणुत्तर ॥३६॥
 सागरन्त चइत्ताण भरह नरवरीसरो ।
 अरो य अरय पत्तो, पत्तो गइमणुत्तर ॥३७॥
 चइत्ता भारह वाम, चइत्ता चलवाहण ।
 चइत्ता उत्तमे भोण महाणउमे तत्र चरे ॥३८॥
 एगउत्ता पसाहिता, महि माणनिसूरणो ।
 हरिसेणो मणुस्सिद्धो, पत्तो गइमणुत्तर ॥३९॥
 अग्निओ रायमहस्सेहिं, सुपरिआइ दम चरे ।
 जयनामो जिएअनाय, पत्तो गइमणुत्तर ॥४०॥
 इसणणरज मुदिय, चइत्ताण मणी चरे ।
 इसणणमहो निफलत्तो, सफर सकेण चाइओ ॥४१॥
 नमी नमेह अणगाण, सफर सकेण चाइओ ।
 चइऊण गौ वइनेही, सामणणे पज्जुवट्टिओ ॥४२॥
 करकण्डू कलिंसेसु, पचालेम य दुग्गुहो ।
 नमी राया त्रिदहेसु, गंधारेसु य नग्गई ॥४३॥
 एण नरिदयसभा, निअयन्ता निणमासरो ।
 पुत्ते रत्ते ठवेऊण, सामणणे पज्जुवट्टिया ॥४४॥
 सौरीररायसभो चइत्ताण मुणी चर ।
 उदायणे पत्रइओ, पत्तो गइमणुत्तर ॥४५॥
 तहेण कासिराया, त्रि मेओ मथपरऊमे ।
 काममोगे परिअज, गहणे कम्ममहायण ॥४६॥
 नहेण त्रिजओ राया, अणट्टास्सि पण्ण ।
 रज्ज तु गुणममिद्ध, पयहित्तु महाजसो ॥४७॥

तद्देवुग तथ क्रिया, अत्रापिपत्तेण चेवसा ।
 मद्व्यसो रायरिसी, आशाय सिरसो सिदिं ॥५१॥
 कह घीरे अहेऊहि, उम्मत्तो व महि चरे ?
 एव विसेसमादाय, सूरग ददपरवमा ॥५२॥
 अश्वन्तनियानुपमा, सया मे मासिया वई ।
 अतरिंसु तरन्तेगे, तरिस्सन्ति अणागया ॥५३॥
 कहिं घीरे अहेऊहिं असाग परियावसे ।
 सव्वसगविनिम्मुक्क, मिद्धे भयह नीरण ॥५४॥ ति वेमि ॥

॥ सज्जज समत्त ॥ १८ ॥

॥ मियापुत्तीय एगूणवीसइम समत्त ॥

सुगगीये नयरे रम्मे, पाणुणुज्जाणुसोदिए ।
 राया पलमहिस्ति, मिया तरुसग्गमाहिमी ॥१॥
 सेसि पुत्ते पलसिरी, मियापुत्ते ति विस्सुण ।
 अम्मापिउण वइय, जुवराया दमीसरे ॥२॥
 नन्दये सो उ पासाण, कीरण सह इत्थिहिं ।
 वेधो वोगुदगो चेय, निच्च मुइयमाणसो ॥३॥
 मणिरयणकोटिमत्तले, पाम्मायालोयणुद्विओ ।
 आलोपइ नगरम्स, चउकतियचचरे ॥४॥
 अह ॥ ५ ॥ अइच्छन्त, पासइ नमणसज्जय ।
 तवणियममज्जमघा, सीलवट मुणआगग ॥५॥
 न पई मियापुत्ते, दिट्ठोण अणिमिम्माय उ ।
 कहिं मत्तेमिग रुच, णिडुपु व णण पुग ॥ ६ ॥
 साहुस्स वणिसणे नरुप, अज्जमवमालमिग सोदये ।
 मो ॥ गयम्स सग्गम्स, जाइयग्ग ममुण्ण ॥७॥

(देवलोगचुओ सतो माणुस भवमाणओ ।
 सध्निनाणसमुण्यये जाइ सरह पुराणिय ॥)
 जाईसरहो समुण्यन्ने, मियापुत्ते महिहिदण ।
 सरह पुराणिय जाइ, सामण्य च पुरा कय ॥८॥
 विसण्हि अरज्जतो, रज्जतो सजममि य ।
 अम्मपियरमुवागम्म, इम ययणमवधी ॥९॥

सुयाणि मे पच महवयाणि,

मरएसु दुक्ख च तिरिक्खजोणिसु ।

मिण्णिएव्वामो मि महएव्वमाणो,

अणुजायह पण्डित्तमि अम्मो ! ॥१०॥

अम्मताय ! मए भोगा, भुत्ता मिसफलोवमा ।

पच्छा कह्यव्विवागा, अणुयव्वदुहायहा ॥११॥

इम सरीर अणिच्च, असुह असुरसभय ।

असासयासमिण, दुक्खनेसाण भाषण ॥१२॥

असासय सरीरमि, रह नोचलभामह ।

पच्छा पुरा य चइयव्वे, केणुचुयसन्निमे ॥१३॥

माणुसत्ते असारमि, यादीरोगाण आलप ।

जराभरणघत्थमि, एवपि न रमामह ॥१४॥

जम्म दुक्ख जरा दुक्ख, रोगाणि मरणाणि य ।

अहो दुक्खो हु ससारो, जत्य कीसत्तिजन्नुणो ॥१५॥

येसं वत्थु हिरणा च, पुत्तदार च वधया ।

चइत्ताण इम देह, गन्तव्वमजसस्स मे ॥१६॥

जहा किम्पागफलाण, परिणामो न सुन्दरो ।

एव भुत्ताय भोगाण, परिणामो न सुन्दरो ॥१७॥

अद्दाग जो महत्त तु अण्णाहेणो पवज्जइ ।

गच्छतो सो दुही होइ, जुहातएहाण पीडिओ ॥१८॥

एष धम्म अकाउण, जो गच्छइ पर भय ।
 गच्छन्तो सो दुखी होइ, याहीरोगेहिं पीडिओ ॥१६॥
 अरुणा जो मदत तु, सपाहेओ पयज्झइ ।
 गच्छतो सो सुखी होइ, हुदातएहाविवज्झिओ ॥१७॥
 एष धम्म पि काऊण, जो गच्छइ पर भय ।
 गच्छन्तो सो सुखी होइ, अप्पक्खमे अवेषणे ॥१८॥
 जहा गेहे पल्लिप्तमि, तस्स गदस्स जो गइ ।
 सारभगइणि गिलेइ, असार अयउज्झइ ॥१९॥
 एष लोए पल्लिप्तमि, जराए मरणेण य ।
 अण्णाण सारइस्सामि, तुमेहिं अलुमसिओ ॥२०॥
 त यिन्तम्मापियगे, सामण पुत्त । दुक्खर ।
 गुणाण तु सहस्साइ, धारेयव्वाइ 'मिक्खुणा ॥२१॥
 समया सग्गभूएसु, सत्तुमित्तमु या जगे ।
 पाणाइवायतिरई, जावज्जीवाए दुक्कर ॥२२॥
 निष्काल'पमत्तेण, मुसागयविधज्जण ।
 भासियच्च दिय सच्च, निष्काउत्तेण दुक्कर ॥२३॥
 द'तसाहएम इस्स, अदत्तस्स विवज्जण ।
 अणयज्जेसणिज्जस्स, गिरहणा अत्रि दुक्कर ॥२४॥
 तिरई अयम्मचेरस्स, कामभोगरस'नुणा ।
 उग्ग महच्चयं वम्म, धारेयव्व सुदुक्कर ॥२५॥
 वणधम्मपसवग्गेसु, परिग्गहविवज्जण ।
 स'चारम्मपरिधाओ निम्ममत्त सुदुक्कर ॥२६॥
 चउ'गहे पि आहारे, राइभोयणवज्जण ।
 सन्निहीसच्चओ चेव, वज्जेयट्ठो सुदुक्कर ॥२७॥

बुद्धा तएहा य मीउएह दसमसन्नवेयणा ।
 अओसा दुक्खसेजा य, तणफासा जल्लमेय य ॥३१॥
 तालणा तज्जणा चेय, चहय धरणीमहा ।
 दुक्ख भिररायरेया, जायणा य अल्लामया ॥३२॥
 काओया जा इमा वित्ती, तेसलोओ य दारुणो ।
 दुक्ख यम्मय घोर, धारेउ य महप्पणो ॥३३॥
 सुहोएओ तुम पुत्ता, ' सुकुमालो सुमज्झिओ ।
 न इत्ति पभू तुम पुत्ता, सामण्णमणुपालिय ' ॥३४॥
 जायजीवमविस्सामो, गुणाणा तु महम्मरो ।
 गुरु उ लोहमादप्प, ओ पुत्ता होइ दुक्खहो ॥३५॥
 आगासे गगसोउव, पडिसोउव दुत्तरो ।
 याहाहिं सागरो चेय, तरियवो गुणोदही । ३६॥
 यातुया कवळे चेय, निरस्साए उ सज्जमे ।
 असिघारागमहा चेय, दुग्गर चरिउ तथो ॥३७॥
 अदीवगन्तट्ठीए, चरित्ते पुत्त ! दुक्करे ।
 जना लोहमया चेय, चायेयया सुदुक्कर ॥३८॥
 जहा अगिसिहा त्तिता, पाउ होइ सुदुक्करा ।
 तहा दुग्गर करेउ जे, तारुण्ये समणत्तए ॥३९॥
 जहा दुक्कय भरेउ जे, होइ धायस्स कोत्थलो ।
 तहा दुक्खं करेउ जे, कीवेए समणत्तए ॥४०॥
 जहा तुलाए तोलेउ, दुक्करो मंदरो गिरी ।
 तहा निह्वयनीसक, दुक्कर समणत्तए ॥४१॥
 जहा मुपाहिं तरिउ, दुग्गर रयणायरो ।
 तहा अणुवसन्तेण दुक्कर दमसागरो ॥४२॥

भुञ्ज माणुस्सए भोगे, पचलफखणए तुम ।
 भुत्ताभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्म धरिस्ससि ॥४३॥
 सो वेइ अम्मापियरो, एवमेव जहा फुड ।
 इह लोए निष्पिवास्सस्स, नत्थि किञ्चिवि दुक्कर ॥४४॥
 सारीरमाणसा चेष, वेयणाओ अत्तन्तसो ।
 मए सोढाओ भीमाओ, असइ दुक्खमयाणि य ॥४५॥
 जरामरणकन्तारे, चाउरन्ते मयागरे ।
 मए सोढानि भीमानि, जम्मानि मरणाणि य ॥४६॥
 जह इह अगणी उएहो, एत्तोऽणन्तगुणो तहिं ।
 तरप्पसु वेयणा उएहा, अस्साया वेइया मए ॥४७॥
 जहा इह इम सीय, एत्तोऽणन्तगुणे तहिं ।
 मरप्पसु वेयणा सीया, अस्साया वेइया मए ॥४८॥
 फण्डन्तो कदुबुम्मीसु, उहपाओ अहोसिरे ।
 ह्यासणे जलन्तम्मि, पक्कपुयो अणन्तसो ॥४९॥
 महाद्वयग्गिम्मासे, मरुमि वहरवालुए ।
 कदम्बपादुपाए य, दहपुयो अणन्तसो ॥५०॥
 एत्तो कदुबुम्मीसु, उहद उहो अरम्भयो ।
 करपत्तकरकयाहिं, छिन्नपुब्बो अणन्तसो ॥५१॥
 अइतिकसकएट्ठाएण्णे, तुमे विम्भलिपायवे ।
 स्पेपिय पात्तवेइएण, कइहोक्कहाहिं दुक्कर ॥५२॥
 महाजतेसु उच्छ्र पा, आरसतो सुमेरव ।
 पीलिओ मि सक्कम्मेहिं, पाक्कम्मो अणत्तसो ॥५३॥
 कृपतो कोलमुणएहिं, सामेहिं सवहेहि य ।
 पाहिओ पालिओ छिओ, दिब्बुरतो अण्णेगसो ॥५४॥

असीहि अयसिअण्हिं, भहेहिं पट्टिसेहि य ।
 छिन्नो मिन्नो विभिन्नो य, 'ओइण्हो पावफम्मण्हो ॥५५॥
 अयसो लोहरहे जुत्तो, जलत्ते समिलाजुप ।
 ओइओ तोत्तजुत्तेहिं, रोओ वा जह पाडिओ ॥५६॥
 हुयासण्हो जलत्तम्मि, चियासु महिसो विव ।
 दहदो पको य अयसो पावफम्महेहि पाविओ ॥५७॥
 यला सडासतुण्डेहिं, लोहसुण्डेहिं पक्खिहिं ।
 धिलुत्तो पिलयतोऽह, ढकगिद्धेहिंऽणन्तसो ॥५८॥
 तण्हकिलत्तो धायत्तो, पत्ता येयरणि मट्ठिं ।
 जल पाहति चित्तन्तो, पुरधारहिं विवाइओ ॥५९॥
 उण्हामितत्तो सपत्तो, असिपरा महायण ।
 असिपत्तेहिं पट्टतेहिं, त्रिगुणो अण्णसो ॥६०॥
 मुण्णरेहिं मुसलीहिं, सल्लेहिं मुसलेहि य ।
 गयासभरगगत्तेहिं, परा दुक्ख अणन्तसो ॥६१॥
 लुरेहिं तिक्खधाराहिं, लुरियाहिं कप्पणीहि य ।
 कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्किओ य अण्णसो ॥६२॥
 पात्तेहिं कूडजालेहि, मिन्नो वा अयसो अह ।
 वाहिओ यद्धरुद्धो य, 'यहुसो येय विवाइओ ॥६३॥
 गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अयसो अह ।
 उल्लिओ फालिओ गन्धिओ, मारिणो य अण्णतसो ॥६४॥
 पिदसएदि जालेहि नेप्पाहिं मउणो विव ।
 गदिओ लग्गो यद्धो य, मारिओ य अण्ण तसो ॥६५॥
 पुहाडफरसुमाईहि, यद्धइहिं दुमो विव ।
 कुट्ठिओ फालिओ छिन्नो तन्निओ य अण्णतसो ॥६६॥

चवेडमुट्टिमाईहिं कुमारेहिं, अय पिव ।
 ताडियो कुट्टियो भियो, चुरियो य अणन्तसो ॥६७॥
 तत्ताइ तम्यलोहाइ, तठयाइ सीसयाणि य ।
 पाइओ कलकलन्ताइ, आरसतो मुमेरव ॥६८॥
 तुह पियाइ मसाइ, पण्डाइ सोलगाणि य ।
 लाचियो मि समसाइ, अग्गियणाइऽणेनसो ॥६९॥
 तुह पिया सुरा सीह, मेरओ य महणि य ।
 पाइओ मि जलन्तीओ, वसाओ रुहिराणि य ॥७०॥
 निथ भीपण तत्थेण रुहिपण वहिपण य ।
 परमा दुहसवद्धा, वेयणा वेइया मय ॥७१॥
 ति उचएड्ढणाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा ।
 महम्मयाओ भीमाओ, नरपसु वेइया मय ॥७२॥
 जारिसा माणुसे लोए, ताया । दीसन्ति वेयणा ।
 पत्तो अणन्तगुणिया, नरपसु दुफखवेयणा ॥७३॥
 स'यभवेसु अस्साया, वेयणा वेइया मय ।
 निमेसन्तरमिच्छं पि, ज साता नत्थि वेयणा ॥७४॥
 ॥ विम्भट्ठमापियरो, छन्देण पुत्त । प'यवा ।
 नयर पुण सामण्णे, दुक्ख निप्यट्ठिकम्मया ॥७५॥
 सो वेइ अम्मापियरो । पयमेय जहा पुट्ट ।
 पट्ठिकम्म वा कुण्ड, अग्गणे मियपक्खिण ॥७६॥
 पणम्मूण अग्गणे व जहा उ चरइ मिगे ।
 पर्य धम्मं चरिम्मामि मज्झमणु तवेणु य ॥७७॥
 जया मिगरुम शायका महारणमि जायइ ।
 अत्तं न रक्खामूलमि वा न नाहे तिगिच्छइ ॥७८॥
 को वा मे ओसइ देइ, को वा मे पुच्छइ मुह ?
 को मे भसं व पाण वा, आहरिन्तु पणामय ? ॥७९॥

जया से सुही होइ, नया गन्डू गोयर ।

अक्षपाण्डुस्म अट्टाण, बहुराणि सराणि य ॥२॥

व्याइत्ता पाणिय पाउ, बहुरेहिं सरेहि य ।

मिगचारिय चरित्ताण, गच्छइ मिगचारिय ॥३॥

एय समुद्धिओ भिक्खू, एयमेव अणेगए ।

मिगचारिय चरित्ताण, उच्छइ पक्कमइ दिस ॥४॥

जहा मिए एग अणेगचारी,

अणेगवासे धुग्गोयर य ।

एय मुणी गोयरिय परिट्ठे,

नो हीलए नो वि थ रिसएज्जा ॥५॥

मिगचारिय चरित्तामि, एय पुत्ता ! जहासुह ।

अम्मापिऊहिऽणुआओ, जहाइ उयहिं तओ ॥६॥

मियचारिय चरित्तामि, सयदुक्खरिमोस्सएणि ।

मुग्गेहिं अम्भणुआओ, गच्छ पुत्ता ! जहासुह ॥७॥

एय सो अम्मापियरो अणुमाणिताण वट्ठिह ।

ममत्ता छिन्दइ ताहे, महानागो न वचुर्य ॥८॥

इहर्द्धा त्रित्त च मित्त य, पुत्तदाव च नायओ ।

रेणुय व पट्टे लग्ग, निदुधुणिताण निग्गओ ॥९॥

पचमहव्ययजुत्तो पचममिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।

समिन्तरादिरए तवोक्कममि उज्जुओ ॥१०॥

निम्ममो निरहवारा, निम्मगो चरागारयो ।

समो य सन्नभूएसु, तसेमु थाउरेसु य ॥११॥

लाभालाभे सुहे दुस्से, जीरिए मरये तदा ।

समा निन्दापमसामु, तहा माणावमाणओ ॥१२॥

गारयेसु वसाणसु, दगडसदृमणसु य ।
 निवत्ता दाससोगाओ, अनियाणो अयधणो ॥६१॥
 अगिस्सिओ इह लोण, परणेण अगिस्सिओ ।
 घामी उदकाणो य, यमणे अणसणे तदा ॥६२॥
 अणमरेहेहिं दारेहिं, ययणो विदिशामये ।
 अरुभयज्जालजोमेहिं, वमरधमसासरो ॥६३॥
 एय नाणेण घरणेण, दसणेण तथेण य ।
 भायणाहिं य सुद्धाहिं, सडम भायिणु अणय ॥६४॥
 बहुदाणि उ घामाणि सामगलमणुपाण्या ।
 मासिणु उ भसण, सिद्धि वत्तो असुसर ॥६५॥
 एय वरन्ति मवुत्ता वण्टिया ववियकरण्णा ।
 निखिअट्ठति मोगेण, मिशपुत्ते जहासिस्सी ॥६६॥

महाण्यमाणस्स महाजसस्स,
 मियाइपुत्तस्स निसम्भ भासिय ।
 तयण्णहाणां चरिय च उत्ताम
 गरण्णहाणा च तिग्गवविम्भुत्ते ॥६७॥
 विशणिया दुक्कवविद्धता धणा,
 ममजय ध य महाभयायह ।
 मुहायद धम्मपुत्त अणुत्तर,
 धारज निग्गणगुणायह मह ॥६८॥
 ॥मियापुत्तीय समत्त ॥१२॥

॥ग्रह महानिगटिज्ज वीमदम अज्जमयणु ॥

सिद्धाण नमो विद्या, मज्जयाणा च भावओ ।
 अ यधम्मणह नय अणुनट्ठि मुणेह मे ॥१॥

पभूयस्यणे। गथा, सेणिओ मगहाहियो ।
 विहारजत्त निज्जाओ, मणित्ठु च्छिंदसि चेइए ॥२॥
 ताणादुमनयाइएणा, ताणापक्खिनिसेविय ।
 नाणाहुसुममउअ उच्चागा नदणोवम ॥३॥
 तत्त सो पासइ साहु सजय सुसमाहिय ।
 तिमभ रक्खमूलम्मि, सुकुमाल मुत्तोइय ॥४॥
 तत्त इ रूय ॥ पासिस्ता, राइणो तम्मि सजए ।
 अअत्तपरमो आमी, अउलो रुयविम्हओ ॥५॥
 अहो वगणो अहो रूय, अहो अज्जस्स सोमया ।
 अहो खत्ती अहो मुत्ती, अहो भोगे असगया ॥६॥
 तस्स पाए उ तन्दिस्ता, काऊण थ पयाहिया ।
 नाइदूरमणासप्पे, पगली पडिपुच्छइ ॥७॥
 तरणो सि अज्जो । पत्तइओ भोगफालम्मि सजया ।
 उवट्ठिओ सि मामएणे एयमट्ठ सुणेमि ता ॥८॥
 अणाहोमि महाराय, नाहो मज्झ न विज्जइ ।
 अणुत्तम्पग मुहि वाधि कचि'नामिस्समेमह ॥९॥
 तआ सो पवसिओ गथा, सेणिओ मगहाहियो ।
 एव ते इहिदमत्तस्स, यह नाहो न विज्जइ ॥१०॥
 होमि नाहो भयताण, भोगे भुजाहि सजया ।
 मित्तनाइपरिबुडो माणुस्स खु सुदुहह ॥११॥
 अण्णणा धि अणाहो सि, मेणिया । मगहाहिया ।
 अण्णणा अणाहो मत्तो, 'एद नाहो भविस्ससि ? ॥१२॥
 एव वुत्तो नरिन्दो सो, सुसमत्तो सुप्पिम्हिओ ।
 धयणा अस्सुयपुत्त, साहुणा विम्हयप्पिओ ॥१३॥

अस्ता हत्थी मणुस्ता मे, पुर अतेउर च मे ।
 भुजामि माणुसे भोगे, आणा इस्सरिय च मे ॥१४॥
 एरिसे सम्पयग्गम्मि, सत्तकामसम्मणिय ।
 कह अणाहो भयइ, मा हु भन्ते ! मुम वण ॥१५॥
 न तुम जाणे अणाहत्स, अत्थ पोत्थ च पत्थिया ।
 जहा अणाहो भयइ, सणाहो या नराहिया ॥१६॥
 सुणेह मे महाराय, अत्थक्खिस्संण चैयसा ।
 जहा अणाहो भयई, जहा मेअ पचत्तिय ॥१७॥
 कोसम्मी नाम नयरी, पुराणपुग्गमेयणी ।
 तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूयधणम्मचओ ॥१८॥
 पढमे वण महाराय, अउत्ता म अच्चिबेयणा ।
 अहो या त्रिपली दाहो, सत्तगसेसु पत्थिया ॥१९॥
 सत्थ जहा परमत्थिक्ख, सरीरविहरत्ते ।
 'आयीलिज्ज अरी कुद्धो, पय मे अच्चिबेयणा ॥२०॥
 तिय मे अन्तरिच्छ च, उत्तमग च पीडइ ।
 इप्पासमिस्समा घोरा, वेयणा वग्गमदाहणा ॥२१॥
 उग्गट्ठिया मे आयरिया, विज्जाततत्तिगिच्छया ।
 अघीया सत्थकुसला, मत्तमूलवित्सारया ॥२२॥
 ते मे तिगिच्छ कुग्गति, चाउप्पाय जहाहिय ।
 न य दुक्खा निमोयन्नि, एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥
 पिया मे अत्तसारपि, दिज्जाहि मम कारणा ।
 न य दुक्खा निमोयइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥
 माया य मे महाराय, मुत्तसोगदुहट्ठिया ।
 न य दुक्खा निमोयइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥

मादरो मे महाराय, सगाजेदृक्कणिदुगा ।
 न य दुक्खा विमोयति, एसा मज्झ अणाहया ॥२६॥
 मइणीओ मे महाराय, सगा जेदृक्कणिदुगा ।
 न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥२७॥
 भासिया मे महाराय, अणुरत्ता अणुद्वया ।
 भसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उर मे पगिसिंयइ ॥२८॥
 अन पाण च उहाण च, गन्धमत्तविलेवण ।
 मय नायमणाय या, सा वाला नोअभुजइ ॥२९॥
 खण पि मे महाराय, पासाओ वि न पिदइ ।
 न य दुक्खा विमोयइ, एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥
 तओ हे एवमाइसु, दुक्खमाइ पुणो पुणो ।
 वेयणा छणुभविउ जे, खससरम्मि अणुतए ॥३१॥
 सइ अ जइ मुयेज्जा, वेयणा विट्ठा इओ ।
 एतओ दन्तो निरादम्भो, पयए अणुगारिय ॥३२॥
 एय च चिन्तइचाण, पसुत्तो मि नराहिवा ।
 परियत्तस्तीए राईए, वेयणा मे खय गया ॥३३॥
 तओ कह्ते पभायम्मि, आपुन्डित्ताण वधवे ।
 एतओ दन्तो निरादम्भो, पव्वदम्भोऽणुगारिय ॥३४॥
 ततो ह नाहो जाओ, अप्पणो य परस्स य ।
 सवेसिं वेय भूयाण, तसाण यावराण य ॥३५॥
 अप्पा नई वेयरणी, अप्पा मे मृडसामली ।
 अप्पा फामदुहा घेणू अप्पा मे नदण बल ॥३६॥
 अप्पा क्स्ता विक्ता य, दुहाण य सुहाण य ।
 य वा मित्तममित्त च, दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥३७॥

इमा हु अघा वि अणाहया निवा

तमेगचित्तो निदुओ सुणेहि ।

સોચાળ મેદાવિ ! સુમાસિયે દમ,
 અણુસાસણં નાનુગુણોદયેયે ।
 મમ્મ કુસીલાણ અદાય મત્યે,
 મહાનિયમ્બદાળ વપ વહેણ ॥૧૧॥
 અરિસમાયારગુણિય તમ્મો,
 અણુસતં સંનમ પાલિયમ્મ ।
 નિરામયે સસપિયાણ કમ્મ,
 ઉવેદ ઠાળં વિગ્ગુસમ ધુરં ॥૧૨॥
 વપુગ્ગવત્તં તિ મહાતપોધણે,
 મહામુળી મહાવરુપે મહાપ્રસે ।
 મહાનિયમ્બિઝમિળં મહાસુર્ય,
 સે વાહણ મહયા વિરપરેણ ॥૧૩॥
 તુઠ્ઠો ય સેવિમ્મો રાયા,
 દણમુદ્દાદુ કમ્મજલી ।
 અણાદસા જહાભૂર્ય,
 મુલ્લુ મે ઉચ્ચરસિય ॥૧૪॥
 તુમ્મ સુલક્ક વુ મણુસસજમ્મ,
 સામા સુલક્કા ય તુમે મટેમી ।
 તુમ્મે મળાદા ય સવધયા ય,
 ત્ત મે ઠિયા મગ્ગિ કિણુસમાણં ॥૧૫॥
 ॥ સિ નાહો અણાદાણ,
 સલ્લભૂયાણ મજ્જયા ।
 સામેમિ સે મહામાગ,
 દિઝ્ઝામિ અણુમાસિત ॥૧૬॥
 પુચ્છિઢ્ઢણ મપ તુમ્મ,
 માણવિમ્મો ડ જો વમ્મો ।

निमित्तया य मोगेहि,
 त सत्र मरिमेहि मे ॥१७॥
 एव युक्तिस्तान् स रायसीदो,
 अणुगारमीह परमाह भक्तिप ।
 सभोरोहो सपरियणो सबन्धवो,
 धम्माणुरत्तो विमलेण चेतसा ॥१८॥
 ऊससियरोमकूषो,
 काऊण य पयाहिण ।
 अभियन्दिऊण सिरसा,
 अइवाओ नराहियो ॥१९॥
 इयरो वि गुणसमिद्धो,
 तिगुणिगुत्तो तिदण्डविराओ य ।
 विहग इय विण्णमुक्को,
 विहरइ उसुह विगयमोहो ॥२०॥ स्ति नेमि
 ॥ महानियठिज्ज समत्त ॥

॥ अह समुदपालीय एगगीसडम अज्झयण ॥

चम्पाण पालिण नाम, सावण आसिवाणिण ।
 महावीरस्स भगवओ सीसे सो उ महप्पणो ॥२१॥
 निगग्ये पाउयणो, मावण से वि कोविण ।
 पोणण वचहणत्त, पिदण्ड नगरमागर ॥२२॥
 पिण्णगे उउहणत्तम्म, पाणिओ देह धुयण ।
 न ससत्ता पइमिण, मत्तेसमह पत्थियो ॥२३॥
 अह पालियस्स घरिणि, समुदम्मि पसवह ।
 अह यागण तहिं जाण, समुदपालित्ति गामण ॥२४॥
 नेमेण यागण उप्प मादिण पाणिण घर ।
 सउहुइ तम्म धरे, दारण ने सुहोहण ॥२५॥

धावत्तरी कलाओ य, सिफ्मवई तीइओविण ।
 जोव्यणेण य सपधे, सुरूवे पियदसरे ॥६॥
 तस्त रुयवइ भज्ज, पिया आणेइ रविणि ।
 पासाप कीलण रम्मे, देवो दोमुन्दथो जहा ॥७॥
 अह अन्नया कयाई, पासायालोयणे ठिओ ।
 घज्जमएडणसोभाग, घज्ज पासह यज्जम ॥८॥
 त पासिऊण सवेग', समुदपालो इणमग्गवी ।
 अदोऽछुहाण वम्माण, निज्जाण पाउग हम ॥९॥
 समुद्धो सो तहिं भगव, परमसवेगमागओ ।
 आपुच्छऽम्मापियरो, पट्ठण अणगारिय ॥१०॥
 जहिणु सग च महाक्खिलेस,
 महन्तमोह कसिए भयावह ।
 परियायधम्म चऽभिरोयपजा,
 ययाणि सीलानि परिसहे य ॥११॥
 अहिंससथ च असेणग च,
 तत्तो य यम्म अपरिगह च ।
 पडिघज्जिय पचमहव्वयाणि,
 चरिज्ज धम्म जिणहेसिय पिऊ ॥१२॥
 सध्वेहिं भूएहिं दयानुपपी,
 खतिफण्णमे सजययम्मयारी ।
 सायज्जजोग पण्विज्जयतो,
 चरिज्ज मिक्खणु सुममादिइन्दिण ॥१३॥
 कालेण काल विदरेज्ज गेट्ठे
 यलाउल जाणिय अण्णयो य ।

तीहो व सहेण न सतसेज्जा,
 वयजोग सुच्चा न असभमाहु ॥१४॥
 उवेदमाणो उ परिचइज्जा,
 पियमणिय सच तितिसुत्तइज्जा ।
 न सत्त सव्वत्थ ऽमिरोयइज्जा,
 न यावि पूय गरह च सणण ॥१५॥
 अणोगच्छद्दहारह माणणेहिं,
 जे भावओ सपगरेइ भिक्खू ।
 भयमेरया तत्थ उइन्ति भीमा,
 दिवा मणुस्सा अदुघा तिरिच्छा ॥१६॥
 परीसहा दुत्तिसहा अणेने,
 तीयति जत्था यत्तुकायया नरा ।
 से तत्थ पत्ते न वदिज्ज भिक्खू,
 सगाममीमे इव नागराया ॥१७॥
 तीओसिणा दसमसा य फासा,
 आयका निनिहा पुसन्ति देह ।
 अकुक्कुओ तत्थ ऽहियासहेज्जा,
 रयाइ सेविज्ज पुरे कयाइ ॥१८॥
 पहाय राग च तहेन दोस,
 मोह च भिक्खू सयय वियक्खणो ।
 मेदव्व माणण अकम्ममाणो,
 परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥१९॥
 अणुअण नाणण भहेसी,
 न यावि पूय गरह च सणण ।
 स उज्जुभाव पडियल, सणण,
 निवाणमग्ग तिरण उवेइ ॥२०॥

अरदरदसहे पटीणसथवे,
विरण आयद्विण पद्दाणव ।

परमद्वपणहि चिट्टह,
छिजसोण अमसे अकिंचलो ॥२१॥

विचित्तलयणाइ भएज्ज ताइ
निरोवलेगाइ असथटाइ ।

इसीहि चिण्णाइ महायसेहि,
राएण फासेज्ज परीमहाइ ॥२२॥

सध्माणनाणोवणए महेसी,
अणुत्तर चरिउ अम्मसथय ।

अणुत्तरे नामधरे जम्मसी,
ओभासई सुरिण थऽतल्लिक्खे ॥२३॥

हुनिह मधेउण थ पुण्णपाव,
गिराणे सअओ विण्णमुक्खे ।

तरिस्ता समुद थ महाभयोह,
ममुहपाले अपुणागम गण ॥२४॥ स्ति वेमि

॥ समुदपालिय समत्त ॥

॥ यह रहनेमिज्ज वारीसडम थव्भयण ॥

सोरियपुरम्मि नयने, आसि राया मदिहिद्वण ।

वसुदेवु स्ति नामेण, रायलक्खणम्मजुण ॥१॥

तस्म मजा दुने आसी, रोहिणी दधइ तहा ।

तासि दोगह दुने पुत्ता, हट्टा रामनेसया ॥२॥

सोरियपुरम्मि नयर, आसि गया मदिहिद्वण ।

समुदविजय नाम, रायलक्खणसजुण ॥३॥

तस्स भज्जा सिया नाम, तीसे पुत्तो महायसो ।
 भगव अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाहे दमीसरे ॥५॥
 सोऽरिट्ठनेमिनामो उ लम्बलणस्सरसजुओ ।
 अट्ठसहस्सलनसणधरो, गोयमो फालगच्छरी ॥५॥
 यज्जरिसहसघयणो, समचउरसो भसोयरो ।
 तस्स रायमइक्कथ, भज जायइ रेसवो ॥६॥
 अह सा रायवरक्कथा, सुसीला चादयेहणी ।
 सल्लक्खणसपत्ता, विजुसोयामणिपमा ॥७॥
 अहाह जणभो तीसे, वासुदेय महिद्धिम ।
 इहागच्छउत्तमारो, जा से कम्ममिडह ॥८॥
 सगोमहीहि गहनिभो, कयकोउयमगलो ।
 विजुयलपरिहिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ॥९॥
 मत्ता च गधहत्थि, वासुदेयस्स जेदुग ।
 आरुढो सोहण अहिय, सिरे चूडामणि जहा ॥१०॥
 अह ऊसिएण छत्तण चामराहि य सोहिए ।
 इसारचक्कण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥११॥
 चउरगिणीए सेणाए, रत्थाए जहक्कम ।
 तुटियाण सन्निमाणण, दिवेला गगण पुसे ॥१२॥
 एवारिसाए इद्धिए, जुसीए उत्तमाइ य ।
 नियगाओ भयणाओ, निज्जाओ वणिहपुगओ ॥१३॥
 अह सो तत्थ निज्जानो, दिस्स पाणे भयदुदुए ।
 वाडेहि पजरेहि च, सन्निरुजे सुदुम्भिए ॥१४॥
 जीयियत्त ॥ सम्पत्ते, मसट्ठा मन्निअववण ।
 पासित्ता से महापेअ, सारहिं इणमयी ॥१५॥
 कस्स अट्ठा इमे पाणा एण सने सुहेसियो ।
 वाडेहिं पजरेहिं च, सन्निरुद्धा य अचट्ठहिं ॥१६॥

धित्तु तेऽजसोकाभी, जो त जीवियकारणा ।
 घत इच्छसि आवेड, मेय ते मरण भवे ॥४२॥
 अह च भोगरायस्स त च सि अन्धमयहिणो ।
 मा कुले गधणा होमो, सज्जम निहओ चर ॥४३॥
 जइ त काहिसि भाव, जा जा दच्छसि नारिओ ।
 पायाइहो वर हहो, अट्टिअणा भविस्ससि ॥४४॥
 गोपालो भण्डयालो वा जहा सहङ्गणिस्सरो ।
 एय अणिस्सरो त पि सामणस्स भविस्ससि ॥४५॥
 (कोइ माण निनिणिहत्ता, माय लोभ च सव्वसे ।
 इदियाइ वसे पाउ, अण्णाण उवसहरे ॥)
 तीसे सो वयण सोद्या, सवयाण सुभासिय ।
 भउसेण जहा नाभो, धम्मे सपडियाओ ॥४६॥
 मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिरन्दिण ।
 सामणा निचल पासे, जाउज्जीव ददव्वमो ॥४७॥
 उग्ग तव अरिणाण, जाया दुत्तिण पि केउली ।
 सव्व कम्म सउत्ताण, सिद्धि पत्ता अणुत्तर ॥४८॥
 एय करेत्ति सउद्धा, पणिहया पयियकलणा ।
 विणियट्ठत्ति भोगेसु, जहा सा पुत्तिसोत्तमो ॥४९॥ ति वे

॥ रुत्तेमिज समरा ॥

॥ अह केत्तिमोपमिज्ज तेरीमइम अज्जकयण ॥

विणे पासित्ति नामेण, अरहा भोगपूइओ ।

सउद्धणा व सव्वत्त धम्मतिहवरे जिणे ॥५०॥

१) सोयस्सिमण । २) मय नु य-वदमोय, धम्मतिहवसदेस ।

तस्स लोगघनीउस्स, आसि सीसे महायसे ।
 पेयी कुमारसमणे, विज्जाचरणवारणे ॥१॥
 ओहिनाणसुण पुद्धे, सीससघसमाउले ।
 गामाणुगाम गीयन्ते सारथिय 'पुरमागण ॥३॥
 ति'दुय नाम उज्जाण, तम्मि नगरमण्डले ।
 फासुए सिउजसघारे, तत्थ वाममुवागण ॥५॥
 अह तेणेउ कालेण धम्मतित्थयरे जिये ।
 भगव पद्धमाणि त्ति, स'उलोगम्मि विस्सुए ॥५॥
 तस्स लोगघनीउस्स आसि सीसे महायसे ।
 भगव गोयमे नाम, विज्जाचरणवारण ॥६॥
 वारमगविऊ पुद्धे, सीससघसमाउले ।
 गामाणुगाम गीय ते, से वि सारथियमागण ॥७॥
 फोद्धग नाम उज्जाण, तम्मि नगरमण्डले ।
 फासुए सिज्जसघारे, तत्थ वाममुवागण ॥८॥
 पेयी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
 उभओ वि तत्थ विहरिंसु अहीणा सुसमाहिया ॥९॥
 उभओ मीससघाग, सज्जयाग तास्मिण ।
 तत्थ रिन्ता समुण्णआ, गुणवताउ ताइण ॥१०॥
 केरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिमो ?
 आयारधम्मपणिदी, इमा वा सा उ केरिमी ? ॥११॥
 घाउज्जामो य जो धम्मो, जा इमो पच्चसिक्खिओ ।
 देमिओ पद्धमालेण, पासेण य मत्तामुणी ॥१२॥
 अयेउओ य जो धम्मो जा यमो मत्तगत्तरे ।
 एग'अवगाण, विमेये वि नु काग्गा ? ॥१३॥

अह ते तत्त्वमीसाण, त्रिनाथ पत्रितक्रिय ।
 समागमे कयमइ उमओ केसिगोयमा ॥१४॥
 गोयमे पडिरुयन्नु, सीससघसमाउले ।
 जेट्ट कुलमयेकसन्तो, तिहुय यणुमागओ ॥१५॥
 केसी कुमारसमणे गोयम दिस्समागय ।
 पडिरुय पडियत्ति, सम्म सपटियजइ ॥१६॥
 पलाल फासुय तत्त्व, पचम कुसतणायि य ।
 गोयमस्स मिसेज्जाए, सिण्ण सवणामए ॥१७॥
 केसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे ।
 उमओ निसरण सोहत्ति, चन्दसूरसमण्यमा ॥१८॥
 समागय। पहु तत्त्व पासण्डा कोउया मिया ।
 गिहत्थाए अणेगाओ, साट्सीओ समागया ॥१९॥
 देवदाणधमन्ध गा, जग्गवरकमसकिणरा ।
 अदिस्साण च भूयाण, आमी तत्त्व समागमो ॥२०॥
 पुच्छामि ते महाभाग । केसी गोयममयरी ।
 तमो केसि पुत्त तु गोयमो इणमध्वरी ॥२१॥
 पुच्छ भन्ते । अदिन्दु ते, केसि गोयममयरी ।
 तमो केसी भणुव्वाण, गोयम इणमध्वरी ॥२२॥
 चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पचसिक्खिओ ।
 केसिओ वडमाणेण, पासेण य महामुणी ॥२३॥
 एगकज्जपवगण त्रिसेसे किं नु कारण ।
 धम्मो दुनिट्ठे मेहारी कह निपच्चओ न ते ? ॥२४॥
 तमो केसि पुत्त तु गोयमो इणमयरी ।
 एवा समिकसण धम्म तत्त तत्तविशिच्छिय ॥२५॥

पुरिमा उज्जुजडा उ, वकजडा य पच्छिमा ।
 मज्झिमा उज्जुपघा उ, तेल धम्मो दुहा कप ॥२६॥
 पुरिमाणा दुविस्तु-मो उ, चरिमाणा दुग्गुग-मो ।
 कप्पो मज्झिमणा तु, सुविस्तुज्जो सुपाललो ॥२७॥
 साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे समओ इमो ।
 अन्ना नि ससओ मज्झ, न मे कहसु गोयमा । ॥२८॥
 अचेल्लो य जो धम्मो, जो इमो सन्तरुत्तरो ।
 एसिआ वद्धमाणम्, पासैण य महाजसा ॥२९॥
 एणकजप-पण, विसेसे नि नु कारण ।
 तिंणे दुविहे मेट्ठावी, कह विप्पणमो न ते ? ॥३०॥
 वेत्तिमेव पुपाण तु, गोयमो इणम-वयी ।
 विग्गालेण समागम्भ, धम्मसाहणमिच्छिय ॥३१॥
 पण्यट्ठ च योगम्म, पाणाविहविगप्पण ।
 जसत्त मण्णत्त च, लोणे लिंगवगोयता ॥३२॥
 अह भवे पइआ उ मोक्खस-भूयसाहणा ।
 नाणा च दसणा येव चरिण येव निच्छय ॥३३॥
 साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे सस-जो इमे ।
 अन्नो नि वसओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा । ॥३४॥
 अण्णेणाण सहम्मणा, मज्जे चिट्ठसि गोयमा ।
 त य ते अमिगच्छति, कह ते निज्जिया तुमे ? ॥३५॥
 एणे जिण जिया पच, पच जिण जिया दस ।
 वसहा उ निजित्ताण, सव्वसच्च जिणामह ॥३६॥
 सच्च य इह न बुत्ते ? त्तेसी गोयमम-वयी ।
 तथो वेसि बुवत तु, गोयमो इणम-वयी ॥३७॥
 एण्णा अजिण सच्च वसाया इन्दियाणि य
 पुनाय, विहगमि अह मुणी ॥

साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अनो वि ससओ मज्झ, त मे वहसु गोयमा ॥३६॥
 दीमत्ति यहवे लोप, पासयद्धा सरीरिणो ।
 मुक्कवासो लहभूओ, वह त विहरसि मुणी ? ॥३७॥
 ते पासे मन्त्रसो चित्ता, विहन्तूण उवायओ ।
 मुक्कवासो लहभूओ, विहरमि णह मुणी ॥३८॥
 पासा य इह कं पुत्ता ? केसी गोयममन्वयी ।
 वेसिमेव पुत्त तु गोयमो इलमन्वयी ॥३९॥
 रागहोसादो तिग्ग, नेहपासा मयक्का ।
 ने छिन्दित्त जहानाय, विहरमि जहक्कम ॥४०॥
 साहु गोयम ! पन्ना त, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अनो वि ससओ मज्झ, त मे वहसु गोयमा ॥४१॥
 अतोहियसभूया, लया चिट्ठह गोयमा ।
 फलेइ निमभक्काणि, ता उ उद्धरिया कह ? ॥४२॥
 त लय सन्त्रसो छित्ता, उद्धरित्त सम्मत्ति य ।
 विहरमि जहानाय मुक्को मि विसभक्कण ॥४३॥
 लया य इह का पुत्ता ? केसी गोयममन्वयी ।
 वेसिमेव पुत्त तु, गोयमो इलमन्वयी ॥४४॥
 भयतएहा लया पुत्ता, भीमा भीमफलेदया ।
 तमुद्धिया जहानाय, विहरमि जहामुद्ध ॥४५॥
 साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अनो वि ससओ मज्झ, त मे वहसु गोयमा ॥४६॥
 सपज्जणिया घोरा, अर्मा चिट्ठह गोयमा ।
 ज उद्धत्ति सरीरया, वह विज्झायिया तुम ? ॥४७॥

महामेहपसूयाश्रो, गिज्ज वारि जयुत्तम ।
 सिचामि सयय तेउ, सिच्चा नो व एहन्ति मे ॥५१॥
 अग्गी य इह के पुत्ता ? वेसी गोयममयवी ।
 वेन्मिमेव युवत्त तु गोयमो इणमयवी ॥५२॥
 कलाया अगिणो पुत्ता, सुयसीलतया जलं ।
 सुवधाराभिदया सत्ता, मिच्चा न इहन्ति मे ॥५३॥
 साहु गोयम पन्ना ते ? द्विन्तो मे ससओ इमो ।
 अन्तो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥५४॥
 अय साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई ।
 जल्लि गोयम । आरुद्धो, कह तेण न हीरसि ? ॥५५॥
 पधावन्त निगिण्हामि, सुयरस्सीसमादिय ।
 न मे गच्छइ उम्मग्ग मग्ग च पडिवज्जइ ॥ ५६॥
 आसे य इह के पुत्त ? वेसी गोयममयवी ।
 कसिमन्त युवत्त तु, गोयमो इणमयवी ॥५७॥
 मणा साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावई ।
 त सम्म तु निगिण्हामि, धम्ममिक्खताइ कय्यम ॥५८॥
 साहु गोयम । पन्ना ते, द्विन्तो मे ससओ इमो ।
 अन्तो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥५९॥
 कुप्पहा यहो लोण, जेहिं नासन्ति जतुणो ।
 अद्धाणे कह वट्ठन्ते, त न नाससि गोयमा ? ॥६०॥
 जे य मग्गेण गच्छत्ति, जे य उम्मग्गवट्ठिया ।
 त मग्गे वेइया मज्झ, तो न नस्तामह मुणी ॥६१॥
 मग्गे य इह के पुत्ते ? वेसी गोयममयवी ।

पुष्पयवणपासरडी, सन्धे उम्भगापट्टिया ।
 मम्मगा ॥ जिणक्खाय, एस मम्मो हि उत्तमे ॥६३॥
 साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अन्नो पि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥६४॥
 महाउदगवेगेण, पुज्झमाणेण पाणिना ।
 सरण गई पइट्ठा य, दीघ व मअसि मुणी ? ॥६५॥
 अत्थि एगो महादीघो, धारिमज्जे मट्ठालओ ।
 महाउदगवेगस्व गई तत्थ न विज्झइ ॥६६॥
 दीरे य इइ वे बुत्ते ? केसी गोयमव्ययी ।
 केसिमेघ बुयत तु, गोयमो इणमव्ययी ॥६७॥
 जगमरणवेगेण, पुज्झमाणेण पाणिना ।
 धम्मो दीरो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तम ॥६८॥
 साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अन्नो पि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥६९॥
 अणणघत्ति महोदत्ति, नागो त्रिपरिधायइ ।
 जत्ति गोयम । आरुद्धो, कह पाए गमिस्सति ? ॥७०॥
 जा उ अस्सायिणी नाया, न सा पारस्स गामिणी ।
 जा निरस्सायिणी नाया, सा उ पारस्स गामिणी ॥७१॥
 नाया य इइ का बुत्ता ? केसी गोयमव्ययी ।
 केसिमेघ बुयत तु, गोयमो इणमव्ययी ॥७२॥
 सरीरमाहु नाय त्ति, जीवो बुच्चइ नाविओ ।
 ससारो अणणवो बुत्तो, ज तरत्ति महेस्सिणो ॥७३॥
 साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अन्नो पि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ? ॥७४॥
 अधयारे तमे धारे, चिट्ठित पाणिणो वट्ठ ।
 को करिस्सइ उज्जोय ? सट्ठसोयम्मि पाणिना ॥७५॥

उगगओ विमलो भाणू, स उलोयपभक्ते ।
 सो करिस्मइ उज्जोय, स उलोयम्मि पाणिण ॥७६॥
 भाणू य इइ वे बुत्ते ? वेसी गोयममग्गयी ।
 वेसिमेउ बुत्त तु, गोयमो इणमग्गयी ॥७७॥
 उगगओ खीणससारो, स उनु जिणभक्करो ।
 सो करिस्सइ उज्जोय, स उलोयम्मि पाणिण ॥७८॥
 साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 अओ वि ससओ मज्ज, त मे कहसु गोयमा । ॥७९॥
 सारीरमाणे दुक्खे य ममाणे पाणिण ।
 खेम सिउमणाथाह, ठाण वि मन्नसे मुणी ? ॥८०॥
 अत्थि एग धुय ठाण, लोगगम्मि दुराट्ठ ।
 जत्थ नत्थि जरा मच्छू, पाणिणो वेयणा तट्ठ ॥८१॥
 ठाणे य इइ वे बुत्ते ? वेसी गोयममग्गयी ।
 वेसिमेउ बुत्त तु, गोयमो इणमग्गयी ॥८२॥
 निआण ति अथाह ति, सिद्धी लोगगमव य ।
 खेम सिउ अणाथाह, ज खरति महेनिणो । ८३॥
 त ठाण सासय घाम, लोयगम्मि दुराट्ठ ।
 ज सग्गत्ता न सोयति, भग्गोहन्तकरा मुणी ॥८४॥
 साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो ।
 नमो ते ससयातीत । स उमुत्तमहोयदी ॥८५॥
 एउ तु ससए छिन्ने । वेसी घोरपरक्कमे ।
 अभियदित्ता सिरसा, गोयम तु महायस ॥८६॥
 पचमहवयधम्म, पडिउत्तइ भाउओ
 पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तथ सुहावहे ॥८७॥
 वेसीगोयमओ निश, तम्मि आसि समागमे ।
 सुयसीलममुक्कस्सिओ, महत्थ उविणिट्ठओ ॥८८॥

तोमिया परिसा मद्या, सम्मग्ग समुवट्ठिण ।
सयुया ते पसीयतु, भयघ केसिगोयमे ॥२९॥

॥ केमिगोयमिज्ज समच ॥ २३ ॥

॥ अह समिईओ खाम चउगीसटम अउभयण ॥

अट्ट पयणमायाओ समिई गुत्ती तहेव य ।
पंचेय य समिईओ, तओ गुत्ती उ अट्ठिया ॥१॥
इरियाभासेसणादाले, उचारे समिई इय ।
मणगुत्ती पयगुत्ती, वायगुत्ती य अट्टमा ॥२॥
पयाओ अट्ट समिईओ, समानेण विचारिया ।
हुगलसग जित्तकत्ताय, माय जत्थ उ वउयण ॥३॥
आलम्भणेण वानेण, मग्गेण जयणाइ य ।
घउकारणपरिसुज्ज, मज्जए इरिय रिण ॥४॥
तत्थ आलम्भग नाग, दसण चरण तहा ।
पाले य त्थिसे घुत्ते, मग्गे उण्हउत्तिण ॥५॥
दण्णओ खेत्तओ चेय, वान्तओ भावओ तहा ।
जयण चउत्तिहा उत्ता, त मे वित्तयओ सुण ॥६॥
दण्णओ वणखुमा पट्टे, जुगमिसा अ खेराओ ।
कालओ जाय तीइत्ता, उउउत्ते य मायओ ॥७॥
इ दिवत्ते विवज्जित्ता, सज्झाय चेय पञ्चहा ।
तग्गुत्ती तप्पुरकारे, उउउत्ते रिण रिण ॥८॥
लोहे माणे य मायाए लोमे य उयउत्तया ।
हासे भए मोहरिण, विक्कहासु तहेव य ॥९॥
पयाइ अट्ट ठाणाइ, परियज्जिनु मज्जए ।
असाउज्ज मिय काले, भाग्य मातिज्ज वणय ॥१०॥

गवेसणाए गहणे य, परिमोगेसणा य जा ।
 आहारोवहेसेजाए, एए तिति विमोहए ॥११॥
 उगमुपगयणा पदमे, वीए सोहेज एमगा ।
 परिमोयम्मि चउका, विमोहेज जयें जई ॥१२॥
 ओहोवहोउगहिय, मगहग दुगिह मुणी ।
 गिएहन्तो निफिजउत्तो या, पउजेज इम विहिं ॥१३॥
 चफनुसा पडिलेहिता, पमउजेज जय जई ।
 आयए निफिजउत्ता या, दुहयो रि समिए सया ॥१४॥
 उधार पासवणा, गेल सिंघाणनहिय ।
 आहार उघाई देह, अन्न घायि तहाविह ॥१५॥
 अणाघायमसलोए, अणाचाए चेय होइ सलोए ।
 आघायमसलोए, आघाए चेय सलोए ॥१६॥
 अणाघायमसलोए, परम्साणुवघाए ।
 समे अजुसिरे घायि, अचिरकालम्यम्मि य ॥१७॥
 विरियण्णे दूरमोगाढ, नासन्ने विलउज्जिए ।
 तसपाणवीयरहिए, उघागईणि वोसिरे ॥१८॥
 एगयो पच समिईओ, समासेण वियाहिया ।
 इत्तो य तओ गुत्तीओ, वोन्हामि अणुपुण्डवसो ॥१९॥
 सन्ना तहेव मोसा य सन्नामोसा तहेव य ।
 चउत्थी अमचमोसा य, मणगुत्ती चउव्विहा ॥२०॥
 मरम्भसमारम्मे आरम्मे य तहेव य ।
 मण पवत्तमाण तु, नियत्तिज जय जई ॥२१॥
 सन्ना तहेव मोसा य, सन्नामोसा तहेव य ।
 चउत्थी अमचमोसा य, वइगुत्ती चउव्विहा ॥२२॥
 सरम्भसमारम्मे, आरम्मे य तहेव य ।
 यय पवत्तमाणं तु, नियत्तिज जय जई ॥२३॥

ठाणे निसीयणे चेउ, तद्देव य तुयट्टणे ।
 उल्लघणपल्लघणे, इन्द्रियाण य जुजणे ॥२४॥
 सरम्मसमारम्मे, अरम्मम्मि तद्देव य ।
 काय पयत्तमाण तु, नियत्तिज्ज जयजई ॥२५॥
 एवाधो पञ्च समिद्विओ, धरणस्स य पयसणे ।
 सुत्ती नियत्तणे सुत्ता, असुभत्थेसु सद्यसो ॥२६॥
 एसा पययणमाया, जे सम्म आयरे मुणी ।
 सो खिण्य सत्तमसारा, विण्यमुच्च पण्डिय ॥२७॥ ति वमि

॥ समिद्विओ ममत्ताओ ॥

॥ अह जगद्वज्र पचयीसइम अउभयण ॥

माहणकुलमभूओ, आवि वि पो महायसो ।
 जायाई जमजन्नम्मि, जयघोसि सि नामगो ॥२८॥
 इन्द्रियगामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी ।
 गामाणुगाम रीयस्से, पत्तो वाणारसि पुरिं ॥२९॥
 वाणारसीए वदिया, उज्जाणम्मि मणोरमे ।
 फासुए सेज्जसथाने, तत्थ वानमुयागए ॥३०॥
 अह तेणेउ कालेण, पुरीए तत्थ माहणे ।
 विजयघोसि सि नामेण, जय जयइ वैयवी ॥३१॥
 अह से तत्थ अणुगारे, मासफल्लमणवारणे ।
 विजयघोसस्स जयम्मि, मिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥३२॥
 समुवट्ठिय तहिं सन्त, जायगो पडिसेहए ।
 न हु दाहामि ते मिक्ख, मिक्खू जयाहि अणओ ॥३३॥
 जे य वेयविउ पिणा जणट्ठा य जे दिया ।
 जाहमगणिक जय, जे य धम्माण गारणा ॥३४॥

जे समथा समुद्धत्तु, परमण्याणमेव य ।
 तेसि अग्रमिण देय, मो मिम्बू । सत्रकामिय ॥८॥
 सो तथ पत्र पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी ।
 न रिग्दो न वि नुद्धो, उत्तमदृगवेसओ ॥९॥
 नग्रदु पाणहेउ था, नवि निग्राहणाय वा ।
 तेसि रिमोक्खणद्वाप, इम पयणम रवी ॥१०॥
 नवि पाणति वेयमुह, नवि जघाण ज मुह ।
 नक्खत्ताण मुह ज च, ज च घम्माण वा मुह ॥११॥
 जे समथा समुद्धत्तु, परमण्याणमेव य ।
 न ते बुम विपाणाति, अह जाणासि तो मण ॥१२॥
 तस्सफलेउपमुक्ख तु अचयतो तहिं निम्भो ।
 सपरिमो पज्जली होउ, पुग्गइ त महामुणि ॥१३॥
 वेयागा च मुह वूहि, वूहि जघाण ज मुह ।
 नक्खत्ताण मुह वूहि, वूहि वग्माण वा मुह ॥१४॥
 जे समथा समुद्धत्तु, परमण्याणमेव य ।
 एय मे ससय सत्र, साह । कहसु पुच्छिओ ॥१५॥
 अग्गिहुत्तमुहा वेया, जघ्गट्टी वेयसा मुह ।
 नक्खत्ताण मुह चदो, धम्माण कासयो मुह ॥१६॥
 जहा अन्द गहाईया, चिट्ठति पज्जलीउडा ।
 चदमाणा नमसन्ता उत्तम मग्गहारिणो ॥१७॥
 अजाणगा जघ्गमाई, विज्जामाहणसपया ।
 गूढा सज्जयतत्रसा, भासच्छन्ना इवग्गिणो ॥१८॥
 जो लोप वग्मणो बुत्तो अग्गी वा महिओ जहा ।
 सया कुसलसट्ठि, त वय वूम माहण ॥१९॥
 जो न सज्जइ आगत्तु, पव्वयतो न सोयइ ।
 रमइ अज्जवयणम्मि, न वय वूम माहण ॥२॥

जायरुधं जहामह, निद्धं तमलपावग ।
 रागदोसमयाईय, त वय वूम माहण ॥२१॥
 तयस्सिय किस दन्त अधच्चियमससोणिय ।
 मुचय पत्तनिच्चाण, त वय वूम माहण ॥२२॥
 तसपाणे वियाणेत्ता, संगहेण य दावरे ।
 जो न हिंसइ तिबिहेण, त वय वूम माहण ॥२३॥
 कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया ।
 मुस न पयइ जो उ, त वय वूम माहण ॥२४॥
 चित्तमन्तमचिदा वा, अप्प वा जइ वा बहु ।
 न गिरहइ भन्ता जो, त वय वूम माहण ॥२५॥
 दिव्यमाणुस्सत्तेरिच्छजो न सेवइ मेणुण ।
 मणसा कायधेण, त वय वूम माहण ॥२६॥
 जहा पोम जले जाय, नोयलिणइ पारिण ।
 एव अलित्तो कामेति, त वय वूम माहण ॥२७॥
 अलोलुप मुदाजीयि, अणगार अकिंचया ।
 अससत्ता गिहत्वेसु, त वय वूम माहण ॥२८॥
 जहिता पुम्भसजोग, नाइसने य वधये ।
 जो न सज्जइ 'एण्णु, त वय वूम माहण ॥२९॥
 पल्लवधा सत्तवेणा य, जट्टं च पावक्कमुण ।
 न त तापति दुस्मील, यम्माणि वल्लयन्ति 'हि ॥३०॥
 न वि मुण्डिपणु समणो, न ओवारेण यम्मणो ।
 न मुणी रणवासेण, पुत्तचीरेण न तावसो ॥३१॥
 समयाए समणो होइ यम्भचेरेण यम्मणो ।
 नाणेण उ मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥३२॥

कम्मुणा वम्मयो होइ, कम्मुणा होइ सत्तिओ ।
 यहस्सो कम्मुणा होइ, सुद्धो हउइ कम्मुणा ॥३३॥
 एए पाउकरे जुद्धे, जेहि होइ सिणायओ ।
 सउकम्मविणिम्मुक त वय वूम माहणा ॥३४॥
 एय गुणसमाउसा, जे भउन्ति दिउत्तमा ।
 ते समत्ता उ उद्धत्तु, परमप्पाणमेउ य ॥३५॥
 एय तु मन्नेए टिप्प, विजयघोमे य माहणे ।
 समुदाय नओ त तु जयघोप महामुणि ॥३६॥
 तुट्टे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयपली ।
 माहणत्ता जहाभूय, सुट्टु मे उउदसिय ॥३७॥
 तुमे जइया जनाए तुमे वैययिऊ रिऊ ।
 जोइसगयिऊ तुमे, तुमे धम्माए पारणा ॥३८॥
 तुमे समत्था उद्धत्तु, परमप्पाणमेउ य ।
 तमणुगाइ करेहुऽम्ह मिग्गेण भिक्खुउत्तमा ॥३९॥
 न कउज मअक मिक्खेण, मिग्ग निस्सवममु दिया ।
 मा भमिहिसि मयाउट्टे, घोरे मसारसागर ॥४०॥
 उवलेओ होइ भोगेसु, अमोगी गोवलिप्पइ ।
 भोगी भमइ ससार, अभागी त्रिप्पमुणइ ॥४१॥
 उहो सुको य दो दूढा, गोलया मट्टियामया ।
 दो पि आवडिया कुट्टे, जो उहो सोऽत्थ लग्गइ ॥४२॥
 एय लग्गति दुम्मेहा, जे नरा कामलावसा ।
 निरत्ता उ न लग्गन्ति, जहा से मुग्गोलण ॥४३॥
 एय से विजयघोसे, जयघोसस्स यन्तिए ।
 अणगारस्स निक्खतो, धम्म सोच्चा अणुत्तर ॥४४॥
 खरित्ता पुउक्कमा, रुजमेण तवेण य ।
 जयघोसविजयघोसा, सिद्धि पत्ता अणुत्तर ॥४५॥ त्ति वेमि

॥ अहं सामायारी ताम्रं ज्ञानीसहम अजम्भय ॥

सामायारि पवक्खामि, स उदुक्खविमोक्खणि ।
 ज चरित्तण निग्गन्था, तिग्गं मा मसारसाम ॥१॥
 पढमा आवस्मिया ताम्रं त्रिहया य निमीहिया ।
 आपुच्छणा य तहया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥२॥
 पचमी छन्दणा ताम्रं, इच्छाकारो य उदुत्थो ।
 सत्तमो मिच्छाकारो य, तहकारो य अट्टमा ॥३॥
 अम्भुट्टा मा च नयम, दसमा उवसपदा ।
 एसा दसमा मात्तमा सामायारी पवेदया ॥४॥
 गमणे आवस्मिय कुञ्जा, ठाणे कुञ्जा निसीदिय ।
 आपुच्छणा सयवरणे, परवरणे पडिपुच्छणा ॥५॥
 उदणा द उजापणा इच्छाकारा य साम्भे ।
 मिच्छाकारो य निदाप, तहकारो पडिस्सुए ॥६॥
 अम्भुट्टाणा गुरुपूया, अच्छले उवसपदा ।
 एय दुपयसज्जा, सामायारी पवेदया ॥७॥
 पुग्गिहम्मि चउत्थमए आदशम्मि समुट्ठिय ।
 भएदय पडिलेहिता, यदिता य तमो गुर ॥८॥
 पुच्छिदुञ्जा पजलीउट्ठो, विं कायवय मए इह ।
 इच्छ निभोइउ मत्त । वेयावथे य सज्जाय ॥९॥
 वेयावथे निउत्तेणा, काय उ अगिलायथो ।
 सज्जाय या निउत्तण, स उदुक्खविमोक्खणे ॥१०॥
 दिवसस्स चउत्तो भाणे, कुञ्जा मिक्खू विक्खण्णो ।
 तथो उत्तरगुणे कुञ्जा, दिणभाणेसु चउत्तु वि ॥११॥
 पढम पोत्तिं सज्जाय, धीय द्वाण मियायई ।
 तहयाप मिक्खायरिय, पुणो चउत्थीइ सज्जाय ॥१२॥

आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउणया ।
 चित्तासोपसु मामेसु, तिणया हवइ पोरिसी ॥१३॥
 अगुल सत्तरत्तगा, पक्खेण च दुअगुल ।
 यहए हायण वादि मामेण चउरगुल ॥१४॥
 आसाढवहुलपक्खे, भइउए कत्तिण य पासे य ।
 फग्गुणयइसाहेसु य, 'जोड' जा ओमरत्तागो ॥१५॥
 जेट्टामूले आसाढसाउणे छहिं अगुलेहिं पडिलेहा ।
 अट्ठहिं विइयतियमि, तइए इस अट्ठहिं चउत्ये ॥१६॥
 रत्ति पि चउगे भाणे, मिग्गु बुज्जा वियक्खणो ।
 सओ वत्तरगुणे कुज्जा, राइभाएसु चउसु वि ॥१७॥
 पढम पारिसि सभाय, यीय भाण मियायइ ।
 तइयाए निइमोक्ख तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्झाय ॥१८॥
 ज नेइ जया रत्ति, नक्खस तम्मि नहचउभाण ।
 सपत्ते जिरमेज्जा, सज्झाय पओसकालम्मि ॥१९॥
 तम्मेय य नक्खत्ते, गयणचउम्भागसावसेसम्मि ।
 वेरत्तियपि काल, पडिलेहिस्ता मुणी बुज्जा ॥२०॥
 पुग्गिहुम्मि चउभाण, पडिलेहिस्ताण भएडय ।
 गुर वन्दिस्तु सज्झाय बुज्जा दुक्खविमोक्खणि ॥२१॥
 पोरिसीए चउभाण, वन्दिस्ताण तथो गुर ।
 अपडिक्कामत्ता कालस्म, भायण पडिलेहए ॥२२॥
 मुहपोत्ति पडिलेहिस्ता, पडिलेहिज गोच्छम ।
 गोन्टगलदयशुलिओ, वत्थाइ पडिलेहए ॥२३॥
 उट्ठ यिअ अतुगिय, पुत्र ता उत्थमेव पडिलेहे ।
 तो विइय पण्णोडे, तइय च पुणो पमज्जिज्जा ॥२४॥

अणुशक्तिर्य भवत्येव, अणुशक्तिर्यमोसलि चैव ।
 छप्पुमिमा नच म्मोडा, पार्ष्णिवाणिविमोहण ॥२७॥
 आरभडा मम्महा, वज्जेयत्ता य मोसली तइया ।
 पप्फोडणा नउत्ती, विक्खित्ता वेदया छट्ठी ॥२८॥
 पत्तिदिलपलम्बलोला, एणा मोसा अण्णेरुवधुणा ।
 पुण्ह पमाणिवमाय, सन्नियमण्णोयग कुञ्जा ॥२९॥
 अण्णारदित्तपडिलेहा, अविचक्षासा तहेउ य ।
 पढम पय पसरठ, नेत्ताणि य अप्पसत्थाइ ॥३०॥
 पडिलेहण कुखन्ता, मिहो कट कुण्ह अण्णयकह वा ।
 वेद य पयक्खणा, वाएह मय पडिन्ठह वा ॥३१॥
 पुढवी आउक्काए, तेऊ थाऊ यणुस्सह तसाणा ।
 पडिलेहणापमत्तो, छण्ह पि दिगह्णो होइ ॥३२॥
 पुढवी आउक्काए, तेऊ थाऊ यणुस्सह तसाणा ।
 पडिलेहणाआउत्तो, छण्ह सरक्खण्णो होइ ॥३३॥
 तइपाण पोरिसीए, भत्ता पाणा गवेसए ।
 छण्ह अन्नयरागम्मि, कारणम्मि समुट्ठिए ॥३४॥
 घेपणवेयायस, हरियट्ठाए थ सजमट्ठाए ।
 तइ पाणउत्तिवाए, छट्ठ पुण धम्मचिन्नाए ॥३५॥
 निगन्धो धिइमत्तो, निगन्धी त्रि न करेज्ज छट्ठि वेप ।
 ठाणेहिं उ इमेहिं, अण्हवमखाइ से होइ ॥३६॥
 आयणे उउमग्गे तित्तिक्खया धम्मचैरमुत्तीसु ।
 पाणिदया तथहेउ, मरीरयोच्छेयणट्ठाए ॥३७॥
 चाल्लेस भउग निज्ज, चक्खुमा पडिलेहए ।
 परमउज्जायणाओ विहाण विक्खण मुण्णी ॥३८॥
 चउत्थीए पोरिसीए, निक्खित्तिवित्ताण मायणा ।
 सउक्काय तज्जो कुञ्जा, सउमायविमारण ॥३९॥

पोरिसीय चउम्भाय, यदित्ताण तओ गुरु ।
 पडिक्कमित्ता कालस्स, सेज्ज तु पडिलेहण ॥३८॥
 पासवणुआरभूमिं च, पडिलेहिज्ज जय जइ ।
 काउस्सग तओ कुज्जा, सउदुक्खविमोक्खण ॥३९॥
 नेघसिय च अइयार, चित्तज्जा अणुपुत्तओ ।
 नाणे य दसणे येय, चरित्तमि नहेय य ॥४०॥
 पारियकाउस्सग्गो, यदित्ताण तओ गुरु ।
 देवसिय तु अइयार आलोपज्ज जहक्कम्म ॥४१॥
 पडिक्कमित्तु निम्सल्लो यदित्ताण तओ गुरु ।
 काउस्सग तओ कुज्जा, सउदुक्खविमोक्खण ॥४२॥
 पारियकाउस्सग्गो, चन्दिताण तओ गुरु ।
 पुइमगठ च काऊण, जाल सपडिलेहण ॥४३॥
 पढम पोरिसिं सन्नाय, रितिय क्षाण मियावइ ।
 तइयाण निइमोक्ख तु सज्जाय तु चउत्थिण ॥४४॥
 पोरिसीय चउत्थीय, काल तु पडिलेहिया ।
 सज्जाय तु तओ कुज्जा, अयाहत्तो अम्भज्ज ॥४५॥
 पारिसीय चउम्भाय, वन्दिऊण तओ गुरु ।
 पडिक्कमित्तु कालम्म, काल तु पडिलेहण ॥४६॥
 आणण काणुसग्गो, सउदुक्खविमोक्खण ।
 काउस्सग्ग तओ कुज्जा सउदुक्खविमोक्खण ॥४७॥
 राइय च अदवार चिन्तिज्ज अणुपुत्तओ ।
 नाणमि दमणमि य, चरित्तमि तवमि य ॥४८॥
 पारियकाउस्सग्गो, यदित्ताण तओ गुरु ।
 राइय तु अइयार, आलोपज्ज जहक्कम्म । ४९॥

पडिक्कमिन्न निस्समहो, यदित्ताण तओ गुम् ।
 काउस्सग्ग तओ कज्जा सव्वदुक्खविमुक्खा ॥२७॥
 किं तय पडिवज्जामि, एव तत्थ विचित्तए ।
 काउस्सग्ग तु पारिस्ता, 'ध'दए य तओ गुम् ॥२८॥
 पारियकाउस्सग्गो, यदित्ताण तओ गुम् ।
 तय ॥ पडिक्कज्जेज्जा, कुज्जा सिद्धाण मथय ॥२९॥
 एसा सामायारी, समानेण दियाहिया ।
 ज चरिस्ता यह जीया, तिरुसा ससारमागर ॥३०॥

॥ सामायारी समत्ता ॥२६॥

॥ अह खलुकिज्ज सत्तवीमइम अज्जकपण ॥

धेरे गण्हरे गग्गे, मुणी आसि तिसारए ।
 भाइएणे गणिभाउग्गि समहि पडिसधए ॥१॥
 यहणे यहमाणस्स, कतार अइउत्तए ।
 जोगे यहमाणस्स, ससारो अइवशए ॥२॥
 खलुके जो उ ओण्ह, त्रिहम्माणो किलिस्सइ ।
 असमाहि य वेएइ, तोसओ से य भज्जइ ॥३॥
 एग इस्सइ पुच्छम्मि, एग त्रिधइ ऽमिकखण ।
 एगो भज्जइ समिल एगो उण्हपडिओ ॥४॥
 एगो पट्टइ पासेण निवेमइ निउज्जइ ।
 उक्कडुइइ टिक्कइ, सट्टे बालगयी उण ॥५॥
 भाई मुज्जण पट्टइ, कुज्जे गम्भइ पडिण्हइ ।
 मयलक्केण निउइ एगेण य गहावइ ॥६॥
 दिग्गाल तिइइ विहिं, इइतो भज्जए जुग ।
 मेणि य सुम्भुपाइस्ता उज्जहिस्ता पलायए ॥७॥

१. इतिमा त्रिषमय्य ।

खलुषा जारिसा जोज्जा, दुस्मीसा वि हु तारिसा ।
जोइया धम्मजाणम्मि भज्जति धिइदुव्वला ॥२०॥
इह्नीगारणिण एगे, एगेऽत्थ रसगारये ।
सायागारविण एगे, एगे सुचिरकोदणे ॥२१॥
मिक्खालसिण एगे, एगे ओमाण्णीरुण थडे
एग आणुसासम्मि, हेऊहि वारणेहि य ॥२०॥
सो वि अत्तरभासिल्लो दोसमेव पकुव्वइ ।
आयरियाण तु ययगा पडिक्खेइऽमिक्खण ॥२१॥
न मा मन गियाणाइ, न य सा मज्जक दाहिइ ।
निगया होहिइ मज्ज, साइ अणो य यच्चउ ॥२२॥
पसिया पलिउच्चत्ति, ते परियत्ति समस्तयो ।
रायविट्ठि च मज्जन्ता, करत्ति भिउडिं मुहे ॥२३॥
याइया सगहिया च्चेव, भत्तपाण्णेहि पोसिया ।
जायपक्खा जया हसा, पक्कमत्ति निसो दिसि ॥२४॥
अह सारदी त्रिचिंतेइ, खलुमेहिं समागओ ।
किं मज्जक दुट्ठसीसेहिं, अणो मे अवसीयइ ॥२५॥
जारिसा मम सीसाणो, तारिसा गलिगइहा ।
गलिगइहे जत्तिताणा, दद पणिगइ तव ॥२६॥
मिउमइयत्तपणो गम्भीरो सुग्गमाट्ठिओ ।
निहरइ मदिं महणा, सीतभूण्ण अण्णणा ॥२७॥

॥ खलुक्खिज्ज ममत्त ॥२८॥

॥ अह मोस्सवमग्गगंणाम अट्ठावीमइम अज्जमयण ॥

मोक्खमग्गगइ तच्च, मुखेइ जिणभासिय ।

- नागा च दसरा चेव, चरित्त च तवो तदा ।
 एस मग्गुत्ति पन्नत्तो, जिणेहि वरदसिहिं ॥२॥
 नागा च दसरा चेव, चरित्त च तवो तदा ।
 एस मग्गमल्लुप्पत्ता, जीगा गन्दुन्ति सोग्गह ॥३॥
 तत्थ पच्चविह नागा सुय आभिनिषोहिय ।
 ओहिनागा तु तद्वय, मल्लनागा च रेवण ॥४॥
 एस पच्चविह नागा, दम्भाण य गुणाण य ।
 पञ्चवाण य मव्वेसिं, नागा नार्णीहि दसिय ॥५॥
 गुणाणमासओ दव्व एगदव्वमिसया गुणा ।
 लक्खण पञ्जगाण तु उभओ वस्सिमा भवे ॥६॥
 धम्मो अहम्मो आगास, काला पुग्गलज्ज तवो ।
 एस लोमो नि पन्नत्तो, जिणेहिं वरदसिहिं ॥७॥
 धम्मो अहम्मो आगास, दव्व इक्खिमाहिय ।
 ञ्ण ताणि य दम्भाणि, कालो पुग्गलज्ज तवो ॥८॥
 गइलक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो ।
 भायरा सव्वदम्भाण, नह ओगाहलक्खण ॥९॥
 पत्तणालक्खणो कालो, जीगो उवभोगलक्खणो ।
 नाणेगा दसणेण च, सुहेण य दुहेण य ॥१०॥
 नागा च दसरा चेव, चरित्त च तवो तदा ।
 पीरिय अत्रओगा य, एस जीघस्स लक्खण ॥११॥
 सइधवार-उज्जोओ, पहा छायातवे इ वा ।
 यण्णसगधफासा, पुग्गलाण तु लक्खण ॥१२॥
 एगत्त च पुहत्त च, मया सटाणमेव य ।
 मनोमा य विभागा य पञ्चवाण लक्खण ॥१३॥
 जीवाजीवा य उच्चो य, पुग्गा पावासो तदा ।
 सयस्से जिज्जग मोक्खो, सन्तेव उहिया नव ॥१४॥

परमत्पक्षधरो वा, सुनिद्रागमत्यसेवणा वा वि ।
 वाचप्रबुद्धमणवज्जला, य सम्मत्तसद्वहणा ॥२८॥
 नत्थि चरित्त सम्मत्तविहरा, दसणे उ भवयय ।
 सम्मत्तचरित्ताइ, जुगउ पुट्ट य समत्त ॥२९॥

तादसणिस्स नाण,
 नाणेण मिणा न हन्ति चरणगुणा ।
 अणुणिस्स नत्थि मोक्खो,
 नत्थि समोक्खस्स निवाणा ॥३०॥

निस्सकिद-निक्खलिय निउत्तिमिच्छ अमू-विट्ठी य ।
 उच्चरूहधिरीकरणे, यच्छह-पमावणे अट्ट ॥३१॥
 सामादयत्य पदम, छेप्पोपट्टावणा भवे विइय ।
 परिहारयिसुखीय, सुट्टम तह सपराय च ॥३२॥
 अकसायमहक्काय, छउमत्वस्स जिणस्स था ।
 एय चयरित्तकर, चारित्त होइ आणिय ॥३३॥
 नथो य दुविहो युत्तो, वाहिरम्मन्तरो तहा ।
 गहिरो छियिहो युत्ता, एवम-भन्तरो तथो ॥३४॥
 नाणेण जाणइ भावे, दसणेण य सहहे ।
 चरित्तेण निगिरहाइ, तवेण पदिसुज्जइ ॥३५॥
 खविता पु-उक्कमाइ, सज्जेण तवेण य ।
 सत्तपुक्कसवहीण ह्वा, पक्कमन्ति महेत्थिणे ॥३६॥ त्ति वेमि
 ॥ मोक्खमग्गगर्ह ममत्त ॥३७॥

॥ अह सम्मत्तपरक्कम एगूणतीसउम अज्जकयण ॥

सुय मे आउस । तेण भगवया एवमक्काय-इह खलु
 सम्मत्तपरक्कमे नाम अज्जकयणे समणेण भगवया महावीरेण
 कामयेण पवेइए, अ सम्म मदहिता पत्तइता रोयइता

कासित्ता पावइत्ता तीरित्ता कित्तइत्ता मोहइत्ता आराहित्ता
आलाप अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्जति भुज्जति मुचन्ति
परिनिव्य यन्ति स अदुक्खयाणमत्त वरति । तस्स एव अयमद्वे
यपमाहिज्जइ, तज्जहा —

सत्रेगे१ नित्रेए २ धम्ममहा ३ शुरुसाहम्मियमुस्सुसणया ४
आलोयणया ५ निदणया ६ गरिहणया ७ सामाए ८ चउत्ती
सत्थे ९ घदणए १० पडिकमणे ११ काउस्सगे १२ पञ्च-
फलाणे १३ धउयुइमगले १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छिउत्ता
करणे १६ तमाधणया १७ सज्जाए १८ वायणया १९ पडि-
पुच्छणया २० पडियट्ठणया २१ अणुपहा २२ धम्मवहा २३
सुपस्स आगहणया २४ एगगमणसनित्रेसणया २५ सज्जे २६
तये २७ वाणणे २८ सुहसाए २९ अपडिउत्तया ३० त्रिवित्त-
सपणासणमेधणया ३१ त्रिणियट्ठणया ३२ सभोगपञ्चफलाणे ३३
उधहिपञ्चफलाणे ३४ आहारपञ्चफलाणे ३५ कसायपञ्चफलाणे ३६
जोगपञ्चफलाणे ३७ सरीरपञ्चफलाणे ३८ सहायपञ्चफलाणे ३९
मत्तपञ्चफलाणे ४० सभाउपञ्चफलाणे ४१ पडिरुपणया ४२
वेधावधे ४३ सअणुसपणणया ४४ वीयरानया ४५ खन्ती ४६
मुत्ती ४७ महवे ४८ अज्जे ४९ भाउसधे ५० करणसधे ५१
जोगसध ५२ मणुगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५
मणुसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधार-
णया ५८ नाणमपन्नया ५९ दसणुसपन्नया ६० अरित्तसपन्नया ६१
सोइद्वियनिग्गहे ६२ अरिखिन्धियनिग्गहे ६३ धाणिन्धिय-
निग्गहे ६४ जिमिन्धियनिग्गहे ६५ फासिन्धियनिग्गहे ६६ कोह
त्रिजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लाहविजए ७०
पज्जदोममिन्हादमणविजए ७१ जेलेमी ७२ अकम्मया ॥७३॥

सद्व जणयइ । अणुत्तराण धम्मसद्धाण सयेग हव्वमागच्छइ ।
अणुत्ताणुगन्धकोहमाणमापालोमे खयेइ । नउ च कम्म न
पधइ । तप्यच्छइय च एा मिद्वत्तत्रिसोहिं काज्जणदसणराइय
भवइ । दसणत्रिसोदीय य एा तिसुद्धाण अत्येगइय तणेय
भवगगहणेग 'सिज्जइ । सादीय य एा तिसुद्धाण तच्च पुणो
भवगगहण नाइऊमइ ॥१॥

नित्रेण भन्ते ! जीत्रे किं जणयइ ? नित्रेण त्रिव्यमाणस-
तेरिच्छपसु कामभोगेसु नित्रेय हव्वमागच्छइ, सव्वविस-
पसु विरज्जइ । सव्वविसपसु विरज्जमाणे 'आरम्मपरिचाय
करेइ । आरम्मपरिचाय करेमाणे सत्तात्मगा वोच्छिइइ,
सिद्धिमग्ग पडिघेने य भवइ ॥२॥

धम्मसद्धाण एा भन्ते ! जीत्रे किं जणयइ ? धम्मसद्धाण एा
सायासोक्केसु रज्जमाणे त्रिरज्जइ । आगारधम्म य एा चयइ ।
अणुगारिण एा जीत्र सागीरमाणसागा दुक्खाणां छेयणमेयण-
सजोगाईण थोन्देय करेइ अत्रायाइ य एा सुह निज्जसेइ ॥३॥

शुरुसाहम्मियसुस्समणयाण ण भन्ते ! जीत्रे किं जण-
यइ ? शुरुसाहम्मियसुस्समणयाण विणयपडियत्ति जणयइ ।
विणयपडिघेने य ण नीये जणसात्तायणमीदे नेरइयतिरि-
कएजोणियमणुस्सदेवदुग्गईओ निरुम्मइ । वणणमजलणमत्ति-
यदुमाणयाण मणुस्सदउगईओ निबन्धइ, सिद्धि सोग्गइ य
विसोहेइ । पसत्त्याइ च ण विणयमूलाइ मव्वफज्जाइ साहे
अअ य वहने जीवे विणिइत्ता भउइ ॥४॥

१ विमन्ति, दुक्कन्ति, मुच्चन्ति, परिनिव्वायन्ति, सम्मदुक्खा-
णमर्त केति । २ आरम्मपरिगहवति० ।

आलोपयाप एा भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? आलोपयाप
एा मायानियाणमिच्छादसणसह्याण मोक्खमग्गणिग्गण अण
तससारथधणाणा उद्धरण कयेइ । उज्जुभाय च जणयइ ।
उज्जुभावपडिवेणे य एा जीवे अमाई इत्थीयेयनपुमगवेय स
न थधइ । पुबयइ च न निज्जरेइ ॥५॥

निन्दयाप एा भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? निन्दयाप एा
पट्ठाणुताय जणयइ । पट्ठाणुतायेण विरज्जमाणे करणगुण-
सेहिं पडियज्जइ । करणगुणसेदीपडियेने य एा अणगारे मोह-
णिज्ज कम्म उग्घापइ ॥६॥

गरहयाप एा भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? गरहयाप अपुर-
कार जणयइ । अपुरकारणएा एा जीवे अणसत्थेहिंनो जोनेहिंनो
नियत्तेइ, पसत्थे य पडियज्जइ । पसत्थनोणपडियेने य एा
अणगारे अणत्तघाएपज्जये एवेइ ॥७॥

सामाएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? सामाएण माय-
जजागणिग्ग जणयइ ॥८॥

चउ सीमत्थण भन्ते ! जीवे किं जणयइ । चउसीमत्थ-
एा दसणविसोहिं जणयइ ॥९॥

धन्दयाप एा भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? धन्दयाप एा नीया-
गोय कम्म एवेइ । उच्चागोय कम्म निरुचइ । सोहग्ग च एा
अपडिहय आणापल निरुत्तेइ । दाहिणभाय च एा जण-
यइ ॥१०॥

पडिकमणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? पडिकमणेण

पयज्जिहाणि पिहेइ । पिण्यययच्छिदे पुण जीवे निरुद्धासवे
असयलचरित्ते अट्टसु पययणमायासु उरउत्ते अपुहत्ते
'सुण्णणिहिंदिए विहरइ ॥११॥

काउसग्गेण भन्ते । जीवे किं जणयइ ? काउसग्गेण
सीयवदुण्णम पायच्छित्त विसोहेइ । तिसुद्धपायच्छित्ते य आ
निग्घुयहियए ओहरियमग्घ मारयहे 'पसत्थज्जाणोयग
सुइ सुहेए विहरइ ॥१२॥

पञ्चकयाणेण भ त । जीवे किं जणयइ ? पञ्चकयाणेण
आसवदाराइ निरुम्मइ । पञ्चकयाणेण इच्छानिरोह जणयइ ।
इच्छानिरोह गए य गा जीवे सव्वद-रेसु विणीयतगहे सीरभूए
विहरइ ॥१३॥

थयधुइमगलेण भन्ते । जीवे किं जणयइ ? थ० नाणइसए
चरित्तरोहिलाभ जणयइ । नाणइसएचरित्तरोहिलाभसपन्नय
ण जीवे अतकिरिय कएविमाणोउयत्तिग आराहए आरा-
हेइ ॥१४॥

कालपडिहणवाए ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ? का०
णायारणिज्ज कम्म खवेइ ॥१५॥

पायच्छित्तकरणेण भन्ते । जीवे किं जणयइ ? पा० पाव-
यिसोहिं जणयइ, निरइयारे घावि भवइ । सम्म च ण पाय-
च्छित्त पडियज्जमाण मग्ग च मग्गफल च विसोहेइ, आचार
च आचारफल च आराहेइ ॥१६॥

समाजणवाए ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ? स० पएहा-
यणभाव जणयइ । पहायणभावमुयगए य सव्वपाणभूय-
१ सु णिहिं । २ चम्मज्जा ।

जीवन्तस्तु मितीभावाभ्युपगमः । मितीभावमुपगम्य य जीवे
भावाभिमोहि काकुल निभय भवेत् ॥१७॥

मज्जापण भव ! जीवे किं जणयइ ? स० शाखावरणिज्ज
कम्म एवेइ ॥१८॥

आयणपण भवन्त ! जीवे किं जणयइ ? स० निज्जर जण-
यइ । सुयस्स य अणुमज्जणाए अणासायणाए उट्ठए । सुयस्स
अणुसज्जणाए अणासायणाए उट्ठमाणे तित्थधम्म अणलम्यइ ।
तित्थधम्म अवहम्ममाणे महानिज्जरे महाअज्जवसाणे भवेइ १९

पडिपुच्छणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? प० सुत्त-
एतदुभयाइ विसोहेइ । कलामोहणिज्ज कम्म वोच्छिन्दइ ॥२०॥

परियट्ठणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? प० धज-
णाइ जणयइ, धजणलद्धि च उप्पाएइ ॥२१॥

अणुपहाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अ० आउय-
वग्जाओ सत्तकम्मपगडीओ धणियवधणयद्धाओ सिट्ठिल-
वधणयद्धाओ पकरेइ । दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ
पकरेइ । ति-राणुमावाओ म-दाणुमानाओ पकरेइ । (बहु-
पदसग्गाओ अव्यपपसग्गाओ पकरेइ) आउय च ण कम्म
सिया य धइ, सिया नो वन्धइ । असायावेयणिज्ज च एा कम्म
नो भुज्जा २ उवचिणइ । अणाइय च मा अगवदग्ग दीह-
मइ चाउरन्त ससारक्-तार पिण्णामेव राइवयइ ॥२२॥

धम्मकहाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? ध० कम्मनिज्जरं
जणयइ । धम्मकहाए ण पवयण पभावेइ । पवयणपभावेण
जीवे आगमेसस्स भइत्ताए कम्म निवन्धइ ॥२३॥

सुयस्स आराहणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? सु०

अध्याय खरेइ न य सकिलिस्सइ ॥२४॥

एगग्गमणसुनियेसणयाए ए भन्ते । जीये किं जणयइ ?
ए० चित्तनिरोध करेइ ॥२५॥

मज्झमण भन्ते । जीये किं जणयइ ? म० अणुहयत्ते
जणयइ ॥२६॥

तवेण भन्ते । जीये किं जणयइ ? तवेण बोदाण जण-
यइ ॥२७॥

बोदाणेण भन्ते । जीये किं जणयइ ? बो० अकिरिय पण-
यइ । अकिरियाए भवेत्ता तभो पण सिउम्ह, पुम्ह
मुण्ड, परिनिवायइ त उदुक्खाणमन्त करेइ ॥२८॥

सुहमाएण भन्ते । जीये किं जणयइ ? सु० अणुसुयत्त
जणयइ । अणुसुयाए ए जीये अणुक्कप्प अणुम्भडे विगय-
सोमे चरित्तमोहणिज्ज कम्म खरेइ ॥२९॥

अप्पडियद्धयाएण भन्ते । जीये किं जणयइ ? अ० निस्स-
गत्त जणयइ । निस्सगत्तेण जीये एगे एगग्गचित्ते दिया य
राओ य अमज्झमाणे अप्पडियद्धे याति विहरइ ॥३०॥

विचित्तसयणामणयाए ए भन्ते । जीये किं जणयइ ? वि०
चरित्तगुत्ति जणयइ । चरित्तगुत्ते य ए जीये विचित्ताहारे
द्वद्वचरित्ते पणन्तरप मोक्खमारपडिवसे अट्टविहकम्मगठिं
निज्जरेइ ॥३१॥

विनिपट्ठयाए ण भन्ते । जीये किं जणयइ ? वि० पाव-
कम्मणा अकरणयाए अभुत्तेइ । पुत्रवद्धाण य निज्जरणयाए

पात्र नियमः । तथा पच्छा चाउरत सगरकतार धीद-
यय ॥३२॥

समागपयकालेण भन्ते । जीवे किं जगय १ म० आल-
म्यपाद एवे । निरामम्यगम्य य आययद्विषा यागा भवन्ति ।
मप्य लामेर्ण सनुस्वद, परताम नो आसाद, परताम नो
तेज, ना पीहे, ना परथे, ना अमितस । परताम अण-
सापमाण अनक्रमणे अपीहमाण अपथेमाणे अकमितस-
माण दुष मुहसञ्ज उयसपञ्जित ग विहर ॥३३॥

उयद्विषयकालेण भन्ते । जीवे किं जगय १ उ० अपलि
मय जगय । निद्विषय ग जीव निद्वरी उयदिम-तरेण, य
न सकिलिस्म ॥३४॥

आगारययकालेण भन्ते । जीवे किं जगय १ आ०
जात्रियाससप्यमोग धोदिद्व-द्व । जोषियाससप्यमोग धोदिद्व
दिता जीवे आहारम-तरेण न सत्रिलिस्म ॥३५॥

कनायययकालेण भन्ते । जीवे किं जगय १ क० वीय-
रागमाय जगय । वीयरगमायपञ्जिते नि य ना जीवे मम-
मुददुफये मय ॥३६॥

जोगययकालेण भन्ते । जीवे किं जगय १ जो० अजो-
गय जगय । अजोगी ना जावे नय कम्भ न ॥ घ, पुष्ययय
निजरे ॥३७॥

सरीरययकालेण भन्ते । जीवे किं जगय १ स० सिजा-
इसयगुणकितहा नि-जरे । सिद्धाइसयगुणमपये य ना जीवे
लोगममुगण १ मय ॥३८॥

सहायपञ्चक्राणेषु मन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स० एगी-
भाय जणयइ । एगीभावभूय य ए जीवे एगत्त भावेमाणे अण-
सहे, अणभस्से, अणकलहे अणकम्माए, अणपुमपुमं, सज-
मण्डुले, सउरवण्डुले, समाहिण यावि भणइ ॥३९॥

भसपञ्चक्राणेषु मन्ते ! जीवे किं जणयइ ? म० अणेगाइ
भससयाइ निरुम्मइ ॥४०॥

सम्भायपञ्चक्राणेषु मन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स० अनि-
यहिं जणयइ । अनियट्टिपट्टिरत्ते य अणगारे चत्तारि देवली-
कम्मसे लवेइ सज्जा-वेयण्णिज्ज आउय नाम गोय । ततो पट्ठा
तिउम्हइ, उउम्हइ मुच्चइ जाय सव्वडुकखाणमन करेइ ॥४१॥

पट्टिरुययाण ए मन्ते ! जीवे किं जणयइ ? प० लाघविय
जणयइ । लघुभूय ए जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्पल्लिगे
त्रिउल्लसम्पत्ते सत्तममिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीयसत्तेसु
वीसमणिज्जरुवे अ पट्टिलेदे जिइन्दिण त्रिउल्लसवसमिइसम-
सागए यावि भणइ ॥४२॥

वेयावयेणा मन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वे० तित्थवरनाम-
गोस कम्म निउपइ ॥४३॥

अणुणरायणमवययाण ए मन्ते ! जीवे किं जणयइ ? स०
अणुणरायत्ति जणयइ । अणुणरायत्ति पत्तए य ए जीवे सारीर
माणसाण डुकखाण नो भागी भणइ ॥४४॥

वीयरगयाण ए मन्ते ! जीवे किं जणयइ ? वी० नेहाणुव-
धणाणि तण्हाणुवधणाणि य वोच्छिदइ, मणुधामणुधसु
सदफरिसरुवगसग पेसु वेव विरज्जइ ॥४५॥

य तप ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? एवन्तीए परीसहे
जिणइ ॥४६॥

मुत्तीए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? मु० अक्किण
जणयइ । अक्किणए य जीवे अत्यलोल्लाण पुरिमाण अपाव-
णिज्जा भवइ ॥४७॥

अज्जायाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अ० काउज्जुयय
माहुज्जुयय माहुज्जुयय अदिसयायण जणयइ । अदिसयायण-
सणयाए ण जीवे धम्मस्स आराहण भवइ ॥४८॥

महययाण ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? म० अणुम्मि-
यस जणयइ । अणुम्मियससण पीये मिउमहयसणने अट्ठ
मयट्ठानाइ तिट्ठानेइ ॥४९॥

भायसञ्जेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? भा० भावणिसोहिं
जणयइ । भावणिसोहिण वट्ठमाणे जीवे अरहन्तपन्नसस्म
धम्मस्स आराहणयाए अभुट्ठइ । अरहन्तपन्नसस्म धम्मस्स
आराहणयाए अभुट्ठइ । परागधम्मस्स आराहण भवइ ॥५०॥

करणसञ्जेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? क० करणसत्ति
जणयइ । करणसञ्जे वट्ठमाणे जीवे जहा धाई तहा कारी यायि
भवइ ॥५१॥

जोगसञ्जेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? जो० जोग रिसो-
हेइ ॥५२॥

मणुगुत्तयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? म० जीवे
एगग जणयइ । एगगचित्त ण जीवे मणुगुत्त सत्तमाय-
इण भवइ

वयगुत्तयाए ण भन्ने ! जीये किं जणयइ ? व० निग्गिया-
रत्ता जणयइ । निग्गियाए ण जीयेयइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहण
जुत्ते यावि तिहरइ ॥५४॥

कायगुत्तयाए ण भन्ने ! जीये किं जणयइ ? का० सवर
जणयइ । सवरेण कायगुत्ते पुणो पायासवनिरोहकरेइ ॥५५॥

मणसमहारणयाए ण भन्ते ! जीये किं जणयइ ? म०
एगग्ग जणयइ । एगग्ग जणइत्ता नाणपज्जे जणयइ । नाण-
पज्जे जणइत्ता मम्मत्त विसोहेइ मिच्छत्त च निज्जेरेइ ॥५६॥

वयसमाहारणयाए भन्ते ! जीये किं जणयइ ? व० वयसा
हारणदसणपज्जे विसोहेइ । वयसाहारणदसणपज्जे विसो-
हिता सुलहयोदियत्त निज्जेरेइ, दुल्लहयोदियत्त निज्जेरेइ ॥५७॥

कायसमाहारणयाए ण भन्ते ! जीये किं जणयइ ? का०
चरित्तपज्जे विसोहेइ । चरित्तपज्जे विसोहिता अहक्खाय-
चरित्त विसोहेइ । अहक्खायचरित्त विसोहेत्ता चत्तारि केउलि-
क्कम्मसे रयवेइ । नभो पब्बडा सिउम्भइ, पुउम्भइ, मुग्गइ, परि-
नि-राइ, सव्वदुक्खाणमन्त करेइ ॥५८॥

नाणसपन्नयाए ण भन्ते ! जीये किं जणयइ ? ना० जीये
स यमादादिगम जणयइ । नाणमपन्ने जीये चाउरत्ते ससार-
कन्तारे न विणम्भइ ।

जहाम्भं ससुत्ता पडिया न विणम्भइ ।

तदा जीव ससुत्त मसारे न विणम्भइ ॥

नाणविलयतउरित्तजोगे सपाउणइ, ससमयपरसमय-
विमान्ण य अमगायणिजे भवइ ॥५९॥

दसणसपघ्नयाए एा मन्ते ! जीने किं जणयइ ॥ ६० ॥ भय-
मिच्छुत्तछेयए करेइ, पर न विज्झायइ । पर अत्रिज्झाएमाणे
अणुत्तरेण नाणदसणेण अप्पाएा सजोएमाणे सम्म भाये-
माणे विहरइ ॥६०॥

चरित्तसपघ्नयाए एा मन्ते ! जीने किं जणयइ ? च० सेलेसी-
माय जणयइ । सेलेसिं पडिउत्ते य अणुगारे चत्तारि केवलि-
कम्मसे खवेइ । तथो पच्च सिम्मइ, युज्जइ, मुच्चइ, परि-
निवायइ, स उदुक्खाणमत्त करेइ ॥२१॥

सोइन्द्रियनिग्गहेणं मन्ते ! जीने किं जणयइ ? सो० मणु-
घामणु नेसु महेसु रागदोमनिग्गइ जणयइ, तप्पच्चइय कम्म
च ना न यधइ, पुण्यइ च निज्जरेइ ॥६१॥

चक्खिन्द्रियनिग्गहेण मन्ते ! जीने किं जणयइ ? च० मणु-
घामणु नेसु क्वेसु रागदोसनिग्गइ जणयइ तप्पच्चइय च ना
कम्म न यधइ, पुण्यइ च निज्जरेइ ॥६३॥

घाणिन्द्रियनिग्गहेण मन्ते ! जीने किं जणयइ ? घा० मणु-
घामणु नेसु गंधसु रागदोसनिग्गइ जणयइ, तप्पच्चइय च ना
कम्म न यधइ, पुण्यइ च निज्जरेइ ॥६४॥

जिन्मिन्द्रियनिग्गहेण मन्ते ! जीने किं जणयइ ? जि० मणु-
घामणु नेसु रसेसु रागदोमनिग्गइ जणयइ, तप्पच्चइय च एा
कम्म न यधइ, पुण्यइ च निज्जरेइ ॥६५॥

फाणिन्द्रियनिग्गहेण मन्ते ! जीने किं जणयइ ? फा० मणु-
घामणु नेसु कामेसु रागदोमनिग्गइ जणयइ, तप्पच्चइय च एा
कम्म न यधइ, पुण्यइ च निज्जरेइ ॥६६॥

कोहविजपता भन्ते । जीवे किं जणयइ ? को० खन्ति जण-
यइ, कोहवेयणिज्ज कम्म न बन्धइ, पुण्यवद्ध च निज्जरेइ ॥६५॥

माणविजपता भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? मा० महव जणयइ,
माणवेयणिज्ज कम्म न बन्धइ, पुण्यवद्ध च निज्जरेइ ॥६६॥

मायाविजपता भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? मा० अज्जय जण-
यइ, मायावेयणिज्ज कम्म न बन्धइ, पुण्यवद्ध च निज्जरेइ ॥६७॥

लोभविजपता भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? लो० सतोस
जणयइ, लोभवेयणिज्ज कम्म न बन्धइ, पुण्यवद्ध च निज्जरेइ ७०

पिज्जदोसमिन्हादसणविजपता भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?
पि० नाणदसणचरित्ताराहणयाए अम्भुद्धेइ । अट्टविहस्स
कम्महस कम्मगणित्थिमोवण्णयाए तण्णदमयाए जहाणुपुण्णीय
अट्टाणीसइविह मोहणिज्ज कम्म उग्घाएइ पञ्चविह नाणावर-
णिज्ज, नधरिह दसणावरणिज्ज, पचविह अन्तराइय एव
तिसि वि कम्मसे जुगय खवेइ । ततो पच्छा अणुत्तर कल्लि
पडिपुण्णा निरावरण तितिमिर विसुद्ध लोमालोगण्यमाय वेयल्ल
वरणाणदसण समुण्णडेइ । जाय सज्जोगी भवइ, ताय ईरिया-
वण्णिय कम्म निबन्धइ सुहकरिस्स दुसमयठिइयं । ॥ पदम-
समए वद्ध, विइयसमए वेइय तइयसमए निज्जिज्जणा, त वट्ठं
पुट्ठं उदीरिय वेइय निज्जिज्जणा सेयाले य अकम्म याधि भवइ ७१

अहाउय पातइत्ता अतोमुत्तस्सावसेसाए जोगतिरो-
करेमाणे सुहमविरिय अण्णदियाइ सुकज्जहाणा भायमा
तण्णदमयाए मणजोग निरुमइ, यवजोग निरुमइ, कावजो-
निरुमइ भागवण्णिगेइ करेइ, इमि पउहम्मफल्लयणाज्जा

य न अलागारे समुच्छिन्नकिरिय अनियद्विसुभ्रज्जाणा म्भियाय-
माण धेयसिञ्ज आउय नाम गोत्त च एष चत्तारि कम्मसे
तुगघ रवेइ ॥७८॥

तओ ओरालियतेयकम्माइ सध्याहिं विप्पजहणहिं विप्प
अहिता उज्जुमेदिपत्ते अपुसमाणगई उदद एगसमएणा
अविग्गहेणा तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ
जाव भत्त करेइ ॥७९॥

एस खलु सम्मत्तपरकम्मस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणा
भगवया महारीरण आचविप्प, पन्नविप्प, पक्खविप्प, दत्तिप्प,
निदत्तिप्प उचदत्तिप्प ॥८०॥ त्ति येमि ॥

॥ सम्मत्तपरकमे समचे ॥८१॥

॥ अइ तवमग तीसइम अट्ठमयण ॥

जहा उ पाउग कम्म, रागदोससमज्झिय ।
खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो मुण ॥८२॥
पाणिबहमुमात्राया अदत्तमेवणपरिग्गहा धिरओ ।
राईभोयणरिरओ, जीओ भयइ अणामधो ॥८३॥
पचसमिओ तिगुत्तो, अक्खसाओ जिहन्दिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो, जीओ होइ अणसवो ॥८४॥
एपमि तु विउच्चामे, रागदोससमज्झिय ।
खवेइ उ जहा भिक्खू, तमेगग्गमणो मुण ॥ ८५॥
जहा महानलायस्स, सनिरुद्ध जल्लामे ।
उस्सिच्चणाय तउणाय, कमेण सोसणा भवे ॥८६॥
एव तु सजयस्सावि, पाउकम्मनिरासवे ।
भवओहीसचिय कम्म, तवसा निज्जरिज्जइ ॥८७॥

सो तयो दुविहो वुत्तो, बाहिर-मन्तरो तदा ।
 बाहिरो दुविहो वुत्तो, एयमग्भन्तरो तयो ॥५॥
 अणसणमूणोयरिया भिक्खायरिया य रसपरियात्रो ।
 कायफिलेसो सल्लीणया य वज्जो तयो होइ ॥६॥
 इत्तरियमरणकाला य, अणसणा दुविहा भवे ।
 इत्तरिया सावकया, निरयकया उ रिहजिया ॥६॥
 जो सो इत्तरियतयो, सो समासेण छम्पिहो ।
 सेदितयो पयरतयो, घणो य तह होइ वग्गो य ॥१०॥
 नत्तो य वग्गवग्गो, पचमो छट्ठो दहणतयो ।
 मणइच्छिद्यच्चित्तयो, नायग्यो होइ इत्तरियो ॥११॥
 जा सा अणसणा मरणे, दुविहा मा वियाहिया ।
 मयिपारमविघारा, कायनिट्ट पई भवे ॥१२॥
 जहवा सपरिक्कमा, अपरिक्कमा य आहिया ।
 नीहारिमनीहारी, आहारवज्जो दोसु वि ॥१३॥
 ओमोयरणा पंचहा, समासेण वियाहिय ।
 वज्जमो सेत्तकालेण, भावेण पञ्चत्रेहि य ॥१४॥
 जो अरुस उ आहारो, तत्तो ओम तु जो करे ।
 अहमेणेगसित्थाई, एय दग्गेण ऊ भवे ॥१५॥
 गामे नगरे तह रायदाणिनिगमे य आगरे पही ।
 सेढे क-यइदोणमुहपट्टणमहम्म्यसवाट्टे ॥१६॥
 आसमण्य विहारे, सन्निवेस समायघोसे य ।
 थलिसेणान्धारे, सखे सउट्टकोट्टे य ॥१७॥
 वाइसु य रत्थासु य, धरेसु वा पयमित्थिय केने ।
 कप्पइ उ पयमारि, एव सेत्तेण ऊ
 पेहा य अदपहा, गोमुत्तिपर्यगयी
 सम्मुक्कापट्टाययग तुपचागया छट्ठ

दिवसस्म पोरसीण, चउरहपि उ जत्तिओ भवे कालो ।
 एउ चरमाणो खलु कालोमाण मुखेय ॥२०॥
 ग्रहण तइयाण पोरसीण, ऊणाइ घासमेस-तो ।
 चउमाणूणां चा, एव कालेण ऊ भवे ॥२१॥
 इत्थी वा पुरिसो चा, जलकिओ चा नलेकि ता चावि ।
 अन्नयरवयत्थो चा, अन्नपरेण च चरवेण ॥२२॥
 अप्रेण विससेण, घणणेण माधमणुमुयन्ते उ ।
 एव चरमाणो खलु, भायोमाण मुखेय ॥२३॥
 दने खेत्ते काले भाउम्मि य आहिया उ जे भावा ।
 एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे मिसू ॥२४॥
 अट्टनिहगोयरगा तु, तहा ससउ एमणा ।
 अमिग्गहा य जे अन्न, मिक्खायरियमाहिया ॥२५॥
 खीरअहिमप्पिमाइ, पणीय पालभोयसा ।
 एरियज्जणा एमाणा तु, भणिय रसत्रिवज्जण ॥२६॥
 ठाणा नीरामराईया, जीउम्स उ सुहायहा ।
 उग्गा जहा धरिज्जन्ति, कायकिण्णेस तमाहिय ॥२७॥
 एग-तमणाउए, इत्थीपसुत्रिवज्जिय ।
 सयणासणमेउणया, त्रित्तिसयणासण ॥२८॥
 एसो वाहिरगतयो, समासेण त्रियाहिओ ।
 अमिन्तर तव एत्तो, युच्छामि अणुपु-उसो ॥२९॥
 पायच्छित्त त्रिणओ, वेयाउच्च तटेउ मज्झाओ ।
 म्हाण च विउसग्गो, एसो अग्नि तरो तया ॥३०॥
 मालायणारिहाईय, पायच्छित्त तु दसविह ।
 ज मिक्खु वहइ सम्म, पायच्छित्त तमाहिय ॥३१॥
 अमुद्राण अजलिकरण, तहेयासणदायण ।
 गुग्गुत्तिभाउसुसुसा, त्रिणओ एस वियाहिओ ॥३२॥

આયરિયમાર્ફે, વેયાવચ્ચમિ દસવિદ્દે ।
 આસેપણ જહાધામ, વેયાવચ્ચ તમાદિય ॥૩૩॥
 યાયલા પુન્નણા ચેય, તદ્દેવ પરિયટ્ટણા ।
 અણુપ્પેહા ધમ્મવહા, સજ્જાનો પચ્છદા મયે ॥૩૪॥
 અટ્ટદહાણિ વજિત્તા, છાપજ્ઞા સુસમાદિય ।
 ધમ્મસુક્કાદ આણાદ, આણ ત ત્તુ હુહા વપ ॥૩૫॥
 સવણાસળઠાણે યા જે ડ મિક્કતૂ ન ગાયરે ।
 કાવસ્સ ટિડસ્સગો, છટ્ટો સો પરિકિત્તિમો ॥૩૬॥
 એવ તથ તુ હુયિદ્દ, જે સમ્મ આયરે મુણી ।
 સો હિપ્પ સમ્મસસારા, હિપ્પમુચ્છદ પળિદ્ધમ્મો ॥૩૭॥ સિ યેમિ

॥ તવમભ સમત્ત ॥૩૦॥

॥ અહ ચરણવિઠી નામ ઇગત્તીસદ્મ અગ્ગમયણ ॥

ચરણવિઠિં પવક્કલામિ, જીયસ્સ ડ સુહાયદ્દ ।
 જ ચરિત્તા વહ જીવા, તિણ્ણા સસારસાગર ॥૧॥
 ઇગમ્મો વિરદ્દ કુજ્ઞા, ઇગમ્મો ય પવસળા ।
 અસજ્જમે નિયસિં ચ, સજ્જમે ય પવસળા ॥૨॥
 રાગદોસે ય દો પાપે, પાપકમ્મવવસળે ।
 જે મિક્કવૂ મહર્ફે નિચ્ચ, સે ન અચ્છદ્દ મણ્ડલે ॥૩॥
 દણ્ડાણા મારવાણા ચ, સહ્ખાણા ચ તિય તિય ।
 જે મિયમ્મૂ વચ્છદ્દ નિચ્ચ, સે ન અચ્છદ્દ મણ્ડલે ॥૪॥
 દિય્થે ય જે ડવસમ્મો, તદ્દા તેરિન્નિમાણુસે ।
 જે મિક્કવૂ મહર્ફે નિચ્ચ, સે ન અચ્છદ્દ મણ્ડલે ॥૫॥
 તિગહાકસાયસધાણા આણાણા ચ હુય તદ્દા ।
 જે મિક્કવૂ મહર્ફે નિચ્ચ સે ન અચ્છદ્દ મણ્ડલે ॥૬॥

वपसु इदियत्वेसु, समिईसु किरियासु य ।
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥७॥
 लेसासु छसु काप्पु छज्ज आहारफारणे ।
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥८॥
 पिण्डोगगहपडिमासु, भयट्ठाणेषु सत्तसु ।
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥९॥
 मदेसु यम्मगुत्तीसु, मिक्खुयम्ममि दसयिहे ।
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१०॥
 उज्जासगाण पडिमासु, मिक्खूण पडिमासु य ।
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥११॥
 किरियासु भूयगामेसु, परमाहम्मिएसु य ।
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१२॥
 गाहासोलसएहिं, तहा अस्तजम्मि य ।
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१३॥
 यम्ममि नायज्जयणेषु, ठाणेषु य ऽसमाहिण ।
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१४॥
 एगयीसाय सगले, गरीसाय परीसहे ।
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१५॥
 तेवीसाइ सयगडे, रुवाहिएसु सुरेसु अ
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१६॥
 एणुगीसमाणसु, उदेसेसु दसाहण ।
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१७॥
 अणगारगुणेहिं च, पगणमि तद्देव य ।
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥१८॥
 पावसुयपसगेसु, मोहठाणेषु चेव य ।
 जे मिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले

સિદ્ધાદ્ગુગ્ગોરોમુ, તેષીસામાયણામુ ચ ।

જે મિષ્ણુ જયઈ નિશ્ચ, મે ન અચ્છદ મણ્ડલે ॥૨૦॥

દ્ય પ્પમુ ઠાણેસુ, જે મિષ્ણુ જયઈ સળ ।

તિપ્પ મો સન્નસસાગ, વિપ્પમુચ્છદ પગિહ્મો ॥૨૧॥ તિથેમિ

॥ ચરણત્રિહી સમત્તા ॥૨૧॥

॥ અદ્ધ વમાયદ્ધાણ વચીસિદ્ધમ અરુમ્મયણ ॥

અદ્ધતકાલાસ સમૂલગસ્સ,

સદ્ગસ દુક્ખસ્સ ડ જો વમોક્ખો । -

તમાસમ્મોમે પડિપુગણચિસા,

મુણેદ્ધ પગન્તદિય દિયત્થ ॥૨૨॥

નાણસ્સ 'સદ્ગસ્સ વગામણાપ,

અધ્ધાગમોહસ્મ વિશ્વરૂપાપ ।

રાગસ્સ દોસસ્સ ય સરપણ

પમતસોક્કસ સમુવેદ મોવરા ॥૨૩॥

તન્નેસ મગ્ગો ગુરુવિદ્ધસેગ,

ત્રિપજ્જના યાલજ્જનુમ્મ દૂરા ।

સરુમાયપ્પત્તિસેવણા ચ,

સુત્તત્થમચિત્તણ્યા વિદ્ધે ય ॥૨૪॥

આદ્ધારમિદ્ધે મિયમેસણિજ્જ,

સહાયમિચ્છે નિડણ્ણપુદ્ધિ

નિરેયમિચ્છેદ્ધ નિવેગજોમ્મ,

મમાહિકામે સમણે તવસ્મી ॥૨૫॥

ન યા સમેજ્ઞા નિડણ સદ્ધાય

ગુણાન્નિ વા ગુણથો મમ વા ।

एचिन्दियग्गी वि पगामभोइणो,
 न यम्भयारिस्स हियाय कस्सई ॥११॥
 विविचसेज्जासणजन्तियाण,
 ओमासणाण दमिइन्दियाण ।
 न रागसत्तु धरिसेइ चिरा,
 पराइमो याहिरियोसहेहिं ॥१२॥
 जहा विरलावसहस्स मूढे,
 न मूसगाण वसही पसत्था ।
 एमेव इरधीनिलयस्स मज्जे,
 न यम्भयारिस्स पमो निवासो ॥१३॥
 न रुवलावगणविलासहास,
 न जपिय इगियपहिय वा ।
 इरधीण चिरासि निवेसइत्ता,
 वदडु धवस्से समये तवस्सी ॥१४॥
 अइसगा चेव अपत्थण च,
 अजित्तगा येर अक्कित्तगा च ।
 इ धीजणुम्सारियज्जभागजुग्ग,
 हिय सया यम्भवण रयाण ॥१५॥
 काम नु देयीहि विभूसियाहिं,
 न चाइया गोमहउ तिगुत्ता ।
 तहा वि एगन्तहिय ति नशा,
 विविचवासो मुणिण पसत्थो ॥१६॥
 मोक्खामिकप्पिस्स उ माणउस्स,
 ससारभीदस्स ठियस्स धम्मो ।
 नेयागिस्स दुत्तरमतिय सोण,
 अहिंश्रिआ नागमणोइहा ने ॥१७॥

एष य सगे समइकमिच्छा,
 सुदुत्तरा चैव भवन्ति सेसा ।
 जहा महासागरमुत्तरिच्छा,
 नई मवे अवि गङ्गासमाणा ॥१८॥
 कामाणुगिदिप्यमवस्तु दुःखरा,
 सव्यस्म लोकास्त सदेवगस्त ।
 ज काइय माणसिय च किंचि,
 तस्स तग गच्छइ वीयरगो ॥१९॥
 जहा य विग्ग्यागफला मणोरमा,
 रसेण चण्णेष य भुज्जमाणा ।
 ते खुड्डय जीविण पच्चमाणा,
 एभोरमा कामगुणा विचारो ॥२०॥
 जे इदियाण विसया मणुघा
 न तेसु भाव निसिरे कयाइ ।
 न यामणुजेसु मण पि बुज्जा,
 समाहिकामे समणे तरस्सी ॥२१॥
 चक्कपुस्स रुच गहणा वयन्ति,
 त रागहेउ तु मणुज्जमाहु ।
 त दोसहेउ अमणुज्जमाहु,
 समो वजा तसु स वीयरगो ॥२२॥
 रुचस्स चक्कपु गहणा वयन्ति,
 चक्कपुस्स रुच गहणा वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुज्जमाहु
 दोसस्स हेउ अमणुज्जमाहु ॥२३॥
 रुचेसु जो गिद्धिमुवेइ तिब्ब,
 अकालिय पावइ से विणास ।

रागादरे से जह वा पयगे,
 आलोयलोले समुवेइ मच्चु ॥२५॥
 जे यावि दोस समुवेइ तिच,
 तसि करणे से उ उवेइ दुक्ख ।
 दुदन्तदोसेण सणण जत्तु,
 न किञ्चि रुच अजरज्झइ ले ॥२६॥
 एगन्तरत्ते मरसि रवे,
 अतालसे से कुणइ पओस ।
 दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ चाले,
 न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥२७॥
 रुपाणुगासानुगए य जीये,
 चराचरे हिंसइ एणेगरुवे ।
 चित्तेहि ते परितापेइ चाले,
 पीलेइ अत्तट्टगुरु किलिहे ॥२८॥
 मयाणुपाएण परिग्गहेण,
 उप्पायणे रक्खणसनिओगे ।
 यए निओगे य कह सुह से,
 सम्मोगकाले य अतित्तलाभे ॥२९॥
 रुवे अतित्त य परिग्गहम्मि,
 सत्तोयसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,
 लोमाविज्ज आययई अदत्त ॥३०॥
 तएहामिभूयस्स अदत्तहारिणो,
 रुवे अतित्तम्म परिग्गहे य ।
 मायामुग्ग वहइ लोमदोसा,
 तत्थावि दुक्खा न विमुच्यई से ॥३१॥

मोक्षस्य पञ्च य पुस्त्यश्रो य,

पयोपशाने य दुही दुरन्ते ।

एव श्रद्धाणि सनाययतो

रुचे अतिष्ठो दुहिश्रो अग्निस्तो ॥२८॥

कृत्वागुरुस्तम्भ नरम्भ एव,

पक्षो सुहृद् होज्ज कगाह निधि ।

तद्योप्रभोगे त्रि किलसदुक्त

नित्यत्तर्ह जम्भ कण्ठ दुषख ॥२९॥

ममथ कृत्स्नि गशो पञ्चोस,

उद्यद् दुःखाहपरपराशो ।

पदुद्विष्टो य निशाह कम्भ,

ज से पुणो होइ दुह प्रियाने ॥३०॥

रुचे विरक्तो मणुषा प्रिसोमो,

पण्ठ दुःखगोहपरपरेण ।

न लिख्य भवमथ त्रि सन्तो,

जलेण वा पौकपरिणीपलास ॥३१॥

सोयस्त सह गहण वयन्ति,

त रागहेड तु मणुषमाहु ।

त दोसहेड अमणुषमाहु,

समोय जो तेसु स वीयगगो ॥३२॥

सहस्त सोय गहण वयन्ति,

सोयस्त सह गहण वयन्ति ।

रागस्त हेड समणुषमाहु,

दोसस्त हेड अमणुषमाहु ॥३३॥

सदेस जो गिद्धिमुवेद तिन्य,

अकालिय पावइ से प्रियास ।

રાગાઝરે ઓસહગ-ધગિદ્ધે, ૬,
 સપ્તે પ્રિલાઓ પ્રિવ નિષ્પત્તમતે ॥૫॥
 જે યાત્રિ દોસ સમુદ્ધેદ તિવ્વ, ૭,
 તસિ કમળે સે ઝ ઉદ્ધેદ દુષ્પત્ત ।
 હુદ-તદોસેણ સપ્તેણ ઝમ્ત, ૮,
 ન કિંચિ ગન્ધ અઝરઝ્ઝઈ સે ॥૧૧॥
 એગ-તરસે રદ્ધસિ ગ-ધે, ૯,
 અતાલિસે સે કુણઈ પન્નોસ ।
 હુષ્કલસસ સપીલમુદ્ધેદ ગાલે, ૧૦,
 ન લિપ્પઈ તેણ મુખી ત્રિરાગો ॥૫૨॥
 ગ-ધાણુગાસાણુગપ્પ ય ઝીધે, ૧૧,
 ચરાચરે હિંસદ-એગરૂધે ।
 ચિત્તેદિ તે પરિતાપેદ થાલે, ૧૨,
 પીલેદ અત્તદ્ધગુરુ કિલિદ્ધે ॥૫૩॥
 ગ-ધાણુધાપણ પરિગ્ગદ્ધેણ, ૧૩,
 ઝપ્પાયણે રક્ષણસન્નિમોગે ।
 ઘપ્પ ચિત્તોગે ય વદ્ધ સુદ્ધ સે, ૧૪,
 સન્નોગકારો ય અતિત્તલામે ? ॥૫૪॥
 ગ-ધે અતિત્તે ય પરિગ્ગદ્ધમ્મિ, ૧૫,
 સત્તોવસત્તો ન ઝવેદ્ધ સુદ્ધિ ।
 અતુદ્ધિદોસેણ હુદ્ધી પરમ્મસ - ૧૬,
 લોભાગિલે આયયઈ અદ્ધત્ત ॥૫૫॥
 નરહામિભૂયસ્સ અદ્ધત્તહારિણો, ૧૭,
 ગ-ધે અતિત્તસ્સ પરિગ્ગદ્ધે ય ।
 માયામુત્ત વહ્ધ લોભદોસા, ૧૮,
 મત્થાગિ હુક્ખા ન તિમુચ્છઈ સે ॥૧૬॥

मोसस्त पच्छाय पुरत्यमो य
पत्रोगकाले य दुही दुरन्ते ।

एव अदत्ताणि समाययतो,
गधे अतित्तो दुहिओ अणित्तो ॥५७॥

गन्धाणुरत्तस्त नरस्त एव,
दुत्तो सुद होअ कयाइ किंचि ?

तत्थोपमोगे वि किलेसदुक्ख,
निउत्तई जस्स कपण दुक्ख ॥५८॥

एमंय गधम्मि गओ पओस,
उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।

एदुट्टचित्तो य चिणाइ कम्म,
अ से पुणो होइ दुह विधाने ॥५९॥

गधे विरत्तो मणुओ विसोगो,
पणण दुक्खोहपरपरेण ।

न लिप्पई भयमज्जे वि सन्तो,
जलेण वा पोप्परिणीपत्तास्त ॥६०॥

जिम्माए रस गहण वयति,
न रागहेउ तु मणुअमाहु ।

न दोसहेउ अमणुअमाहु
समो य जो तेसु स वीयरामो ॥६१॥

रसरस जिम्म गहण वयति,
जिम्माए रस गहण वयति ।

रागस्त हेउ समणुअमाहु
दोसस्त हेउ अमणुअमाहु ॥६२॥

रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिच्च,
अकालिय पाप्मणे वि

रागाउरे घटिसिमिधकोण,
 मन्त्रे जहाँ आमिसमोगगिदे ॥६३॥
 जे यावि दोस समुवेद ति य,
 तसि कखणे से उ उवेद दुपख ।
 दुहन्मदोसेण संपण जे तु
 न किंचि रस अररज्जई से ॥६४॥
 पगतरचे रहरसि रसे,
 अतालसे से दुणई पओस ।
 दुपयस्म सपीलमुवेद वाले,
 न लिपई तेण मुणी विरागो ॥६५॥
 रसाणुगासाणुगपे य जीरे,
 चराचरे हिसइयोगरुवे ।
 चिसेहि ते पवितायेद वाले,
 पीलेद अचट्टगुरु किलिडे ॥६६॥
 रसाणुवाणु परिगहेण,
 उलोयले रकणमधिश्रोणे ।
 यण यिओगे य कह सुह से,
 सभोगपालेय अतिचलाये ॥६७॥
 रसे अतिच य परिगहम्मि,
 सत्तोसत्तो न उवेद सुद्धि ।
 अतुद्धिदोसेण दुही परस्स,
 लोभारिले आययई अदत्त ॥६८॥
 तगदाभिमुयस्स अदत्तहारिणो,
 रमे गदत्तस्स परिगहे य ।
 मायामुय घई लोभेदोसा,
 तयायि दुक्ता न विमुचई से ॥६९॥

मोक्षस्य यस्याः य पुनराभा य,
 यमोक्षज्ञान य नृणां दुःखः ।
 एवं भवतांति, यमापवन्तो,
 एते भवतांति दुःखो यमिहो ॥ ३ ॥
 यमापवन्तो नरस्य यय,
 यतो नृणां यो य यया विनि ?
 यमापवन्तो वि विनितदुःख,
 यिह यत्तु यमस्य यय नृणां ॥ ४ ॥
 यमस्य यमस्य यमां यमां,
 उदेत् दुःखो यमस्य यमां ।
 यदुःखतां य विनि यमां
 यमे पुनः द्वाद् द्वाद विनि ॥ ५ ॥
 यमे विनि यमां विनि,
 यमस्य यमस्य यमां यमां ।
 य निनि यमस्य यि यमां,
 यमस्य यो यमस्य यमां ॥ ६ ॥
 यमस्य यमां यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ।
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ ७ ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ ८ ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ ९ ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ १० ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ ११ ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ १२ ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ १३ ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ १४ ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ १५ ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ १६ ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ १७ ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ १८ ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ १९ ॥
 य यमां यि यमां यमां,
 य यमां यि यमां यमां ॥ २० ॥

रागाडरे सीयजलावसन्ने, ।

गाहग्गहीए मद्धिसे विवन्ने ॥७६॥

जे यात्रि दोस समुवेइ तिब्बं,

तसि फखणे से उ उवेइ दुफ्फ ।

दुदन्तदोसेण सणण अत्त,

न किंचि फास अवरज्जम्हई से ॥७७॥

एगत्तरत्ते हरमि फासे,

अत्तालिसे से कुणइ पच्चोस ।

दुक्खस्स मपीलमुवेइ गाले,

न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥७८॥

फासाणुगासाणुगए य जीवे,

चराचरे हिंसइयेगरूवे ।

चित्तेहि ते परितायेइ गाले,

पीलेहि अत्तदुग्गुरु किलिद्धे ॥७९॥

फासाणुवाएण परिग्गहेण,

उप्पायणे रक्खणसन्निभोने ।

यए विभोने य कह सुइ से,

समोगकाले य अत्तित्तलामे ॥८०॥

फासे अत्तित्ते य परिग्गहम्मि,

सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।

अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स,

लोमाविले आययई अदत्त ॥८१॥

तएवामिभूयस्स अदत्तहारिणो,

फासे अत्तित्तस्स परिग्गहे य ।

माशामुस यइइ लोभदोसा,

तएवायि दुफ्फला न त्रिमुच्चई से ॥८२॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थो य,
 पन्नो गकाले य तुही तुरते ।
 एव अदत्ताणि समाययन्तो,
 फासे अतित्तो तुहियो अणस्सो ॥८३॥
 फासाणुरत्तस्स नरस्स एव,
 कत्तो सुह होज्ज कयोइ किंचि ?
 नत्थो यमोगे वि विलेसदुक्ख,
 निज्जत्तई जस्स कएण तुक्ख ॥८४॥
 एमेव फासम्मि गभो पओस,
 उवेइ दुक्खोहपरपराआ ।
 पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्म,
 ज से पुणे होइ दुह यिज्जगे ॥८५॥
 फासे थिअत्तो मणुओ विसोगे,
 पएण तुक्खोहपरपरेण ।
 न लिप्पई भयमज्जे वि सत्तो,
 जलेण या पोक्खरिणीपलास ॥८६॥
 मणस्स भाव गहरा वयन्ति,
 तं रागहेउ तु मणुअमाहु ।
 न दोसहेउ अमणुअमाहु,
 समो य जो तेसु स वीयरानो ॥८७॥
 भायस्स मया गहरा वयन्ति,
 मणस्स भाव गहरा वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुअमाहु,
 दोसस्स हेउ अमणुअमाहु ॥८८॥
 मावेसु जो गिअिसुवेइ तिव्व,
 नकालिय पाजइ से पिणास ।

रगाउरे कामगुणेषु गिरे, ॥८९॥
करेणुमगावहिण गजे वा ॥८९॥

जे यात्रि दोस समुवेह तिण्ण, ॥९०॥
तसि पल्लणे मे उ उवेह दुक्ख ।

दुह तदोसेण सपण जत्तु, ॥९०॥
न किञ्चि भाष अवरज्झई से ॥९०॥

एग तरसे रहरसि भावे, ॥९१॥
अतालसे मे कुणई पणोस ।

दुक्खम्म सर्पासमुवेह बाले, ॥९१॥
न लिप्पई नेण मुणी विरागो ॥९१॥

भावाणुगासाणुणय य जीवे, ॥९२॥
घराछरे हिमइल्लेगख्ये ।

चित्तेहि ते परित्तावेह बाले, ॥९२॥
पीलेहि अत्तदुगुरु किलिहु ॥९२॥

भावाणुवापण परिग्गहेण, ॥९३॥
उप्पायखे रक्खणससिओगे ।

यए विओगे य कह सुह स, ॥९३॥
समोगकाले य अतित्तलामे ॥९३॥

भावे अतित्ते य परिग्गहम्मि, ॥९४॥
सत्तोवसत्तो न उवेह तुट्ठि ।

अतुट्ठिदोसण बुद्धी परस्म, ॥९४॥
लोभात्रिले आययई अदत्ता ॥९४॥

तएवामिभूयस्स अदत्तहारिणो, ॥९५॥
भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।

मायामुम वहार लोमदोसा, ॥९५॥
तत्थानि दुक्खा न विमुच्यई से ॥९५॥

मोक्षस्त पच्छा य पुरत्ययो य,

पश्रोगकाले ये दुही दुरते ।

एवं अदस्ताणि समाययन्तो,

भावे अतिर्त्तो रुद्विभो अगिस्तो ॥६॥

भावाणुरस्तस्त नरस्त एव,

कसो सुहं होज्ज कयाह किञ्चि ?

तत्थोषभोने वि किञ्जेसत्तुस,

निउत्तई जस्त कप्पल दुक्ख ॥७॥

एमेव भावम्मि गच्छो पश्रोस,

उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।

पदुद्विचित्तो य चिगाह कम्म,

ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥८॥

भावे विरत्तो मणुओ विसोगो,

एएण दुक्खोहपरपरेण ।

न लिप्पई भवमग्गे विसन्तो,

जलेण या पोक्खरिणीवत्तास ॥९॥

पयिन्दियत्थाय मणस्त अत्था,

दुक्खस्त हेउ मणुयस्त रागिणो ।

ते येउ घोव पि कयाह दुक्ख,

नधीयरगस्त करे त विञ्चि ॥१०॥

म कामभोगा समय उवेत्ति,

म याविभोगा विगइ उवेत्ति ।

जे तप्पओसी य परिग्गहीय,

ओ तेसु मोहा विगइ उवेइ ॥११॥

ओह च माण च तहेव माय,

ओह दुगुच्छ अरइ रइ च ।

चक्रबुधचक्राद् ओदिम्स, दसणे नेउले य आउण्णे ।

एउ तु नउयिण्ण, सायच्च दसणाउरण ॥६॥

वेयणीयपि य दुविह, सायमसाय च आहिय ।

सायस्स उ उह मेया, एमेउ असायस्स पि ॥७॥

मोहणिज्जपि च दुवेह, दसणे चरणे तहा ।

दसणे तिघिह पुत्ता, चरणे दुविह भवे ॥८॥

सम्मत्त वेय मिच्छत्ता, सम्मामिच्छत्तमेउ य ।

एयाओ तिणि पयसीओ, मोहणिज्जस्स दसणे ॥९॥

चरित्तमोहण कम्म, दुविह तु त्रियाहिय ।

कसायमोहणिज्ज तु, नोकसाय तदय य ॥१०॥

मोलसविहमेएणा, कम्म तु कसायज ।

सत्तविह नयविह या, कम्म च नोकसायज ॥११॥

नेहियतिरिक्खाउ, मणुम्माउ तदेउ य ।

दयाउय अउत्तय तु, आउकम्म अउयिह ॥१२॥

नामकम्म तु दुविह, सुहमसुह च आहिय ।

सुभम्म उ उह मेया, एदेय असुहस्स पि ॥१३॥

गोय कम्म दुविह, उय नीय च आहिय ।

उय अदुविह होह, एय नीय पि आहिय ॥१४॥

दाण लामे य भोगे ए, उयभोगे धीरिप तहा ।

पञ्चविहमस्तगय, समामेण वियाहिय ॥१५॥

एयाओ मूलपयसीओ, उराराओ य आहिया ।

पएसग्ग नेह काडे य, भाय च उर र सुण ॥१६॥

सत्वेसि नेउ कम्माण पपमग्गमणत्तरा ।

गेटिपमत्ताहिय भत्तो विद्धाण आहिय ॥१७॥

सञ्जजीराण कम्म तु, सगहे छदिसागय ।
 सत्तेसु नि पपसेसु, सम्य सत्तेण चदग ॥१८॥
 उद्धीसरिसनामाण, तीसई कोडिकोडिओ ।
 उक्कोसिया ठिई होइ, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥१९॥
 आयरणिजाण दुग्गहपि, वेयणिञ्च तहेव य ।
 अतराप य कम्मम्मि, ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥
 उद्धीसरिसनामाण सत्तरि कोडिकोडिओ ।
 मोहणिञ्चस्स उक्कोसा, अनोमुहुत्त जहन्निया । २१॥
 तेत्तीम सागरोयमा, उक्कोसेण रियारिया ।
 ठिई उ आउक्कम्मस्स, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥२२॥
 उद्धीसरिसनामाण, पीसई कोडिकोडिओ ।
 नामगोत्ताण उक्कोसा, अट्टमुहुत्त जहन्निया ॥२३॥
 सिद्धाणस्तभागो य, अणुभागा इवन्ति उ ।
 सत्तेसु पि पपसग्ग, सञ्जजीरेसु इच्छिय ॥२४॥
 तग्गह। एएसि कम्माण अणुम गा वियानिया ।
 एएसि सवरे चेउ, सत्तेण य जण धुहो ॥२५॥ सि चेमि

॥ उम्मप्पयत्ती ममत्ता ॥२६॥

॥ अह लेनउक्कयण चात्तीसइम अउक्कयण ॥

लेसउक्कयण पयक्कयामि, आणुपुत्ति जहक्कम ।
 छरहपि कम्मलेसाण अणुभावे सुखेह मे ॥२७॥
 नामाइ यणुरसगन्धफासपरिणानलस्यण ।
 ठाण ठिई गह चाउ, लेसाण तु सुखेह मे ॥२८॥
 विगहा नीला य काऊ य, तेऊ पग्गह तहेउ य ।
 सुक्कलेसा य छट्ठा य, नामाइ तु जहक्कम ॥२९॥

जीमूयनिद्धसकासा, गयलरिट्ठसन्निभा ।
 खजजणनयणनिभा विगहलेसा उ वरणओ ॥४॥
 नीलासोगसकासा, चासपिच्छमप्यभा ।
 वेरलियनिद्धसकासा, नीललेसा उ वरणओ ॥५॥
 अयमीपुष्पसकासा, कोइलच्छन्दसन्निभा ।
 पारेयवगीयनिभा, काऊलेसा उ वरणओ ॥६॥
 हिंसुतयधाउसकासा तरुणाइममन्निभा ।
 सुयतुतइवईरनिभा, तेइडेसा उ वरणओ ॥७॥
 हरियालमेयसकासा, हतिहामेयसमप्यभा ।
 सणाखणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वरणओ ॥८॥
 सल्लककुन्दमडकासा दीरपुससमप्यभा ।
 रयवहारसकासा, मुअलेसा उ वरणओ ॥९॥

जह कटुयतुम्भगरसो,
 निम्भरसो कटुयरोहिणिरसो घा ।
 एत्तो वि अणुन्तगुणो,
 रसो य विगहाए नायवो ॥१०॥
 जह तिकटुयम्म य रसो,
 तिफयो जह हन्धिपिण्णलीए घा ।
 एत्तो वि अणुन्तगुणो,
 रसो य नीलाए नायवो ॥११॥
 जह तरुणत्रम्भगरसो,
 तुवरकविट्ठम्म वावि आरिसओ ।
 एत्तो वि अणुन्तगुणा,
 रसो उ काऊण नायवो ॥१२॥

अह शरिण्यम्वगरमो,

पद्मविट्टस्स वावि आग्निमो ।

एत्तो वि अणुनगुणो

रमो उ तेऊण नागणो ॥ ३॥

वावाग्गोण य रमा,

तिविहाण य कामयाण आग्निमो ।

महुमेरयम्म य रमो,

एत्तो पम्माण वरणा ॥४॥

अजूरमुदिवरसो, खोररसो खड्मकररसा वा ।

एत्तो वि अणानगुणो, रमो उ सुद्धण भावया ॥५॥

अह गोमइम्म गधो सुणममइम्म य अहा अग्निमइम्म ।

एत्तो वि अणतगुणो लेमाण अण्वमयाता ॥६॥

अह सुग्गिदुसुमगधो, गवग्गमाणा पिम्ममाणाणा ।

एत्तो वि अणतगुणो वसत्थममाण तिहपि ॥७॥

अह वग्गयम्म फाना भोजिभाव य सागवत्ताया ।

एत्ता वि अणानगुणो, लेमाणा ऊपसत्थाणा ॥८॥

अह धूरम्म य वानो, नयणीयरस ॥ तिरीसदुसुमाणा ।

एत्तो वि अणतगुणो वसत्थलेमाण तिहपि ॥९॥

तिविहो य नयविहो वा सत्तावीमरविहेक्खीओ वा ।

दुमओ तेवाणे वा, लसाण दाइ परिणामा ॥१०॥

पचातवणवत्ता, तीहि अणुत्तो हमु अनिरओ य ।

तिग्गावमपरिणओ, सुद्धो सहसिओ नरो ॥११॥

निद्धधसपरिणामो, निम्समा अणिहिविओ ।

एयजे गसमाउत्तो, तिग्गलेम तु परिणम ॥१२॥

इत्ताअमरिसकतयो अविअप्पया अह रिया ।

गिद्धी पओमै य सदे, पमत्ते वसलोदुण ॥१३॥

(सायगवेमएय) जाग्माओ अविरओ, खुइो साहस्सिओ नरो
 एयजोगसमाउत्तो, नीललेस तु परिणमे ॥२४॥
 वने घफसमायागे, नियद्विले अणुज्जुए ।
 पलिउचगओवट्टिए, मिच्छुदिट्ठी गणारिए ॥२५॥
 उफालगहुट्ठयाइ य, तेणे याधि य मच्छरी ।
 एयजोगसमाउत्तो, फाऊलेस तु परिणमे ॥२६॥
 नीयापित्ती अचयले अमाई अट्ठुऊहले ।
 रिणीवट्टिए दत्ते, जोगय उवहाणय । २७॥
 पियधम्मो ददधम्मउज्जभीरु हिएसए ।
 एयजोगसमाउत्तो, तेउलेस तु परिणमे ॥२८॥
 पयणुकोहमाणं य, गायालोमे य पयणुए ।
 पसन्तचित्ते दन्तप्पा, जोगय उवहाणय ॥२९॥
 तहा पयणुगाइ य, उवसन्ते जिह्दिए ।
 एयजोगसमाउत्तो, पग्गहेस तु परिणमे ॥३०॥
 अट्ठग्गहाणि यज्जित्ता, धम्मसुक्काणि भावए ।
 पसन्तचित्ते दन्तप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥३१॥
 सरागे वीररागे या, उवसन्ते जिह्दिए ।
 एयजोगसमाउत्तो, मुक्कलस तु परिणमे ॥३२॥
 अमखिज्जाणोमप्पिणीण, उस्सन्निर्णीण जे समय ।
 सत्ताइया लोगा, लेमाण हवन्ति ठाणाइ ॥३३॥
 मुहुत्तइ तु जहन्ना, तेत्तीमा सागरा मुहुत्तहिया ।
 उक्कोसा होइ ठिइ, नायग्ग विस्सहलेसाए ॥३४॥
 मुहुत्तइ तु जहन्ना, दस उदही पलियमसखभागमम्महिया ।
 उक्कोसा होई ठिई नायग्ग नीललेसाए ॥३५॥
 मुहुत्तइ तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसखभागमम्महिया ।
 ॥३६॥ ॥३६॥ ॥३६॥ ॥३६॥

मुद्रसञ्चतु ऋतुषा, दोगणुदही पश्चिमसमयभागमप्यदिपा ।

उक्तानां दोहं हि, नाशयामउत्तम, ए। ३॥

मुद्रादत्तं तु अद्वयम्, इत्येवमिति यं समाधत्तम् । मुद्रासंज्ञिका ।

दक्षिणा दार दिई, नायल्या पम्हलैमाण ॥३॥

मुद्रास्य तु अह्ना, मर्त्तान्न स्वाप्य मृदुतद्विषा ।

उद्योगा दोह दिरे, मायस्था मजसेनाए ॥३६॥

एसा काल सभान, आहल द्विं व पतिलयः होइ ।

अथ हि गरीत एको, ऐमाग रिह नु याच्छामि ॥४॥

इमं शास्त्रमन्तरम् । वाक्यं हि महत्प्रिय । ते ।

निष्पुद्गी पत्तिचायम, चरंग्यमार्गं न उद्धृता ॥३॥

तिग्युद्दी एनिआयममयस्वमागो आसन गिनडिं ।

दस उद्दी पलिमायममवतभाग न उमोना ०३२॥

दगडुही पत्तिचा वध सर्वतम (ग) अरुचिया दाह ।

महर्षीसंगमगिराह उद्योगा. दोह रिगदाह मेसाण १७३१

एसा पैरइषासो, जेमाण हिई उ यतिगया होइ ।

तत्तु परं पोट्टामि, निरियमलुस्समात्तु इपाशे #५४॥

मन्तोमुद्रासमय, लेसाग दिह जहिं जहिं जाउ ।

तिग्याण नराणी चा, पञ्चिमा मेवम मेमं ॥३॥

मुद्रासह तु जदप्या उद्योता नोह पुण्यकारीमा ।

नयति परिमदि ऊणा तायया सुयनेसाप ॥५॥

एम्. सिगियनर मी.

हे माणु त्रिं उ यगिनया होह ।

सगु परे सोच्छामि

संस्कृत वि० उ० दयानंद । १३७॥

इत्येव शान्तमहम्मसाह

विगदाए त्रिई अहनिषा होए ।

पलियमसखिज्जइमो,

उक्कोसो होइ किएहाए ॥४८॥

जा किएहाए ठिई खलु,

उक्कोसा सा उ समयमम्महिया ।

जहणेण नीलाए,

पलियमसख च उक्कोसा ॥४९॥

जा नीलाए ठिई खलु,

उक्कोसा सा उ समयमम्महिया ।

जहणेण काऊए,

पलियमसख च उक्कोसा ॥५०॥

तेण पर घोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगणाए ।

भयणउदयाणमत्तरजोइसरेणालियाण च ॥५१॥

पलिओउम जहणा, उक्कोसा सागरा उ दुघहिया ।

पलियमसखेज्जेण, होइ भागेण तेऊए ॥५२॥

दमवाससहस्साइ, तेऊर ठिइ जहणिया होइ ।

दुनुदही पलिओउमअमयमाग च उक्कोसा ॥५३॥

जा तेऊए ठिइ खलु,

उक्कोसा सा उ समयमम्महिया ।

जहणेण पम्हाए,

दस उ मुहुत्ताहियाइ उक्कोसा ॥५४॥

जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमम्महिया ।

जहणेण सुक्काए, तेत्तीसमुहुत्तमम्महिया ॥५५॥

किण्हा नीला काऊ, तिनि वि पयाओ अहम्मलेसाओ ।

एयाहिं तिहि वि जीयो, दुग्गइ उयउज्जइ ॥५६॥

तेऊ पम्हा सुक्का, तिणि वि पयाओ धम्मलेसाओ ।

एयाहिं तिहि वि जीयो, सुग्गइ उयउज्जइ ॥५७॥

लेमाहिं सप्याहिं, पदमे ममयमिपरिगुणाहिं तु ।
 न हु कम्मइ उययाओ, पर भवे अयि जीउम्स ॥१८॥
 लेमाहिं सप्याहिं, चरिमे ममयमि परिगुणाहिं तु ।
 न हु कम्मइ उययाओ, परे भवे दोइ जीउम्स ॥१९॥
 अ तमुदुत्तहिं गर, अ तमुदुत्तमि मेसए येय ।
 लेमाहिं परिगुणाहिं, जीवा मग्गुनि वग्गमाय ॥२०॥
 तम्हा पयासि लेमाणां, अणुवाय विषाणिया ।
 * । सप्याओ यज्जित्ता, पसप्याओ इहिद्विप मुणी ॥२१॥ चि चेमि
 ॥ लवग्गदग्ग ममत्तं ॥२२॥

॥ अह अणुगारिण खाप पचतीमइम अउभयण ॥

सुणेह मे, एगणमणा, मगा 'बुद्धि' दसिय ।
 जमापरता मिक्खु दुक्कणणकरे मवे ॥२३॥
 मिदयाम परिचज्ज, पवज्जामम्मिण मुणी ।
 इमे सगे विषाणिज्ज, जहिं मज्जन्ति माणया ॥२४॥
 तहेय हिंस अलिप, योज्जे अवग्गमेयणा ।
 इन्द्राकामं च लोम च, सज्जओ परिउज्जण ॥२५॥
 मणोदरं चित्तघर, मह पूयेण धासिय ।
 मक्कयाइ पण्डुग्गहाय, मणुमायि न परधण ॥२६॥
 इन्द्रियाणि उ मिक्कणुम्म तास्मिम्म उयस्सए ।
 दुक्कणइ निगारेउ, वामरागविउद्वणे ॥२७॥
 सुमाणे सुन्नगारे वा, मक्कसमूले च इक्कणो ।
 परिके परक्कडे वा, वास तत्था मिरोयण ॥२८॥
 फामुयम्मि अणुवाहे, इण्डीहिं अणुमिदुण ।
 नत्थ मक्कणं धास, मिक्कणु परममनंए ॥२९॥

न सय गिहाइ कुठिउज्जा, रोउ अघेहि कारण ।
 गिहम्मपसमारम्मे, भूयाए दिम्सए वहो ॥८॥
 तसाण थावराण च, सुहुमाण वादराण य ।
 तम्हा गिहसमारम्म, सजओ परिवज्जए ॥९॥
 तहेय भत्तपाणेषु, पयणे पयावणेषु य ।
 पाणभूयइयट्ठाए, न पए न पयावए ॥१०॥
 जलधम्मनिस्सिया जीरा, पुढवीकट्टनिस्सिया ।
 हम्मन्ति भरापाणेषु, तम्हा मिक्खू न पयावए ॥११॥
 निमये न वओ धारे, बहुपाणिविणामणे ।
 नत्थि ओइसमे सत्थे, तम्हा ओइ न टीघए ॥१२॥
 हिरण जायन्त च, मलसा वि न पत्थए ।
 समलेइहुकचणे मिक्खू, विरए कयविकए ॥१३॥
 किण तो कइओ होइ, विक्किणन्तो य पाणिओ ।
 कयविक्रयम्मि यहुन्तो, मिक्खू न भयइ तारिस्सो ॥१४॥
 मिक्खियवज्ज न केयवज्ज, मिक्खुणा मिक्खयस्सिणा ।
 कयविक्रमो महादोसो, मिक्खजाविस्सी सुहायहा ॥१५॥
 समुयाण उप्पमेसिज्जा, जहासुत्तमणिदिष ।
 लामालामम्मि सत्तुट्ठे, दिण्हयाय चरे मुणी ॥१६॥
 धलोले न रसे गिद्धे, जिम्मादन्ते अमुच्छिण ।
 न रसट्ठाए भुजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ॥१७॥
 भयण रयण चेउ, चन्दण पूयणं तहा ।
 इहोसकारमम्माण, मणमा वि न पत्थए ॥१८॥
 सुअम्मार्ण कियाएज्जा, अणियाणे अकिंचले ।
 दोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाय कासस्स पञ्चओ ॥१९॥

निज्जुडिऊण आहार, कालधम्मो उयट्ठिए ।
 'जडिऊण माणुस बोन्दि, पट्ट दुक्खो विमुच्चई ॥२०॥
 निम्ममे निरहवाणे, वीथ्यगगो अणुसघो ।
 सपत्तो वेधल नाण, मासय पणिणि-वुण ॥२१॥ त्ति वेमि ।

॥ अणुगारज्जयण ममस ॥३५॥

॥ अह जीराजीवविमत्ती णाम छत्तीमडम अरुभयमा ॥

जायजीवविमत्ति मे, मुणेहेगमणा इमो ।
 ज जाणिऊण मिक्ख, सम्म जयइ मज्जे ॥१॥
 जीरा चेउ अजीरा य, एम सोण विवाहिए ।
 अजीवदसमागासे, अलोणे से त्रियाहिए ॥२॥
 इय्यओ खेत्तओ वेध कालओ मायओ तथा ।
 परवणा त्ति मरे, जीयाणमजीयाण य ॥३॥
 रुविणो वेध करी य, मजीया दुविहा मये ।
 अरुवी दसहा पुत्ता, रुविणो य चउयिहा ॥४॥
 धम्मियिहाए गदेसे, तप्यएसे न आहिए ।
 अहम्मं सम्म देसे य तप्यएसे य आहिए ॥५॥
 आगामे तस्म दसे य, तप्यएसे य आहिए ।
 भद।समए चेउ अरुवी दसहा मये ॥६॥
 धम्माधम्मे य दो चेउ, लोगमिप्ता त्रियाहिया ।
 लोगालोणे य आगासे, समए मययसेत्तिए ॥७॥
 धम्माधम्मागासा, तिप्पिवि पए अणादया ।
 अपज्जयसिया चेउ, सच्चद तु त्रियाहिए ॥८॥
 समएवि स-तद पप पयमेय त्रियाहिया ।
 आपस पप सार्इए, सवज्जयसियवि य ॥९॥

सन्धा य सन्धदेमा य, तप्पणमा नहेय य ।
 परमाणुलो य रोधया, रुजिणे य चउत्तिहा ॥१०॥
 एगत्तेण पुहत्तेण, सन्धा य परमाणु य ।
 तोरणदेसे लोण य भइयवा से उ गेत्तवा ॥११॥
 (सुहुमा सव्वलोगम्मि नेगदेसे य थायगा ।)
 इत्तो कालविभाग तु तेसिं सुत्तु चउत्तिहा ॥१२॥
 सत्तइ पप्प तेऽण्णइ अप्पज्जयसिया वि य ।
 ठिह पट्टय साइया, सपज्जयसिया वि य ॥१३॥
 असत्तमासमुक्कोस, पक्को समओ जइअय ।
 अजीवाण य रुवीण, ठिई एसा वियाहिया ॥१४॥
 अगन्तकालमुक्कोस, पक्को समओ जइअय ।
 अजीवाण य रुवीण अ तरेय वियाहिय ॥१५॥
 घण्णओ गन्धओ चेय, रसओ फासओ तहा ।
 सटाणओ य विघ्णओ, परिणामो तेसि पचहा ॥१६॥
 घण्णओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पक्किसिया ।
 रिण्हा नीला य लोहिया हलिहा सुक्कला तहा ॥१७॥
 गन्धओ परिणया जे उ, दुविहा ते वियाहिया ।
 सुग्गिमन्धपरिणामा, दुग्गिमन्धा तहेय य ॥१८॥
 रसओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पक्किसिया ।
 तिसक्कहुयक्काया, अग्गिला महुवा तहा ॥१९॥
 फासओ परिणया जे उ, अट्टहा ते पक्किसिया ।
 कक्कवडा मउवा चेय गरुया सहुआ तहा ॥२०॥
 सीया उगहा य निह्या य, तहा उक्कया य आहिया ।
 इय फासपरिसिया पप, पुग्गला समुदाहिया ॥२१॥
 सटाणओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पक्किसिया ।
 परिमडता य यहा य, तसा चउत्तसमायया ॥२२॥

वगणओ जे भवे त्रिगुहे, मइए से उ गन्धओ ।
 रसओ फासओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥२१॥
 वगणओ जे भवे नीले, मइए से उ गन्धओ ।
 रसओ फासओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥२४॥
 वगणओ लोहिण जे उ, मइए से उ गन्धओ ।
 रसओ फासओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥२५॥
 वगणओ पीवण जे उ, मइए से उ गन्धओ ।
 रसओ फासओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥२६॥
 वगणओ मुक्किजे जे उ, मइए से उ गन्धओ ।
 रसओ फासओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥२७॥
 गन्धओ जे भवे सुग्धा, मइए से उ वगणओ ।
 रसओ फासओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥२८॥
 गन्धओ जे भवे दुग्धि, मइए से उ वगणओ ।
 रसओ फासओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥२९॥
 रसओ तिष्ठण जे उ, मइए से उ वगणओ ।
 गन्धओ रसओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥३०॥
 रसओ कट्टण जे उ, मइए से उ वगणओ ।
 गन्धओ फासओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥३१॥
 रसओ कमाए जे उ, मइए से उ वगणओ ।
 गन्धओ फासओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥३२॥
 रसओ अग्निजे जे उ, मइए से उ वगणओ ।
 गन्धओ फासओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥३३॥
 रसओ मइए जे उ, मइए से उ वगणओ ।
 गन्धओ फासओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥३४॥
 फासओ ककण्डे जे उ, मइए से उ वगणओ ।
 गन्धओ फासओ चैव, मइए सडाणओवि य ॥३५॥

ફાસઓ મરણ જે ઉ મરણ સે ઉ ઘણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ ચેવ, મરણ સઠાણઓવિ ય ॥૩૬॥
 ફાસઓ ગુરુણ જે ઉ, મરણ સે ઉ ઘણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ ચેવ, મરણ સઠાણઓવિ ય ॥૩૭॥
 ફાસઓ લઘુણ જે ઉ, મરણ સે ઉ ઘણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ ચેવ, મરણ સઠાણઓવિ ય ॥૩૮॥
 ફાસઓ સીયણ જે ઉ, મરણ સે ઉ ઘણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ ચેવ, મરણ સઠાણઓવિ ય ॥૩૯॥
 ફાસઓ ઝગદુણ જે ઉ મરણ સે ઉ ઘણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ ચેવ, મરણ સઠાણઓવિ ય ॥૪૦॥
 ફાસઓ નિરુણ જે ઉ, મરણ સે ઉ ઘણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ ચેવ, મરણ સઠાણઓવિ ય ॥૪૧॥
 ફાસઓ લુપ્તુણ જે ઉ, મરણ સે ઉ ઘણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ ચેવ, મરણ સઠાણઓવિ ય ॥૪૨॥
 પરિમગડલસઠાણે, મરણ સે ઉ ઘણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ ચેવ, મરણ ફાસઓવિ ય ॥૪૩॥
 સઠાણઓ મરે વદે, મરણ સે ઉ ઘણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ ચેવ, મરણ ફાસઓવિ ય ॥૪૪॥
 સઠાણઓ મરે તસે, મરણ સે ઉ ઘણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ ચેવ, મરણ ફાસઓવિ ય ॥૪૫॥
 સઠાણઓ ય ચડસે, મરણ સે ઉ ઘણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ ચેવ, મરણ ફાસઓવિ ય ॥૪૬॥
 જે આયવસઠાણે, મરણ સે ઉ ઘણઓ ।
 ગન્ધઓ રસઓ ચેવ, મરણ ફાસઓવિ ય ॥૪૭॥
 એના યજીવવિમત્તા, સમાસેણ વિચારિયા ।
 દત્તો જીવવિમત્તિ, તુચ્છામિ અણુપુલ્કરો ॥૪૮॥

ससारत्वा य सिद्धा य, दुःखेह जीवा रियाहिया ।

सिद्धा लेगधिदा सुसं, त मे किस्वयो सुख ॥३६॥

इत्थीपुरिससिद्धा य तदेव य नपुसगा ।

सलिंगे अग्रलिंगे य, गिहिलिंगे तदेव य ॥५०॥

उक्कोसोगादृणा य, जहन्नमन्निग्माह य ।

उद्दुग्धं य तिरिय च, ममुद्दम्मि अलम्मि य ॥५१॥

इस य नपुसपमु, वीस इत्थियासु य ।

पुरिससुं य अट्टसय, समपणेनेण सिग्गह ॥५२॥

यत्तारि य गिहिलिंगे, अग्रलिंगे दमेव य ।

सलिंगेण अट्टसय समपणेनेण सिग्गह ॥५३॥

उक्कोसोगादृणा य, सिद्धात्त जुगय दुये ।

यत्तारि जहन्नाय गज्जे अट्टुत्तर सय ॥५४॥

चउद्धलोप य दुये समुदे

तथो अले वीसमद्वे तदेव य ।

सय च अट्टुत्तर तिरियलोए,

सपणेनेण सिग्गहं धुय ॥५५॥

कहिं एदिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा परट्टिगा ?

कहिं योन्दि, चइत्तागा ? कथं ग नृण सिग्गहं ? ॥५६॥

अलोए पदिहया सिद्धा, लोयग्गे य परट्टिगा ।

इह योन्दि चइत्तागा, तथं ग नृण सिग्गहं ॥५७॥

यारसहिं जोयणेहिं स उट्टस्सुउरि मवे ।

ईसिपमारनामा उ, पुढनी छत्तामडिया ॥५८॥

पणयालसयसहसमा, जोयणाण तु आयया ।

तावइय चेष वित्थिण्णा तिगुणो साहिय वरिरिआ ॥५९॥

अट्टजोयणवाहणा, सा मज्झिमि विवाहिया ।
परिहागती चरिमते, मच्छिपत्ताउ तल्लुवयसी ॥६०॥

अज्जुणमुयणममई,

सा पुदयी निम्मला सहायण ।

उत्ताणगच्छनगमडिया य

भणिया

जिण्वरेहि ॥६१॥

मत्तकपुइसकासा, पण्डरा निम्मला सहा ।

सीयाए जोयणे गत्तो छोयन्तो उ दिवाहिओ ॥६२॥

जोयणस्स उ जो मत्थ, दोसो उवरिमो भये ।

तस्स कोसस्स छम्भाए, सिक्काणोगाहणा भये ॥६३॥

तथ सिद्धा महामाणा, रोगग्गमि पइट्ठिया ।

भवपयचओ मुक्का, सिद्धि घरगइ गया ॥६४॥

उस्सेहो अस्स जो हाइ, भवमि चरिममि उ ।

तिभागहीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भये ॥६५॥

एगसेण नाइया, अपज्जयसियायि य ।

पुइत्तण अणाइया, अपज्जयसियायि य ॥६६॥

गरुणिओ जीयणो नाणदमणसन्निया ।

अउल सुह सपत्ता, उउमा जम्म नयि उ ॥६७॥

लोगेगदेमे तं सग्गे, नाणदसणसन्निया ।

ससारपाग्नितियणा, सिद्धि घरगइ गया ॥६८॥

समागत्था उ जे जीया, दुविहा ते विवाहिया ।

नसा य धायरा चैय, धायरा तिविहा तहि ॥६९॥

पुदयी आउजीया य, तहेउ य घणस्सई ।

इणेए धायरा तिविहा तेसि नेए सुणेइ नि ॥७०॥

दुविहा उ पुदरीजीया सुदुमा धायरा सह ।

पज्जसमपज्जता, एवमेए दुहा पुणे ॥७१॥

रत्न उ उ पञ्चता, बुविहा त त्रियादिया ।

रत्न सग य बोधना, सगहा मत्तविहा तहि ॥७२॥

रत्न नाना य रत्निना य, हलिहा सुक्किना तहा ।

रत्न रत्नमत्तिना, मरा छत्तीसईविहा ॥७३॥

रत्न य मकरा बालुया य,

उरले सिन्हा य लोणुमे ।

रत्न-रत्न तउय-भीसय,

रत्न-रुम्भय य घरे य ॥७४॥

रत्निना रत्निगुणय,

मणासिता सामगज्ज-पयाले ।

ममपदसम्भालुय,

यायराय मणिविहालो ॥७५॥

गामज्ज य रत्नो, अर फलिहे य लोहियक्कये य ।

रत्न ममारगोह, भुयमोयग-इन्दनीले य ॥७६॥

रत्न रत्न इंसग मे, पुक्क मोगधिप य रत्न-य ।

उदणहवेरिण, अन्नग्गे मरुक्कने य ॥७७॥

रत्न सत्पुदयीण, भया छत्तीसमाहिया ।

रत्न रत्ननागता, सुद्धमा तत्त त्रियादिया ॥७८॥

रत्न य स-उग्गेममि, लोणुमे य यायरा ।

रत्ना बालिमाग तु, बुद्ध तेमि चउत्तिह ॥७९॥

मरा पण्डुया, अययसिदावि य ।

रत्न पद्ध मारिया, सपद्धसियावि य ॥८०॥

रत्नीममदस्माह, वासाणुक्कोलिया मरे ।

रत्नी पुर्वाणा, यतोमुद्ध अहमिया ॥८१॥

यगदवाक्कुक्कोम, यतोमुद्ध अहमिया ।

रत्नी पुर्वाणा, यतोमुद्ध अहमिया ।

अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्मय ।
 त्रिजदम्भि सप काप, पुदयिजीगण अन्तर ॥८३॥
 एएसि यण्णओ वेव, गन्धओ रसकासओ ।
 सटाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥८४॥
 दुविहा आउजीगो उ सुहुमा यायरा तहा ।
 पज्जरामपज्जत्ता, एवमेउ दुहा पुणो ॥८५॥
 यायरा जे उ पज्जत्ता पचहा त पकितिया ।
 सुद्धोदप य उम्से य हरतण्ण महिया हिमै ॥८६॥
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ विपारिया ।
 सुहुमा सन्धलोगम्भि लोमहेसे य यायरा ॥८७॥
 सतर पप्पऽशाईया, गपज्जउलियायि ।
 ठिइ पटुच्च साइया सपज्जवसियावि य ॥८८॥
 सत्तव सहस्साइ वामाण्णुक्कोलिया भवे ।
 आउठिई आऊगा अन्तोमुहुत्त जहन्मिया ॥८९॥
 असखकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्मय ।
 कापठिई आऊगा त काय तु अमु रणो ॥९०॥
 अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्मय ।
 त्रिजदम्भि सप काप, माऊभीवाण अन्तर ॥९१॥
 एएसि यण्णओ वेव, गन्धओ रसकासओ ।
 सटाणादेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥९२॥
 दुविहा वण्णस्सईजीग, सुहुमा यायरा तहा ।
 पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेउ दुहा पुणो ॥९३॥
 गयरा जे उ पज्जर, दुविहा ते विपारिया ।
 साहाण्ण गीरा य, पत्तेगा य तहेउ य ॥९४॥
 पत्तेगसरीराओऽण्णेगहा, न पकितिया ।
 रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया चली तणा तहा ॥९५॥

चलया 'प'पगा कुट्टुला, जलरदा आमदी तहा ।
 हरियकाया बोध-ग पसेमा इह धाटिया ॥६६॥
 साहारणमरीराओऽखेगहा, ते पकितिया ।
 आसुर मूलप चेउ सिगयेरे तहेय य ॥६७॥
 हिरिली तिरिली सन्तिसरिली, जायइ केयक-दली ।
 पलएदुलमएक-र य कन्दली य कुट्टुअए ॥६८॥
 सोहिणीइयन्थी हय, पुदमा य तहेय य ।
 कण्हे य यज्ज-र य, कन्दे मूरएए तहा ॥६९॥
 अदनकरणी य बोध-ग, तीहकण्णी तहेय य ।
 मुमुण्दी य हलिहा य, नेगहा पउमायओ ॥७०॥
 पगनिहमणाएसा सुदुमा त-उ दियाहिया ।
 तुदुमा सअल्लोगमिप, लागदम य पायरा ॥७१॥
 सतर पउ गार्प्या, अयज्जअतियाये य ।
 डिह पदुअ माइया सयज्जअतियावि य ॥७२॥
 कम चेउ सहस्साह, यासाणुआतिया भये ।
 यण्णफइण गाठ तु अतोमुहुत्त जहअय ॥७३॥
 अणन्तका-मुजेस अतोमुहुत्त जहअय ।
 कायडिई पण्णगाण त काय तु अमुचओ ॥७४॥
 असखकालमुआस अतोमुहुत्त जहअय ।
 विज्जहम्मि सर काए, पण्णगीवाण अतर ॥७५॥
 पणसि यणओ चेउ, ग-अओ रसफासओ ।
 सडागादमओ यावि, विहाणाह सहस्सरओ ॥७६॥
 एअए धाउरा तिबिदा, समासेण दियाहिया ।
 इत्ता उ तसे तिगिहे, पु-आमि अणुपु-यमा ॥७७॥

तेऊ घाऊ य घोधव्या, उराला य तसा तहा ।
 इधेए तमा तिविहा, तेसि मेए सुखेद मे ॥१८॥
 दुविहा तेउजीया उ, सुहुमा वायरा तहा ।
 पज्जरामपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥१०९॥
 वायरा जे उ पज्जत्ताऽखेगहा स दियादिया ।
 रगादे मुम्मुरे अगणी अशिनाला तहेय य ॥११०॥
 उक्का रिउजू य घोधव्या खेगहा एवमायओ ।
 एगविहमणाएत्ता, सुहुमा ते दियादिया ॥१११॥
 सुहुमा सत्तगतोगम्मि, सोऽदेसे य वायरा ।
 इत्तो कालविभाग तु, नत्ति पुच्छ छउच्चिह ॥११२॥
 सत्तए पत्तऽणाइया अज्जवत्तियावि य ।
 ठिर पद्ध सारया सपज्जवत्तियावि य ॥११३॥
 तिरणेअ अद्दोत्ता, उक्कोमेण वियादिया ।
 आउठिई तेऊरा, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥११४॥
 असत्तकालमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नय ।
 कायठिई तेऊरा त काय तु अमुचओ ॥११५॥
 अणत्तकालमुक्कोस, अतोमुहुत्त जहन्नय ।
 विज्जदम्मि सए काय, तेउजीयाण अत्तर ॥११६॥
 एएसि वगणओ चेअ, मच्चओ रसकासओ ।
 सठाणदेसओ वावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥११७॥
 दुविहा याउजीया उ, सुहुमा वायरा तहा ।
 पज्जरामपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥११८॥
 वायरा जे उ पज्जत्ता, पञ्चा ते पक्कितिया ।
 उक्कलिया मण्डलिया घणमुज्जा सुद्धयाया य ॥११९॥
 सवट्ठगवाये य, खेगहा एवमायओ ।
 एगविहमणाएत्ता, सुहुमा तत्थ दियादिया ॥१२०॥ ।

सुदुमा स-यलोगम्मि, लोमदसे य वाधमा ।
 इतो बालविमाण तु, नेमि धुच्छ वडन्निद ॥१२८॥
 स तर पण्डाडया, अपञ्जपसियात्रि य ।
 डिह पदुय साइया, मपञ्जपसियात्रि य ॥१२९॥
 निगोय सहस्रस, यामालुकाभिया मये ।
 आउडिई पाऊण भ-य मुत्तुत्त तट्ठिया ॥१३०॥
 अमलबालमुक्कोस, अतोमुत्तुत्त जइअय ।
 कायडिई पाऊण, न काय मुत्तुत्त ॥१३१॥
 अमलबालमुक्कोस, अतोमुत्तुत्त जइअय ।
 निजइम्मि सण काण वाऊजीवाण अ-तर ॥१३२॥
 एणमि यण्णयो येउ ग-धम्मो रमफामया ।
 सगणदसको पायि, रिहणाह महम्मसो ॥१३३॥
 उराण तत्ता ज उ, वडहा न पफित्तिया ।
 पेइन्दिवा-नेइन्दिवा-अउरो पचिन्दिवा तत्ता ॥१३४॥
 पेइन्दिवा उ जे जीवा, दुट्ठिहा न पफित्तिया ।
 पञ्जसपमज्झसा, तन्नि मेण सुलेह मे ॥१३५॥
 रिमिणा मोवहुला यय, अलमा माइयाइया ।
 पानीमुह य तिणिया सत्ता मय-उणा तत्ता ॥१३६॥
 पलोयाणुइया येय तहेय य वराइया ।
 जलुगा जालणा चेउ अ-दणा य तहेउ य ॥१३७॥
 इह पेइन्दिवा एण्डोमहा पवमाययो ।
 लोमेगदेसे ते सग्गे, न स-यत्थ विगालिया ॥१३८॥
 सतर पण्डाडया अपञ्जपसियात्रि य ।
 डिह पदुय माइया, मपञ्जपसियात्रि य ॥१३९॥
 वासाह वारमा चेउ उकोलेण विगालिया ।
 पेइन्दिवा आउडिई अतोमुत्तुत्त जइअया ॥१४०॥

सखिज्जकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहणय ।
 तेइन्दियकायठिई, त काय तु अमुचओ ॥१३८॥
 अण तकासमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहणय ।
 तेइन्दियजीवाण, अन्तर च वियादिय ॥१३९॥
 एणसि जगणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 सठाणाइसओ पावि, जिहाणाइ महस्ससो ॥१४०॥
 तेइन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पक्खितिया ।
 पज्जसमपज्जत्ता, नेमि मेए सुणेह मे ॥१४१॥
 पुणुपिरीलि उहुत्ता, उणलुहदिया तदा ।
 तणहारवडुहारा य, मालुगा पत्तहारगा ॥१४२॥
 कपासट्ठिमिज्जा य, तिदुगा नउममिज्जगा ।
 सदाउरी य गुम्मी य, ओधव्या इदगाइया ॥१४३॥
 इइगोघममाइया जेगहा पवमायओ ।
 लोगेगदेसे ते मजे, न सउत्थ वियादिया ॥१४४॥
 सतइ पण्डणाईया, अपज्जपसियावि य ।
 ठिइ पटुअ माईया, सपज्जपसियावि य ॥१४५॥
 पगूणपणणहारत्ता, उक्कोसेण वियादिया ।
 तेइन्दियकायठिई, अन्तोमुहुत्ता जहणिया ॥१४६॥
 सखिज्जकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्ता जहणय ।
 तेइन्दियकायठिई, त काय तु अमुचओ ॥१४७॥
 अणन्तरालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्ता जहणय ।
 तेइन्दियजीवाण, अन्तर तु वियादिय ॥१४८॥
 एणसि पाणणओ चेव, गन्धओ रसफासओ ।
 सठाणाइसओ पावि जिहाणाइ महस्ससो ॥१४९॥
 चउरिन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पक्खितिया ।
 पज्जसमपज्जत्ता, तमि मेए सुणेह मे ॥१५०॥

अधिया पोत्तिग खेउ, मन्टिया ममगा नहा ।

धमरे कीडवयो य दिवुरो करुणो नहा ॥१४॥

कुक्कुटे सिमिरीही य उदायस य दिवुण ।

डोल सिमिरीही य, विरिली अदिइयहए ॥१५॥

अउने मादए अदिइरोडण,

विनिसे वितापसण ।

उदिजडिया जलकारी य,

नीया तनयय इया ॥१६॥

इय अउदिदिवा ण उल्लेगहा एयमायसी ।

ओलेगदमे न मये, न सय्याण विवाहिया ॥१७॥

मतए वण्डणइया, अयअयसिया वि य ।

डिइ पदुय साईण, मयअरसिया वि य ॥१८॥

इंणय माताऊ, उकोसेण विवाहिया ।

अउतिदिययाउडिई, अतोमुदुत्त जहनि य ॥१९॥

सदिअकालमुकोस, अतोमुदुत्त अदयय ।

अउति इयकायन्नि, न काय तु अमुचमो ॥२०॥

अणतकालमुकोस, अतामुदुत्त अदयय ।

अउति अयनीरण, अजर य विवाहिय ॥२१॥

अपसि उणणओ खेउ, गयया रसकामओ ।

सडण देसओ यावि, विहाणाइ सअममो ॥२२॥

अदिदिवा उ ले जीया, अउतिइहा स विवाहिया ।

उरएवतिरिक्कया य, मणुया दया य आन्या ॥२३॥

नेरदया मत्तविहा, पुन्यीमु रत्तामु मये ।

एयणाममकागमा, याउयामा य धाहिया ॥२४॥

पक्वामा ध्रुवामा, तमा तमतमा तदा ।

इह नेरदया एष, मत्तदा परिक्रितिया ॥१५८॥

लोगस्त एगदसम्भि, ते सन्ने उ दियःहिया ।

एत्तो फालविभाग तु, घोळ्ते तेसि चउन्विह ॥१५९॥

मत्तइ पक्वऽणार्इया, अपज्जवसियावि य ।

टिइ पद्दुय साइया, मपज्जवसियावि य ॥१६०॥

सागरोउममेग तु उक्कोसेण विवाहिया ।

पढमाए जहमेण दसयामसहस्मिया ॥१६१॥

तिण्णेउ सागरा ऊ, उक्कोसेण विवाहिया ।

दोष्ठाए जहमेण, एग तु सागरोवम ॥१६२॥

सत्तेय सागरा ऊ, उक्कोसेण विवाहिया ।

मइयाए जहमेण, तिण्णेउ सागरोवमा ॥१६३॥

दस सागरोउमा ऊ, उक्कोसेण विवाहिया ।

चउत्तीए जहमेण सत्तेय सागरोवमा ॥१६४॥

सत्तरस सागरा ऊ, उक्कोसेण विवाहिया ।

पचमाए जहमेण, दस चेउ सागरोउमा ॥१६५॥

थारीस सागरा ऊ, उक्कोसेण विवाहिया ।

छट्ठीए जहमेण सत्तरस सागरोवमा ॥१६६॥

तेत्तीम सागरा ऊ उक्कोसेण विवाहिया ।

सत्तमाए जहमेण, थारीस सागरोवमा ॥१६७॥

आ चेउ य आउठिई, नेरइयाण विवाहिया ।

सा तेसि कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ॥१६८॥

अणुतकालमुक्कोस अतोमुहुस जहन्नुय ।

विजडम्मि सण काण, नेरइयाण तु अन्तर ॥१६९॥

एएसि उगलथो चेउ ॥ वथो रसफासभो ।

सठाणदेमथो थाने, विहाणाइ सहस्ससो ॥१७०॥

पञ्चिन्द्रियतिरिक्ताओ

दुविहा ते त्रियाहिया ।

ममुच्छिन्नतिरिक्ताओ,

गन्मवकनिया तदा ॥१७१॥

दुविहा ते भवे ति विहा, जलपरा यलपरा तदा ।

नहयरा य योधरा, तेनि मेय सुखेह मे ॥१७२॥

मच्छा य कच्छमा य गाहा य मगरा तदा ।

सुसुमारा य योधरा पचहा जलपराहिया ॥ ७३॥

लोपगनेसे ते मध्ये, न मध्यस्थ त्रियाहिया ।

एतो कालत्रिभाग तु योच्छ तेनि चउव्विह ॥१७४॥

सतह पण्ड उणाईया, अपज्जसिया चि य ।

ठिह पडुच्च सार्हया, सपज्जसिया त्रि य ॥१७५॥

एगा य पुण्डकोही, उकोसेण चियाहिया ।

आउठिई जलपराण अतोमुहुत्त जहन्निया ॥१७६॥

पुण्डकोडिपुहत्त तु उकोसेण त्रियाहिया ।

कायठिई जलपराण, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ॥१७७॥

अण्णत्तकालमुकोत्त अतोमुहुत्त जहन्नय ।

विज्जदम्मि सप काण, उणयराण तु अन्तर ॥१७८॥

(एएनि वगणओ खेउ गच्छओ रमफासओ ।

सडाणादेमओ धावि विहाणाह सहस्सओ ॥)

चउप्पवा य पणिसणा, दुविहा यलपरा भवे ।

चउप्पवा चउविहा उ, ते मे कित्तयमा सुण ॥१७९॥

एगत्तुरा दुत्तुरा खेउ, गगहीपयमणुहप्पया ।

हयमाहगोणुमाहगयमाहसीहमाहणो ॥१८०॥

भुञ्जोरगपरिसण्या य, परिसण्या दुविहा भवे ।

गोहाई गहिमाई य, ण्केकालेगहा भवे ॥१८१॥

लोणगदेसे ते सद्ये, न सचय विवाहिया ।

एतो कालविभाग तु, बोद्ध तेसि चउत्तिह ॥१८२॥

सतइ पण्य ऽणाईया, अपज्जयसियावि य ।

ठिह पट्टय साईया, सपज्जयसियावि य ॥१८३॥

पलिओयमाइ तिलिण उ, उकोमेण विवाहिया ।

आउठिई धलयराण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥१८४॥

पलिओयमाइ तिलिण उ, उकोमेण विवाहिया ।

कायठिई धलयराण अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥१८५॥

कालमणनमुकोस, अ तोमुहुत्त जहन्नय ।

विजडम्मि सए काण, धलयराण तु अत्त ॥१८६॥

चम्मे उ लोमपक्खी य,

तइया समुग्गपक्खिया ।

विगयपक्खी य बोधव्या,

पक्खिणे य चउत्तिह ॥१८७॥

लोणेगदेसे ते सद्ये, न सचय विवाहिया ।

एतो कालविभाग तु, बोद्ध तेसि चउत्तिह ॥१८८॥

सतइ पण्य ऽणाईया, अपज्जयसियावि य ।

ठिह पट्टय साईया, सपज्जयसियावि य ॥१८९॥

पलिओयमस्स भागो अमग्गेज्जइमो भवे ।

आउठिई धलयराण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥१९०॥

असल्लमाग पलियस्स, उकोमेण उ साहिया ।

पुण्णकोडीपुहत्तेण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥१९१॥

कायटिह् पद्वयराण, अ-तरे तेसिमे भवे ।
 अण-तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ॥१९२॥
 पणसि वगुओ चेउ, ग-धओ रसफासओ ।
 सदाणादेसओ वाचि, विहाणाह सहस्ससो ॥१९३॥
 मणुया दुदिहमेया उ, ते मे कित्तयओ सुण ।
 समुच्छिमा य मणुया, ग-मवज्जितिया तहा ॥१९४॥
 गम्मवज्जितिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया ।
 कम्मअकम्मभूमा य, अ-तरदीपया तहा ॥१९५॥
 पन्नरस तीसविहा, चेया अट्टीसह ।
 सखा उ कमसो तसिं, इह एसा वियाहिया ॥१९६॥
 समुच्छिमाण पसेव, मेओ होए वियाहियो ।
 लोमस्स पग-मम्मि, ते सरवे वि वियाहिया ॥१९७॥
 मत्तह पण्य ऽणुइया, अणज्जवसियायि य ।
 ठिह पदुष साइया, सपज्जयसियायि य ॥१९८॥
 पल्लिओयमाइ तिलिण्वि, उक्कासेउ वियाहिया ।
 आउट्टिह मणुयाण, अ-तामुहुत्त जहन्निया ॥१९९॥
 पल्लिओयमाइ तिलिण उ, उक्कोसेण वियाहिया ।
 पुव्वओडिपुहसेण, अ-नामुहुत्त जहन्नय ॥२००॥
 कायटिह् मणुयाणा, अ-तर तेसिम भवे ।
 मण-तकालमुक्कोस, अ-तोमुहुत्त जहन्नय ॥२०१॥
 पणसि वगुओ चेउ, ग-धओ रसफासओ ।
 सदाणादेसओ वाचि, विहाणाह सहस्ससो ॥२०२॥
 दया चउ विहा बुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण ।
 भोमिज्ज गणम-तरजोइसवेमाणिया तहा ॥२०३॥

हेट्टिमाहेट्टिमा चेष, हेट्टिमाउपरिमा तदा ।

हेट्टिमाउपरिमा चेष, मज्झिमाहेट्टिमा तदा ॥२६॥

मज्झिमाउपरिमा चेष

मज्झिमाउपरिमा तदा ।

उपरिमाहेट्टिमा चेष,

उपरिमाउपरिमा तदा ॥२७॥

उपरिमाउपरिमा चेष, इय गयिज्जगा सुरा ।

विज्जगा चेषयत्ता य जयत्ता अपगन्विता ॥२८॥

सत्त्वयल्लिङ्गा चेष, पच्चदणुत्तग सुरा ।

इय यत्तालिङ्गा पगल्लेत्ता पयमाययो ॥२९॥

लागह्म पगमम्मि ने म जयि विगहिया ।

इता कालविमाग तु पुच्छममि मज्झिमा ॥३०॥

मज्झ पय ड्काङ्गा, मज्झउत्तिवायि य ।

टिह पच्च गह्मा, मज्झउत्तिवायि य ॥३१॥

मज्झिमाग पय उपायेण टिह मये ।

मौमज्झाण जहमेण, दमयामसहम्मिया ॥३२॥

(पत्तिआयम दो ऊला उक्कासेण विवाहिया ।

मसुरिन्धज्जेनाण जहमा दसमहम्मया ॥)

पत्तिआयममेण तु उक्कासेण टिह मये ।

यत्तराण जहमेण, दमयामसहम्मिया ॥३३॥

पत्तिआयममेण तु, यामलक्केण वाहिय ।

पत्तिआयमट्टमागो, जोहमेणु जहन्तिया ॥३४॥

दो चेष मागराह, उक्कासेण विवाहिया ।

माहम्ममि जहमेण, पग च पत्तिआयम ॥३५॥

सागरा साहिया दुनि, उकोसेण प्रियाहिया ।
 ईसागमि जहन्नेण, साहिय पलिओयमा ॥२२॥
 सागराणि य सत्तेव, उकोसेण ठिई भवे ।
 सणकुमारे जहन्नेण, दुनि उ सागरोयमा ॥२३॥
 साहिया सागरा सत्त उकोसेण ठिई भवे ।
 माहिन्दमि जहन्नेण, साहिया दुनि सागरा ॥२४॥
 दस चेत सागराह, उकोसेण ठिई भवे ।
 यम्मलोण जहन्नेण सत्त ऊ सागरोयमा ॥२५॥
 चउदससागराह, उकोसेण ठिई भवे ।
 ल-तगमि जहन्नेण, दस उ सागरोयमा ॥२६॥
 सत्तरससागराह, उकोसेण ठिई भवे ।
 महासुं जहन्नेण, सोदम सागरोयमा ॥२७॥
 अट्टारस सागराह, उकोसेण ठिई भवे ।
 सहस्मारमि जहन्नेण, सत्तरस सागरोयमा ॥२८॥
 सागरा अउणवीस तु, उकोसेण ठिई भवे ।
 आणगमि जहन्नेण, अट्ट रस सागरोयमा ॥२९॥
 बीस तु सागराह, उकोसेण ठिई भवे ।
 पाणयमि जहन्नेण, सागरा अउणवीसई ॥३०॥
 सागरा इक्कीस तु, उकोसेण ठिई भवे ।
 आरणमि जहन्नेण, बीसई सागरोयमा ॥३१॥
 वारीस सागराह, उकोसेण ठिई भवे ।
 वन्नुयमि जहन्नेण, सागरा इक्कीसई ॥३२॥
 तेरीससागराह, उकोसेण ठिई भवे ।
 पट्टममि जहन्नेण, वावीस सागरोयमा ॥३३॥

चउतीस सागरा इ उक्रोमेण ठिइ भवे ।
 गिइयमि जहन्नेण, तेतीस सागरोयमा ॥२३॥
 पणुतीस सागरा इ, उक्रोसेण ठिई भवे ।
 तइयमि जहन्नेण चउवीस सागरोयमा ॥२३५॥
 छरीस सागरा इ, उक्रोसेण ठिई भवे ।
 चउयमि जहन्नेण, सागरा पणुतीस इ ॥२३६॥
 सागरा सचरीस तु, उक्रोमेण ठिइ भवे ।
 पञ्चममि जहन्नेण सागरा उ छरीस ॥२३७॥
 सागरा षट्ठवीस तु, उक्रोसेण ठिई भवे ।
 छट्ठमि जहन्नेण, सागरा सचरीस इ ॥२३८॥
 सागरा अउगतीस तु, उक्रोसेण ठिइ भवे ।
 सप्तममि जहन्नेण सागरा षट्ठवीस इ ॥२३९॥
 तीस तु सागरा इ उक्रोमेण ठिइ भवे ।
 अट्ठममि जहन्नेण, सागरा अउगतीस इ ॥२४०॥
 सागरा इक्कीस तु, उक्रोसेण ठिई भवे ।
 नवममि जहन्नेण, तीसई सागरोयमा ॥२४१॥
 तेत्तीसा सागरा इ उक्रोसेण ठिई भवे ।
 चउसुपि विजयाईसु, जहन्नेणेकतीसई ॥२४२॥
 अजहन्नेमणुकास, तेत्तीस सागराउमा ।
 महाविमाणे सवडे ठिइ पसा त्रियाहिया ॥२४३॥
 जा चेय उ भाउठिई, दमाण तु त्रियाहिया ।
 मा तेसि कायठिइ, जहन्नेमुक्कोसिया भवे ॥२४४॥
 अतामुहुत्त जहन्नेय ।
 काय, देवाण हुज्ज अत्तर ॥२४५॥

एषमि यगणमो चेव, न धमो रमपासमो ।
 सडाणादममो यायि, विहाणादमदस्तसो ॥४६॥
 (अणुतकालमुक्कोम घासपुट्त जहगम ।
 भागयाइ कप्पाण गेविज्जाण तु भन्तर ॥
 सग्गिज्जमागरक्कोम घासपुट्त जहगम ।
 अणुत्तराण य दय, मा भन्तर तु यियाहिंया)
 ससारत्था य सिद्धा य, इय जीया विवाहिंया ।
 रुपिणेा चेवऽरुपी य, मजीया दुविह, वि य ॥४७॥
 इय जीयमजीये य, मोघा सद्विहियु य ।
 मन्त्रय लमणुमए, रमेज्ज सज्जमे मुणी ॥४८॥
 तमो पट्ठणि घासाणि सामण्यमणुपालिय ।
 इमण कमजोगेण, अण्णाण सलिहे मुमी ॥४९॥
 पारसेव उ वासाइ, सलेह्कोसिया भवे ।
 सउरच्छरमग्गिमिया, जम्मासा य जह्निनया ॥५०॥
 पट्ठमे घासचउक्कमि विगई-निज्जुहण करे ।
 रिइण घासचउक्कमि, विविता तु तव चरे ॥५१॥
 पगन्तरमायाम, कट्ठु सवच्छर दुये ।
 तमो सवच्छरज्ज तु, नाइग्गिट्ठु तव चरे ॥५२॥
 तमो सवच्छरज्ज तु, विग्गिट्ठु तु तव चरे ।
 परिमिय चंघ आयाम, तग्गि सवच्छरे करे ॥५३॥
 कोडी सहियमायाम, कट्ठु सवच्छर मुली ।
 मासज्जमासिपण तु, आहारेण तव चरे ॥५४॥

क इप्पमाभिभोग च,

विधियसिय मोहमासुरज्ज च ।

एषाउ दुग्धहंसो,

मरणमि विगहिया होति ॥२५॥

मिच्छादमणरत्ता, मनियत्ता उ हिंसगा ।

इय जे मरति जीवा, तेमि पुण दुल्ला बोही ॥२६॥

सम्महमणरत्ता, अनियाशा मुक्केममोगाडा ।

इय जे मरति जीग, तमि तुलदा मवे बोही ॥२७॥

मिच्छादमणरत्ता,

सनिय गा कगहलेममोगाडा ।

इय जे मरति जीवा,

तमि पुण दुल्ला बोही ॥२८॥

जिणउयणे अणुरत्ता, विणउयण जे करेति भावेण ।

अम ता अमरिस्सिद्धा, ते होति वरिससमारी ॥२९॥

गणमरणानि बहुमो,

अकाममरणाणि चेष य वहणि ।

मरिहति ते यराया,

जिणउयण जे न जाणति ॥ ३०॥

यहुआगमविधायणा, समाहिउपायणा य तुलगाणी ।

एएण कारणेण अरिहा आलोयण गो ॥३१॥

कदप्यकुक्कुयाह, तह सीलसहाउहमणमिगरह ।

विम्हावेतोधि प ॥ कदप्य भावण कुणह ॥३२॥

मत्ताजोग काउ, भूइकम्म च ज पउज्जति ।

साय-रम-इडिन्हेउ ॥ मिशोग भावण कुणह ॥३३॥

नाणम्म वउलीण धम्मायगियम्म मवमउभं ।

माई अउणपार्ह, विविसिय माउग कुणह ॥३४॥

अणुवद्धरोसपमगे, तह य निमित्तमि हा शरिमेदी ।

सत्यगृहण विममकरणा च, - -
जलगा च जलगवेसो य ।

अणायारभण्डमयी,

जम्मणमरणाणि घघति ॥२६६॥

इय पाडकर बुद्ध, नायण पग्गिनिवुण ।

छत्तीस उत्तरजभाण, भवसिद्धियसबुद्धे' ॥२६७॥ सि वेमि

॥ जाशनीगग्गिभत्ती समत्ता ॥२८॥

॥ उत्तरज्झयणमुत्त समत्त ॥



॥ सिरी तंदीसुत्तं ॥

- --१२५५८॥-

अथ जगज्जीवज्जोर्णीविपालयो, चमगुरु जगज्जरो ।
जगज्जरो जगज्जरो, अथ चमगुरुज्जरो भवथ ॥१॥
अथ सुभागा वमयो, निचयरा गा अथिद्धमा अथ ।
अथ गुरु लोकाणां, अथ महत्त्वा महावीरा ॥२॥
अथ मरुज्जगुज्जोवमम्, अथ विजम्न धीरम् ।
अथ सुगसुरनमनिवम्, अथ धुपरवम् ॥३॥
गुणभयगुणगुण सुपरवम् अथि वमगुणिसुद्धरागा ।
मधनगर १ अथ न, अथि वमगुणिसुद्धरागा ॥४॥
मज्जम-तद-धुपरवम्, नमो सम्मत्तपारिपुष्टम् ।
अथि वमगुणिसुद्धरागा ॥५॥
अथ मालवडागुणिसुद्धरागा, तथनिवमगुणिसुद्धरागा ।
तथरुद्धम् मगज्जो, सज्ज्जायतुनन्दिधोतरम् ॥६॥
वमरयज्जोहविणि गायम्, सुपरवणदीप्तातरम् ।
पथ महत्त्वायचिरकथिवम्, गुणरत्तरातरम् ॥७॥
सायगपगुणमदुद्धर-परिपुष्टम्, जिहमूतेयपुष्टम् ।
मधवडम् अथ मगज्जगुणमदुद्धरपथरम् ॥८॥

तवसजममयलङ्घन, अकिरियराहुमुहदुद्धरिस निध ।
 जव सघचव निम्मलसम्पत्तविसुद्धजोगदागा ॥९॥
 परतितियनहपहनासगम्स, तघतेयदिसलेसस्स ।
 नाणुजोयस्स जए, भइ दममघमूरस्स ॥१०॥
 भइ धिइवेनापरिगयस्स सज्जायजोगमगरस्स ।
 अकलोहस्स भगउणो, सघसमुद्धरस इवस्स ॥११॥
 सम्पदसगयरघइइदम्हगाढायगाढपद्धरस ।
 धम्मघरयणमडियचाप्पोयरमेहलागस्स ॥१२॥
 नियमूसियकणयसिलायलुज्जटाजलतचित्तकूडस्स ।
 नदणयणमणहरसुरभितील नधुद्धमायस्स ॥१३॥
 जीवदयासुद्धरवद्धरहरियमुणियरम्हइअस्स ।
 हेउसयधाउपगलनरयणदिसोसहिगुहस्स ॥१४॥
 सपरघरजलपगलियउउक्कपरिरायमाणहारस्स ।
 साउगज्जणउउररघतमारनघतकुहरस्स ॥१५॥
 विणयनयपरमुणियरपुरेनदिउज्जलतसिहरस्स ।
 विविहगुणकपरकल्लगफलभरउत्तुमाउलवणस्स ॥१६॥
 नाणयरयणदिप्पतकतवेरुलियविमलचूलस्स ।
 यवामि विणयपण्णो, सघमहामद्धगिरिस्स ॥१७॥
 अणुणरयणुजलकडय मीलसुगधितघमडिउदेम ।
 सुयथारसगसिल सघमहामदर घदे ॥१८॥
 इनगररचकपउमे चढे सूर ससुद्धमेरुम्मि ।
 जा उवमिज्जइ मयय, त सघगुणायर घदे ॥१९॥
 [चद] उवम अत्रिय यवचमभिनदणसुमइसुण्यमसुपास ।
 ससिपुण्णदतसीयलरिज्जस चासुपुज्ज घ ॥२०॥
 ॥टीकायां तु म ।

विमलवगात य धम्म मतिं कुतु अर च महि च ।
 मुनिसु वयनमिनिमि पास तह वद्धमाणा च ॥२॥
 पट्टमित्थ इदभूइ वीए पुण होइ अग्गिमूइत्ति ।
 तइए य याउभूई, तओ दियत्त सुहम्मं य ॥३॥
 मज्झिम-ओरियपुत्ते अकपिण चेय अयलभाया य ।
 मअज्ज य पहासे गगहग हुत्ति वीरस्स ॥४॥
 निग्गुरपहसामणुय, जवइ सया ॥ उभायत्तसणय ।
 दुसमयमयनासणय जिणिदउरवीरसासणय ॥५॥
 सुहम्म अग्गिरेमाणा, जनुनाम च वासव ।
 पमउ वध यणा वदे, व-उ सिजमउ नहा ॥६॥
 तममह तुगिय वदे समूय चेउ मात्त ।
 भइगाह च पाइअ, धूलमह च वायम ॥७॥
 एतावच्चसगोत्त, य दामि महागिणि सुहरिं च ।
 तत्तो कोलियगोत्त, यहुलस्स सरिउय वन्द ॥८॥
 हारियगुत्त साइ च, उन्दिमो हारिय च नामज्ज ।
 वदे कोमियगात्त, सहिरत्त अज्जजीवधर ॥९॥
 तिसमुहपापमित्ति, तीउसमुहमु गहियपयाल ।
 वदे अज्जसमुह अकुरुमियममुहगभार ॥१०॥
 भणुग वरग भरण, पभाचग खणुत्तसणगुणाण ।
 व-दामि अज्जमगु मुयसागरपारग वीर ॥११॥
 उन्दिमि अज्जधम्म, तत्तो व-ए मइगुत्त च ।
 तत्तो य अज्जवइ तयनियमगुणेहिं वइरसम ॥१२॥
 व-दामि अज्जरक्खियरसमणे रक्खिय चरित्तस वस्से ।
 रयणकरडगभूओ, अणुभागे रक्खिओ जेहिं ॥१३॥

नाणम्मि दसणम्मि य, तच्चविण्णं जिञ्चकालमुज्जुत्त ।
 अज्ज नदिलत्तमण, सिरसा वदे पसन्धमण ॥३३॥
 वहुउ वायगत्तसो, जमत्तसो अज्जनागहत्थीण ।
 त्तागरणकरणभगियक्कम्मप्पयडीपहाणाण ॥३४॥
 जञ्चजणधाउत्तमप्पणाणमुदियकुत्तलयनिहाण ।
 उहुउ वायगत्तसो रपइनक्खत्तनामाणा ॥३५॥
 अयलपुरा जिक्खत्ते कालियसुयक्खालुओगिय चीरे ।
 उभहीउगसीहे वायगत्तमुत्तम पत्त ॥३६॥
 जेसि इमो कणुओगो पयइ अज्जावि अह्दभरहम्मि ।
 यहुनवरनिगयज्जत्ते, ते उद्दत्तिसायरिय ॥३७॥
 तत्ता हिमवत्तमहतत्तिकमे धिरवरक्कमणत्ते ।
 सत्तक्कायमणत्तधरे, हिमत्तने वदिमो सिरसा ॥३८॥
 कालियसुयक्खालुओगत्त धारण धारण य पुज्याणा ।
 हिमवत्तत्तमासमणे, वदे एगज्जुणावरिये ॥३९॥
 मिउमहत्तसग्गे, अणुपुड्डि^१ व यगत्तणा पत्ते ।
 ओहत्तुयत्तमायारे त्तागज्जुणवायण वदे ॥४०॥
 गोविंदाणा पि नमो अणुओगत्तिउलधारिणिंदेणा ।
 जिञ्च सत्तिदयाणा परूवणे दुल्लभि दाणा ॥४१॥
 तत्तो य भूयत्तिअ दिच्च तथ सज्जमे चनिप्पिणा ।
 पडियजण सामण्णा उदामि सज्जमप्पिहिण्णु ॥४२॥
 यक्कणगतवियचपगद्धिमउलधरक्कमत्तगम्भसरियत्ते ।
 भवियजणदिययद्दण दयाणुणत्तिसारण चीरे ॥४३॥
 अह्दभरहप्पणाणे बहुविहसज्जायमुमुत्तिय पहाणे ।
 अणुओगियवरत्तसमे नाहत्तत्तलवत्तनदिवरे ॥४४॥

'अगमयद्विपगम्मे यन् ५ भूयतिप्रमायति ॥
 मयमयपु ७ यकरे सीमे नागजुलत्सील ॥४॥
 मृमुले यनिषा च मृमुनिग मुत्तत्यधारय य ६ ।
 'समायुष्मायगया गन्ध सोद्विषासाग ॥५॥
 च यमरयक्याणि मुममलुदक्यालुदकद्वनिपाणि ।
 ययय महरयाणि पययो वममामि दूभगणि ॥६॥
 तयनियममयस हमयिगयस्रयस्यतिमदयग्याग ।
 मील गुलुगदियाग अगुषाग युगगदहाग ग ॥७॥
 तुकुमानकामलमले ममि वगमामि मकस्यलपगय्य ।
 पाय पाययणीग पहिरुयमणहि पलियद्व ॥८॥
 जे अग यमयन काग्वियमुयथागुयोधिप पीरे ।
 न पदमिऊगु तिरमा मागमस पद्वला घाद्व ॥९॥

इति ।

मेम यल', बुदग, यालनि', परिपूयग, हम्', गद्विस्',
 मेमे य । यलग', जमृग', यिगली', 'नादग', 'गो', 'मेरी',
 'मासीरी', ॥१॥

सा ममासथो तिविहः पप्रसा तगहा—आगिया, अजा-
 लिया, दुद्वियहः । अगिया जहा गहा—यीरमिय जहा दसा
 जे पुद्वन्ति इह गुगुलसमिग । दोमेय दियज्वति न आगगु
 आगिय पमि ॥२॥

अजागिया जहा—आ होर पगदमदुरा मियछायसीह
 बुद्वद्वयमूया । ययगमिय असद्विया अजागिया सा भय
 पमि ॥३॥

१ भूयद्विपगम्मे । २ यदेम सोद्विष सवमायुष्मायसा लिष्ये ।

दुःखियद्वा जहा—त य क थद् निम्माओ न य पुच्छद्द परि
भवस्स दोसेण । धत्ति ण्य धायपुग्गणा कुट्टद्द मामिस्सययियद्द १४

(सूत्र) नामा पचविह पणत्त तजहा आभिणि धानियनाण,
सुयनाण, ओहिनाण, मणपञ्चवनाण, केवलनाण ॥सू० १॥

त समानओ दुविह पणत्त, तजहा—पञ्चकल च परोपल
च ॥सू० २॥

से किं त पञ्चकल ? पञ्चकल दुविह पणत्त, तजहा—
इत्थियपञ्चकल, नोद्दियपञ्चकल च ॥सू० ३॥

से किं त इत्थियपञ्चकल ? इत्थियपञ्चकल पचविह पणत्त
तजहा—नोद्दियपञ्चकल, चक्किरत्थियपञ्चकल, धानिन्थिय-
पञ्चकल, जिम्भित्थियपञ्चकल, फान्तिरियपञ्चकल, से त इत्थिय-
पञ्चकल ॥सू० ४॥

से किं त नोद्दियपञ्चकल ? नोद्दियपञ्चकल तिविह
पणत्त तजहा—ओहिनाणपञ्चकल, मणपञ्चवनाणपञ्चकल,
केवलनाणपञ्चकल ॥सू० ५॥

से किं त आग्निनाणपञ्चकल ? ओहिनाणपञ्चकल दुविह
पणत्त, तजहा—मधपञ्चइय च त्ताओवममिय च ॥सू० ६॥

से किं त मधपञ्चइय ? मधपञ्चइय दुग्गह, तजहा—देवाण
य नेरइयाण य ॥सू० ७॥

से किं त त्ताओवममिय ? त्ताओवममिय दुग्गह, तजहा—
मणुत्ताण य पचेत्थित्थिरिक्खजोणियाण य । को हेऊ खओव-

समिय ? लभोवसमिय तपायरनिजाणा कम्पणा उदिगणा
लपणा, अणुदिगणा उवसमेण भोदिनाण समुणज्जइ ॥ मू० २ ॥

अहया गुणपट्टिधम्मस्स अणुगाग्गस्स भोदिनाण समुणज्जइ
त समामओ सुव्विह पणत्त, तज्जहा-आणुगामिये अणु-
गामिये, वड्ढमाण्ये, हीयमाण्ये, पट्टिगण्ये, अपट्टिया
इय ॥ सु० ६ ॥

से किं त आणुगामिय भोदिनाण ? आणुगामिय भोदि-
नाण दुग्धि पणत्त, तज्जहा-अतगय च मज्झगय च । से किं
त भतगय ? भतगय तिविह पणत्त तज्जहा-पुरओ भतगय
मगगओ अतगय, पासओ भतगय । से किं त पुरओ भतगय ?
पुरओ भतगय-से जहानामए वेइ पुरिसे उक्क वा चड्डलिय वा
अलाय वा मणि वा पईय वा जोइ वा पुरओ काउ पण्हे-
माणे २ गच्छिज्जा, से त पुरओ अतगय । से किं त मगगओ
भतगय ? मगगओ भतगय-से जहानामए वेइ पुरिसे उक्क वा
चड्डलिय वा अलाय वा मणि वा पईय वा जोइ वा मगगओ
काउ अणुइइमाणे २ गच्छिज्जा, से त मगगओ भतगय । से
किं त पासओ भतगय ? पासओ भतगय-से जहानामए वेइ
पुरिसे उक्क वा चड्डलिय वा अलाय वा मणि वा पईय वा जोइ
वा पासओ काउ पण्हेमाणे २ गच्छिज्जा, से त पासओ
अतगय, से त भतगय । से किं त मज्झगय ? मज्झगय-से जहो
नामए वेइ पुरिसे उक्क वा चड्डलिय वा अलाय वा मणि वा
पईय वा जोइ वा मथए काउ समुक्कमाणे २ गच्छिज्जा से
त मज्झगय । अतगयस्स मज्झगयस्स च को परियेस्सो
पुरओ भतगयणा भोदिनाणेण पुरओ वेध

जे जोयणाइ जाणइ पासइ, मगगओ

समिय ? खओ उसमिय तपावरणिज्जाण कम्मान उदिण्णाण
खपण, मणुदिण्णाण उ उसमेण ओहिनाण समुणज्जइ ॥ मू० ८॥

अहवा गुरुपटिवन्नम्म अणगारम्म ओहिनाण समुणज्जइ
त समासओ दुविह पणुत्त, तज्जहा-आणुगामिय अण-
णुगामिय, वड्हमाणय, हीयमाणय, पडिगइय, अप्पडिवा
इय ॥ सू० ६ ॥

से किं त आणुगामिय ओहिनाण ? आणुगामिय ओहि-
नाण दुविह पणुत्त, तज्जहा-अनगय च मज्झगय च । से किं
न अतगय ? अनगय तिविह पणुत्त तज्जहा-पुरओ अतगय
मगगओ अनगय, पासओ अतगय । से किं त पुरओ अतगय ?
पुरओ अतगय-मे ज्झानामए वेइ पुरिसे उऊ वा चड्डलिय वा
अलाय वा मणि वा पईय वा जोइ वा पुरओ काउ पणुत्ते-
माणे २ गच्छिज्जा, से त पुरओ अनगय । से किं त मगगओ
अतगय ? मगगओ अनगय ८ ज्झानामए वेइ पुरिसे उऊ वा
चड्डलिय वा अलाय वा मणि वा पईय वा जोइ वा मगगओ
काउ नणुकइहेमाणे २ गच्छिज्जा, से त मगगओ अतगय । से
किं त पासओ अतगय ? पासओ अतगय-से ज्झानामए वेइ
पुरिसे उऊ वा चड्डलिय वा अलाय वा मणि वा पईय वा जोइ
वा पासओ काउ पणुत्तेहेमाणे २ गच्छिज्जा, से त पासओ
अतगय, से त अतगय । से किं त मज्झगय ? मज्झगय से पुर-
नामए वेइ पुरिसे उऊ वा चड्डलिय वा अलाय वा मणि वा
पईय वा जोइ वा मत्थए काउ समुण्णमेमाणे २ गच्छिज्जा से
त मज्झगय । अतगयस्स मज्झगयस्स य को पणियेसो ?
पुरओ अतगयहा ओहिनाणेण पुरओ वेव

दुःखिह जहा—न य कथं निम्माओ न य पुच्छर परि
भवस्म दोसेग । उत्थिह वायपुणो पुच्छर गामिहयनियहना ४

(सूत्र) नाग पचविह परणत्त, तजहा आभिणियोदियनाण,
सुयनाण, ओहिनाण, मणपज्जयनाण, केवलनाण ॥सू० १॥

॥ समासओ दुःखिह परणत्त, तजहा—पञ्चकल छ परोक्क
च ॥सू० २॥

से किं त पञ्चकल ? पञ्चकल दुःखिह परणत्त, तजहा—
इदियपञ्चकल नोइदियपञ्चकल च ॥सू० ३॥

से किं त इदियपञ्चकल ? इदियपञ्चकल पचविह परणत्त
तजहा—सोइन्दियपञ्चकल, चकिंरुदियपञ्चकल, घाणिदिय-
पञ्चकल, जिभिदियपञ्चकल, फासिदियपञ्चकल, से त इदिय-
पञ्चकल ॥सू० ४॥

से किं त सोइन्दियपञ्चकल ? सोइन्दियपञ्चकल तिविह
पणत्त तजहा—ओहिनाणपञ्चकल, मणपज्जयनाणपञ्चकल
केवलनाणपञ्चकल ॥सू० ५॥

से किं त ओहिनाणपञ्चकल ? ओहिनाणपञ्चकल दुःखिह
पणत्त तजहा—भवपञ्चइय च सभोवममिय च ॥सू० ६॥

से किं त भवपञ्चइय ? भवपञ्चइय दुग्गह, तजहा—देवाण
य नरइयाण य ॥सू० ७॥

से किं त सभोवममिय ? सभोवममिय दुग्गह, तजहा—
मणुमाण य पचैदियतिरिक्कजाणियाण य । को हेऊ सभोव-

समिय ? खओउममिय तथाघरणिज्जाण कम्मण उदिगणाग
खण्ण, अणुदिगणाग उवसमेण ओहिनाग समुणज्जइ ॥ सू० २॥

अइया गुणपट्टिचमस्स अणुगारम्म ओहिनाग समुणज्जर,
त समासओ छुविइ पणुत्त, तँपद्दा-आणुगामिय अणु-
गामिय, वड्ढमाइय, हीयमाणय, पट्टिगाइय, चापट्टिया
इय ॥ सू० ६ ॥

से किं त आणुगामिय ओहिनाग ? आणुगामिय ओहि-
नाग दुविइ पणुत्त, तज्जहा-अतगय च मज्झगय च । से किं
त अतगय ? अतगय तिविइ पणुत्त तज्जहा-पुरओ अतगय,
मगओ अतगय, पासओ अतगय । से किं त पुरओ अतगय ?
पुरओ अतगय-से ज्जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चड्डलिय वा
अलाय वा मणि वा पईय वा जोइ वा पुरओ काउ पणुत्ते-
माणे २ गच्छेज्जा, से त पुरओ अतगय । से किं त मगओ
अतगय ? मगओ अतगय-से ज्जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा
चड्डलिय वा अलाय वा मणि वा पईय वा जोइ वा मगओ
काउ अणुक्कहेमाणे २ गच्छेज्जा, से त मगओ अतगय । से
किं त पासओ अतगय ? पासओ अतगय-से ज्जहानामए केइ
पुरिसे उक्क वा चड्डलिय वा अलाय वा मणि वा पईय वा जोइ
वा पासओ काउ परिक्कहेमाणे २ गच्छेज्जा, से त पासओ
अतगय, से त अतगय । से किं त मज्झगय ? मज्झगय-से ज्जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चड्डलिय वा अलाय वा मणि वा पईय वा जोइ वा मज्झगय काउ समुत्तमाए २ गच्छेज्जा से-
त मज्झगय । अतगयस्स मज्झगयस्स य को परविनेसो ?
पुरओ अतगयणा ओहिनाणेण पुग्घो चेय वा
अवत्तेज्जाणि म्हा जालइ पामइ,

ओहिनाणेण मग्गमा चेव सखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा
 वियणाइ जाणइ पासइ । पान्ममो अत्तगण्णो ओहिनाणेण
 पासओ चेव सखिज्जाणि वा असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ
 पासइ । मज्झमण्ण ओहिनाणेण सव्वओ समता सखिज्जाणि
 वा असखिज्जाणि वा जोयणइ जाणइ पासइ । से स आणु-
 गामिय ओहिनाण । सू. १०॥

से वि म आणुगामिय ओहिनाण ? आणुगामिय
 ओहिनाण से जहागामए तेइ पुरिसे एग मदत जोइहाण काउ
 तस्सेव जोइहाणस्स परिपरत्तहि परिपरत्तहि परिघोलेमाणे परि
 घोलेमाणे तमेव जोइहाण पासइ, अन्नएगए म पानइ, प्या-
 मैव आणुगामिय ओहिनाणा अत्थेव समुणजइ तत्थेव सख
 ज्जाणि वा असखज्जाणि वा सखज्जाणि वा असखज्जाणि वा जाय
 णाइ जाणइ पासइ, अन्नएगएण पासइ, से स आणुगामिय
 ओहिनाण ॥ सू० ११ ॥

से किं त चट्टमाणय ओहिनाण ? चट्टमाणय ओहिनाण
 पत्तयेसु मज्झमसायट्ठालेषु चट्टमाणस्स चट्टमाणचरित्तस्स
 विसुग्गमाणस्स विसुग्गमाणचरित्तस्स सव्वओ समता
 ओही चट्टइ गा इ—

जाउया तिममयाहारगस्स सुहुमस्स वणमजीवस्स ।

भोगाइया जइया ओहायित्त जइय नु ॥१॥

सव्वयइयमणिज्जाउ निरत जन्मिय मग्गिज्जसु ।

वित्त सव्वदिसाग परमाहीरोत्त निदिट्ठो ॥२॥

* अगुलमावज्जेयाण भागमसविज्ज दोसु सखिज्जा ।

† अगुलमावलिअनो आवल्लिया अगुलपुड्ढसे ॥३॥

इत्यमि मुहुत्तमे, त्रिमतो गान्धर्मि धोदव्यो ।
 गान्धर्मि मुहुत्तमे, पक्षतो पक्ष्यताभो ॥ ३४ ॥
 महाम पक्ष ता, उम्हदायमि माणिभो माभो ।
 इम व मणुपले ए, यासपुहुत्ता च रयमनि ॥ ५ ॥
 ममिञ्जमि उ वाडे नीयममुदात्रि दृति मरिञ्जा ।
 कावमि अयमिञ्ज नीयममुदा उ मरयवा ॥ ६ ॥
 काउ वागवुहुता, काना मरयवु त्रिभवाहुत्ता ।
 बुहुत्ता इवगञ्ज, मरयवा त्रिभवाता उ ॥ ७ ॥
 सुहुता य हाव कालो नत्ता महुमपर हया निता ।
 अगुवसगमिन्, ओमणिजिमा अयमिञ्जा ॥ ८ ॥
 से ता वहुमागुय ओदिनाण ॥ ९ ॥

स किं त दीयमाण्य ओदिनाण ?

दीयमाण माणिना अयमत्येहि उम्हवमायहुत्तादि
 दमागुय पहुमायुचरित्तम मविलिस्ममागुय मरिणि
 ममाण्यरित्तम सय्यो मरता ओदी परिहयिह ॥ ९ ॥
 दीयमाण ओदिनाण ॥ १० ॥

से किं त पडियाहमादिनाण ?

पडियाहमादिनाण ता अदवलेण अगुलम्ह अयमिञ्जयमाण
 मा मणिञ्जयमाण या वागवता या यातगापुहुता या त्रिभवा
 निभवापुहुता या जय या जयपुहुता या, जय या जयपुहुता या,
 अगुल या अगुलपुहुता या पाय या पायपुहुता या त्रिहयि वा
 त्रिहयिपुहुता या, रयनि या रयनिपुहुता या पुञ्जि या पुञ्जि
 पुहुता या धणु या धणुपुहुता या गावता या गावतापुहुता या

जोयरा वा जोयरापुहुत्त वा, जोयरासय वा जोयरासयपुहुत्त वा,
जोयरासहस्स वा जोयरासहस्सपुहुत्त वा, जोयरालफरा वा
जोयरालफरापुहुत्त वा जोयराकोडि वा जोयराकोडिपुहुत्त वा
जोयराकोडाकोडि वा जोयराकोडाकोडिपुहुत्त वा जोयरास-
खिज्ज वा जोयरासखिज्जपुहुत्त वा, जोयराअमखेज्ज वा जोय-
राअसखेज्जपुहुत्त वा उकोसेण लोग वा पालित्ताण पडिपइज्जा ।
से त पडिवाइ ओहिनाण ॥ १४ ॥

से किं त अपडिवाइ ओहिनाण ?

अपडिवाइ ओहिनाण जेण अलोगस्स एगमयि आगा
सपयस जाणइ पासइ तेण पर अपडिवाइ ओहिनाण । से
त अपडिवाइ ओहिनाण ॥ १५ ॥

त समासओ चउत्तिउह परणस, तजहा-द्वयओ, खित्तओ,
कालओ, भाउओ । त थ द्वाउओ ण ओहिनाणी जहन्नेण
अलोताइ रुदिद्वगइ जाणइ पासइ उकोसेण सग्गाइ रुदिद्व-
गइ जाणइ पासइ । खित्तओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अंगुलस्स
असखिज्जयमाणे जाणइ पासइ, उकोसेण अमखिज्जाइ अलोगे
लोगपवमाणे मिसाइ खडाइ जाणइ पासइ । कालओ ण ओहि-
नाणी जहन्नेण पासइ,
उकोसेण असखिज्जइ
मरणागय च काल
जहन्नेण अएते
जाणइ पासइ ।

ओही

तरुम य थइ

नरपदेयतिरुक्ता य ओहिससऽयाहिरा इति ।
पामनि सद्यन्ना खनु सेसा देसेण पासति ॥ १० ॥

स स ओहिनाणपद्यन्त ।

से किं न मणुपज्जवनाणे ? मणुपज्जवणाण गा भ ते । किं
पुस्साण उप्पज्जइ अमणुस्साण ?

गोपमा ! मणुस्साण, नो अमणुस्साण ?

एह मणुस्स गा किं समुत्तिममणुस्साण, गम्भवकतिय-
साण ।

गोपमा ! नो समुत्तिममणुस्साण उप्पज्जइ, गम्भवकतिय-
साण ।

इह गम्भवकतियमणुस्साण किं कम्मभूमियगम्भवकति-
साण अकम्मभूमियगम्भवकतियमणुस्साण, अतर-
गम्भवकतिय मणुस्साण ?

गोपमा ! कम्मभूमियगम्भवकतियमणुस्साण, नो अकम्म-
गम्भवकतियमणुस्साण, नो अतरदीपगगम्भवकतिय-
साण ।

इह कम्मभूमियगम्भवकतियमणुस्साण, किं सखिज्ज-
उपकम्मभूमियगम्भवकतियमणुस्साण असखिज्जयाना
मभूमियगम्भवकतियमणुस्साण ?

यमा ! सखिज्जयाना उपकम्मभूमियगम्भवकतियमणु-
, नो असखेज्जवासा उपकम्मभूमियगम्भवकतियमणु-
।

अहं सम्येज्जवासाउयकम्मभूमियगमवकृतियमणुस्साण
किं पज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगमवकृतियमणु-
स्साणा, अपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगमवकृतिय
मणुस्साणा ?

गोपमा ! पज्जत्तासखेज्जवासाउयकम्मभूमियगमवक-
ृतियमणुस्साण, नो अपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमिय-
गमवकृतियमणुस्साण ।

अहं पज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगमवकृतिय
मणुस्साण, किं सम्महिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्म-
भूमियगमवकृतियमणुस्साणा, मिच्छन्तिट्ठिपज्जत्तगसखेज्ज-
वासाउयकम्मभूमियगमवकृतियमणुस्साणा, सम्ममिच्छन्तिट्ठि-
पज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगमवकृतियमणुस्साणा ?

गोपमा ! सम्महिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमिय-
गमवकृतियमणुस्साणा, नो मिच्छन्तिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासा-
उयकम्मभूमियगमवकृतियमणुस्साणा, नो सम्ममिच्छन्तिट्ठि-
पज्जत्तासखेज्जवासाउयकम्मभूमियगमवकृतियमणुस्साणा ।

अहं सम्महिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगम-
वकृतियमणुस्साणा किं सज्जयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासा-
उयकम्मभूमियगमवकृतियमणुस्साणा, असज्जयसम्महिट्ठि-
पज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमियगमवकृतियमणुस्साणा,
सज्जयासज्जयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्मभूमिय-
गमवकृतियमणुस्साणा ?

गोपमा ! सज्जयसम्महिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासाउयकम्म-
भूमियगमवकृतियमणुस्साणा नो असज्जयसम्महिट्ठिपज्जत्त-

गमः उवासा उपकम्भूमियगम्भवकृतियमणुम्माणा, नो
सत्रयामत्र रमम्भेद्विपञ्चसगमयेऽत्र उवासा उपकम्भूमिय-
गम्भवकृतियमणुम्माणा ।

१ परमजयमम्भेद्विपञ्चसगमयेऽत्र उवासा उपकम्भूमिय-
गम्भवकृतियमणुम्माणा, किं परमसत्त्वजयमम्भेद्विपञ्चसग-
मयज्जगमा उपकम्भूमियगम्भवकृतियमणुम्माणा, अत्रमत्त-
सत्रयमम्भेद्विपञ्चसगमयेऽत्र उवासा उपकम्भूमियगम्भवक-
ृतियमणुम्माणा ।

गमः उवासा ' मयमत्तमजयमम्भेद्विपञ्चसगमयेऽत्र उवासा
उपकम्भूमियगम्भवकृतियमणुम्माणा, नो परमसत्त्वजयमम्भे-
द्विपञ्चसगमयेऽत्र उवासा उपकम्भूमियगम्भवकृतियमणु-
म्माणा ।

अत्रमत्तमजयमम्भेद्विपञ्चसगमयेऽत्र उवासा उपकम्भूमि-
यगम्भवकृतियमणुम्माणा, किं इहदीपरा, मयमत्तमजयम-
म्भेद्विपञ्चसगमयेऽत्र उवासा उपकम्भूमियगम्भवकृतियम-
णुम्माणा अत्रिहदीपरा मयमत्तमजयमम्भेद्विपञ्चसगमये-
ऽत्र उवासा उपकम्भूमियगम्भवकृतियमणुम्माणा ?

गायमा १ इहदीपरा मयमत्तमजयमम्भेद्विपञ्चसगमये
उवासा उपकम्भूमियगम्भवकृतियमणुम्माणा, नो अत्रि-
हदीपरा मयमत्तमजयमम्भेद्विपञ्चसगमयेऽत्र उवासा उप-
कम्भूमियगम्भवकृतियमणुम्माणा मयज्जगमाणा मणु-
पञ्च ॥ सू० १७ ॥

तत्र दुर्दिह उपज्जह तज्जहा—उज्जुमह ।

तत्समामभो चउच्चिह पञ्चत्त, तज्जहा—द्व्यभो, खित्तभो,
कालभो, भावभो ।

तत्थ द २ओ ए उज्जुमई अणत्ते अणत्तपणसिण 'म्वे
जाणह पासह, ते चेव विउल्लमई अम्महियतराण विउल्लतराण
विमुद्धतराण त्रितिमिरतराण जाणह पासह । -

खित्तभो ए उज्जुमई जहन्नेण अगुलस्स असल्लेज्जयभाग
उल्लोहेण अहे जाय इमासे रयणप्पमाण पुढीए उधरिमहे-
ट्टिल्ले एउणपयरे, उद्ध जाय जोइस्स उधरिमल्ले, तिरिय
जाय अतोमणुस्सखित्ते अह्माज्जेसु दीयसमुद्वेसु पन्नरससु
कम्मभूमिसु, तीसाए अक्कम्मभूमिसु, छपप्पाए अत्तरदीयगेसु
सन्निपचंठियाण पज्जत्तयाण मणोगण भावे जाणह पासह ।
त चेव विउल्लमई अह्माज्जेदिमगुल्लेहिं अम्महियतर विउल्लतर
विमुद्धतर त्रितिमिरतराण खेस जाणह पासह ।

काणओ ए उज्जुमई जहन्नेण पल्लिओयमस्स असल्लिज्जय
भाग उल्लोहेणपि पल्लिओयमस्स असल्लिज्जयभाग अतीयमण
गय पा का जाणह पासह । त चेव विउल्लमई अम्महियतराण
विउल्लतराण विमुद्धतराण त्रितिमिरतराण जाणह पासह ।

भावभो ए उज्जुमई अणत्ते भावे जाणह पासह, सम्प-
भावाण अणत्तमाग जाणह पासह । त चेव विउल्लमई अम्महिय
तराण विउल्लतराण विमुद्धतराण त्रितिमिरतराण जाणह पासह ।

मणपञ्चयनाण पुल्ल जलमणपरिचित्तिरत्थपागडण ।

माणुसखित्तनिउद्ध गुणपञ्चय चरित्तययो ॥ ग ११ ॥

ने स मणपञ्चयनार्ण ॥ सू० १८ ॥

स किं त वैवलनाण ? वैवलनाण दुविह पणरा, तजहा—
मरथवैवलनाण च सिद्धवैवलनाण च । से किं त भवत्य-
वैवलनाण ? भवत्यवैवलनाण दुविह पणरा तजहा—
मज्झिमवैवलनाण च अज्झिमवैवलनाण च ।

से किं न सज्झिमवैवलनाण ?

सज्झिमवैवलनाण दुविह पणरा, तजहा—पदम-
समयमज्झिमवैवलनाण च अपदमसमयमज्झिमवैवल-
नाण च, अहवा चरमसमयमज्झिमवैवलनाण च
अचरमसमयमज्झिमवैवलनाण च । से च सज्झि-
मवैवलनाण ।

से किं त अज्झिमवैवलनाण ?

अज्झिमवैवलनाण दुविह पणरा, तजहा—
पदमसमयमज्झिमवैवलनाण च अपदमसमयमज्झि-
मवैवलनाण च, अहवा चरमसमयमज्झिमवैवल-
नाण च अचरमसमयमज्झिमवैवलनाण च । से च
अज्झिमवैवलनाण, से च भवत्यवैवलनाण ॥ सू० १६ ॥

से किं त सिद्धवैवलनाण ? सिद्धवैवलनाण दुविह पणरा,
तजहा—अणतरसिद्धवैवलनाण च पणपरसिद्धवैवलनाण च
॥ सू० ॥ १७ ॥

से किं त अणतरसिद्धवैवलनाण ? अणतरसिद्धवैवलनाण
पणपरसिद्ध पणरा, तजहा—तिथसिद्धा १, अतिथसिद्धा २,
तिथयरसिद्धा ३, अतिथयरसिद्धा ४ सपुद्धसिद्धा ५, पत्त
पुद्धसिद्धा ६, बुद्धयादिसिद्धा ७ इतिथिगसिद्धा ८, पुत्ति-
नपुसगतिगसिद्धा ९.

अघ्नलिङ्गनिष्ठा १२, गिहिलिङ्गनिष्ठा १३, एगसिद्धा १४, अणे
गनिष्ठा १५, से स अणतरसिद्धकेवलनाण । सू० २१ ॥

से किं त परपरसिद्धकेवलनाण ? परपरसिद्धकेवलनाण
अणोगविह परणत्त, तजहा—अपद्धमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा
तिसमयसिद्धा, चउसमयसिद्धा, जाउ दससमयसिद्धा, सखि-
उज्जममयसिद्धा, अससिज्जसमयसिद्धा, अणत्तसमयसिद्धा,
से स परपरसिद्धकेवलनाण, से स सिद्धकेवलनाण ॥

त समामओ चउत्थिह परणत्त, तजहा-द्वयओ, खित्तओ,
कालओ, भायओ । तत्थ द्वयओ ण केवलनाणी सव्वद्वयाह
जाणइ पासइ । खित्तओ ए केवलनाणी सव्व खित्त जाणइ
पासइ । कालओ ण केवलनाणीसव्व काल जाणइ पासइ ।
भायओ ण केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ ।

अह सव्वइ उपरिणाममाउयिगणत्तिकारणमणात्त ।

मानवमण्डियार्ह, एगविह केवल नाण ॥ १२ ॥ सू० ॥ २२ ॥

केवलनाणेण्डत्थे, नाउ जे तत्थ परणवणजोणे ।

ते भासइ तित्थपणे, वइओगसुय हवइ सेस ॥ १३ ॥

से स केवलनाण से स मोइदियणच्चक्खं, से स पच्चक्ख
नाण ॥ सू० ॥ २३ ॥

से किं त परोक्खनाण ? परोक्खनाण दुविह पद्धत्त
तजहा—आभिणिशोदियणाणपरोक्ख च, सुयनाणपरोक्ख
च । जत्थ आभिणिशोदियनाण तत्थ सुयनाण, जत्थ सुयनाण
तत्थ आभिणिशोदियनाण, दोउनि एयाइ अण्णमण्णमण्णुगयाइ,
तद्वि पुण इत्थ आयरिया नाणत्त परणववति अभिनिवुज्जइत्ति
आभिणिशोदियनाण, सुणेइत्ति सुय, मइपुण्व जेण सुय, न
सुयपुत्ति ॥ सू० ॥ २४ ॥

अविसेदिया मई, मदनान्न च मद्भक्षण च । दिसेदिया
सम्पदिद्विस्स मई मदनान्न, मिच्छदिद्विस्स मई मद्भक्षण ।
अविसेदिय सुय सुयनाण च सुयअघाण च । दिसेदिय सुयं
सम्पदिद्विस्स सुय सुयनाण, मिच्छदिद्विस्स सुय सुयअघाण
॥ सु० ॥ २५ ॥

से किं त कामिणियोदियनाण ? कामिणियोदियनाण दुविह
पण्ण, तज्जहा-सुयनिरिसय च, असुयनिरिसय च । से किं
न असुयनिरिसय ? असुयनिरिसय चउत्थिह पण्णत्त, मज्जहा-
अपणिया १, दण्णया २, अम्मया ३, परिणामिया ४ ।
बुद्धी चउत्थिह बुद्धा, पचम्मा नोयल्लम्मइ ॥ १४ ॥ सु० ॥ २६ ॥

पुत्रमदिद्विस्सुयमवेदय तत्तल्लणविमुदयदियत्था । अम्मा
एकलज्जोणा, बुद्धी उत्पत्तिया नाम ॥ १५ ॥

माइ-सित्त-मिन्-बुद्ध-तिल-याल्लुय-हरयी-अगड-
पण्णो । पायस-आया-पस-आइहिला-पच पिअरोय ॥ १६ ॥

मरहसिल-एणिय-अक्खे-गुहटण-अइ-सरड-पाय-
अघोरे । गय-अयण-गोल-अमे-गुहण-अणि तिथ-अइ-पुत्ते-
॥ १७ ॥

मइसित्त-मुदि-अरे-नाणय-मिक्खु-वेडमनिहाणे-
लित्ता य अयसरवे-इच्छा-य मद्-सयसहस्से ॥ १८ ॥

मरहित्थरत्तसमत्त म, तिग्गसुत्तत्थगदियपयात्ता । उमओ
लोकपत्तमई, विगुयसमुत्था हवइ बुद्धी ॥ १९ ॥

निमिजे अत्यसंत्ये य, लेहे गणिय य 'कृच-अस्से य ।
गद्दभ-लफखण-गठी—अगए-रहिए य गणिया य ॥ २० ॥

सीया साडी नीह, च तण अवस घय च कुचरस । निजो
दय य गोणे, घोडगण्डण च म्फयाओ ॥ २१ ॥

उधभोगट्टिसारा, कम्मवसगपमिघोलकुविसाला । साहु-
कारफलवाई, कम्मसमुत्था हयइ युद्धा ॥ २२ ॥

हेरणिणए-करिसए कोट्टिय-डोवे य मुत्ति-घय-पवए ।
तुभाए-यहुईय-पूयइ घट-चित्तकारे य ॥ २३ ॥

अणुमाणहेउट्टिट्तसाहिया घयद्विद्यागपरिणामा । द्वियनि-
स्सेयसफलवाई, युद्धी परिणामिया नाम ॥ २४ ॥

अभए-सिट्ठि-कुमारे-देवी-उदिओदए हयइ राया । साहु
य नदिसेणे-धणदरो-भाघग-अमट्ठे ॥ २५ ॥

त्वमए-अम-चपुत्ते-चाणकहे चेउ धूसभहे य । नासिक-
सुदरिनवे-ययरे-परिणामयुद्धीए ॥ २६ ॥

चलणाहण-आमहे-मणी य सप्प य खग्गि-धूमिने । परि-
णामिययुद्धीए पवमाई उदाहरणा ॥ २७ ॥

सेता अस्सुयनिस्सिय ।

से किं त सुयनिम्मिय ?

सुयनिम्मिय चउट्टिह पणत्त, तज्जहा—उग्गहे-ईहा-
अयाओ-धारणा ॥ सू० २७ ॥

से किं त उग्गहे ?

उगगहे दुविहे पगलत्ते तजहा-अधुगगहे य वजणुगगहे य
॥ सू० ॥ २८ ॥

से किं त वजणुगगसहे

चजणुगगहे चउत्तिहे पगलत्त, तजहा-सोइदियवजणुगगहे,
घाणिदियवजणुगगहे, जिम्मियवजणुगगहे, फासिदियवज-
णुगगहे, से न वजणुगगहे ॥ सू० २९ ॥

मे किं त अरुगगहे ?

अरुगगहे छुव्विहे पगलत्त, तजहा-सोइदियवजणुगगहे,
चकिंनियवजणुगगहे, घाणिनियवजणुगगहे जिम्मियवजणु-
गगहे, फासिदियवजणुगगहे, नोइदियवजणुगगहे ॥ सू० ३० ॥

तस्स ग इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणावजणा पच्च नाम
धिज्जा भवति, तजहा-गोमोहणया, उवधारणया, सवणया,
अवलवणया, मेहा मे स उगगहे ॥ सू० ३१ ॥

से किं त इहा ? इहा छट्ठिह पगलत्ता, तजहा-सोइदियवजणुगगहे,
चकिंनियवजणुगगहे, घाणिनियवजणुगगहे जिम्मियवजणुगगहे,
फासिदियवजणुगगहे, नोइदियवजणुगगहे । तीस ग इमे एगट्ठिया नाणाघोसानाणा
वजणा पच्च नामधिज्जा भवति तजहा-आमोहणया, मय्यणया
गवेसणया, चित्ता, वीमसा, से त इहा ॥ सू० ३२ ॥

से किं त अवाप ? अवापत्तिहे परलत्ते, तजहा-सोइदियवजणुगगहे,
चकिंनियवजणुगगहे, घाणिनियवजणुगगहे जिम्मियवजणुगगहे,
फासिदियवजणुगगहे, नोइदियवजणुगगहे । तस्स ग इमे एगट्ठिया
न नाणाघोसानाणावजणा पच्च नामधिज्जा भवति तजहा-आमोहणया,
मय्यणया, गवेसणया, चित्ता, वीमसा, से त इहा ॥ सू० ३३ ॥

से किं त धारणा ?

धारणा छद्दिगहा पणवृक्षा, तज्जहा मोहदियधारणा, चक्किट्ट
दियधारणा, चागिदियधारणा, जिम्मिदियधारणा, फासिदिय
धारणा, नोहन्दिधारणा । तीसे ए इमे एगट्टिया नाणाघोसा
नाणाघजणा पच्च नामधिज्जा भवति, तज्जहा धरणा, धारणा,
ठवणा, पइट्टा, कोट्टे, से स धारणा ॥ सू० ॥ २४ ॥

उग्गहे इक्खसमइए, अतोमुट्ठित्तिया ईहा, अतोमुट्ठित्तिए
अयाए, धारणा सखेज्ज वा काल असयेज्ज वा काल ॥ सू० ॥ २५ ॥

एव अट्ठापीसइत्तिहस्स आभिण्णियोदियगाएहस वज्जेणु
गहस्स पव्वणा करिरसामि पडियोहगदिट्ठेण मल्लगदिट्ठे-
तेण य ।

से किं त पडियोहगदिट्ठेण ?

पडियोहगदिट्ठेण से अहानामए वेह पुरिगे कचि पुरिस
सुत्त पडियोहिज्जा, अमुगा अमुगत्ति, तस्य चोयगे पञ्चयय एव
घयासी कि एगसमयपडिट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति ? सुस-
मयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति ? जाय दससमयपविट्ठा
पुग्गला गहणमागच्छति ?, अस्सिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला
गहणमागच्छति ?, असंसिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमा-
गच्छति ?, एव उयत चोयग पणववद एव घयासी-नो एग
समयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति, नो सुसमयपविट्ठा पुग्गला
गहणमागच्छति, जाय नो दससमयपविट्ठा पुग्गला गहणमा-
गच्छति, नो अस्सिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति;
असंसिज्जसमयपविट्ठा पुग्गला गहणमागच्छति, से सं पडि-
योहगदिट्ठेण ।

से कि न महत्तगन्तिद्वेता ?

महत्तगन्तिद्वेता से जहानामप केर पुरिसे आगगसीसाओ महत्तग गहाय तत्वेग उदगन्तिद्वे पन्निखरिजा से नट्टे, अण्णेऽवि पन्निखत्ते सेऽवि नट्टे, एव पन्निखण्णमाणेसु पन्निखण्णमाणेसु होही से उदगन्तिद्वे जे ना त महत्तग रावेहिदत्ति; होही से उदगन्तिद्वे जे ना तस्सि महत्तगसि ठादत्ति, होही से उदगन्तिद्वे जे ना त महत्तग मरिदत्ति होही से उदगन्तिद्वे जे ना त महत्तग पयादे-दत्ति, एतामेव पन्निखण्णमाणेहिं पन्निखण्णमाणेहिं अण्णेहिं पुग्गलेहिं जाहे त वज्जण पुग्गिय होइ, नाहे इति करेइ, नो चेय ण जाणइ के वि एस सदाइ ? तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सदाइ, तओ अयाय पविसइ, तओ से उवगय हयइ तओ ए धारण पविसइ तओ न धारेइ सखेज्ज या काल असखेज्ज या काल । से जहानामप केर पुरिसे अयत्त सइ सुखिज्जा, तेना महेत्ति उग्गट्ठि, नो चेय न जाणइ के वेस सदाइ ? तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एम सहे, तओ ए अयाय पविसइ, तओ न धारेइ मयेज्ज या काल असखेज्ज या काल ।

से जहानामप केर पुरिसे अयत्त रुव पासिजा तेण रुवत्ति उग्गट्ठि, नो चेय ण जाणइ के वेस रुवत्ति; तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रुवे, तओ अयाय पविसइ तओ से उवगय हयइ, तओ धारण पविसइ, तओ न धारेइ सखेज्ज या काल, असखेज्ज या काल ।

से जहानामप केर पुरिसे अयत्त गय

नो चेय न जाणइ के वेस

परिसर नथो नागुड अमुगे एस गये तयो अथाय परिसर,
तयो से उवगय हयड, तयो धारण परिसर, तयो एं धारेड
सखेज वा काल असमेज वा काल ।

मे जहानामए रेड पुरिसे अउत रस आसाइजा तेण
रसोत्ति उगदिए, नो चेय ए जाणइ के वेस रमेत्ति; तयो
ईह पयिसर, तयो जाणइ अमुगे एस रसे, तयो अथाय परि-
सर तयो से उवगय हयड, तयो धारण परिसर, तयो ए
धारड सखेज वा काल असमेज वा काल ।

से जहानामए केड पुरिमे अउत फास पडिसयेउजा
तेण फासेत्ति उगदिए, नो चेय ए जाणइ के वेस फासओत्ति
तयो ईह पयिसर, तयो जाणइ अमुगे एस फासे, तयो अथाय
परिसर, तयो से उवगय हयड, तयो धारण परिसर, तयो
ए धारेड सखेज वा काल असमेज वा काल ।

से जहानामए कड पुरिमे अउत सुमिण पासिउजा तेण
सुमिणेत्ति उगदिए, नो चेय ए जाणइ के वेस सुमिणेत्ति,
तयो ईह परिसर, तयो जाणइ अमुगे एस सुमिणे, तयो
अथाय पयिसर, तयो से उवगय हयड, तयो धारण परिसर,
तयो ए धारेड सखेज वा काल असमेज वा काल मे स
मलगदिउनेण ॥ सू० ३६ ॥

त ममातओ चउडिह पणत्त, तजहा-दद्वओ, खिरओ,
कालओ, भावओ । तय दउओ ए आमिणिरोहियनाणी
आपमेण सउरदद्वाइ जाणइ, न पासइ । तेत्तओ ए आमि
णिरोहियनाणी आगसेण सउर खेत जाणइ न पासइ । कालओ
ए आमिणिरोहियनाणी आपमेण सउर काल जाणइ न

यामह । मायमो ॥ आभिजियोहियनाणी आपसेण न वे भावे
जाणइ, न पासइ ।

उग्गह ईहाउवाओ, य धारणा षण्ह इति चत्तारि ।
आभिजियोहियनाणुस्म मेयउत्थु समासेण ॥ २८ ॥
अंत्याण उग्गहणुस्मि उग्गहो तह मियालणे ईहा ।
एवसायस्मि अयाओ, धरणा पुण धारणा विन्नि ॥ २९ ॥
उग्गह इक्क समय, ईहायाण सुहुसमइ तु ।
कलमसर सख च धारणा होइ मायया ॥ ३० ॥
पुट्ट सुणेर सह, इउ पुण पासइ अपुट्ट तु ।
गघ रस च फाम च, धरुपुट्ट विगागर ॥ ३१ ॥
भासासमसेटीओ, सह उ सुणइ मासिय सुणइ ।
वीसेही पुण सह सुणेर नियमा पराचाए ॥ ३२ ॥
ईहा अपोह पीमना, गगणा य गवेसणा ।
सभा सई मई पभा, सय आभिजियोहिय ॥ ३३ ॥
मे स आभिजियोहियनाणुपणेस्स, मे स मइनाण ॥ सु० ३७ ॥

ते किं न सुयनाणुपरोक्क ?

सुयनाणुपरोक्क छोदसविह पण्णस तज्जहा—अकजर
सुय १ अणकजरसुय २ सण्हिसुय ३ असण्हिसुय ४ सम्मसुय
५ मिच्छसुय ६ साइय ७ अणाइय ८ सवज्जवसिय ९ अपज्ज
वसिय १० गमिय ११ अगमिय १२ अगपट्टि १३ अणगपट्टि
१४ ॥ सू० ॥ ३८ ॥

ते किं स अकजरसुय ?

१ अंत्याण उग्गहण, च उग्गहो तह विगल्लणा ईहा । एवसाय च
धराय धारणं पुण धारणं विनि ॥ १ ॥ इति पाठांतरमाथा । २ ।

अक्षरसुय तिविह पणत्त, तज्जहा-सन्नकखर, यज्जणकखर
लद्धिअकखर ।

से किं त सन्नकखर ?

सन्नकखर अकखरस्स सठाणाभिई, से त सन्नकखर ।

से किं त यज्जणकखर ?

यज्जणकखर अकखरस्स यज्जणभिलायो, से त यज्जणकखर ।

से किं त लद्धिअकखर ?

लद्धिअकखर अकखरलद्धियस्स लद्धिअकखर समुप्पज्जह,
तज्जहा-लोहदियलद्धिअकखर, चक्खिदियलद्धिअकखर, घाणि
दियलद्धिअकखर, रत्तणिदियलद्धिअकखर, फासिदियलद्धिअ-
कखर, नोहदियलद्धिअकखर, से त लद्धिअकखर, से त अकख-
रसुय ॥

से किं त अणकखरसुय ?

अणकखरसुय अणोगविह पणत्त, तज्जहा—

ऊलसिय नीलसिय, निट्ठूढ खे।सिय च छीय च ।

निस्सिंमयियमणुसार, अणकखर छेन्नियार्इय ॥ ३३ ॥

से च अणकखरसुय ॥ सू० ३६ ॥

से किं त सणिणसुय ?

सणिणसुय तिविह पणत्त तज्जहा—कालिगोयपसेण, द्वेऊ
पपसेण दिट्ठिपाओवपसेण ।

से किं त कालिगोयपसेण ?

कालिओपपमेण जस्स गं अत्थि ईहा, अथाहो, मग्गहा,
गवेसहा, चिन्ता, धीमत्ता, म ए सक्णीति सम्मद । जस्स ग
नत्थि ईहा, अपोहो, मग्गहा, गवेसहा, चिन्ता, धीमत्ता मे
ण असक्णीति सम्मद, से सं कालिओपपमेण ।

८. मे विं मे हेऊपपमेण ?

हेऊपपमेण जस्स ग अत्थि अम्मिन्धारणपुत्थिया वरए
मर्त्ता मे ण सक्णीति सम्मद । जस्स ग नत्थि अम्मिन्धारण
पुत्थिया वरए मर्त्ता से ण असक्णीति सम्मद, न न हेऊ-
पपमेण ।

९. से विं त दिट्ठियाओपपमेण ?

८. दिट्ठियाओपपमेण सण्णिसुयस्स स्वभोयसमेण असक्णी
सम्मद, असण्णिसुयस्स स्वभोयसमेण असक्णी सम्मद, से सं
दिट्ठियाओपपमेण से न सण्णिसुय, मे न असण्णिसुय
॥ सु० ॥ ४० ॥

९. से विं त सम्मसुय ?

सम्मसुय अ इम अरुहेहिं अगधतेहिं उप्पण्णानाणदस्स-
णधरेहिं सेलुक्कनिरिखियमत्थियपूरण्णं तीयपट्ठ्याण्णमसाग-
यआण्णं सव्यण्णं सव्यण्णं रितीहिं पणीय दुयाससग गणि
विडग, तंजहा—आयारो ? मूयण्हो २ टाण ३ रुमयाओ ४
विवाहपण्णत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवागदग्गाओ ७
अंतगड्ढमामो ८ अणुसरोयवाइयदमामो ९ पणहायागर-
णाइ १० विधागसुय ११ दिट्ठियाओ १२ इच्चय दुयाससग
गणिविडग ओइमपुत्थिरम सम्मसुय, अम्मिण्णदमपुत्थिरम

सम्प्रमुय, तेन पर मिण्णोसु भयणा, मे स सम्प्रमुय ॥ सू० ४१ ॥

मे किं त मिच्छामुय ?

मिच्छामुय ज इम अण्णाणि, षड्दि मिच्छादिट्ठिण्हिं सच्छ-
द्वयुद्धिमइदिगणिय, तज्जहा—भारह, रामायणं, भीमासुरकला,
बोडिहाय, सगइमहियामो, 'मोडमुह' कप्पासिय नागसुद्धम,
पणममसरी, बइमेसिय, पुञ्जयणु, तेरामिय, कापिलिये, लोगा
यय, सट्ठित्त, मादर, पुराण, योगरण, भागयय, पायजली,
पुस्तदपय, रेंह, गणिय, सउण्णय, नाइयार, अहया बावत्त-
रिक्कलामो, चत्तारिय वेया सगोदया, पयाह मिच्छदिट्ठिस्स
मिच्छत्तपरिगहियाह मिच्छामुय, पयाह वेय सम्मदिट्ठिस्स
सम्मत्तपरिगहियाह सम्प्रमुय, अहया मिच्छदिट्ठिस्स यि पयाह
वेय सम्प्रमुय, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणमो, जम्हा ते मिच्छ-
दिट्ठिया तेहिं वेय सम्महिं चोइया समाणा वेह सपप्परदि-
ट्ठामो वयति, मे स मिच्छामुय ॥ सू० ॥ ४२ ॥

से किं त साइय सपज्जयसिय, अण्णाय अपज्जयसिय च ?

इधेइय दुवालम्भ गणियिउग बुच्छित्तिनयद्वयाए साइय
सपज्जयसिय, अयुच्छित्तिनयद्वयाए अण्णाय अपज्जयसिय ।
त समासओ नउविह पणुत्त, तज्जहा द्ध्यओ, रिक्तओ,
बालओ, भायओ । तत्थ द्ध्यओ ण सम्प्रमुय एग पुरिस
पद्वय साइय सपज्जयसिय, बहवे पुरिसे य पद्वय अण्णाय
अपज्जयसिय । मेत्तओ ण पच मरहाह पचेरययाह पद्वय साइयं
पचमहाविदहाह पद्वय अण्णाय अपज्जयसिय । कालओ ण
उस्सप्पिण्णि ओसप्पिण्णि च पद्वय साइय सपज्जयसिय, नो

उन्मत्सर्पिणि नोऽत्रोत्सर्पिणि च पृथक् अणाय अपञ्जयसिय ।
 भायश्चो ण जे जया जिलपञ्चत्ता भाया आयविज्जति परणवि
 ज्जति, पण्डिज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति उवदसिज्जति, ते
 तथा माये पदुय सारय सपञ्जयसिय । खाओउसमिय पुण भाय
 पदुय अणाय अपञ्जयसिय । अहवा मवसिज्जियस्त सुय
 सारय सपञ्जयसिय च, अमउमिज्जियम्स सुय अणाय अप-
 जयसिय च, सउगासपणम्मग सव्वागासपणसेहि अणम्मगु
 णिय पञ्जयम्स निपञ्जय, सव्वजीवाणिय य ना अक्खरम्स
 अणतमागो निरुत्तुवादिपो अह पुण सोऽपि आवरिजा तेण
 जीवो अजीपत्त पाणिजा,—‘सुदुयि मेहममुदय, होइ पमा
 चदसूराणा’ ते स सारय सपञ्जयसिय, ते स अणाय अपञ्ज
 यसिय ॥ सू० ॥ ४३ ॥

से किं त गमिय ?

गमिय दिट्ठिमाओ ॥

से किं त अगमिय ?

अगमिय कालिय मुय । से स गमिय, से क अगमिय ॥

अहवा न समामओ दुट्ठिह पणुत्त, तज्जहा—अगपविट्ठ
 अगयादि च । से किं त अगयदि ? अगयाहिर दुट्ठिह पणुत्त,
 तज्जहा—आवस्सय च, आवस्सयवहरित च । से किं त आव-
 स्सय ? आवस्सय उट्ठिह पणुत्त, तज्जहा—सामादय, चउवी-
 सत्थओ, वदुय, पट्टिकमण, काउस्सग्गो, पञ्चक्खण, से स
 आवस्सय ।

से किं त आवस्सयवहरित ? आवस्सयवहरित दुट्ठिह
 पणुत्त, तज्जहा—कालिय च, उकालिय च ॥

से किं त उकालिय ? उकालिय अणेगविट्ठ पणुत्त, तज्जहा—

दसवेयालिय, कप्पियाकप्पिय, खुल्लकप्पमुय, महाकप्पमुय,
उवण इय, रायपसेलिय, जीरामिगमो, पगणयणा, महापण-
यणा पमायणमाय, नत्ती, अणुओगदागाइ, दधिंदत्थमो, तदुल
घेयालिय, चन्दाविज्झय, सूरपणत्ती, पोरिसिमण्डल, मण्डल
पण्णो, विज्जाचरणविणि-द्वयो, गणिविज्जा, क्षाणविमत्ती
मरणविमत्ती, आयधिसोही, वीयमागसुय, सलेहणामुय, विहा
रकप्पो, चरणपिही, आउरपणवखाल, महापणवखाल, पण-
माइ, से न उज्जालिय ।

से त्रिं त कालिय ?

कालिय अण्णगबिह पणल्ल, तज्जहा—उत्तरम्भयणाइ
द/नागो, कप्पो यण्हारो, निसीह, महानिसीह, इसिमासियाइ
जम्बूदीउपपत्ती, दीवसागरपन्नत्ती, चन्दपन्नत्ती, पुड्डिया
विमालपविमत्ती, महद्धिया त्रिमाणपविमत्ती, भगचूलिया
वगगचूलिया, विद्याहचूलिया, अरुणोवघाण, वरुणोवघाण गदलो
वघाण, धरुणोवघाण, वेसमणोवघाण, वेसधरोवघाण, देविदो-
वघाण, उट्ठाणसुण, समुट्ठाणसुण, नागपरिवाचणियाओ निरया-
पणियाओ कप्पियाओ, कप्पचड्डिसियाओ, पुण्फियाओ, पुण्फ
चूलियाओ, वण्डीदमाओ, (आसीविस्समावणाल, दिट्ठिविस-
भायणाल, सुमिणमावणाल, महामुमिणमावणाल, तेयग्गिनि-
सग्गाल,) पयमाइयाइ चउरासीइ पइन्नगसहस्साइ भगवमं
अरहओ उत्तहसामिस्म आइतित्थयस्म, तहा सखिज्जा
पइन्नगसहस्साइ भज्जिमगाण जिणउराण, चोइस पइन्नग-
सहस्साइ भगवमो वदनाणसामिस्म, अहवा जस्स जत्तिय
सीसा उप्पत्तियाण, वेणइयाण, कम्मयाण, परिणामियाण, चउ-
त्रिहाण धुस्सीण उववेणा तस्स तत्तियाइ पइण्णगसहस्साइ

पत्तेययुद्धाणि तत्तिथा चेत्, से च कालिय, से च आउस्सययइ
रित्त, से च अणुगपविट्ठ ॥ सू० ॥ ४४ ॥

से किं त अगपविट्ठ ?

। अगपविट्ठ दुवात्मविह पण्णत्त, तपहा—आयारे १ सूय
गहो २ डाण ३ समयाओ ४ त्रिवाहपधत्ती ५ नायाधम्मक-
हाभा ६ उवासगदसाओ ७ अतगडइसाओ ८ अणुत्तरोवगाइ
यदसाओ ९ पण्हायागरणाइ १० विवागसुय ११ दिट्ठि
काओ १२ ॥ सू० ॥ ४५ ॥

से किं त आयारे ? आयारे ए समणए निग्गधाए आया-
रगोपरविणयवेणइयसिक्खाभासा अभासावरणकरणजायामा-
यादिर्त्ताओ आचविज्जति । से समानओ पचयिहे पण्णत्ते,
तपहा—नायायारे दसणायारे, चरित्तायारे, तगायारे, धीरि
यायारे । आयारे ए परिर्त्ता यायणा, सखेज्जा अणुयोगदारा,
सखिज्जा वेढा, सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ,
(सखिज्जाओ सगहमीओ) सखिज्जाओ पडिउत्तीओ, से ए
अगट्ठयाए पढमे ओ, दो सुयकलभा, पणुमीस अम्भयणा,
पचासीइ उहेसलकाला, पचासीइ समुडेसलमाला, अट्टारस
पयसहम्महाइ पयमेण मत्तेज्जा अस्सरा, यण्णा गमा,
अलता पज्जया, परिर्त्ता तसा, अणता थावरा, सासयकडनि-
पद्धनिकाइया जिणपण्णत्ता माया आचविज्जति, पधविज्जति,
परुविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव
आया, एव नाया एव निग्गधाया, एवं वरणकरणपहणणा
आचविज्जइ, से च आयार १ ॥ सू० ॥ ४६ ॥

से रिं न सूयगडे ? सूयगडे ॥ गेए सूइज्जइ, अलोण सूइ-

ज्जह, लोयालोप सूज्जह, जीया सूज्जति, अजीया सूज्जति,
 ससमप सूज्जह परसमप सूज्जह, ससमयपरसमप सूज्जह,
 स्यगडे ए असीयस्स किट्ठियावाइसयस्स, चउरामीए अकि-
 रिचाईए, सप्तट्ठीए अगणणीयवाइए, पत्तीसाए वेणइयवाइए,
 तिहह तेसट्ठाण पामडियमयाए बूह विथा ससमप ठाविज्जह ।
 स्यगडे ए परिता घागणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा
 वेडा, सखेज्जा सिलोणा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, (सखि-
 ज्जाओ सगहणीओ) सखिज्जाओ पडिवत्तीओ, से ए अगट्ठयाए
 यिए अगे, दो सुयक्खधा तेरीस अज्जयणा, तिस्तीस उहेस
 एकाला, तिस्तीस समुदेमणकाला, छत्तीस पयसहस्साइ पय-
 म्मेणा, सखिज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जा, परिता
 तमा, अणता धाररा, सासयकडनियद्धनिकाइया जिणपण्णसा
 भाया आघविज्जति, पणविज्जति, पक्खविज्जति, वसिज्जति,
 निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव भाया, एव नाया, एव
 विण्णया, एव चरणकरणपक्खणा आघविज्जह, मे स स्य-
 गडे २ ॥ सू० ॥ ४७ ॥

से किं त ठाणे ? ठाणे ए जीया ठाविज्जति, अजीया ठावि-
 ज्जति, जीयाजीया ठाविज्जति, ससमप ठाविज्जह परसमप
 ठाविज्जह, ससमयपरसमप ठाविज्जह, लोप ठाविज्जह, अलोप
 ठाविज्जह, लोयालोप ठाविज्जह । ठाणे ए टका, वूडा, सेला,
 मिहरिणो, प-भारा, कुडाइ गुहाओ थागरा, दहा, नईओ,
 आघविज्जति । ठाणे ए पगाइयाए पगुत्तरियाए पुहदीए दस-
 ट्ठाणगविचड्डियाण भावाए पक्खणा आघविज्जह । ठाणे ए
 परिता घागणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेडा, सखेज्जा
 सिलोणा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ,
 सखेज्जाओ पडिवत्तीओ । मे ए अगट्ठयाए तिए अगे, एगे

सुयकजये, नस अज्जयणा पयसीम उदेमराकाला, पक्कयाम
समुदेमणकराभा, चाउत्तरि पयमहम्मा पणग्गेण, मारेज्जा
अकपरा अगगा गमा अगगा पञ्चवा, परिता तसा, अणता
पावरा, सामयकवनिवद्धनिहाइया त्रिगुपसत्ता माया आघ-
रिञ्जति, पधरिञ्जति परुञ्जति इण्डिञ्जति, निदसिञ्जति,
उपदसिञ्जति । से एय आया, एय नाया, एय दिग्गया एय
चरणकरणरुयणा आघदिञ्जइ, से स ठाण ३ ॥ सू० ॥ ४८ ॥

से किं न समयण ? समयाए शजीग ममासिञ्जति,
अजीग ममासिञ्जति जीवाजीवा समारिञ्जति, ससमए
ममासिञ्जइ परममएसमसिञ्जइ, ससमएपरसमए समा-
सिञ्जइ, नेए ममासिञ्जइ, अनोए ममासिञ्जइ, लोयाओए
ममासिञ्जइ । समयाए ण एमाइयाए एगुत्तरियाए ठाणसय
त्रिबडियाए मायाण परुयणा आघरिञ्जइ, दुयानसविहस्स य
गणिपिडगम्स परलधग्गे ममासिञ्जइ । समयायस्स ण परिता
पायणा, सखिज्जा अणुओगदारा सखिज्जा वेदा, सखिज्जा
सिलोगा, सखिज्जाओ निजुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ,
सखिज्जाओ पडिधत्तीओ, ने ण अगदूयाएचइ मरये अगे, एगे
सुयकजये एगे अज्जयण एगे उदेमणकरे, एगे चोयाले
सयसहस्से पयग्गेण सखेज्जा अकपरा, अगगा गमा अणता
पञ्चवा, परिता तसा, अणता पावरा, सामयकवनिवद्धनिहाइया
त्रिगुपणसत्ता माया आघदिञ्जति पणविञ्जति परुपिञ्जति,
दमिञ्जति निदसिञ्जति, उपदसिञ्जति । से एय आया एय
नाया एय दिग्गया, एय चरणकरणरुयणा आघरिञ्जइ ।
से स समयए ४ ॥ सू० ॥ ४९ ॥

से ~ जिवाहे ण जीवा विमादिञ्जति,

विश्रादिजति, जीराजीवा विश्रादिजति, ससमय विश्रादिजति,
 परसमय विश्रादिजति, ससमयपरसमय विश्रादिजति, लोप
 विश्रादिजति, अलोप विश्रादिजति, लोयलोप विश्रादिजति ।
 विवाहस्त स पन्तिता यायणा, सखिजा अणुओगदारा,
 सखिजा वेढा, सखिजा मलोमा, सखिजाओ निज्जुत्तीओ,
 सखिजाओ सगहणीओ, सखिजाओ पडिवत्तीओ । से ए
 अंगद्वयाए पचमे भो, एगे सुयफसचे, एगे साहरेगे अज्जकण-
 सए, दस उद्देसगसहस्साइ, दस समुद्देसगसहस्साइ इत्थीस
 पैगणसहस्साइ, दो लफसा अट्ठासीइ पयसहस्साइ पदग्गेण,
 सखिजा अफउरा, अणुना गमा, अणुना पज्जरा, पन्तिता तसा,
 अणुना धाधरा, सासयकउनिपडनियाइया जिलपणुत्ता भाग
 आघविजति पणुविजति परुविजति दसिजति निदसिजति,
 उअदलिजति, से एव काया, एव नाया, एव विण्णायो
 एअं अरणकरणपरुवणा, आघविज्जइ, से ए विधाहे ॥ ४ ॥
 ॥ सु० ॥ ४० ॥

से किं त नायाधम्मकहामो? नायाधम्मकहासु ए नायाण
 नगराइ, उज्जाणाइ, चेइयाइ, यणमडाइ, समोसरणाइ, रायाणो,
 अम्मापियरो, धम्मायरिया,
 इइडिविसेसा, भोगपरिआया पुअ
 परिगहा. । सुय-
 पाओ

उच्यते। इत्याह एव पञ्च अक्षराइयउच्यते। इत्याह एवमेव
सपुन्यायेण अद्भुताओ ब्रह्माणकोद्गीओ ह्यतिसि सम-
कृत्य । नायाधम्मकहाण परिता वायणा, सखिजा अणुओ-
गदारा, सखिजा वेदा, सखिजा सिलोगा, सखिजाओ
निजुत्तीओ सखिजाओ सगहणीओ मखिजाओ पडिय-
त्तीओ । से ण अगट्ठपाए छट्ठ अगे, दो सुयकणधा एगुण
मीस अण्णयणा, एगुणीम समुदेसणकाला, समेजा पय-
सहस्सा पयगोण, मत्तेजा अकणरा, अणता गमा, अणता
पञ्जवा, परिता, तसा, अणता पायरा, सासवकडनिषण्णिका-
इया जिणपणत्त, भाया आघविज्जति, एणविज्जति,
पक्खविज्जति, इमिज्जति, निदसिज्जति, उचदसिज्जति । से
एव अया, एव नाया, एव विणया, एव चरणकरपवकण्ठया
आघविज्जट्ठ, से ण नायाधम्मकहाओ ६ ॥ सू ॥ ५० ॥

से किं त उवासगदमाओ ? उवासगदमाहु ण समणो-
यासयाण नगराह, उज्जाण्णाह, चेइवाह, वणसहाह, समोतर-
णाह, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इह-
लोइयपरलोइया इहदिविमेसा, भोगपरिणाया, पयजाओ,
परिणागा, सुवपरिग्गहा, तथोयहाणाह सील वयगुणवेरमण-
पञ्चकलणोसहोवगसपडिवज्जणया, पडिमाओ, उयसग्गा,
सहण्णाओ, भत्तवच्चकवाणाह, पाओवगमणाह, देवलोगगम-
णाह, सुहुलपच्चाईओ, पुणयाहिलाभा, अनकिरियाओ य आघ
विज्जति । उवासगदसाण परिता वायणा, समेजा अणुओग-
दारा, मत्तेजा वेदा, समेजा सिलोगा, समेजाओ निजुत्तीओ,
सखजाओ सगहणीओ, सखजाओ पडियत्तीओ । से ण अग
ट्ठपाए सत्तमे अगे, एगे सुयकणधे, दस अण्णयणा, दस
उदसणकाला दस समुदमणकाला समेजा पयसहस्सा

पयग्नेया, सखेज्जा अकस्तरा, अणता गमा, अणता वज्जग,
परित्ता नत्ता, अणता धाउरा, मासयकडनियद्धनिपाइया
जिणपणत्ता भावा आघनिज्जति, पधविज्जति, परूविज्जति,
दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदनिज्जति । से एव आया, एव
नाया, एव विआया, एव चरएवरणपरूएणा आघविज्जइ, से
ए उवामगदसाओ ७ ॥ सू ॥ ५२ ॥

से किं त अतगडदसाओ ? अतगडदसासु ण अतगडदसा
नगराइ, उज्जाणइ, येइयाइ, पणसडाइ, समोसरणाइ, रावाणो,
अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाआ इदलोइयपरतोइया
इदद्विपिसेत्ता, भोगपरिआणा, पण्डिताओ, परिआणा, सुयप-
रिगहा तथावहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपण्डकत्ताणाइ, पाओ
धगमणाइ अतकिरियाओ, आघनिज्जति । अतगडदसासु ण
परित्ता धावणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखे
ज्जा निमोगा सखेज्ज धो निगुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ,
सखेज्जाओ पड्डिउत्ताओ । से ए अगदुयाए अट्टमे भमे, एगे
सुयकएधे, अट्ट घग्गा, अट्ट उइसणकाला, अट्ट समुदेसणकाला,
सखेज्जा पयसहसं । पयग्नेय सखेज्जा अकस्तरा, अणता गमा,
अणता वज्जग, परित्ता तमा, अणता धाउरा, मासयकडनि-
यद्धनिपाइया जिणपणत्ता भावा आघनिज्जति, पधविज्जति,
परूविज्जति, दसिज्जति निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से
एव आया, एव नाया, एव विआया, एव चरएवरणपरूएणा
आघविज्जइ, से च अतगडदसाओ ॥ ८ सू० ॥ ५३ ॥

से पिं त अणुत्तराववाइयदसाओ ? अणुत्तराववाइयद-
सासु ण अणुत्तराववाइयाण नगराइ, उज्जाणाइ, येइयाइ,
पणसडाइ, समोसरणाइ, रावाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया,

धम्मकदाश्रो, इहलोहयपत्तोदया इच्छिदिमेसा, मोगपरि-
 धागा पय्यजाश्रो परिभागा मुयपरिग्गहा तथोषहाणाइ
 पट्टिमाश्रो, उवसग्गा, सखेइणाश्रो, मत्तपय्यफलाणाइ, पाथोव-
 गमणाइ, अणुसरोयवइयत्ते उववत्ती, सुकुलपथायाईश्रो,
 पुण्यगदिनामा अतकिरियाश्रो, आघविज्जति । अणुसरोयवा-
 इयदसासु ए परिस्ता धायणा, सखेज्जा अणुआगदारा, सखेज्जा
 वेढा, सखेज्जा निलोगा, सखेज्जाश्रो निज्जुत्तीश्रो, सखेज्जाश्रो
 सगहणीश्रो, सखेज्जाश्रो पडिवत्तीश्रो, से ए अगट्टयाए नयमे
 भगे, एगे सुयक्खये तिप्पि यग्गा, तिप्पि उइसणकाला तिप्पि
 समुदेसणकाला, सखज्जाइ पयसइस्साइ पयग्गेण, सखेज्जा
 अक्खरा, अणत्ता गमा, अणत्ता पज्जवा, परिस्ता तत्ता, अणत्ता
 धायरा, सासयकइनियइनिकाइया जिणपरणत्ता भाया आघ
 विज्जति, पण्यदिज्जति पण्यविज्जति दसिज्जति, निदसिज्जति,
 उवदसिज्जति, ने एव आया, एव भाया एव दिग्गया, एव
 करणकरणपहुवणा आघविज्जइ, से ए अणुसरोयवाइयद-
 साश्रो २ ॥ सू० ॥ ४४ ॥

से किं त पण्हावागरणाइ ? पण्हावागरणेसु ए अद्दुत्तर
 पत्तिणसय, अद्दुत्तर अपत्तिणसय, अद्दुत्तर पत्तिणापत्तिणसय
 तज्जहा—अणुट्टपसिणाइ, वाहुपसिणाइ, अद्दागपसिणाइ, अग्गे
 पि विचित्ता पिज्जाइसया, भागसुयग्गेहिं सज्जि दिग्गया सयाया
 आघविज्जति । पण्हावागरणार्थे परिस्ता धायणा, सखेज्जा अणु
 ओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा निलोगा, सखेज्जाश्रो निज्जु
 त्तीश्रो, सखेज्जाश्रो सगहणीश्रो, सखेज्जाश्रो पडिवत्तीश्रो, से ए
 अगट्टयाए दसमे भगे, एगे सुयक्खये पण्ययालीस अज्जकयणा,
 पण्ययालीस उइसणकाला, पण्ययालीस समुदेसणकाला,
 सखेज्जाइ पयसइस्साइ पयग्गेण; सखज्जा अक्खरा, अणत्ता गमा

अणता पञ्जया, परिच्छा तसा, अणता थावरा, सासयवडनिय
 अनिकाइया जिणपणत्ता माया आघविज्जति, पणविज्जति
 परुविज्जति, दरिज्जति, पिदसिज्जति, उवदसिज्जति,
 से एव आया एवं नाया एव विण्णया एव चरणपरण-
 पक्खणा आघविज्जइ, से स पणहावागरणाइ १० ॥ सू० ॥ ४४ ॥

से किं त विवागसुय ? विवागसुय ण सुकटदुक्खहाण
 कम्माण फलविधाने आघविज्जइ । तत्थ ए दस दुहविवागा,
 दस सुहविवागा । से किं त दुहविवागा ? दुहविवागेसु ण
 दुहविवागाणा नगराइ उज्जाणाइ घणसडाइ बैइयाइ समो-
 सरणाइ रायाणो अम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इह-
 लोइयपरलोइया इहदिदिसेसा निरयगमणाइ, ससारभयप-
 घचा दुहपरपराओ, सुकुलपद्यायाइओ, दुस्तहयोदियस आघवि-
 ज्जइ, से स दुहविवागा । से किं त सुहविवागा ? सुहविवागेसु
 ए सुहविवागाण नगराइ, उज्जाणाइ घणसडाइ बैइयाइ
 समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्म
 कहाओ, इहलोइयपरलोइया इहदिदिसेसा, भोगपरिधाणा,
 पणज्जाओ, परियागा, सुयपरिग्गहा, तथोवहाणाइ सलेइयाओ,
 भत्तपथकनाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुहपर-
 पराओ, सुकुलपद्यायाइओ, पुण्णोदिलाभा, अतकिरियाओ,
 आघविज्जति । विवागसुयस्य ए परिच्छा घायणा, सखेज्जा
 अणुभोगदारा, सखज्जा बेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ
 निज्जुत्ताओ सखिज्जाओ सगाहणीओ, सखिज्जाओ पट्ठिप-
 तीओ । से ए अगट्ठयाए इकारसमे अगे, दो सुयफलधा,
 वीस अज्जकपणा, वीस उईसणकाला वीस नमुईसणकाला,
 सरिज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण, सखेज्जा अकप्परा, अणता
 गमा, अणता पञ्जया, परिच्छा तसा, अणता थावरा, सामय

वडनिवडनिकाहया निणपणुत्ता माया आघविज्जति, पघ-
विज्जति, परुविज्जति, दमिज्जति निदसिज्जति, उघदसि-
ज्जति । मे एव आया, एव नाया, एव विआया, एव घरण-
करणपकवणा आघविज्जह, मे स विआयसुय ११ । सू० ॥ ५६ ॥

मे किं त दिट्ठिआए ? दिट्ठिआए म मज्झिमावपरुवणा आघ
विज्जह, से ममासको पयविहे पणुत्ता, तज्जहा—परिकम्मे १
सुत्ताह २ पुट्ठिआए ३ मणुस्सो ४ चूलिया ५ ।

से किं त परिकम्मे ? परिकम्मे मसविहे पणुत्ता, तज्जहा-
मिद्धसेणियापरिकम्मे १ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्ठिसेणिया
परिकम्मे ३ ओगादसेणियापरिकम्मे ४ उयसगज्जसेणियापरि-
कम्मे ५ विप्यनहल्लसेणियापरिकम्मे ६ सुयासुपसेणियापरि-
कम्मे ७ । मे किं त मिद्धसेणियापरिकम्मे ? सिद्धसेणियापरि-
कम्मे अउदमविहे पणुत्ता, तज्जहा—माउगापयाह १ पगट्टिय-
पयाह २ अट्टपयाह ३ पाढोभागासपयाह ४ केउभूय ५ रासि-
यद्ध ६ पगगुण ७ दुगुण ८ तिगुणा ९ केउभूय १० पडिगहो ११
ससारपडिगहो १२ नदायत्ता १३ सिद्धायत्ता १४, मे स सिद्ध
सेणियापरिकम्मे १ । मे किं त मणुस्ससेणियापरिकम्मे ?
मणुस्ससेणियापरिकम्मे अउदमविहे पणुत्ता, तज्जहा—माउगा
पयाह १ पगट्टियपयाह २ अट्टपयाह ३ पाढोभागासपयाह ४ केउ
भूय ५ रासियद्ध ६ पगगुण ७ दुगुण ८ तिगुणा ९ केउभूय १० पडि-
गहो ११ ससारपडिगहो १२ नदायत्ता १३ मणुस्सायत्ता १४, से स
मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ । मे किं त पुट्ठिसेणियापरिकम्मे ? पुट्ठि
सेणियापरिकम्मे इकारमविहे पणुत्ता, तज्जहा—पाढोभागास

पयाइ १ केउभूय २ रासियद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६
 केउभूय ७ पडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ नदायत्ता १० पुट्टा-
 यत्ता ११, से स पुट्टसेणियापरिकम्मे ३ । से किं तं भोगादसे-
 णियापरिकम्मे ? भोगादसेणियापरिकम्मे इकारसविहे पणत्ते,
 तज्जहा पाढोभागासपयाइ १ केउभूय २ रासियद्ध ३ एगगुण ४
 दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९
 नदायत्ता १० भोगादायत्ता ११, से स भोगादसेणियापरिकम्मे ४ ।
 से किं त उयसपज्जणसेणियापरिकम्मे ? उयसपज्जणसेणिया
 परिकम्मे इकारसविहे पणत्ते, तज्जहा—पाढोभागासपयाइ १
 केउभूय २ रासियद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूय
 ७ पडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ नदायत्ता १० उयसपज्जण-
 यत्ता ११, से स उयसपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ । से किं त
 विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे इका
 रसविहे पणत्ते, तज्जहा—पाढोभागासपयाइ १ केउभूय २
 रासियद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूय ७ पडि-
 ग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९ नदायत्ता १० विप्पजहणायत्ता ११,
 से स विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ । से किं त चुयाचुयसे-
 णियापरिकम्मे ? चुयाचुयसेणियापरिकम्मे इकारसविहे पणत्ते,
 तज्जहा—पाढोभागासपयाइ १ केउभूय २ रासियद्ध ३ एगगुण ४
 दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८ ससारपडिग्गहो ९
 नदायत्ता १० चुयाचुययत्ता ११ से स चुयाचुयसेणियापरिकम्मे
 ७ । छ चउकनइयाइ, सत्त तेरासियाइ, से स परिकम्मे १ ।

से किं त सुत्ताइ ? सुत्ताइ वाणीस पञ्चत्ताइ, तज्जहा—
 उज्जुसुयं १ परिणपापरिणय २ बहुमगिय ३ विजयचरिय ४
 अरातर ५ पपर ६ मासागा ७ सज्जह ८ समिण्ण ९ आहव्यायं १०

मोक्षतिययावत्त ११ नदावत्त १२ यद्वत् १३ पुट्टापुट्ट १४ विषा
वत्त १५ पयभूष १६ दुवावत्त १७ वत्तमाखपय १८ समभिरुद्ध
१९ सप्तभोमह २० पस्मास २१ दुष्पडिग्गह २२ इच्छेइयाह
वागीस सुत्ताह छिन्नच्छेयनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीय,
इच्छेइयाह वागीस सुत्ताह अन्दिघ्नच्छेयनइयाणि आजीघिय—
सुत्तपरिवाडीय, इच्छेइयाह गवीस सुत्ताह तिगणइयाणि
तेरामिय सुत्तपरिवाडिर, इच्छेइयाह गवीस सुत्ताह चउक्कनइ-
याणि ससमयसुत्तपरिवाडीय, पत्रामेव सपुत्रावरेण कट्टासीई
सुत्ताह भयतिच्छि मक्खाय, स स सुत्ताह २ ॥

से रिं स पुग्गण १ पुग्गण चउक्कसग्गिहेपरणत्ते, तज्जहा
उप्पायपुग्ग १ जग्गाणीय २ धीरिय ३ अत्थिनरियप्पवाय ४
नाणपत्राय ५ सच्चप्पवाय ६ आयप्पवाय ७ कम्मप्पवाय ८
पेच्चकल्लापवाय ९ विज्झाणुपवाय १० अवत्त ११ पाण्डु १५
किरियविसाल १३ लोकजिंदुसार १४ उप्पायपुग्गस्स ए दस
यत्थू, वत्तादि चूलियावत्थू पणुत्ता । अग्गाणीयपुग्गस्स ए
चोइम यत्थू दुवालम चूलियावत्थू पणुत्ता । धीरियपुग्गस्स
॥ यद्व यत्थू उद्व चूलियावत्थू पणुत्ता । अत्थिनरियप्पवाय-
पुग्गस्स ए अट्टारम यत्थू दस चूलियावत्थू पणुत्ता । नाण
पत्रायपुग्गस्स ए गारम यत्थू पणुत्ता । सच्चप्पवायपुग्गस्स
ए दोण्णि यत्थू पणुत्ता । आयप्पवायपुग्गस्स ए सोलस यत्थू
पणुत्ता । कम्मप्पवायपुग्गस्स ए तीम यत्थू पणुत्ता । पथ
कमणपुग्गस्स ए वीम यत्थू पणुत्ता । विज्झाणुपवायपुग्गस्स
ए पत्तरम यत्थू पणुत्ता । अवत्तपुग्गस्स ए गाम्म यत्थू
पणुत्ता । पाण्डुपुग्गस्स ए तरस यत्थू पणुत्ता । किरि-

यात्रिसात पु०रस्त गातीम धत्थू पणत्ता । लोकविदुसार-
पु०रस्त एा पलुयीस चत्थू पणत्ता, गाहा—

दस १ चोदस २ अट्ट ३ ऽट्ठासेव ४ वारस ५ दुवे ६ य
धत्थुणि । सोलस ७ तीस ८ धीमा ९ पणरस १० अणुप्पज
यम्मि ॥ ३५ ॥

वारस इकारसमे, वारसमे तेरमेध धत्थुणि । तीसा पुण
तेरसमे, चोदसमे पणत्तिसाओ ॥ ३६ ॥

घत्तारि १ दुपालम २ अट्ट ३ चेषदस ४ चेष चुदलधत्थुणि ।
आइल्लाए चउएह, सेसाए चूत्तिया नत्थि ॥ ३७ ॥

से स पुज्जगए ।

जे किं त अणुओगे ? अणुओगे दुयिहे पणत्ते, तजहा मूलपद
माणुओगे, गडिमाणुओगे य । से किं त मूलपदमाणुओगे ? मूल
पदमाणुओगे ए अरहताए भगवताए पुट्ठभया, देवलोग
गमलाइ, आउ, धयणाइ, जम्मणाणि, अमित्तया रायवरसिरीओ
पण्डज्जाओ, तथा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ, तित्थपयए णाणि
य, तीसा, गणा, गणहरा, अज्जा पवत्तिणीओ सघम्भ चउ-
त्तिहस्स ज च परिमाण, जिणमणुपज्जमओहिनाणी, सभ्भत्त
सुयनाणियो य, पाइ, अणुत्तरगईय, उत्तरवेउद्वियो य मुणियो,
नत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह देसिओ, जच्चि ए काळ,
यामोयगया जे जहिं जत्तियाइ भत्ताइ (गणत्तयाए) छेइत्ता
अनगडे, मुणिउत्तमे, तिमिरओघविण्णमुके मुक्खसुद्धमणुत्त
च पत्ते, एउमने य एवमाइभावा मूलपदमाणुओगे कहिया,
से स मूलपदमाणुओगे । स किं त गडिमाणुओगे ? गडिमाणु
ओगे कुलगणगडियाओ, तिग्गयरगडियाओ, चक्कट्टिमंडि-

याग्नो, दसारगडियाग्नो, यलदेवगडियाग्नो, वासुदेवगडियाग्नो
गणधरगडियाग्नो, मह्यद्भुगडियाग्नो, तवोऽम्भगडियाग्नो,
हरिचसगडियाग्नो, उस्सप्पिणीगडियाग्नो, ओसप्पिणीगडि-
याग्नो, चित्तरगडियाग्नो, अन्नरन्नरतिरियनिरयगङ्गमण्विधि
हपरियट्ठणसु एवमाद्याग्नो गडियाग्नो आद्यविज्जति पण्ण-
विज्जति से स गडियाणुमोणे से स अणुमोणे ४ ॥

ने किं त चूलियाग्नो ? आइहाग खड्दह पुब्बाग चूलिया,
सेसाह पुब्बाह अचूलियाह, से स चूलियाग्नो ।

द्विद्विषायस्स एा परित्ता चायथा, सखेज्जा अणुमोगदारा,
सखेज्जा वेडा, सखेज्जा सिलोगा सखेज्जा वा पडिउत्तीओ सखि
ज्जाया मिज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ, स एा अगट्ठपाए
वारसमे भगे एने सुयप्पथे घोइस पुब्बाह, सखेज्जा यत्थू,
सखेज्जा चूलयत्थू, सखेज्जा पाहुडा, सखेज्जा पाहुडपाहुडा,
सखेज्जाओ पाहुडियाओ, सखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, सखे
ज्जाह एयसहइसाह एयमोण मखज्जा अक्खरा, अणता गमा,
अणता पज्जया, परित्ता तसा अणता थायरा, सासवक्कडिनि-
एइनिइवा जिएणत्तता माया आद्यविज्जति, पणविज्जति,
परुपिज्जति इसिज्जति, निइसिज्जति, उचइसिज्जति । से
एव आया, एव नाया एव विण्णाया, एव चरखकरुपरुवणा
माद्यविज्जति, से स द्विद्विषाए १२ ॥ सू० ॥ ५७ ॥

इधेइयमि दुयालमगे गणपिडगे अणता माया अणता
अभाया, अणता हेऊ, अणता अहेऊ, अणता वारणा, अणता
अकारणा, अणता जाया, अणता अजीया अणता भवसिद्धिया
अणता अभवसिद्धिया अणता सिद्धा, अणता असिद्धा
पणत्ता—

भावमभावा हेतुमहेतु कारणमकारणो चेव ।

जीवाजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ३८ ॥

इष्टेइय दुःखालसग गणिपिडग तीव्र काले अणुता जीवा
आणाय विगटिता चाडत ससारकतार अणुपरिपट्टिसु ।
इष्टेइय दुःखालसग गणिपिडग पटुपणकाले परिता जीवा
आणाय विगटिता चाड त ससारकतार अणुपरिपट्टिति ।
इष्टेइय दुःखालसग गणिपिडग अणुगण काले अणुता जीवा
आणाय विगटिता चाडत ससारकतार अणुपरिपट्टिस्सति ।

इष्टेइय दुःखालसग गणिपिडग तीव्र काले अणुता जीवा
आणाय विगटिता चाडत ससारकतार धीर्भवइसु । इष्टेइय
दुःखालसग गणिपिडग पटुपणकाले परिता जीवा आणाय
विगटिता चाड त ससारकतार धीर्भवयति । इष्टेइय दुःखालसग
गणिपिडग अणुगण काले अणुता जीवा आणाय विगटिता
चाडत ससारकतार धीर्भवइस्सति ।

इष्टेइय दुःखालसग गणिपिडग न कयाइ नामी न कयाइ
न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ, भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य,
धुवे, नियण, सासण, अक्खण अव्वण, अघट्टिण निब्बे ।
सं जहातामए पचत्तिअणए न कयाइ नामी न कयाइ नत्थि, न
कयाइ न भविस्सइ भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य धुवे, नियण
सासण, अक्खण, अव्वण, अघट्टिण निब्बे, एवामेव दुःखालसग
गणिपिडग न कयाइ नामी, न कयाइ नत्थि न कयाइ न भवि-
स्सइ, भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियण, सासण,
अक्खण, अव्वण, अघट्टिण, निब्बे ।

सं ममासओ चउत्तिहेतुलसत्त, नजहा-वव्वओ त्तिअओ,

कालश्रो, भावश्रो, । तत्तु दध्यश्रो ए सुयनाणी उवउत्ते सव्य
द्व्याह जाणह पासह खित्तओ ए सुयनाणी उवउत्ते सव्य
खेत्त जाणह पासह, खित्तओ ग सुयनाणी उवउत्ते सव्य
काल जाणह पासह, भावश्रो ए सुयनाणी उवउत्ते सव्य भावे
जाणह पासह ॥ सू० ५८ ॥

अकखर सप्पी सम्म, साहय खलु सपजयसिय च ।

गमिय अगपविट्ठ, सत्तवि एण सपडियफळा ॥ ३६ ॥

आगमसत्तग्गहया अ बुद्धिगुणेहिं अट्टहिं दिट्ठ ।

रिति सुयनाणलभ त पुट्टविसारया धीरा ॥ ४० ॥

सुस्ससह पडिपुच्छह सुणेह निहहह य ईहए यात्रि ।

सत्ता अपोहए त धारेह करेह या मम्म ॥ ४१ ॥

मूअ हुका या, पाटकार पडिपुच्छीमसा ।

तत्तो पसगपारायण च परिणिट्ठ सत्तमए ॥ ४२ ॥

सुत्तरयो खलु पट्ठो, वीओ निज्जुत्तिमीसिओ मणिआ ।

तहओ य निरयमेमो, एस विही होह अणुओगे ॥ ४३ ॥

से ए अगपविट्ठ, से ए सुयनाण, से ए परोक्खज्ज ॥

ए नदी ॥ नदी समत्ता ॥



श्री अनुत्तरोववाइयदशांग सूत्रम्

— — — ५१ — — —

तेना कालेण, तेना समयेण रायमिहेणामणयेरे होत्था,
सेणियनामराया होत्था, चेलणा वेरीए गुणसिलण देइए
पणणे ॥ १ ॥

तेना कालेण तेना समयेण रायमिहे नयेरे, अज्झ-सुहम्मस्स
समोसरण, परिसा निग्गया धम्मकहिणो परिना पडिगया ॥ २ ॥

जवु जाय पज्जुमासइ एव धयासी-अइ एा भ ते ! समयेण
जाय सपत्तेण अट्टमस्स अगस्स अत्तगइदसाण अयमट्ठे पणुसो,
नवमस्स एा भ ते ! अगस्स अनुत्तरोववाइयदसाणा समयेण
जाय सपत्तेण के अट्ठे पाणुते ? ॥ ३ ॥

तएण से सुहम्मे अणुगारे, अम्बू अणुगार एव धयासी एव
खल्लु जम्भ ! समयेण जाय सपत्तेण नवमस्स अगस्स अणु-
त्तरोववाइयदसाणा तिण्णि वग्गा पणुत्ता ॥ ४ ॥

अइ एा भ ते ! समयेण जाय सपत्तेण नवमस्स अगस्स
अणुत्तरोववाइयदसाणा तत्रो वग्गा पणुत्ता, पट्ठमस्स एा
भन्ते ! वग्गस्स अनुत्तरोववाइयदसाणा समयेण जाय सप-
त्तेण कइ अज्झयणा पणुत्ता ? ॥ ५ ॥

एव एव जम्भ ! समयेण जाय सपत्तेण अनुत्तरोववाइयदसाणा

इसाण पदमस्त उगस्त इस अङ्गयणा पणुत्ता त जहा—
जालि, मयालि, उवयालि । पुरिमसेणे य, धारिसेणे य, ।
मीदते य, लट्टते य, वेदले, वेदायसे, अमये-ति कुमारि ॥१॥६॥

जह एा मते ! समणेण पाव सपत्तेण अणुत्तरोपवाहय-
इसाण पदमस्त उगस्त इस अङ्गयणा पणुत्ता, पदमस्त
एा मते ! अङ्गयणस्त समणेण अज सपत्तेण य अट्ट पणुत्ते ?
॥ ७ ॥

एय एलु जम् । तेण कालेण तेण समणस रायणिद नयरे
रिद्धिपमिय-समिद्ध, गुणनिमण वेदए सेणिए राया, धारिणी
वेरी, सीहनुमिरावामिसाण पडियुत्ता जाय जालि पृमाने जाय,
जहा मेहो जाय अट्टुत्तो दायो जाय उरिय पासाय जाय
विहरइ ॥ ८ ॥

तेण कालेण तेण समणस समणे भगव महावीर जाय
समोसडे सेणुओ निगया, जहा मेहो तहा जाली वि निगयो,
तयेय निस्त्रन्तो, जहा मेहो एकारस अगाइ अदिअइ ॥ ९ ॥

तएण ते जाली अणुगारे जेणेर समणे भगव महावीरे
तेणेय दयागन्धइ २ आ समण भगव महावीरवन् नमस्त ३
सा एय ययासी-दच्छामि एा मते ! तुमेहि अम्मणुणाय
ममाले गुण रयण मय-डा सवोक्कम्म उवसपज्जिसाण विह-
रित्त १ अहासुइ दवाणुप्पिया । मा पन्विध केहे ॥ १० ॥

तएण से जाली अणुगारे समण भगवया महावीरानु
अणुणाय समाले ममण भगव महावीर वन् नमस्त २
सा गुणरयण सवन्धु तवा इम उवमज्जि—
रइ । तज्जण—

१ पञ्चम मास अउत्थ अउत्थेण अणिक्खित्तेण तयोक्कमेण दिवद्वाणुक्कद्वप सूरामिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय ।

२ दोस मास छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेण तयोक्कमेण दिवद्वाणुक्कद्वप सूरामिमुहे आयावण भूमिण आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय ।

३ तथ मास अट्ठम अट्ठमेण अणिक्खित्तेण तयोक्कमेण दिवद्वाणुक्कद्वप सूरामिमुहे, आयावणभूमिण आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय ।

४ अउत्थ मास दसम दसमेण अनिक्खित्तेण तयोक्कमेण दिवद्वाणुक्कद्वप सूरामिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय ।

५ पचम मास बारसम बारसमेण अनिक्खित्तेण तयोक्कमेण दिवद्वाणुक्कद्वप सूरामिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय ।

६ छट्ठ मास अउत्थ अउत्थमेण अणिक्खित्तेण तयोक्कमेण दिवद्वाणुक्कद्वप सूरामिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय ।

७ सत्तम मास सोलसम सोलसमेण अनिक्खित्तेण तयोक्कमेण दिवद्वाणुक्कद्वप सूरामिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय ।

८ अट्ठम मास अट्ठारसम अट्ठारसमेण अनिक्खित्तेण तयोक्कमेण दिवद्वाणुक्कद्वप सूरामिमुहे आयावणभूमिण आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेण अवाउडेणय ।

कस्मेणदियाद्वाणुकद्वयं मृगमिमुहे आयावणभूमिष आया-
वेमाले, रस्ति वीरासणेण अवाउडेणय ।

६ मधम मास विसहम वीमहमेण अनिक्खित्तेण तयो-
कस्मेण दियद्वाणुकद्वयं मृगमिमुहे आयावणभूमिष आया-
वेमाले रस्ति वीरासणेणं अवाउडेणय ।

१० दसम मास पावीसाण पावीमहमेणं अनिक्खित्तेण
दियद्वाणुकद्वयं मृगमिमुहे आयावणभूमिष आयावेमाले रस्ति
वीरासणेण अवाउडेणय ।

११ एकस्मिन् मास चउपीसाण चउपीसहमेण अनिक्खित्ते
णेण तथाकस्मेण दियद्वाणुकद्वयं मृगमिमुहे आयावणभूमिष
आयावेमाले रस्ति वीरासणेण अवाउडेणय ।

१२ चत्तम मास छुप्पीसाण छुप्पीसहमेण अनिक्खित्तेण
मवोकस्मेण दियद्वाणुकद्वयं मृगमिमुहे आयावणभूमिष आया
वेमाले रस्ति वीरासणेण अवाउडेणय ।

१३ तेरसम मास अट्टापीसाण अट्टापीसहमेण अनिक्खित्ते-
णेण तयोक्स्मेण दियद्वाणुकद्वयं मृगमिमुहे आयावणभूमिष
आयावेमाले रस्ति वीरासणेण अवाउडेणय ।

१४ चउहमम मास तीमहम तीसहमेण अनिक्खित्तेणं
तयोक्स्मेण दियद्वाणुकद्वयं मृगमिमुहे आयावणभूमिष आया
वेमाले रस्ति वीरासणेण अवाउडेणय ।

१५ पसस्मम मास वत्तीमहम वत्तीमहमेणं अनि-
तयोक्स्मेण दियद्वाणुकद्वयं मृगमिमुहे

वेमाणे रत्ति वीरासणेण अगडडेण्य ।

१८ सोलम मास चोत्तीसइम चोत्तीसइमेश तयोक्कम्मेण
दिगट्टाणुकडुए सूरामिमुहे आयायणभूमिण आयावेमाणे रत्ति
वीरासणेण अगडडेण्य ॥ ११ ॥

तए ए से जालि अणगारे गुणरयण सगच्छर तयोक्कम्म
प्राप्तासुता अहाक्कण अहामग्ग अहातच्च समयाणा कासित्ता
पालित्ता साहित्ता तिरित्त किट्टित्ता आणए आगहित्ता जेणेन
समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ ता समगा भगव
महावीर वदइ नमसइ वदइत्ता नमसइत्ता वट्ठिं चउत्थछट्ठ
अट्ठमइसमहुवालसेहिं मासेहिं अज्जमानदमणेहिं विचित्तेहिं
तयोक्कम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे त्रिहरइ ॥ १२ ॥

तए ग से जागी अणगार तेण उरालेण विउलेण पयसेण
पग्गहिणगा एउ जा चेय जहा खदग्गस्स वत्तउया सा चेय
चित्तणा, पापुच्छणा धेरेहिं सद्धिं विपुल तहेउ दुक्कहत्ति, एण
सोलस वासाइ सामणपरियाग पाउखित्ता कालमाने काल
निश्चा उच्छद अद्रिमनोहम्मीसाण जाय आणण्णुए कए नव
य गोवेळें त्रिमाणउत्थडे उच्छद दूर वीतीवसित्ता विजयविमाणे
देवत्ताए उवणणे ॥ १३ ॥

तए ए से येग भगवता जालि अणगार कालगय जाणित्ता
परिनिवाणवत्तिय काउमग्ग करेत्ति, पत्तरियराइ निगहत्ति
तहेय उतात्ति जाउ इमे से आयावभउण ॥ १४ ॥

भरेत्ति ' भगव गोयमे जावएव वयासी—एव खलु देवा-
णुप्पियाण अनेवामी जाली ताम अणगारे पगइभइए, से ए

आली अणुगारे काह गण करि गण, कहि उववण्णे ? । एव गणु
गोयमा । मम अतेयासी तहेय अहा खदयस्म जाय फालगण
उह चणिमाइ जाय विजय विमाले दयत्ताए उववण्णे । १४ ॥

जालिस्म ए भन्ने । देवस्म कयदय फाल ठिइ पणत्ता ।
गायना । उत्तोम सागरोयमाइ ठिई पणत्ता ॥ १५ ॥

से ए भते ।-ताओ नेयलोमाओ भाउफलण्ण भयन्तण्ण
दिक्खण्ण कहि गच्छिहेइ कहि उवउज्झहिइ ? । गोयमा ।
महाविदे यासे सिज्झिहिइ जाय सयदुफवाणमत करि—
म्सइ ॥ १७ ॥

एव एउ जम्बू । समणेण जाय सपत्तेण अणुत्तरेयवाइय
दसाण पदमस्म वग्गस्म पदमस्म अज्झयणस्म अयमहे
पणत्ते ।

एव सेसाणवि अट्ठगह भाणियन् । नवर छ धारिणि-
सुम्मा वेहल्लवेहायमा वेहल्लणए । अमयम्स नाणत्त—रायगिहे
नगरे, सेरिध रावा नवा दयी माया, सेसे तहेय । भाइल्लण
पच्चगह सोलम वासाइ सामणणपरियाओ तिगह बारस-
वासाइ दोणह पच्च धाम्माइ । आइल्लण पच्चगह अणुपुत्रीए
उयवाओ, विजय विजयते जयते अपराजिण सव्वट्ठसिजे ।
गीहदत्त सत्तट्ठसिद्ध अणुत्तरेण सेसा । अमओ विजये । सेस
जहा पदमे ।

एव एउ जम्बू । समणेण जाय सपत्तेण अणुत्तरेयवाइय
दसाण पदमस्म वग्गस्म अयमहे पणत्ते ।

॥ इति पदमस्स वग्गस्स त्स अज्झयणा सम

वेमाणे रत्ति वीरासणेण अवाउडेणय ।

१६ सोलम मास चोत्तीसइम चो
दियट्टाणुकट्टण सूरामिमुहे आयाउणभु
वीरासणेण अवाउडेणय ॥ ११ ॥

तण हा से जालि अणगारे गुणरय
आहासुरा अहावण्य अहासमा अहाता
पाजित्ता सोहिना तिरित्त किट्टित्ता क
समणे भगव महात्रीरे तेणेव उवागड
महावीर पदइ नमसइ चदइत्ता नमर
अट्टमइसमदुवालसेहि मासेहि अख
तत्रोक्कम्मेहि आपाण भावेमाणे त्रिहर

तण हा से जाली अणगारे तेण रे
पगहिणग पय जा चैव जहो एद
चिन्तणा, पापुळ्ळणा येरेहि सद्धि नि
सोलस वासाइ सामणणपरियाग पा
निच्च उहट्ट चद्रिमसोहम्मीसाग जाय
प मेरेऊ त्रिमाणयडे उहट्ट दूर वीर
वेयत्ताण उववणणे ॥ १२ ॥

तण हा त वेरा भगवता जालि आ
परिनिजाणयत्तिय काउसग्ग, धरेत्ति,
तदेव उत्तांति जाय इमे से आयाउभट

मतेत्ति ! भगव गोयमे जावण्य
पुणियाण अनवामी जाली नाम अण

एव खलु जम्बू ! समणेण जाय सपत्तेण अणुत्तरोपधाइय-
दसाण दोघस्स यग्गस्स अयमट्ठे पणुत्ते, मासियाए सल्लेह
णए दोसुपि उग्गोसु ॥ त्ति वेमि ॥

॥ वीथो वग्गो ममत्तो ॥ ७

॥ तृतीय उर्ग ॥

अइ ए मन्ने ! समणेण जाय सपत्तेण अणुत्तरोपधाइय-
दसाण दोघस्स यग्गस्स अयमट्ठे पणुत्ते तथस्स गा भन्ते !
यग्गस्स अणुत्तरोपधाइयदसाण समणेण जाय सपत्तेण वे
अट्ठ पणुत्ते ? ॥ १ ॥

एव खलु जम्बू ! समणेण जाय सपत्तेण अणुत्तरोपधाइय-
दसाण तथस्स यग्गस्स कस्स अम्मयणा पणुत्ता तज्जहा—

धणणे य, सुनक्खत्ते य, इत्तिदासे य, आहिते ।

पल्लए, रामपुरा य, अदिमा, पिट्ठिमाइ य ॥ १ ॥

पट्ठालपुत्ते अणुगारे, नयमे पोट्टिले इ य ।

वेइन्ने, दसमे बुत्ते इमे य दस्स आहिया ॥ २ ॥

अइ गा मन्ने ! समणेण जाय सपत्तेण अणुत्तरोपधाइय-
दसाण तथस्स यग्गस्स दस अज्झयणा पणुत्ता, पट्ठमस्स
गा म त ! अम्मयणुम्प समणेण जाय सपत्तेण वे अट्ठे पणुत्ते ?
॥ ३ ॥

एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण ममएण काइन्नी नाम
नयती होत्था रिद्धित्थिमियममिद्धा, मएस्सयवणे उज्जाणि-
स वाउयपुण्णकल्लसमिद्धे जाय पासाइण, जियसन् राया ॥ ४ ॥

॥ द्वितीय-वर्ग ॥

जइ गा भते ! समणेण जाय सपत्तेण अणुत्तरोवयाइ-
दसाणा पढमस्स वग्गस्स अयमद्वे पणुत्ते, दोषस्स एा भते !
वग्गस्स अणुत्तरोवयाइदसाणा समणेण जाय सपत्तेण के
अद्वे पणुत्ते ? ॥ १ ॥

एव एतु जम्भू ! समणेण जाय सपत्तेण अणुत्तरोवयाइ-
दसाणा दोषस्स वग्गस्स नेरस्स अज्झयणा पणुत्ता ? तज्जहा-

वीहसेणे महासेणे, लहन्ते य, गुहदत्ते य, ।

सुज्जवत्ते य, हरत्ते, दुमे, दुमसेणे, महादुमसेणे य आदिप ॥ १ ॥

सीहे य, मीहसेणे य, महासीहसेणे य आदिप ।

पुणसेणे य रोधत्ते, तेरसमे हाति अज्झयणे ॥ २ ॥

जइ गा भते ! समणेण जाय सपत्तेण अणुत्तरोवयाइ-
दसाणा दोषस्स वग्गस्स नेरस्स अज्झयणा पणुत्ता, दोषस्स
एा भते ! वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स समणेण जाय सप-
त्तेण के अद्वे पणुत्ते ?

एव एतु जम्भू ! तेण कात्तेण तेण समणं रायगिहे णयरे,
शुणसिलप चेइण मेणिप राया, धारिणी दधी, सीहो सुमिणे
जहा जाली तदा जम्म, बालत्तण कलाओ, णयरं दीहसेणे
शुमार सव्ये उतात्रया, जहा-जालिस्स जाय अतं कादिति ॥ १ ॥

एव तरसवि, रायगिहे नयरे, सेणिओ पिया, धारिणी माया
तेरसगहवि मोलसघासाण परिणाय मासियाण सलेहणाण आणु
पुत्तीण उत्रयाओ विजण दोप्पि, विजयते दोप्पि, जयते दोप्पि,
॥ दोप्पि, मेसा महादुमसेणमाइए पंच सव्यद्वसिद्ध ॥ २ ॥

૧ ધરણે અણગારે, જાણે નિવસ મુદે મરિતા

૨ જે દિવસ સમણ મગર મહાવીર ચદર

૩ મરિતા પર વયાસી-પરવં પલુ રજ્જામિ ન

૪ મેલિ અમણગણાણ સમાણે જાવજીરાણ છટ્ટ-

૫ પરિવિત્તસેણ આયરિલ-પરિગદિપણ તયોકમ્મેણ

૬ અણ માથેમાલે વિહરિત્તપ, છટ્ટસ્સણિ ય ન પારણગતિ

૭ ૥ આયરિલ પદિગદિપણ, જો જેણ ન અણાયરિલ,

૮ તપિય સસદ્દેણ જો જેણ ન અસસદ્દેણ ત પિ ય ન ઉક્કમ્મ-

૯ ધમ્મય જો જેણ ન અણુક્કમ્મધમ્મિય, તપિ ય ન જ અંબેવહવે

૧૦ સમણમાદણ અતિદિ-ત્રિયણ-યણિમગા જાણકસલિ । અદામુદ

૧૧ દણુણિયા ! મા પદિરધ કરેહ ॥ ૧૦ ॥

તપણ સે ધરણે અણગારે સમણેણ મગરયા મહાવીરેણ

અમણગણાયસમાણે હટ્ટ મુટ્ટ જાવજીરાણ છટ્ટ છટ્ટેણ અણિ-

વિત્તરણ તયોકમ્મેણ અણાણ માથેમાલે વિહરેહ ॥ ૧૧ ॥

તપણ સે ધરણે અણગારે પદમ-છટ્ટપ્પમણ-પારણયસિ પદ

માણ પોરિસીણ સરમાય કરેતિ અદા મોયમસ્વામી તદ્દેય આપુ

૧૨ ઉતિ જાવ જ્ઞેણેય કાકરી જ્યરી તેણેય ઉગાગન્હુર ૨ જા

કાકરીણ મધરીણ ઉચ્ચનીય જાવ અદમાણે આયરિલ જાવ

માવરુસલિ ॥ ૧૨ ॥

તપણ સે ધરણે અણગારે તાણ આમુજ્જતાણપપસાણ વગ્ગ

દિવ ણ વસણાણ વસમાણે અદ મત્ત સમદ તો વાગા ન લમદ,

અદ વાગા સમદ તો મત્ત ન લમદ ॥ ૧૩ ॥

તપણ ધરે અણગાર અનીણે અગ્ગિમણે અવલુસે અવિમાની

૧૪ નપરિત્તત્તજોમી અવળઘટ્ટણ-જોમ અરિસે અદાપજ્જતા સમુદાગ

तत्थ ए काकन्दीण नयरीण भदा लाम सत्थवाही परिवसइ,
अहा जाय अपरिभूया ॥ ५ ॥

तीसे ए भइए सत्थवाहीए पुत्ते धेने नाम द्वाए होत्था
अहीए जाय सुरूवे, पच्चघाई-परिगहिए, तजहा—सीरघाए
अहा महएले जाव वाघसरि कलामो अहिण जान गल मोग
समत्थे जाण गानि हात्था ॥ ६ ॥

तए ए सा भदा सत्थवाही धणलइए उम्मुकपालभाए
जाव मोगसमत्थ जाणिता, यत्तीस पासायघडिंए करेइ
अभुग्गयमूसिए जाय तेसिं मज्झ अल्लेग-भयण-एम-सय-
मसिबिदु जान यत्तीमाए इम्भउरइअगण पगदिघमे ए पाणि
णिणहायेइ २ सा यत्तीमाओ दामो जाव उटिं पासायघडिं-
सए पुट्ठतेहिं मुइगमएहिं जान निहरइ ॥ ७ ॥

तेण कानेण तेण समएण समणे भगवं महावीरे समो-
सडे, परित्ता निग्गया, अहा काणिओ तहा जियसत्तू
णिग्गओ ॥ ८ ॥

तए ए तस्स धणस्स त महया अणसह अहा जमाली
तहा णिग्गओ, एयए पायचारेण जाव ज एयए अम्मय भइ
सत्थवाहिं आपुच्छामि, तए ए अह देवाणुप्पियाण अतिए
जाव पव्वयामि, जाव अहा जमाली तहा आपुच्छइ, मुच्छिया,
युत्तपडियुत्तया, अहा महएले जाव जाहे नो सचाइया,
अहा थायथापुत्ते तहा जियसत्तू आपुच्छइ, द्दत-चामराओ,
सयमेव जियसत्तू निक्खमगा करेइ, अहा थायथापुत्तस्स
एण्हो, जाव पयइए, अलगागे जाए, ईरियांसमिए जायगुत्त-
यमयारी ॥ ९ ॥

तदण मे धर्मे अणुगारे, उच्येय निवस मुद भविता
 जाय पश्यदए त चेय दिपय समणे भगव म्हावीरं यदह
 नमसा पदित्ता नमसित्ता पय ययामी-पय मन्तु इच्छामि ए
 मन्ते । तुम्हेहि मम्मणुग्गाय समणे जायजीपाण छट्ट-
 छट्टेण अलिक्खित्तोण आययिअ-परिग्गहिणण तपोक्कम्मण
 अणण मायेमाण विहरिअण, छट्टस्सवि य ण पारणमति
 कपदमे आययिअ परिग्गहिण, एो चेय ण अणाययिल,
 तपिय मसट्ठण एो चेय ण अमसट्ठण त पि य ण उज्जिमय-
 धम्मय एो चेय ण अणुज्जिमवधमिअ, तपिय ण अ अन्नवदये
 समणमाहण अतिदि-क्खिअ-यणिअगा भावकंत्वति । अट्ठासुह
 दयाणुप्पिया । मा गहिअध करेह ॥ १ ॥

॥ तदण मे धर्मे अणुगारे समणेण भगवया म्हावीरेण
 मम्मणुग्गायसमाणे ददु तुदु जायजीपाण छट्ट छट्टेण अलि-
 कित्तरेण तपोक्कम्मण अणण मायेमाण विहरइ ॥ ११ ॥

तदण मे धर्मे अणुगारे पदम-छट्टममण पारणयति पद
 माय पोरिमीद मज्झाय करति पहा गोयमस्यामा तदेव आपु
 पठति जाय जेणेद काकदी लवरी तेणेव उवागन्त्रइ २ सा
 काकनीद मंदरीद उचनीय जाय अट्ठमाणे भाययिल जाय
 नाचरयति ॥ १० ॥

तदण मे धर्मे अणुगारे ताव आभुजताण पयत्ताए पण
 दिग व पयत्ताए पसमाण अइ मत्तं समइ तो पाणं ए समइ,
 अद पाणं समइ तो मत्तं ए समइ ॥ १३ ॥

॥ तदण मे धर्मे अणुगारे अणीणे अविमणे अकलुसे अविमादी
 गपरिततजोमी अवलपट्ठय-ओग धरिते अहापज्जता समुदाण

पडिगाढेइ २ सा काकदीओ खयरीओ पडिखिखमइ २ सा
जहा गोयम महा पडिदसेइ ॥ १३ ॥

तए ए से धएणे अणगारे, समएण भगवथा महावीरेण
अमणुएणए ममाण अमुच्छिउए जाव अणज्जेवधने यिलमिय
पणणभूपण नएणएण आहार आहारेइ २ सा, सजमेण तवसा
अण्णए भावेमाणे विहरइ ॥ १४ ॥

तए ए समणे भगव महावीरे अणुगा कथाइ काकदीओ
खयरीओ सहस्सउएणओ उज्जाएणओ पडिखिखमइ २ सा
वहिया जणघयविहार दिहरइ ॥ १५ ॥

तए ए से धएणे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स
तहाकवाए येराए अतिए साभाइयमएयइ एकारस अगाइ
अडिज्जति २ सा सजमेण तवसा अण्णए भावेमाणे विहरइ ॥ १७ ॥

तए ए से धएणे अणगारे तेण ओराएण जहा खइओ जाव
सुएयहुयासणे इय तेवसा जलते उरसोमेमाणे चिट्ठति ॥ १८ ॥

धमस्स ए अणगारस्स पायाण अयमेयारूवे तयरूय-
जाएणे होत्था से जहानामए सुफलकलीइ वा, कट्ठपाउयाइ
वा, उरगओयइहाइ वा, एवामेव धमस्स अणगारस्स पाया
सुका भुक्खा लुक्खा निमसा कट्ठिक्खमडिरस्ताए पन्नायति, नो
चय ए ममसोजिवत्ताए ॥ १९ ॥

धमस्स ए अणगारस्स एयगुलियाए अयमेयारूवे तव-
रूयपाएणे होत्था से जहानामए कलमगलियाइ वा मुग्ग-
माससगलियाइ वा, मरणिवा छिण्णा उण्हे दिण्णा सुका
मिताअमाणी मिनायमाणी चिट्ठति, एवामेव धमस्स

पायगुनियाओ मुक्काओ जाव लो मसमोनियत्ताए ॥ २० ॥

धमस्स भण्णारस्स अघारा अयमेयारुवे-से जहानामए
क्कजघाए वा, काकजघाए वा, टणियालियाजघाए वा, एव
जाव सोणियत्ताए ॥ २१ ॥

धमस्स हा आण्ण अयमेयारुवे से जहानामए-कानि-
पोरे वा, मयूरपोरे वा, नेणियालियापोरे वा एव जाव
सोणियत्ताए ॥ २२ ॥

धमस्स हा उरुग-जहा नामए सामकहिरे वा, थोरि-
हिले वा, सहइयकरिहा वा, सामलिकरिहा वा, लग्निया
ठिगा उएदे निगहा जाव चिट्ठे, एवमेव धम्म इहा जाव
सोणियत्ताए ॥ २३ ॥

धमस्स हा कटिपत्तस्स इमेयारुवे, से इहामए इट्ठपाण्ड,
वा, जरम्मपाण्ड वा महिमपाण्ड वा जाव सोणियत्ताए ॥ २४ ॥

धमस्स हा उदरमायस्स अयमेयारुवे जहा नाम
मुक्कदिह इहा मज्झम कमल इहा, इहाणवा, एव
उदरमुक्क ॥ २५ ॥

धमस्स हा वासुलियाइहाणस्स इहा नाम
वासयावलीइ वा वाणालीइ वा, इहा वा एव
॥ २६ ॥

धमस्स पिट्ठकडगाण अयमेयारुवे जहा नाम
घटलीइ वा, गोलावलीइ वा, कण्ठा, एवमेव

धमस्स उरकडयस्स अयमेयारुवे जहा नाम
कट्टेइ वा, विण्णपत्तेइ वा, एवमेव

धनस्स वाहाण से जहा नामए समिसगलियाइ वा पहाया
सगलियाइ वा, अगत्थिवसगलियाइ वा, एवामेव० ॥ २६ ॥

धणस्स हत्थाण अयमेयारूवे से जहा नामए-सुक्कं छग-
णियाइ वा यडपत्तेइ वा, पलासपत्तेइ वा एवामेव० ॥ २७ ॥

धणस्स हत्थगुलियाण से जहा नामए-कलसगलियाइ
वा, मुग्ग-माससगलियाइ वा, तरुणिया छिन्ना आपवे दिरणा
सुक्का समाणी एवामेव० ॥ २८ ॥

धनस्स गीवाए से जहा नामए-परगगीयाइ वा, कुडिया
गीयाइ वा, [कोत्थेणइ वा] उच्चट्टयणएइ वा एवामेव० ॥ २९ ॥

धनस्स एा हसुवाए से जहा नामए-लाउफलेइ वा, हड्ड
पफणेइ वा अंगगट्टियाइ वा एवामेव० ॥ ३० ॥

धनस्स एा उट्ठाण मे जहा नामए-सुक्कजलोयाइ वा, तिले
सगुलियाइ वा, अलसगुलियाइ वा, [अण्डगपमीयाइ वा]
एवामेव० ॥ ३१ ॥

धनस्स जिमाए मे जहा नामए यडपत्तेइ वा, पलास-
पत्तेइ वा [उवरपत्तेइ वा] मागपत्तेइ वा एवामेव० ॥ ३२ ॥

धनस्स नासाए से जहा नामए-अग पसियाइ वा, अवा
डगपसियाइ वा, माउलिंगपसियाइ वा, तरुणियाइ वा, एवा-
मेव० ॥ ३३ ॥

धणस्स अल्लीण से जहा नामए-वीलाट्टिण्णुइ वा यल्ली-
सगट्टिण्णुइ वा, पामाइयनाग्गाइ वा, एवामेव० ॥ ३४ ॥

तत्र ए मे सेणिए राया समणम्म भगवओ महावीरस्स
अतिण धम्म सोच्चा निसम्म समण भगव महावीर घट्ट नमसइ
घट्टत्ता नमसित्ता एव वयासी—इमेसि ए भते ! इदभुरपा-
मोक्खाण चउदसण्ह समणसाहस्सीण धये अणगारे महा-
दुक्करकारण चेव महानिज्जरयण चेव ? ॥ ४४ ॥

एव एल्लु सेणिया ! इमेसि इदभुरपामोक्खाण चउदसण्ह
समणसाहस्सीण धये अणगारे महादुक्करकारण चेव, महा-
निज्जरतराण चेव ॥ ४५ ॥

से वेणट्टेण भते ! एव बुच्चइ इमेसि चउदसण्ह समणसा
हस्सीण धये अणगारे महादुक्करकारण चेव महानिज्जरयण
चेव ॥ ४६ ॥

एव एल्लु सेणिया ! तेण कालेण तेण समणकाकणी
नाम नयरी होत्था, जाव उप्पि पासायवडिसण विहरइ । तत्र ए
अह अण ! या कयाइ पुट्ठायुपुत्रीण चरमाणे गामायुगाम बुद्ध-
जमाणे जेण्ये क.कणी नयरी जेणेय सहम्मववणे उज्जाणे तेणेव
उत्तागण २ सा अहावडिरुत्त उग्गह उग्गि लिहत्ता सजमेण तयमा
जाव विहरामि । पणित्ता शिग्गया, त चय जाव पग्गइय जाव
विलमिव जाव आहारेति धम्मस्स ए अणगारस्स पादाण सरीर
यध्मओ सट्ठो जाव उवमोमेमाण २ चिट्ठइ । से तेणट्टेण
सेणिया ! एव बुच्चइ इमेसि चउदसण्ह समणसाहस्सीण धये
अणगारे महादुक्करकारण चेव महानिज्जरयण चेव ॥ ४७ ॥

तते ए से सेणिए राया समणस्स भगवमो महावीरस्स
अतिण पयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठुट्टे समण भगव महावीर
आयाहिण पयाणि करेइ घट्ट नमसइ २ सा

जगेत्त घने अङ्गारे तेणेव उपागच्छइ २ सा घन अङ्गार
निकुत्तो आयादिण पयाहिण करेइ वदइ नमसर, वदइत्ता
नमसत्ता एव वयामी-घण्णि सिता तुम देवाणुणिया ! सुपुरणे
सुवयत्त वयस्सुखं सुखदेख देवाणुणिया ! तव माणुस्सए
उम्मजाणियफले त्ति कददु वदइ नमसर २ सा जेणेव समणे भगव
महापीरे तेणव उपागच्छइ ३ सा समण भगव महापीर तिकु
जे जाव वदइ ४ सा जामेव तिसिं वाउम्भए तामेव तिसिं
दिगए ॥ ६८ ॥

तएण तस्स वधूरुव अङ्गारस्स अथवा कयाइ पुण्य-
स्तारस्सकालमवपसि उम्मजाणिय जागरमाणस्स इमेया-
रुव अङ्गुत्थिए चित्थिए मणोगए वधूरुव समुपज्जित्था, एव
खलु अह इमेण ओरालेण जहा एवथो तद्देव चित्ता, आपु-
ण्ण, धरेहिं सज्जि विपु- दुब्बदइ, । मासियाए सल्लेहए
नयमासा परिपाप्मा जाव जालमासे काल त्रिया उइद चरिम
जाव नययमेविज्जविज्जविमाणए उडे उइद दुर धीइइत्ता
सङ्गट्ठसिंहे विमाले देवत्ताए उववथे ॥ ६९ ॥

धेरा तद्देव उत्तरति जाव इमे से आचारमइय ॥ ५० ॥

भते त्ति, भगव गोयमे तद्देव पुण्डइ जहा खदयस्स भगव
वागरेति जाव सङ्गट्ठसिं- विमाले उववथे ॥ ५१ ॥

घनस्स ता मन्ते ! एवस्स वउइय काल दिइ पन्नत्ता ?
गोयमा ! तेत्तीम सागरोवमाइ दिई पन्नत्ता ॥ ५२ ॥

से एो भते ! ताथो देवतायाओ आउकरएण मयक्खएण
टित्तिक्खएण ~ ~ ~ कहिं उउउज्जेहिनि ? गोयमा !

महाविदेहयामे सिञ्चिहि दुर्जिहि मुञ्चिहि परिणिगहि
स उदुपलाणमत करहि ॥ ५३ ॥

एव सलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाय सप-
णेण पद्मरुप अज्झयणस्स अयमद्रे पण्णत्ते ॥ ५४ ॥

॥ पद्म अज्झयण समत्त ॥

जह ग मत्ते ! उफणेयओ पव सलु जम्बू ! तेण कालेण
तेण समणण काक्की नयरी होत्था, महा सत्थयाही परिघ-
सह ॥ १ ॥

तीसे ग महाण सत्थयादीण पुत्ते सुवफलत्ते नाम दारप
होत्था, महीण० जाय सुरूये, पवधाइ-परिफित्ते जहा धम्मो-
तहेण वत्तीसओ दाओ जाय उरिण पासायवडिसण विह-
रह ॥ २ ॥

तेण कालेण तेण समणण सामी समोमडे जहा धम्मो
तहा सुवफलत्तेयि निग्गओ जहा धायवापुत्तस्स तहा निक्ख
मण जाय अणुगारे जाय ईरियासमिण जाय गुत्तवमया-
रिण ॥ ३ ॥

तण ता से मुनफलत्ते अणुगारे ज चेव निवस समणस्स
भगवमो महावीरस्स अतिण मुडे जाय पण्डण त चेव निवस
अमिगाह तहेय विलसिण पण्णगमूणण आहार आहारेइ,
सजमेण जाय विहरह ॥ ४ ॥

समण जाय बहिया जणउयविहार विहरह । एकारस
अहिअइ, सजमेण तवसा अण्णग भावेमाले विहरह ॥ ५ ॥

तएण से सुनक्वत्ते अणगारे तए उरालेण जहा खद्वो
॥ ६ ॥

तेण कालेण तेण ममएण रायमिहे एयरे गुणसिण
येए, सेएण राया मामी समोसडे, परिसा रिग्गया, राया
निगयो धम्मकहा राया पडिगयो, परिसा पडिगया ॥ ७ ॥

तएण तस्स सुनक्वत्तस्स अन्नया कया पुत्तरत्ता जाय
धम्मजागरिय अहा मदनस्स यएयासाओ पणियाओ ॥ ८ ॥

गोयमपुच्छा जाय सव्वट्ठसिडे विमोखे देवत्ताए उयगले ।
जाय महाविदेहयाम तिज्झहिति ॥ ९ ॥

॥ इति जय अज्जयसु सप्त ॥

एउ खलु जम्बू । सुनक्वत्तगमेण मयावि अट्ट माण्णि-
यया, लयर आणुपुणीए दोन्नि राणी, माणि साइए
दोन्नि पाणियगामे मयमा हत्थिणपु, मया रायमिहे ॥ १ ॥

नएण मदाओ जणुलीओ, नएण उलीमया दाओ
नएण निक्खमए जायया पुत्तस्स कय वदइणिया का
मयमास धाणे वेदइ सुमासाणि, समाग वदइण
मास सलेहया स वे महाविहारा न कहेंति । एउ
अज्जयगणि । एउ खलु जम्बू । मयया

अणुत्तरोववाइयदमाग नक्वत्त अणमडे
अणुत्तरोववाइयदसाओ समदइ अणुत्तरोववा
गो सुयलओ तिनि मय दिसेमु
पढमे वगे दस उदमया न नक्वत्त
वगे दस सेस नक्वत्त

॥ दशाश्रुतम्कथ चित्त-समाधि पञ्चमी दशा ॥

नमो सुयदेवयाप भगवती ॥ सुय मे आउम् । तेण भगवया
एयमकलाय, इह खलु येरेहिं भगवतेहिं दस चित्त-समाहि-
डाणा पञ्चत्ता । कयरा खलु ते येरेहिं भगवतेहिं दस चित्त-
समाहिडाणा-पञ्चत्ता ? इमे खलु येरेहिं भगवतेहिं दस-
चित्तसमाहिडाणा-पञ्चत्ता तजहा—तेण कालेण तेण समण
याणियग्गामे नगर होत्था, नगर-वण्णमो भाणियग्गो ॥ १ ॥

तस्स ॥ याणियग्गामस्स नगरस्स पहिया उत्तरपुरच्छिमे
दिसिभाए दूतिपलासए नाम चेएए होत्था, चेएए वण्णमो
भाणियग्गो ॥ २ ॥

जियससू राया, तस्स धारिणी नाम देवी एव सत्थं
समोसरणो भाणियग्ग आउ पुदवितित्तापट्टए, सामी समो-
मडे परित्ता निग्गया, धम्मो कहिओ परित्ता पडिगया ॥ ३ ॥

अज्जो ! इति नमणे भगव महत्तीरे समणाय समणीमोय
निग्गया य निग्गणीमोय आमतित्ता एव धयासी-इह खलु अज्जो !
निग्गयाण वा, निग्गणीण वा इरियासमियाण, भासासमियाण,
एसणासमियाण, आवाणमड-मस-निकखेण्ण-समियाण,
उच्चारणासयण-रोल-जस्तसिंघाण-वाग्गिद्वयणिया-समियाण,
मण समियाण, यय-समियाण, काय-समियाण, मण-गुत्ति

पाण, वय-गुत्तियाण, काय-गुत्तियाण, गुत्ति-दियाण गुत्त-
उभयाणीण, पायद्वीण, आय-द्वियाण, आय जोयण, आय परि
कमाण पक्खिण-पोसद्विणसु समाहि पत्तण मिशायमाणेण
इमार दसचित्तममाहि-द्वाराइ असमुप्पण-पुं-गार समुप्प-
जित्ता तज्झा—धम्मचिन्ता वा से अममुप्पण-पुं-गार समुप्प-
ज्झा स-ध धम्म जाणित्तप ॥ १ ॥

सुमिण दसिण वा से असमुप्पण पुं-गे समुप्पज्झेज्जा, अहा
तथ सुमिण पासित्तप, सणिण जाइ-सरणेण सणिण-णाण वा
से असमुप्पण-पुं-गे समुप्पज्झेज्जा अप्पणो पोगणिय जाइ
ममरित्तप ॥ २ ॥

देय-दसणे वा से असमुप्पण पुं-गे समुप्पज्झेज्जा दिव्व
देयदिद दिव्व देय-जुइ दिव्व दवाणुमार पासित्तप ॥ ३ ॥

ओहिणाणे वा से असमुप्पण पुं-गे समुप्पज्झेज्जा, ओहिणा
लोग जाणित्तप ॥ ४ ॥

ओहि दसणे वा से असमुप्पण-पुं-गे समुप्पज्झेज्जा अहा
इज्जेसु नीय-समुहेसु सगगीण पच्चिदियाण पज्जसगाण मणो-
गणमात्रे जाणित्तप ॥ ५ ॥

केवलनाणे वा से असमुप्पण-पुं-गे समुप्पज्झेज्जा केवल-
वप्प लोया-लोय जाणित्तप ॥ ६ ॥

केवल-दसणे वा से असमुप्पण पुं-गे समुप्पज्झेज्जा
केवलकप्प लोयालोय पासित्तप ॥ ७ ॥

केवल मरणे वा से असमुप्पण-पुं-गे समुप्पज्झेज्जा सव्व

'रुक्म मूमे जहा शक्ये मिथमाग म मोहति ।
 परं वामा म मोहति मोहति ज मय मय ॥ १५ ॥
 जहा दहान् र्थयागा र जायति पुन भवति ।
 वाम जीवमु दबहेतु म जायति मयपुन ॥ १६ ॥
 त्रिषा मोरानिय मोदि, माम गाय च वपली ।
 चाउय वपलिजे च विना मयति मीर्य ॥ १७ ॥
 पक्ष ममिममागम, निमवादाय चाउमो ।
 सैनिमुजिमुवानम भाया मुजिमुवान ॥ नि वेमि ॥ १८ ॥
 ॥ इति श्रु, ध्रुवम् ॥ विचमम, पि-नाम-पचमी दशा ॥

॥ चउमरण पद्यम् ॥

सापञ्जमोगविद् उचितम् गुणवमो च पट्टिपत्नी ।
 लज्जिमम निदला यलतिविष्ट, गुणधारणा येय ॥ १ ॥
 वारिमम दिमादी कीर माप्राप्तम् विल इहय ।
 मावञ्जममागण वल्लणासपल्लवमो ॥ २ ॥
 दमलप्यारपिमोरी चउवीमथणम् विशद य ।
 मयम्भुमगुणविमलरुयेण जिगयतिदाम् ॥ ३ ॥
 नागद्विभा उ गुण तम्भपत्रपट्टिपत्ति रणाभो ।
 यदगणम् विविणा कीर मोती उ तेति नु ॥ ४ ॥
 वल्लिमम य तमि पुणो विदिना ज निदला इ प ।
 तेण पट्टिपत्तिमण तेमिपि य कीर्य माती ॥ ५ ॥

धरणीयारा लं जहकम्म यणतिगिच्छरूवेण ।
 पडिक्कमणसुआणं मोही तह काउसग्गेण ॥ ६ ॥
 गुणधारणरूवेण पञ्चकपाणेण तवइआरस्स ।
 विरिआयारस्स पुणं सव्वेदिवि कीरण सोही ॥ ७ ॥
 गयं यसह सीहं अमिसेअं दामं समिं दिणयरं मय कुमं ।
 पउमसर सागरं विमाण भवणं रयणुअयं सिद्धिं च ॥
 अमरिंदनरिंदमुण्णिंदयदिअ यविउ महाजीर
 कुमलाणुयधि यधुरमज्झयण तित्तइस्सामि ॥ ८ ॥
 चउसरणगमण दुक्कडगरिहा सुकडणुमाअणा येय ।
 एस गणो अणयरयं कायव्यो कुसलहेउत्ति ॥ ९ ॥
 अरहत सिद्ध साह नेवलिकरिओ सुहावहो धम्मो ।
 एए अउरो चउमइहरणा सरण सहइ धनो ॥ १० ॥
 अह सो जिणभत्ति-भर-धरत रोमअ-कच्चुअ-करालो ।
 पहरिमण उम्मीस सीत्तमि कयज्जलि भणइ ॥ ११ ॥
 रागहोमारीण हता कम्मदुगाइअरिहता ।
 विसय-कसायारीण अरिहता हुतु मे सरण ॥ १२ ॥
 रायसिरिमुअकमि (सि) सा तवचरण दुअर अणुअरिआ ।
 पेउलसिरिमरिहता अरिहता हुतु मे सरण ॥ १३ ॥
 धुइ धंदणअरिहता अमरिंद नरिंदपूइअमरिहता ।
 सासयसुहमरहता अरिहता हुतु मे सरण ॥ १४ ॥
 परमणगय मुगता जाइदमदिंदक्काणमरहता ।
 धम्मकइ अरहता अरिहता हुतु मे सरण ॥ १५ ॥
 सउजिआणमहिअ अरहता सअधयणमरहता ।
 यमउपमरहता अरिहता हुतु मे सरण ॥ १६ ॥
 ओसरणमउसरित्ता चउतीम अइसए निसेवित्ता ।
 यउकइ च कइता अरिहता हुतु मे सरण ॥ १७ ॥

वेऽल्लिखो परमोही पिउलमई सुअहरा जिणमयमि ।
 आयग्नि उज्जसाया ते मन्ने साहुणो सरण ॥ ३२ ॥
 चउदम-दस-नवपुब्बी दुयालसिआरसणिओ जे अ ।
 जिणकयाहालदिअपतेहार-विमुद्धि-भाह अ ॥ ३३ ॥
 सीरामयमहु आसवमभिगस्सोअहु दुउद्धी अ ।
 चारणपेउअपयाणुसारिणो साहुणो सरण ॥ ३४ ॥
 उज्जियवहरिगेहा निअमदोहा पसतमुहसोहा ।
 अमिमयगुणमदाहा हयमोहा माहुणो सरण ॥ ३५ ॥
 खडिअसिणेहदामा अकामघामा निक्काममुहकामा ।
 सुपुत्तिसमणमिरामा आयारामा मुणी सरण ॥ ३६ ॥
 मिहिअविसयकसाया उज्जियघरघरणिमगसुहसाया ।
 अकलिअहरिसत्रिताया साह सग्ग गवपमाया ॥ ३७ ॥
 हिसाहदोममुआ कयफाहणा सयभुरणआ- (पुण्णा) ।
 अज्जरामरपण्णुणा साह सरण सुकयपुआ ॥ ३८ ॥
 कामपिहयणचुक्कः कलेमसमुक्का विवि [मु] कचोरिका ।
 पायरय-सुरयरिआ साह गुणरयणचच्चिका ॥ ३९ ॥
 साहुत्तसुद्धिआ अ आयग्निगई तओ य ते साह ।
 साहुभणिपण गहिया तम्हा ते साहुणो सरण ॥ ४० ॥
 पडिपअताहुमरणो सरण काउ पुणोपि जिणधम्म ।
 पहरिसरोमचपयचक्कुअचिअतरू भण्ह ॥ ४१ ॥
 पयरसुक्कएहि पत्त पत्तेहियि नयरि केहियि न पत्त ।
 त वेऽअपिपत्त धम्म सरण पवओऽह ॥ ४२ ॥
 पत्तेण भपत्तेण य पत्ताणि अ जेण नरसुरमुहाह ।
 मुक्कयमुह पुण पत्तेण नयग्नि धम्मो स मे सरण ॥ ४३ ॥
 निहलिअकट्टमकम्मो कयमुहजम्मो खलीकय-अहम्मो ।
 पमुहपरिणामरम्मो सरण मे एउ जिणधम्मो ॥ ४४ ॥

कालत्तएवि न मय जम्मण-अरमरणगहिमय समय ।
 अमय च बहुमय जिणमय च सरण पयसोऽह ॥ ४५ ॥
 एममिअकामपमोह निट्टानिट्ठेसु नकलिअग्गिगेह ।
 सिधमुहफलममोह धम्म सरण पयसोऽह ॥ ४६ ॥
 नरय-गइ गमगरोह गुणमदोह पयाइनिक्खोह ।
 निहणिअयम्महजोह धम्म सग्ग पयसोऽह ॥ ४७ ॥
 भासुर-मुयअ सुदर रयणा-उकार गाग्य महग्ग ।
 निहिमिय कोणअहव धम्म जिल्लेसिअ वदे ॥ ४८ ॥
 अउत्तरणमणसचिअपुचरिअगेमवमच्चियसरीरो ।
 कयदुक्कडगरिहो असुहकम्मफलमयखिरा भणइ ॥ ४९ ॥
 इहमग्गिअमममयिअ मिच्छत्तपयसण जमद्दिगरेण ।
 जिउपयवगपडिपुड्ड दुड्ड गरिहामि त पाय ॥ ५० ॥
 मिच्छत्ततमपेण अरिहताइमु अयअययण ज ।
 अभाणण त्रिइय इण्हि गरिहामि त पाय ॥ ५१ ॥
 मुअधम्म सयसाइसु पाय पडिणीअयाइ ज रइअ ।
 अ-नेसु अ पायेसु इण्हि गरिहामि त पाय ॥ ५२ ॥
 अ-नेसु अ जीयेसु मित्ती-ककलाइ-गोयरेसु कय ।
 परिआरणाइ दुक्कल इण्हि गरिहामि त पाय ॥ ५३ ॥
 ज मणउयकाएहिं कयकारिअ-अणुमइहिं आपरिय ।
 धम्मपिरुद्धअमुद्ध सव्व गरिहामि त पाय ॥ ५४ ॥
 अह सो दुक्कडगरिहाइलिउक्कडदुक्कडो पुड्ड भणइ ।
 सुक्कड-एरायअमुइअपुअपुल्लय-कुरफणालो ॥ ५५ ॥
 अरिहत्ता अग्गिहत्तेमु ज च सिद्धत्तण च सिद्धपु ।
 आपार आपरिण उज्जायत्ता उज्जभाण ॥ ५६ ॥
 साहण माहुअग्गिअ च देसविरह च सावय-अणाण ।
 अणुम-ने सव्वेसिं सम्मत्त मग्गाट्ठीण ॥ ५७ ॥

अथ सद्य चिन्तयिष्यययगाणुमारि ज मुहयं ।
 कालसदयि निगिह अणुमोपमो नय मय ॥ ४८ ॥
 मुहयिणामो निच चउसरगमाइ आयाज जीयो ।
 कुन्सलपयशीउ यधइ यडाउ सुदणुयधाउ ॥ ४९ ॥
 मदाणुमाया यडा निपाणुमायाउ कुणइ ता येय ।
 असुदाउ निरणुयधाउ कुणइ तिण्याउ मदाउ ॥ ५० ॥
 ता यय कायव्य युहहि निचयि स्वकिण्णेममि ।
 होइ तिक्काल तम्म अम्मकिण्णेममि सुक्कपल ॥ ५१ ॥
 चउंगो जिलाधम्मो न कमा चउगमम्ममयि न कय ।
 चउरगमकुल्लमा न कसो हा हाणिमो अम्मो ॥ ५२ ॥
 इअ-जीयपमायमहा रेयी-महतमे-अमम्मपण ।
 माएणु तिसम्ममयम्म-कारण निम्भुररुणाणी ॥ ५३ ॥

॥ चउमग्गु ममम ॥ १ ॥

॥ सुभाषित ॥

— () —

पत्त-महत्तय-सुव्वय-मूल, ममण-मणाइल-साह सुचिअ ।
 घेरविरमणपज्जवमाण सव्वणमुदगहोदधी तित्थ ॥ १ ॥
 तित्थकरेति सुदंसियमग्ग नरग-तिगिय विधज्जिय-मग्ग ।
 सअय पवित्तो सुनिम्मियसारे, सिद्धिनिमाण अन्नगुय दा ॥ २ ॥
 देव जग्गिन्द-गमसिय-पूइय, मत्तजग्गसम मगल मग्ग ।
 उद्धरित गुण-तायगमेण, मोक्खपहरुम-यडित्तमभूयं ॥ ३ ॥

धम्मारामे चरे भिक्खू, धिदम धम्म सारही ।
 धम्मारामे रया दत्ते, धमचैर-समाहिण ॥ ४ ॥
 देव-दाणउ-गध-उ, जकर-रन्ध्रस्म विघ्नरा ।
 यमपारि नमसति दुक्क जे करति त ॥ ५ ॥
 एत्त धम्मे बुवे निचे, सासण जिणदेसिण ।
 सिद्धा सिद्ध्यति चाणेण, सिद्धिम्मसति तदावरे ॥ ६ ॥
 अट्ट-सिद्ध-पययण-गुर-धेर-उहुम्सुण-तयस्सीसु ।
 य-उह्वया य तेसिं अमिक्खनाणोपश्रोणे य ॥ ७ ॥
 दत्तण-त्रिणय कावम्मस य, मील-उए निरन्पारे ।
 गणलउ-तय-धियाए, दयायचे समाहीए ॥ ८ ॥
 अपु-उताणुगगणे सुयमत्ती, प-उयणे वमानणपा ।
 पणहिं कारणेहिं तिणययत्त लहइ जीयो ॥ ९ ॥
 जिणययणे अणुरत्ता जिणउयण जे करति भात्रेण ।
 अमला अत्तकिजिह्वा, ते हुत्ति य पत्तेसससारि ॥ १० ॥
 एय तु नाणिणो सार, अ न हिसई किंचण ।
 अहिंसा समय धेय, एत्तायत विषाणिया ॥ ११ ॥
 जाइय बुद्धिद च इहेल्ल-पास भुतेहि जाण पडिलह साय ।
 तम्हा तिणिल्लो परमति गुत्था सम्मत्तदसा न करेइ पाय १२
 उम्मुच्च पाम इह मच्चिण्हि, आरभजी उऊऊऊपयाणुपस्सी ।
 कामेसु मिट्ठाणि उय करति नसिचमाणा पुणरेतिग ॥ १३ ॥
 सवणे ताल त्रिआणे, पच्चकत्ताणे य सज्जओ ।
 अणुण्हए तव चेउ, चादारे अकिरियामिडि ॥ १४ ॥
 एगोह नत्थि मे कोइ नाहमघम्म करसई ।
 एउ अदीणमणसा, अ-पाणमणुत्तासई ॥ १५ ॥

एगो मे सासओ जवा, नाणदसणसजओ ।
 सेसा म बाहिरा भाया, मन्थ सजोगलफण्णा ॥ १९ ॥
 जीयिय नाभिगन्धेजा, मरगा नोत्रि परण ॥
 दुहउयि न इन्धेजा, जीयिय नरगा तहा ॥ २० ॥
 सार दसणनागा, सार-तव-नियम-सजम-सील ।
 सार जिएवरधम्म, सार सलेहणा पडियमरणा ॥ २१ ॥
 फल्लाणकोडिकारिणी, दुग्गइदुहनिट्ठयणी ।
 ससारजलतारिणी, पगन होइ जीउदया ॥ २२ ॥
 आरमे नत्थि दया, महिलए सग नासइ धम ।
 सफाए नासइ सम्मत्त, एवउक्का अरधग्गहणं च ॥ २३ ॥
 मज्झ निसवकसाया, निहा विकहा य पचमी भणिया ।
 एए पच पमाया, जीया पाडति मसारे ॥ २४ ॥
 लभ्भति मिमला भोए, लभ्भति मुरमपया ।
 लभ्भति पुत्तमित्त च, एगो धम्मो न लभ्भई ॥ २५ ॥
 न यि सुही देवता देवलोए, न यि सुही पुद्गवीपइराया ।
 न यि सुही सेट्ठिसेणाघइ य, एगत सुही मुणी धीयरानी ॥ २६ ॥
 गगरी सोहती जलमूलयाने, नागी सोहति परपुरुषस्याने ।
 राजासोहत सभा पुराणी, साधु सोहता अमृतयाणी ॥ २७ ॥
 चन्ति मेरु चलति मरिच, चलति तारा रविचन्द्रमण्डल ।
 कदापि काले पृथ्वी चलति, माहमपुरए राक्यो न चलति धर्मे २८
 अशोकवृक्ष सुरपुष्पवृष्टि विं-यच्चनिश्चामरमासन च ।
 भामण्डलं दुदुमिरानपत्र, स-प्रानिहार्याणि जिनेश्वराणाम् २९
 आया नई धेयरणी, अण्णा मे कुइसामली ।
 अण्णा कामदुहा धेणू, अण्णा मे नदणं घण ॥ ३० ॥

अप्या कृत्ता निकृता य, दुहाण य सुहाण य ।
 अप्या मित्तममि ॥ च, दुष्पट्टियसुपट्टियो ॥ २८ ॥
 जो सहस्र सहस्रमाणा, सगामे दुज्जण जिण ।
 एगं जिणेज्ज अप्पाणा, एम से परमा जओ ॥ २९ ॥
 लाभालामे खुहे-दुक्खे जीणिण भरखे तहा ।
 समो निदापयमासु, तहा माणावमाणओ ॥ ३० ॥

॥ भक्तामरस्तोत्रम् ॥

भक्तामरमगनमालिपणिवभाणा—
 मुदूयोत ३ दलितपापतमोवितानम् ।
 मभ्यक् प्रणम्य जिनपादयुग युगादा—
 यालभ्यन् भवजले पतता जनानाम् ॥१॥

ए मस्तुत सकलघादमयतरणयोधा—
 दुद्भूतबुद्धिपट्टमि सुरलोचनाय ।
 स्तोत्रैजगत्प्रितयचिसहरैरदारै,
 स्तोत्रे किलाहमपि न प्रथम जिनेद्रम् ॥२॥

पुष्प्या मिनाऽपि त्रिपुधार्चितपादपीठ ।
 स्तोतु समुद्यतमनियिगतप्रपेऽहम् ।
 याल निहाय जलमस्थितमिन्दुभिम्—
 । मन्य क इच्छतिजन सहसा प्रहीतुम् ॥३॥

यश्चतुर्गुणान् गुणसमुद्धतः शशाङ्कवातान्,
 वस्ते क्षमः सुरगुरो प्रतिमोऽपि पुच्छया ।
 कल्पान्तकालपवनोद्धननम्रचक्र,
 वा वा तरीतुमतामश्नुनिधिं भुज्जाभ्याम् ॥ १॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिपदा मुनीश !,
 यत्तु स्तव दिगन्तशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
 प्रीत्या मरीचविचाय मृगो मृगेन्द्र
 नाभ्येति किं निजनिशो परिपालनार्थम् ॥ २॥

अतपधुत श्रुतयना परिहानधाम,
 तन्महिरेव मुररीकुम्भे उलामाम् ।
 परकोकिल विल मध्या मधुर विनैति,
 तथ्यान्वात्रकलिकानिकर्कहेतु ॥ ३॥

स्वत्सक्तयेन भवमन्ततिसन्निधय,
 पाप क्षणस्त्वयमुपैति शरीरभाजाम् ।
 आप्तास्तलोकमलिनीलमणिवमाशु,
 सूर्याग्निभिर्मिथः शश्वरमधकारम् ॥ ४॥

मत्वेति नाथ ! तव सन्तवन मयेदं—
 मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभाजित ।
 येनो हरिष्यति सता नल्तिनीदलेषु,
 मुक्ताफलद्वयुतिमुपैति ननुदरिद्रु ॥ ५॥

आस्ता तव स्तवनमस्तसमस्तदोष,
 स्वत्सकथाऽपि जगता दुरितानि हन्ति ।
 दूरे सहस्रकिरणं पुष्पे प्रमैव,
 पद्माकरेषु जलजानि विहासमाञ्जि ॥ ६॥

नात्यद्भुत भुवनभूषण ! भूतनाथ !
भूतगुणभूवि भव तममिष्टुष त ।
तुल्या भवति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रित य इदं नात्ममम करोति ॥ १० ॥

स्पृष्ट्या भव नमनिमेषविलोकनीय
नाथं नोपमुपयाति जनस्य चक्षु ।
पातगं पयः क्षशिकरदयुनिदुग्धसिन्धो,
सारं जलनिधेरशितुं क इच्छेन् ॥ ११ ॥

ये शातगगरचिम्बि परमाणुमिन्ध
निर्मापितस्त्रिभुवनेऽललामभूत ।
तावत्त एव गतुं तेऽप्यणुं प्रयिया,
यस्यो भवानमपरं न हि कृपयास्त ॥ १२ ॥

यत्र क्व ते सुरनरोरगनप्रहानि,
निगदनिर्जितजगत्त्रितयोपमात्म ।
रिम्ब कलङ्गमलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वाग्दरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥

सम्पूर्णमण्डलशशाङ्कलाकलाप !
शुभा गुणाम्बिभुवनं तत्र लङ्घयति ।
ये सन्धिनास्त्रिजगतीश्वर ! नाथमह,
वस्ताश्रिवारयति सञ्चरतो यद्येष्टम् ॥ १४ ॥

स्त्रि विमथ यदि ते विदशङ्कनामि—
मति मनागपि मना न विकारमार्गम् ।
करपातकालमग्ता चलितचलेन,
किं मन्दराद्रिशिखरचलितवदाचित् ॥ १५ ॥

निर्धूमवर्तिरपयज्जितसैलपूर,
 वृत्स्न जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ।
 गम्यो न जातु मरता चलिताचलाना,
 दीपोऽपरस्त्यमसिनाथ । जगत्प्रकाश ॥१६॥

नास्न पदाच्छिदुपयासि न राहुगम्य,
 स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
 नास्मो धरोदरनिभमहाप्रभाय,
 सूर्यातिशायिमहिमाऽमिमुनीन्द्र । लोके ॥१७॥

नित्योदय नलिनमोहमहाधकार,
 गम्य न राहुवदनस्य न चारिदानाम् ।
 विभ्राजते तव मुखेऽजमनरपकान्ति,
 विद्योतयज्जगदप्यपेशशाङ्कविम्बम् ॥ १८ ॥

किं शर्वरीषु शशिनाऽहिं विवस्वता वा,
 युष्मन्मुखे दुदलितेषु तमस्सु नाथ ।
 निष्प्रमशालियनशालिनि जीवलोके,
 कायं विज्जलधरेर्जलमारनम्रै ॥ १९ ॥

हान यथा त्रयि त्रिभाति एतावकाशं,
 नैव तथा हृदिहरादिषु त्रयकेषु ।
 तेजस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्व,
 नैव तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥

मये चर हृदिहरादयः पयः दृष्टा,
 दृष्टेषु येषु हृदय त्रयि तोषमेति ।
 किं वीक्षितेन मधना भुवि येन नान्य,
 कश्चिन्मनो हरति नाथ यथा तरेऽपि ॥ २१ ॥

स्त्राणा शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नादयन्त तद्दुपम जननी प्रसूता ।
मया दिशो दधनि-मानु-महम्बरदिम्,
शब्देन दिग्जनयति स्फुरद्गुञ्जाक्षम् ॥२०॥

त्वामामनन्ति मुनेषु परमं पुमान्—
मान्तिरूपममल नमम-पुरस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपसम्भ्रजयन्ति गत्यूः
नान्य निव शिरस्यमुनीन्द्र ! पथा ॥२१॥

त्वामन्यथ विमुच्यन्त्यमसङ्गस्यमायं,
प्रद्वारणमोक्षमनमननद्वयेऽनुम ।
योगीश्वर विदितपापमनकमकं,
कालस्वरूपममल प्रवदन्ति मम ॥२२॥

शुद्धरूपमय विदुषाग्निदुष्टिवापाय
त्वं कङ्कशाग्निमुद्रनत्रयगङ्गा-नाम् ।
धाताग्नि धीर ' शिःमागग्निरेमिषानाम्,
'पन्नत्वमेव मगधन' पुष्पोन्नमोऽग्नि ॥२३॥

तुभ्य नमस्त्रिमुदनासिहकाय नाथ ।
तुभ्य नम नितितलामसभूयदाय ।
तुभ्य नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्य नमो जिन ' मधार्थिशागलाय ॥२४॥

को विस्मयोऽत्र यत्ति माम शुण्णरगेणै—
स्थं सद्यितो निरयकाशतगा मुनीश ।
दार्पण्यसद्विधिधाद्यजातगर्वं,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीदितोऽसि ॥२५॥

उच्चैरगोचरसञ्चितमुन्मयूष—

मामाति रूपममल भक्तो निनातम् ।

स्वष्टोत्तमतिस्वरूपस्ततमोचितान

विष्णु रवेरिव पयोधरपा-र्वयति ॥ २८ ॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविधिन्न,

विभ्राजते तव घण्ट कणकाद्यदातम् ।

विष्णु विषडिलसदशुलतानिष्ठान,

तुङ्गादयाद्रिशिरसीय सहस्ररश्मे ॥ २९ ॥

कु-दायदातबलचामरचण्डगोम,

विभ्राजते तव घण्ट कलधौतकान्तम् ।

उच्चैश्शङ्खशुचिनिजरवारिधार—

मुण्डैस्तट सुरगिरेरिव दातकौम्भम् ॥ ३० ॥

छत्रप्रय तव विभाति शशाङ्क-त—

मुण्डैश्चित स्वगितमानुकरप्रतापम् ।

मुक्ताफलप्रकरजालविबुद्धशोभ—

प्रणयपयत्रिजगत परमेश्वरत्यम् ॥ ३१ ॥

[गरुडीरताम्बरवपूरितदिग्विभाग—

लैलोक्यलोकशुभसङ्गमभूतिदक्ष ।

मन्दमराजजयघोषलघोषक सन्,

क्वे दुन्दुभिर्भवेति तयशस प्रयादी ॥ ३२ ॥

मन्दारसुन्दरनमेरुसुपारिजात—

सताग्रादिषुसुमोत्तरवृष्टिन्द्वा ।

गन्धोदयि-हृशुभमन्दमस्तप्रपाता,

दिव्योदय पतति नै घनमाततिर्था ॥ ३३ ॥

शुभ्रप्रभावल्लयभूरिविभा रिपोस्ते,
लोकत्रयद्युतिमता द्युतिमाक्षिपती ।
प्रोद्यद्विधाकरनिरंतरभूरिमद्भ्या,
नीद्विधाजयत्यपि निशामपि सोमर्माभ्या ॥३४॥

स्वर्गापउर्मगममागत्रिमार्गणष्ट—
सखमतस्य कथनं कपटुलिस्तोत्र्याः ।
दिग्बन्धनिमज्जि ते विशदायसत्र—
भाषास्वभावापरिणामगुणै प्रयोज्य] ॥३५॥

उच्चिद्देहेमनउपद्रुमपुल्लजाति,
पशुल्लमभ्रसमगृह्णशिखाऽमिरामौ ।
पादौ पदानि तथ यत्र जिनेद्र । भक्त,
पदानि नत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३६ ॥

इत्थ यथा तथ विभूतिरभूज्जिनेद्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।
पादक प्रभा दिनहन ग्रहताघकारा,
तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकामिनोऽपि ॥३७॥

इत्योतमदाखिलविलोलकपोलमूल—
मत्तभ्रमदभ्रमरनादविद्वष्टुषोषम् ।
पराचताममिममुद्धतमापतत्त
दृष्ट्या मय भवति नो भयदायितानाम ॥३८॥

मित्रेमकुम्भगलदुग्ज्जलशोणितक—
मुक्ताफलपङ्कजभूषितभूमिभाग ।
यत्र यत्र यमगत हरिणाधिपोऽपि,
यमयुगात्रलस्यधिन ते ॥ ३९ ॥

करणात्कालपवनोद्धतवह्निकल्प,
 दाधानल उपलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
 विश्वं जिघत्सुमिव स मुपमापतत,
 त्यक्षामसीतनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ४० ॥

रत्नेक्षणा समदकोकिलकण्ठनील,
 क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ।
 आश्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क—
 रुचक्षामनागदमनी हृदि यस्य पुस ॥ ४१ ॥

घटाक्षुरङ्गजगर्जितभीमनाद—
 माजौ बल बलवतामपि भूपतीनाम् ।
 उपदिशाकरमयुगशिखापविद्धं,
 त्यत्कीर्तनात्तम इवाशु मिदामुपति ॥ ४२ ॥

कुन्तामभिन्नगजशोणिनवारिवाह—
 वेगायतारतरणानुरयोधभीमे ।
 युद्धे जय विजितपुञ्जयजेयपक्षा—
 स्तयत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ४३ ॥

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषणनशचक्र—
 पाठीनपीठमयदोल्बणवाडवाग्नौ ।
 रङ्गत्तरगशिखरस्थितयानपात्रा—
 स्त्रासं विहाय भवत स्मरणाद् व्रजति ॥ ४४ ॥

उद्भूतभीषणजलोदरमारभुग्नौ,
 शोचया दशामुपगताश्च्युत्तमीवितांशा ।
 त्यत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धवेहा
 मर्त्या मयति मकरध्वजत—

आपादकगडमुदशृङ्खलवेष्टिताङ्गा,
गाढ बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्गा ।
त्यन्नाममयमनिश मनुजा स्मरन्त,
सद्य स्वयं त्रिगतपद्ममया भवन्ति ॥ ४६ ॥

मस्तद्विषद्भृगराजद्वयानलहि—
सहस्रामयारिधिर्महोदरवर्धनोधम् ।
तस्याशुनाशमुपयाति भय मियेष,
यस्तावक स्तपसिभ मतिमानधीते ॥ ४७ ॥

स्तोत्रस्रज तव जिनेन्द्र ! शुर्णनिषदा,
मफल्वा मया रुचिरयणत्रिचिप्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य रद्द कण्ठगतामजघ्न,
न मानतुह्यमवशा समुपैति लक्ष्मी ॥ ४८ ॥

॥ इति मान्तुङ्गाचार्य विरचिते स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीसिद्धसेनदिवाकरप्रणीतम् ॥

॥ श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रम् ॥

— — —

करालमन्दिरमुदारमञ्चमेदि,
भीताभयप्रदमनिर्दितमग्निपद्मम् ।
ससारसागरनिमज्जदशवज्रतु—
पोतायमानममिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥

करणात्तफालपवनोद्धतघटनिकल्प,
 वायानल ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।
 विश्व' निघत्सुमिव स मुद्रमापतन्तं,
 त्यन्नामक्रीतनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ४० ॥

रक्षेक्षणा समदकोकिलकगडनीलं,
 मोधोद्धत फणिनमुत्फलमापतन्तम् ।
 आश्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क—
 स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुस्त ॥ ४१ ॥

यत्तगन्तुरङ्गजगर्जितमीमनाद—
 माजौ धल धलधतामपि भूपतीनाम् ।
 उघद्दिवाकरमयूखशिखापविडं,
 त्यत्तीमनात्तम इगशु मिदामुपैति ॥ ४२ ॥

कुम्ताममिन्नगजशोणितवारिवाह—
 वेगावतारतरणानुरयोधभीमे ।
 युद्धे जय विजितदुर्जयजेयपक्षा—
 स्वयत्वादपङ्कजवनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ४३ ॥

अम्भोनिधी क्षुमितभीषणनक्षत्र—
 पाठीनपीठमयद्रोक्षणवाडगर्गौ ।
 रङ्गस्तरगशिखरस्थितयानपात्रा—
 स्त्रास विहाय भवत स्मरणाद् यजति ॥ ४४ ॥

उद्भूतमीषणजलोदरमारभुग्ना,
 शोढया दशामुपगताद्युनजीवितगशा ।
 तत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्घदेहा—
 मत्या भवति मकरव्यजतु-यरूपा ॥ ४५ ॥

मस्य स्वयं सुरगुरुर्गिरिमाम्बुराशः,
स्तोत्रं सुविस्तृतमतिनं विभुर्विधातुम् ।
तीर्थं ध्वरस्थं कमठम्मयध्रुवकेतो—
स्तस्याहमेव किल सम्मनयनं कर्णिष्ये ॥ २ ॥

सामान्यताऽपि तव घणयितुं स्वरूप—
मन्मादृशा कथमधीश ! मयत्यधीशा ।
धृष्टोऽपि कौशिकशिष्टयुग्मं वा द्विवाधो,
रूपं प्ररूपयति किं किल धमरश्मे ॥ ३ ॥

मोहक्षयादनुभवश्चापि नाथ ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ।
करपान्तधातपयसं प्रकटोऽपि यस्मान्—
मीयेत तेन जलधेननु रत्नराशिः ? ॥ ४ ॥

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाश्रयोऽपि,
कर्तुं स्तव्यं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य ।
पालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितस्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशे ? ॥ ५ ॥

ये योगिनामपि न याति गुणास्तद्वेश
यफ्तुं कथं भवति तेषु ममायकाशः ।
जाता तदेवमसमाक्षितकारितेय,
जल्पन्ति वा निजगिराननुपक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥

आस्तामचित्यमहिमा जिह्वं ! सस्तवस्ते,
नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगति ।
तीव्रातपोपहतपान्थजनाग्निदाघे

प्राणानि पालयन्तु, यदस्योऽपि ॥ ७ ॥

हृदनिनि त्वयि त्रिभो ! शिथिलीभवति,
जतो क्षणेन निविडा अपि कर्मवधा ।
सद्यो भुजदगममया इव मध्यभाग—
मभ्यागते घाशिखगिहनि सदनस्य ॥ ८ ॥

मुच्यत एव मनुजा सहसा जिनेष्टु ।
नैर्द्रुपट्टपशुतैर्मयि कीर्तितेऽपि ।
गोम्यामिति श्चुरितेजसि ऋषमात्रे,
घोरंरियाशु पश्य प्रपलायमाने ॥ ९ ॥

तत्र ताको जिने ! क्व ? भविता स पश्य
त्यामुद्धति हृदयेन यदुत्तरन्त ।
यद्वा हनिस्तरति यज्जलमेव नून—
मन्तर्गतम्य मस्त स विश्वानुवाय ॥ १० ॥

यन्मिन् एवप्रभृतयोऽपि हतप्रभावा,
साऽपि स्वया रतिगति क्षपित क्षणेन ।
त्रिधापिना हुतभुज पयसाऽथ येन,
पीत न किं तदपि दुर्धराऽप्येन ? ॥ ११ ॥

स्थामिन्नरूपगरिमालमपि प्रपन्ना—
स्या जन्तव कथमहो हृदये दधाना ।
जन्मोदधि लघु तरत्यतिलाघवेन,
चित्तो न हत महता यदिवा प्रमात्र ॥ १२ ॥

क्रोधस्तवया यन्नि त्रिभो ! प्रथम निरस्तो,
• व्यस्तास्तदा यत कथं किञ्च कर्मचौरा ?
प्लोपत्यमुत्र यन्निघा शिशिराऽपि लोके,
• तीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी

त्वा योनिनो जिन ! सदा परमात्मरूप—
मन्वेपयति, हृदयाभ्युज्जकोशदेशे ।
पूतस्य निर्मलरुचेयदि वा विमल—
दत्तस्य सम्मधि पन् ननु कर्णिकाया १॥१४॥

ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविन क्षणं,
बृह त्रिहाय परमात्मदशा प्रजन्ति ।
सोमानलादुपलभायमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिय धानुमेदा ॥ १५ ॥

अन्त सदैव जिन ! यस्य विभाषसे त्य,
भवे कथ नदपि नाशयसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूपमथ मध्यविषिन्तो हि,
यद्विग्रह प्रशमयन्ति महानुभावा ॥ १६ ॥

आत्मा मनीषिभिर्य त्वद्भेदबुद्ध्या,
भ्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभाय ।
पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमान,
किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥

त्यामेव वीततमस परधाम्निनोऽपि,
नून त्रिमो ! हरिहरादिधिया प्रसन्ना ।
किं काचकामलिमिरीश ! सिताऽपि शङ्खो,
नो गृह्यते विविधवर्णत्रिपर्ययेण ॥ १८ ॥

धर्मोपदेशसमये सत्रिधानुमात्रा—
दास्ता जनो भवति ते तस्मिन्प्यशोक ।
अभ्युद्गते दिनपतौ स मदीरहोऽपि,
किं वा वियोधमुपयानि न जीवलोका ॥ १९ ॥

चित्र विभो ! कथमगाहमुखवृत्तमेव,
विष्यक् पतत्परिरला सुरपुणवृष्टि ? ।
त्वद्गोचरे मुमनसा यदि वा मुनीश !,
गच्छति नूनमद्य एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥

स्थाने गर्भारहृदयोदधिम्ममवाश ,
पीयूषता तत्र गिर समुमीर्यति ।
पीडा यत परमसमदसङ्गभाजो,
मया प्रजति तरलाऽप्यत्रामरत्नम् ॥ २१ ॥

श्यामिन् ! सुदूरमवनश्य समुपततो,
मये रक्षति शुचय सुरचामरीषा ।
येऽस्मै ननि त्रिदधन मुनिपुङ्गवाय,
ते नूनमूर्ध्यगतय खलु शुद्धभावा ॥ २२ ॥

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न—
मिहासनस्यमिह मयशिलगिडनरुगम् ।
आलोक्षयन्ति रमसेन नदतमुद्ये—
दगर्भीकराद्रिरसीत नयाम्युवाहम् ॥ २३ ॥

उद्गच्छतः तत्र शितिद्युतिमङ्गलेन,
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरङ्गभृत् ।
स्नानिष्यतोऽपि यदि वा तत्र वीतराग !
नीरागता प्रजति को न सचेतनोऽपि ॥ २४ ॥

भो भो ! प्रमादमरधूय मज्जध्वमेन—
मागत्य निर्धृतिपुरी प्रति साधवाहम् ।
एतन्निरेदयति देव !
मये नदप्रसिन्धो ॥ २५ ॥

उद्योति तेषु भगता भुवनेषु नाथ !
 तारात्रितो विधुरय - विहताधिकारः ।
 मुक्ताकलापकलितोऽक्षसितातपत्र—
 ध्याज्जातिप्रघा धृततनुध्रुवमभ्युपन ॥ २६ ॥

स्येन , प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन,
 कातिप्रतापयशसामिव सञ्जयेन ।
 माणिष्यहेमरजतप्रयिनिर्मितेन,
 मालत्रयेण भगवन्नमितो त्रिमालि ॥ २७ ॥

विन्यस्तजो जिन ! नमस्त्रिदशाधिगाना-
 मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिक-धाम् ।
 पादौ धरन्ति भयतो यदि वा परत्र,
 त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥

त्र नाथ ! ज-प्रजलघेर्धिपराडमुखोऽपि,
 यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।
 युक्त हि पार्थिवनिपस्य सतस्तथैव,
 चित्रविभो ! यदसि कमयिपाकशून्य ॥ २९ ॥

विश्वेश्वरोऽपि जनगालक ! दुगतम्व,
 किं जम्बरप्रकृतिरप्पलिपिस्त्वमीश ॥
 अज्ञानवत्यपि , सदैव , कथञ्चिदेव,
 हान त्वयि स्फुरति विश्वत्रिकाशहेतु ॥ ३० ॥

प्राग्भारसंभ्रननमालि रजामि-रोषा—
 दुःखापितानि कमटेन शठेन, यानि ।
 छायापि तैस्त्रय न नाथ ! हता हताशो,
 -प्रभन्म्वमीभिर्यमेव एतं दुःखमा ॥ ३१ ॥

यद्गजदुर्भितघ्नौ घमश्चमीम,
अश्वसदिमुमन्मया तलपोरधारम् ।
दग्धेन मुहमथदुस्तरयारि दग्ध
तनैय तम्पनिन । दुस्तरयारिगुह्यम् ॥ ३२ ॥

अस्मोऽयं शेषोऽस्मिन्निमन्त्रणमुद्रा —
 प्रालम्ब्य भुवः पदं यन्निवदति ।
 प्रलम्ब्य प्रतिमयं तमपीरितो यः,
 सोऽस्मिन्निमन्त्रणमुद्रा यः पदं खल्ले ॥ ३३ ॥

ध्यायन्त परमुद्रनाथि । ये त्रिष्वप्य-
सागाधवन्ति त्रिधिवद्विधुनाम्यह-
मप्योमसत्पुलकपद्मलदहदशः
पादद्वयं तव यिमो । भूतिस्तममजितः ॥ ३४ ॥

अभिषेकवारमयधारिनिधौ सुतीक्ष्णः,
मम्ये न म अक्षयगोचरता गतोऽसि ।
आर्त्तलिङ्गं तु तत्र गोचरयिष्यमम्ये,
किं वा विपद्विपथी सनिध नमेति ॥ ३५ ॥

अ-मातरेऽपि तत्र गाक्षुग न वेष्ट !,
म-ये मया मद्दिनमाहितदानदक्षम् ।
तेनेह अ-मनि, मुनीश ! पराभवाना
जातो निरेतरमह मणिनाशयानाम् ॥ ३३ ॥

नूनं न मोक्षमिराषुनलोचनेन. ५ --
 पूर्वं विमो । सः अपि ३०
 ममाविज्ञो विधुरयति ३१
 नोयस्वयधगतपः ३२

आकर्षिताऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि
नूनं न चेत्तसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जगताम्घघ ! दुःखपात्र,
यस्मात्त्रिधा प्रतिकर्तितं न मायश्रया ॥ ३८ ॥

एव नाथ ! दुःखिजनघातत ! दृशराग्य !,
कारुण्यपुण्ययमते ! यशिता चरतय ! ।
भक्त्या तस्ते मयि मणेश ! न्या विधाय
दुःखाद्दुःखोदलनतत्पराता विधेहि ॥ ३९ ॥

नि सदृश्यमाश्चरणा शरणा शरतय—
मासाद्य सान्तिरिषुप्रयितायदानम ।
एतत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानयन्ध्यो
घट्योऽस्मि चेद्भुवनपात्रा ! हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥

देवद्वयच ! त्रिदितागिलगस्तुमार !
ससारनाथ ! निमो ! भुवनाधिनाथ ! ।
पायस्य मेघ ! कल्याणहृद् ! मा पुनीति,
सीदन्तमघ भयद्वयसनाम्बुराशे ॥ ४१ ॥

यद्यस्ति नाथ ! भयद्वयसरोरहाणा,
भक्ते फल किमपि मन्मतसञ्जिनाया ।
तमे त्वद्वक्शरणस्थ शरण्य ! भूया,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवातरेऽपि ॥ ४२ ॥

इत्थं समाहितधियो विधिर्वज्जिनेन्द्र !
सान्द्रोहमत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागा ।
एवमिह निर्मलसुखाम्बुजवदलदया,
ये मेमनय तथ विमो ! एवमेति भव्या ॥ ४३ ॥

जननवनमुक्चट-प्रमत्तरा म्यगसगदी भुक्त्वा ।
न विगटिनमलनिचया, अद्विरा मोभप्रपद्यते ॥ ४४ ॥

॥ श्री रत्नाकरपञ्चविशति ॥

उपजातिवृत्तम्

अथ विषा मंगलकैलिनच । नरे-दृष्टे-दृष्टनतामिपद्य ।
सपद्य । नयानिशयप्रधान । चिन्तयगानकलानिधान ॥ ८॥
जगत्प्रयाधार । जगत्तार । दुर्गरेमसारविकार्यद्य ।
धीरीतराम । त्रयिमुग्धमात्रा द्विप्रमो विनययामि विंचित ०
किं पालनीलाकतिगे मयाल , पित्रो पुत्रो जन्पति निधिक्त्प ।
तथा यथायै कथयामि ना ३ । निनाशय स्वाशयस्तथाप्रे ॥ १॥
दरा न दान परिशीलिन च, न शालि शील न सपोऽमिमाम् ।
शुभो गभायाऽप्यमयन् भवेऽस्मिन् विमो । मया आगमहा मुधिय
नरघोऽमिता प्रोधमयेन दपो, दुष्टत लोभाप्यमहोरगेण ।
प्रस्ताऽमिमानाजगरेण माया जारा यदोऽस्मि कथमत्रेग्या ।
एत मयाऽमुष दित गवेद लोवेऽपिलोक् ३ । एष नमऽयन् ।
अस्मादशा रेवलमेव जन्म चितेश । अत्र मयानुत्पाय ॥ २ ॥
मये मनो यक्षप्रनाशुत्त । त्रयान्यदीपुपदगुयलामान ।
द्रुा महान दग्म कठोर-मन्मन्हा डैर । नन्मनोऽपि ॥ ३४
त्यज सुदुप्रापमिद मयाऽऽम, रत्नप्रय भुगियप्रभेद ।
पुण्यतो गानत, यस्याऽप्रतानयक ।

धैर्यश्रम परमश्रमाय, धर्मोपदेशो जनरक्षनाय ।
 यादव्यविद्याऽध्ययनं च मेऽभूत् त्रिदशमेषु हे हाम्यकरं स्वमीश !
 परापवादेन मुग्ध सद्योऽपि, नेत्र परस्त्रीजननीक्षणैः ।
 न्येत परापायविचिन्तनेन, कृत मयि श्यामि कथं विमोऽह ॥१०॥
 विहस्यित यस्मिन् यस्मिन् रात्रि—दशाधशास्य त्रिपयाधलेन ।
 प्रकाशित तद्भवता त्रियैव मयम् । सर्वं श्ययमेव धेति ॥११॥
 ह्यस्तोऽस्मिन् त्रै परमेष्ठिन् त्रै कुशाग्रपाकर्ष्य निहतागमोक्ति ।
 कर्तुं पृथाकमकुदयसगादरादिष्ठिनाथ । मतिधर्मो मे ॥१२॥
 त्रिमुद्युगलक्ष्यगत मयन्त, ध्याता मया मूढधिया ह्यस्त ।
 कटाक्षवधो जगभीरुनामी, कटीतटीयाः सुदृशा विलाना ॥१३॥
 लोलेक्षणप्रकर्षनिरीक्षणं यो मानरो रागलवो विलम् ।
 न शुद्धसिद्धातपयाधिमध्ये, धौताभ्यासात्तत्ककारणं किं ॥१४॥
 भग न चग न गलो गुणानां, न निमल कोऽपि कलायिलास ।
 स्फुरत्प्रधानप्रभुता च कऽपि, तथोपकारकवर्धितोऽह ॥१५॥
 आर्युर्गलत्याशु न पावयुद्धि-गत ययो नो विषयाभिलाष ।
 यदाश्च भेषज्यत्रिधौ न धम, श्यामि-महामोहविहस्यता मे ॥१६॥
 नामा न पुर्य न भयो पाप, मया विद्वानां कटुगीर्णीय ।
 अधारि कर्णो ययि केयलाक, परिष्फुटे सस्यपि श्रेय ! धिग्माम् २७
 न देवपूजा न च पात्रपूजा, न ब्राह्मधमश्च न साधुधम ।
 लभ्यापि मानुष्यमिदं समस्त, कृत मयाऽरण्यविलापतुर्य ॥१८॥
 धमे मया स्तस्यऽपि कामधेनु—कर्णद्वि-तामणिपुस्तकास्ति ।
 न जैनधर्मे स्फुटशर्मऽपि, जितेन । मे पश्य धिमूढमाय ॥१९॥
 सद्भोगलीला न च रोगलीला, धनागमो नो निधनागमश्च ।
 दारा न कारा न रक्म्यचित्ते, यचिन्ति निय मयकाऽधमेन २०
 स्थित न साधार्हं नि साधुवृत्तात्, परोपकारक्षयशोऽर्जित च ।
 न तीर्थादिरणादिष्टय, मया मुधा हानितमेव जन्म ॥२१॥

वैराग्यालो न मुसुदिनेषु, न पुनरागो यद्यप्यु ज्ञातिः ।
 नाशमागो मन्वाऽपि यय, तार्यं वयद्वागमयऽमयाधि ६०
 पूर्वे मयऽकारि मया न पुण्य-मागादिजन्मभ्यपि नो वशिष्ये ।
 दर्शयेऽहं तम ते न जग, भूतोऽप्यात्राविमववधीश ॥१॥
 विषा मुधाऽहं बहुधा मुधामुक्त्वा वृद्धय 'भ्यद्वय मन्ति वयदीर्घ ।
 ज्ञानमि यस्यान् विज्ञानमवयव ' विज्ञानवयव विद्वन्मद्व्याऽप्या
 शाद्वल-नीतोऽहं पुनश्चाहं यद्वयो नान्न मद्वय वृथा ।
 पात्र नात्र जन जितेदव ॥ तथाऽदेर्ना म याधि विय ।
 किं ग्रहं पिदमय वेयलमला सद्वयोचिरमेशिष ।
 धारवापरमं गच्छति मय ' धयस्व प्राप्तये ॥५॥

—५५७३—

श्री अमितगतिमरिचिचित प्रार्थना पञ्चावशति

॥ उपजातिवृत्तम् ॥

परवपु मयी गुणेषु प्रमोद शिष्यु जीवेषु हृष्यात्स्यम् ।
 माध्वस्वभावे विपरीतधृत्वा, सदा ममात्मा विदधानु देव ॥१॥
 शरीरत वतुमनस्तद्वि, विमिश्रमात्मनिमयास्तनोयम् ।
 निनन्द ' वीर्यादिय स्वप्नवृत्ति, तव प्रसारेन ममास्तु शक्ति ॥२॥
 बुभुक्षे भुञ्जे परिणि य ध्रुवो योने विद्याने मयने यने वा ।
 निराकृताऽनेयममयधुक्त्वा नम मनो मऽस्तु सदाऽपि नाथ ॥३॥
 ॥ समयन सयमुत्ती-वृद्धदे व म्भुवते सद्य नरामरेन्द्र ॥
 यो जीवते वेदपुराणशास्त्रे, स वपदया हृद्दे ॥४॥
 यो वदानवानसुखम्वभायः
 समाधिगम्य परमात्ममय, सद्यदेवा

निवृद्धते यो भवदुःखजालम् निरीकृते यो जगदंतरालम् ।
 योऽतगतो योगिनिरीक्षणीय , स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥८॥
 विमुक्तिपागप्रतिपादको यो, यो जन्ममृत्युव्यमनाद्व्यतीत ।
 विलोक्यलोकी विकलोऽकलय , स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥९॥
 प्रोद्दीप्तनागेषशरीरिर्गर्गा, रागादयो यस्य न सति दोषा ।
 निर्गन्धियो ज्ञानमयोऽनघाय , स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥१०॥
 यो व्यापको त्रिद्वजतीनवृत्तिः रिद्धो विबुद्धो धृतकमर एव ।
 भ्यातो धुनीते सकलत्रिकार, स देवदेवो हृदये ममास्ताम् ॥११॥
 न स्पृश्यते कर्मकलकदीपे यो भ्यातस्वर्धन्यतिरमस्दिम् ।
 निरञ्जन नित्यमनेकमेव, स देवमाप्त शरणा प्रपद्ये ॥ १० ॥
 विभासते यत्र प्ररीचिमालि-न्यविद्यमाने भुजनावभाति ।
 स्वामन्धितयाधमयप्रकाशः, स देवमाप्त शरणा प्रपद्ये ॥ ११ ॥
 विलोक्यमाने सति यत्र त्रिष्व त्रिगोत्रयने स्वप्नमिदं त्रिविधम् ।
 शुद्धं शिथं शांतमनाद्यनत, स देवमाप्त शरणा प्रपद्ये ॥ १२ ॥
 घन क्षता ममयमानमूढा—विषादनिद्राभयशोकचिन्ता ।
 क्षम्योऽनलेनेव तरप्रवृत्तस्त देवमाप्त शरणा प्रपद्ये ॥ १३ ॥

प्रतिफलम्—[प्रभुसमीपमगमिस्तन]

विनिन्दनाद्येव गहं गौरह, मनोयव कायकपायनिर्मितम् ।
 निहन्मि पापभवदुःखकारण, मिषग्विषमत्रगुणरिधासिराम् १४
 अतिरमं य विमतव्यतिक्रम, जिनातिजार सुचरित्रकमलम् ।
 व्यधामनाचारमपि प्रमादत, प्रतिगम तस्य करोमि शुद्धये १५
 न सस्तरोऽश्मानतृणन मेदिनी, विधानतो नो फलको विनिर्मित
 यतो निरस्ताक्षकपायविद्धिष, सुधीमिरात्मव सुनिमलोमतः १६
 न सस्तरो मद्र समाधिसाधन, न साकपूजा न च सद्यमेलनम् ।
 १७ यात्मरतो मयाऽनिहा, विमुच्य सवामपि धारयामनाम्

न मति याथा मम वचनार्था, मयामि तया न कञ्चनानाम् ।
 इत्यपि निश्चितं विमुक्त्य यादयः स्वस्थं तदास्थं भव भद्रं मुत्रै
 आमानमा मययिलाकषमानस्य दशनव्रजमयो विपुलः
 एकाग्रचित्तं गन्तुं यत्र तत्र, स्थितोऽपि साधुर्लभने समाधिम् ॥ १६
 एकं सदा शास्त्रतिरो ममापा, विनिमलं ग्राधिगमस्यभाष,
 बहिमया न यपरेतमस्मा, न शास्त्रना कममया दृश्या ॥ २०
 यस्यास्ति नैकं यपुगापि सार्धं, तस्यास्ति किं पुत्रस्तत्रमिह,
 पृथक्कृतं यमणि रोमवृषा, कुता हि तिष्ठति शरीरमयम् ॥ २१
 सयोगतो दुःखमोक्षमेव, यतोऽङ्गुणे न मयने शरीरं,
 तन्महिम्नोऽघाती पवित्रजतीयो, यियात्तुना निधनिमा मनीषाम् ॥ २२
 सर्वे निराश्रयं यिक यनाल, ससारका नारनिपातहनुष
 विरिक्तवा मानमये वमाणा, निर्लीयते स्थ परमा मताये ॥ २३
 स्वयं कृतं कम यदा मया पुता, फलं तनीय तत्र सुमं गुणम्,
 परं वस्तु यन्मि सभ्यत स्फुटं, स्वयं कृतं कम निष्क तदा ॥ २४
 त्रिमुक्तिमार्गप्रतिबुल्यतिना मया कयातुता न बुधिरा
 धारिष्य गुणवदकानि लोपत नदस्तु गिरा मयुतनमयो ॥ २५

॥ श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्रम् ॥

॥ शार्दूलविकीर्णम् ॥

पाताल कनयन घरा धवलयथाकाशमापूरयन् ।

दिवचक्र क्रमयन् सुरासुरनरश्रणि च विस्मापयन् ॥

महाएड मुखयन् जलानि जलधे केनञ्जलात्पोलयन् ।

धीचिन्तामणिगद्गदसमग्रयशो हसन्धिर राजते ॥ २ ॥

पुण्यानां त्रिपलिस्नमो दिनमणि कामेभकुम्भे सृणि—

मोहं निस्वरणि सुरेन्द्रकरिणी ज्योति प्रकाशारणि ॥

दाने देवमणिनेतोत्त राजनेधेणि वृषासरिणी ।

विश्वानन्दसुषाण्णिर्भगमिदे धीरादर्शयिन्तामणि ॥ ३ ॥

धीचिन्तामणिपार्श्वविश्वजनतासजीवनम् य मया ।

दृष्टतात नत धिय समग्रशत्रुमाधकिणम् ॥

मुक्ति क्रीडति हस्तयोऽदुविध सिद्ध मनोवच्छिद्यत ।

दुर्दैव दुरि । च दुर्दिनमय कष्ट प्रणष्ट मम ॥ ४ ॥

विश्व प्रौढनमवनागनयन प्रौढास शमा जय—

ज्जुलान कलिकात्रेनिदलनो मोदन्प्रविभ्रमक

नित्योद्गोतयन् समस्तकमनाकतिगद्ग राजते ।

त धीरादर्शजिनो जरे दिनकरध्विन्तामणि पातु माम् ॥ ५ ॥

विश्वऽप्येवमो दिनदिन नरशिखोलोपि कटपाङ्कुरो ।

दारिद्र्याणि गजावली हरिशिशु बाह्यानि घट्टने कण ॥

पीयूषस्य रात्रोऽपि रोगनिबह यत्तत्तथा ते विमो ॥

मूर्ति स्मृतिमती सती विजगतीकष्टानि हर्तुं क्षमा ॥ ६ ॥

धीचिन्तामणिमग्रमोहतिवृत्त ह्रींकारसारधित ।

धीमदहृद्यमिज्जुपाशकलित त्रिलोफ्यरदयावहम् ॥

द्वेषाभूतप्रियापहं विग्रह ध्व प्रभाषाध्व ॥

सोत्तास पक्षहासित जितकुक्षिमानन्द देहि माम् ॥ ७ ॥

ही श्रीनारयण नमोऽस्तुत्येव ध्यायति ये योगिनो-
 हृत्पद्मे विनिवेश्य पादपद्मधिप चित्तामलिपञ्चकम् ॥
 म ले व मभुजे च नामिक-योर्भुयो भुजे दक्षिणे ।
 पश्चादङ्गदलपु ते दिव्यद्व द्विधमवैषाम्यहो ॥ ८ ॥
 ध्यायन्-तो रोगानेय शोकान् जलहवसना नारिमात्प्रिया-
 नवाधिर्नासमाधिर्न च दरदुर्लभ दुष्पदारिद्र्या ना ॥
 मो शक्ति-यो महा मो न हरिहरिणो ध्यातवेनात्मना
 जायते पात्रचित्तामलिनतिरुद्धत माणिना महिमात्राम् ।
 शार्दूल-गीषागुदुमधनुस्ममणयस्तम्बाङ्गणे रगितो-
 द्या नानयमानया सखिनय तरमै द्विनद्यायित ॥
 लम्पीस्तस्य घशाऽवशेन मुनिना प्रह्लादसस्यायिनी ।
 ध्यायन्तामलिपादयनायमनिश संस्मरेति वा ध्यायति ॥
 मालिनी-इति जिनगतिवादय पादयनायक्यवश
 प्रकलितदुर्लभाय प्रीणितमात्मिमायं ।
 विभुयनजनघाङ्गादानरितामलि ।
 शिष्यवतन्त्रीज बोधिरीज दरजु ॥ ९ ॥

—०—

मेरी भावना

जिसन राग हव कामादिक, जत सब जग जान लिया ।
 मय जायां को माछ भाग का, निरूह हा उपरुह दिया ।
 बुद्ध पीर जिन हरि हर ब्रह्म हा उपको स्वाधीन ब्रह्म ।
 महि भाग से प्रेरित हो, पर विष उमी में लीन रहो ।
 विषयो की आशा नहीं फिर मय माय धन लो ।
 निज पर के हित साधन वैश भक्तिदिन न पर लो ।

स्वार्थ त्याग की कटिन तपस्या, पिना खेद जो करते हैं ।
 ऐसे शानी साधु जगत के, दुःख समूह को हरते हैं ॥१॥
 रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे ।
 उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुग्रह रहे ॥
 नहीं सताऊँ किसी जाँच को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ ।
 परधन वनिता पर न लुभाऊँ, सतोषामृत पिया करूँ ॥३॥
 अहंकार का भाव न रखूँ नहीं किसी पर क्रोध करूँ ।
 देख दूसरी की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ ॥
 रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ ।
 घने जहाँ तक इस जीवन में, शौर्यों का उपकार करूँ ॥५॥
 मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे ।
 दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से कदना छात पड़े ॥
 दुर्जन-रू-कुमागरतों पर, लोभ नहीं मुझको आवे ।
 साम्यभाव रखूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जाये ॥७॥
 गुणी जनों को देग हृदय में, मेरा प्रेम उमड़ जाये ।
 घने जहाँ तक उनकी सेवा, करूँ यह मन सुरा पावे ॥
 होऊँ नहीं कृपण कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे ।
 गुण ग्रहण का भाव रहे, नित दृष्टि न दोषों पर जावे ॥९॥
 कोई घुरा कहो या अ-द्रु, लक्ष्मी आवे या जावे ।
 लालों वर्षा तक जीवूँ, या मृत्यु आज ही आ जावे ॥
 अथवा कोई केसा ही, भय या लालच देने आवे ।
 तो भी पाप मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे ॥११॥
 होकर सुरा में मग्न न फूँ, दुःख मैं कभी न घयगावे ।
 पवत, नत्नी, स्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय लावे ॥
 रहे अडोल, अकम्प निरंतर, यह मन दृढ़तर बन जावे ।
 इष्ट वियोग अनिष्ट योग मैं, सहन नीलता निखलावे ॥१३॥

सुग्रा रहे मय चीज नगत व, कोई कभी न घबरावे ।
 घट पाय अभिमान छोड़, जग त्रितय गये मगल गार्थ ॥
 घर घर चचा रहे धम धी, दुष्टन दुष्टन हो जायें ।
 मन चरेत उगत कर अपना प्रजुज ज म जन मय पाये ६
 ईति भाति व्याप नहीं जग म, कृष्टि समय पर शुभा करे ।
 घमेनिष्ठ होकर राजा भी 'पाय प्रजा का किया करे ॥
 गेग मरी दुर्मिल न पैले प्रजा शान्ति से लिया करे ।
 परम अहिंसा धम जगत में, फल सधे हित किया करे १०॥
 फैले प्रम परस्पर जग में माह दूर पर रहा करे ।
 अग्रिप, बटुक, बटार सप्प गरी, वार्ड मुष्ट से कहा कर ॥
 मतकर सब 'युग धीर' हृदय में, दशोपतिरन रहा करें ।
 मस्तु म्बरपथि र गुनी से, मय दु ख मफट सहा करे ११

प्रकीर्ण गाथाएँ

नमिडगा अमुरमुरगकल-रथगपरिवर्द्धि-ययिन्ने ।
 अरिहतमिधायरिपडयड्कायिमन्त्रसाहृण ॥
 रिजाग बुद्धाग पारगयाना वरप रगयाना ।
 ताअग्गमुचगयाना नमो मया स व मिजागा ११॥
 ना दवाणमपि दयो च एग पज्जी गममति ।
 त दय दयमज्जिय सिरसा यद म्हावीर ॥२॥
 इमो वि नमुकारा, जिणयसहस्रस यद्धमागुस्स ।
 ससार-सागराओ तारेण ना य नाति या ॥ ॥
 उज्जितसेह-सिहर निस्सा तागा निमिहीया जम्म ।
 ५५६ ॥ ५५ नमस्सामि ॥५५॥

पत्तारि छद्मदम दोय चटिया जिएवरा चउवरीस ।

परमद्व निद्विभट्टा सिद्धा सिद्धि मम द्विसुतु ॥१॥

सिद्धाण नमो मिद्धा, सजयाण च भावयो ।

सन्ती सन्तीकरे लेण, पत्तो गइमणुत्तरं ॥

ग८—इच्छित काय सिद्धि होने के लिए प्रथम इष्टदेव
नमस्कार किया जाता है । सिद्धाणा अथात् सिद्ध ग । गण
नमस्कार हों ।

सजयाण अथात् सपति—आराध, उपाध्याय च
साधु-साध्वीजी महाराज को नमस्कार हों । सारे
शान्ति करने वाले शान्तिनाथ प्रभुजी को शिफरण-
पूर्वक नमस्कार हों ।

चइत्ता भारद घास, चकउट्टी महचिद्धओ ।

सन्ती सन्तीकरे लोर, पत्तो गइमणुत्तर ॥

अर्थ सारे लोक में शान्ति स्थापित करने
शान्तिनाथ नामके चक्रवर्त्ती महान् ऋद्धि-सिद्धि
का राज्य छोड़कर उत्तम (मोक्ष) गति को प्राप्त

अलखु पुचलख जिणयण-सुभालिय

भूइसुयगइमगा ना मरणाय वीयामो ॥१॥

जा जा चइइ रयणी, न सा पडिनियत्तइ ।

अहम्म पुणमाणम्म, अफला जति राईओ

जा जा चइइ रयणी न सा पडिनियत्तइ ।

धम्म च पुणमाणम्म, सफला जति

पथ लेण पलित्तिमि, जाण मरणेण य ।

अण्णाण तारइस्सामि, तुम्मेदिं

पणे जिण जिया पउ, पउ जिण जिया

दसदा उ जिणिजा मा, सव्व सत्त



चत्तारि अट्ठम दोय चत्थि जिएयरा चउव्वीस ।

परमट्ठ निट्ठिअट्ठा सिद्धा सिद्धि मम विससु ॥५॥

सिद्धाण नमो विद्या, सज्जयाण च भावओ ।

सन्ती सन्तीकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तर ॥

अ६—इच्छित कार्य-सिद्धि होने के लिए प्रथम इष्टदेव को नमस्कार किया जाता है । सिद्धाण अर्थात् सिद्ध भगवान को नमस्कार हों ।

सज्जयाण अर्थात् स्वयं—आचार्य, उपाध्याय व सर्व साधु-साध्वीजी महाराज को नमस्कार हों । सारे लोक में शान्ति करने वाले शान्तिनाथ प्रभुजी को विस्मय-शुद्धभाव पूर्वक नमस्कार हों ।

चइत्ता भारह घास, चक्करट्टी महब्बिओ ।

सन्ती सन्तीकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तर ॥

अ७—सारे लोक में शान्ति स्थापित करने वाले सोलहवें शान्तिनाथ नामके धर्मवर्त्ती महान् श्रद्धा-सिद्धि वाले भरत क्षेत्र का राज्य छोड़कर उत्तम (मोक्ष) गति को प्राप्त हुए ।

अलद्ध पुणलद्ध जिएययण-मुमासिय अमिय ।

भूइसुयगइमग्ग ना मरणाय धीयामो ॥१॥

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पडिनिवत्तइ ।

अहम्म कुणमाणस्स, अफला जति राईओ ॥२॥

जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनिवत्तइ ।

धम्म च कुणमाणस्स, सफला जति राईओ ॥३॥

एव लोए पत्तिम्मि, जगए मरणेण य ।

अप्पाण तारइस्सामि, तुम्हेहि अणुमानओ ॥४॥

एगे जिए जिया पय, पच जिए जिया दस ।

दसहा उ जिणित्ता ण, सन्न सत्तु जिणामह ॥५॥

